दुनिया के मज़दूरो, एक हो !

व्ला० इ० लेनिन

पार्टी कार्यकर्ताओं की शिक्षा

लेख और भाषण

Dt: 14.06.2014
Birthday of
Che.

प्रगति प्रकाशन
मास्को

प्रकाशक की ओर से

इस संग्रह में जो कृतियां शामिल हैं उनका अनुवाद सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के अधीन मार्क्सवाद-लेनिनवाद संस्थान द्वारा व्ला० इ० लेनिन की संग्रहीत रचनाओं के पांचवें रूसी संस्करण के मुताबिक़ किया गया है।

सोवियत संघ में मुद्रित

Л $\frac{0101020000-560}{014(01)-84}$ 351-84

विषय-सूची

पीटर्सबर्ग के मज़दूरों और समाजवादियों के नाम ‘संघर्ष लीग’ की ओर से[1]

पीटर्सबर्ग के क्रांतिकारी कठिन दौर से गुज़र रहे हैं। हाल ही में जन्मे और इतनी शक्ति से प्रकट हुए मज़दूर आंदोलन को कुचल डालने के लिए सरकार ने अपनी सारी ताक़त जुटा ली लगती है। अभूतपूर्व पैमाने पर गिरफ़्तारियां हो रही हैं, जेलें ठसाठस भरी हुई हैं। बुद्धिजीवियों की, पुरुषों और स्त्रियों की धरपकड़ हो रही है, ढेरों मज़दूरों को पकड़कर निष्कासित किया जा रहा है। शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो, जब पुलिस-सरकार के नये-नये शिकारों की ख़बरें न आती हों, यह सरकार तो उन्मत्त सी अपने शत्रुओं पर टूट पड़ी है। सरकार ने यह ठान ली है कि वह रूसी क्रांतिकारी आंदोलन की नई धारा को ज़ोर नहीं पकड़ने देगी, उसे अपने पांवों पर खड़ा नहीं होने देगी। प्राधिकर्ता और राजनीतिक पुलिसवाले तो अभी से यह शेख़ी बघारने लगे हैं कि उन्होंने ‘संघर्ष लीग’ का ख़ात्मा कर दिया है।

यह शेख़ी कोरा झूठ है। ‘संघर्ष लीग’ सारे दमन-चक्र के बावजूद सही सलामत है। हम पूरे संतोष के साथ यह कहते हैं कि बड़े पैमाने पर हो रही गिरफ़्तारियां अपना काम कर रही हैं, वे तो मज़दूरों और समाजवादियों-बुद्धिजीवियों के बीच प्रचार का ज़बरदस्त साधन हैं, कि शहीदों का स्थान नये क्रांतिकारी ले रहे हैं, जो रूसी सर्वहारा के लिए और सारी रूसी जनता के लिए संघर्ष करनेवाले सेनानियों की क़तारों में नई शक्ति के साथ खड़े होने को तत्पर हैं। बलिदानों के बिना संघर्ष नहीं हो सकता, ज़ारशाही बाशीबुज़ूकों[2] के अत्याचारों के जवाब में हम शांत भाव से कहते हैं: क्रांतिकारी मारे गये – क्रांति ज़िंदाबाद!

दमन-चक्र में तेज़ी अभी तक सिर्फ़ इतना ही कर पायी है कि 'संघर्ष लीग' के कुछ कामों में अस्थाई तौर पर ढील आ गयी है, एजेंटों और प्रचारकों की अस्थाई कमी हो गई है। यह कमी ही हम महसूस कर रहे हैं और इसी के कारण उन सभी सचेतन मज़दूरों और उन सभी बुद्धिजीवियों के नाम, जो क्रांति के ध्येय को अपनी शक्ति अर्पित करना चाहते हैं, अपील जारी कर रहे हैं। 'संघर्ष लीग' को एजेंट चाहिए। वे सब मंडल तथा वे सब अलग-अलग व्यक्ति, जो क्रांतिकारी गतिविधियों के किसी भी, भले ही संकीर्ण से संकीर्ण क्षेत्र में काम करने की इच्छा रखते हैं, वे 'संघर्ष लीग' के साथ संबंध रखनेवाले लोगों को अपनी इस इच्छा से अवगत करायें (यदि कोई दल ऐसे लोगों को नहीं ढूंढ़ पाता है, जिसकी गुंजाइश बहुत कम है, तो वह विदेशों में स्थित 'रूसी सामाजिक-जनवादियों के संघ' के ज़रिए अपना इरादा व्यक्त कर सकता है)। लोग तो हर तरह के काम के लिए चाहिए, और क्रांतिकारी गतिविधियों के अलग-अलग पहलुओं को क्रांतिकारी जितनी सख़्ती से अपना विशेष कार्य बना लेंगे, जितनी अधिक सख़्ती से वे गोपनीय कार्य के तरीक़े और उन्हें छिपाने के रास्ते सोच लेंगे, जितने अधिक आत्मबलिदान से वे छोटे से, अदृश्य, आंशिक काम में सिमट जायेंगे – उतनी ही अधिक विश्वसनीयता से सारा हेतु पूरा होगा, राजनीतिक पुलिस और भेदियों के लिए क्रांतिकारियों का पता लगाना उतना ही अधिक कठिन होगा। सरकार विरोधी तत्वों के न केवल वास्तविक केंद्रों में, बल्कि संभाव्य केंद्रों में भी सरकार ने पहले से ही अपने एजेंटों का जाल बिछा दिया है। सरकार क्रांतिकारियों का पीछा करनेवाले अपने चाकरों की गतिविधियां निरंतर अधिक व्यापक और गहरी कर रही है, नये तरीक़े खोज रही है, भड़कानेवाले नये एजेंट घुसा रही है, गिरफ़्तार लोगों को डरा-धमकाकर, झूठी गवाहियां और नक़ली हस्ताक्षर दिखाकर, झूठे रुक्क़े उन्हें पहुंचाकर तथा दूसरे ऐसे तरीक़ों से उन पर ज़ोर डालने की कोशिशें कर रही है। क्रांतिकारी अनुशासन, संगठन और गोपनीय गतिविधियों के बिना सरकार के विरुद्ध संघर्ष करना असंभव है। और गोपनीय गतिविधियों की सबसे पहली अपेक्षा यह है कि अलग-अलग मंडल और व्यक्ति काम के अलग-अलग पहलुओं को ही अपना विशेष कार्य-क्षेत्र बनायें और उन्हें एक सूत्र में पिरोने का काम 'संघर्ष लीग' के बहुत थोड़े

से सदस्योंवाले केंद्र पर छोड़ दिया जाये। क्रांतिकारी गतिविधियों के अलग-अलग पहलू नानाविध हैं: ऐसे वैध प्रचारक चाहिए, जो मज़दूरों के बीच इस तरह बोल सकें कि उन पर इसके लिए मुक़दमा **न चलाया जा सके**, जो केवल 'क' कहकर रुक सकते हैं और 'ख' व 'ग' कहने का काम दूसरों पर छोड़ सकते हैं। साहित्य के, परचों के प्रसारक चाहिए। मज़दूर मंडलों और दलों के संगठनकर्ता चाहिए। सभी मिलों-कारख़ानों में संवाददाता चाहिए, जो वहां होनेवाली सभी घटनाओं की सूचना दे सकें। भेदियों और भड़कानेवालों पर नज़र रखनेवाले लोग चाहिए। ऐसे लोग चाहिए, जो गोपनीय फ़्लैटों का प्रबंध कर सकें। साहित्य पहुंचाने व कार्य संबंधी निर्देश ले जाने के लिए और तरह-तरह के संबंध के लिए लोग चाहिए। चंदा जमा करनेवाले लोग चाहिए। बुद्धिजीवियों और सरकारी अधिकारियों के बीच काम करने के लिए एजेंट चाहिए – ऐसे लोग, जिनका मज़दूरों से, फ़ैक्टरियों-मिलों के जीवन से, प्रशासन (पुलिस, फ़ैक्टरी इंस्पेक्टरों इत्यादि) से संपर्क रहता हो। रूस के तथा दूसरे देशों के विभिन्न नगरों के साथ संबंध बनाये रखने के लिए लोग चाहिए। ऐसे लोग चाहिए, जो भांति-भांति के साहित्य की छपाई वग़ैरह का इंतज़ाम कर सकें। साहित्य को और दूसरी चीज़ों को रख सकनेवाले लोग चाहिए, वग़ैरह, वग़ैरह। कोई अलग व्यक्ति या दल जिस काम का दायित्व लेता है, वह जितना छोटा, जितना अधिक संकुचित और विशेषीकृत होगा, उतनी ही अधिक इस बात की संभावना है कि वह यह काम ख़ूब सोच-समझकर कर सकेगा और उसकी सफलता सुनिश्चित कर पायेगा, कि वह गोपनीयता के सभी ब्योरों पर विचार कर लेगा, राजनीतिक पुलिसवालों की आंखों में धूल झोंकने के सभी संभव साधनों का उपयोग कर सकेगा, और तब काम की सफलता उतनी ही अधिक सुनिश्चित होगी, पुलिस के लिए क्रांतिकारी का और संगठन के साथ उसके संबंध का पता लगाना उतना ही अधिक कठिन होगा तथा क्रांतिकारी पार्टी के लिए मारे गये एजेंटों व सदस्यों के स्थान पर सारे ध्येय को क्षति पहुंचाये बिना नये लोगों को लाना उतना ही अधिक आसान होगा। हम जानते हैं कि ऐसा विशेषीकरण बहुत कठिन काम है, यह कठिन इसलिए है कि इसके लिए सबसे अधिक धैर्य की और सबसे अधिक आत्मबलिदान की आवश्यकता है, इसमें आदमी को अपनी सारी शक्ति अदृश्य, नीरस काम में

लगानी पड़ती है, उस काम में, जिसमें आदमी अपने साथियों के साथ संबंधों से वंचित होता है, जिससे क्रांतिकारी का सारा जीवन सख़्त और नीरस दिनचर्या में बंध जाता है। लेकिन ऐसे हालात में ही रूस के धुरंधर क्रांतिकारी अपने कार्य की सर्वांगीण तैयारी में बरसों लगाकर अपनी अत्यंत साहसिक कार्रवाइयां पूरी कर पाये थे, और हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि सामाजिक-जनवादियों में भी पिछली पीढ़ियों से कम आत्मबलिदान नहीं देखने में आयेगा। हम यह भी जानते हैं कि हम जो तरीक़ा सुझा रहे हैं, उसमें क्रांतिकारी कार्य में अपनी शक्ति लगाने को उतावले बहुत से लोगों के लिए वह तैयारी अवधि बहुत दूभर होगी, जिसमें 'संघर्ष लीग' अपनी सेवाएं प्रस्तुत कर रहे व्यक्ति या दल के बारे में आवश्यक जानकारी जमा करेगी और कुछ काम सौंपकर उसकी योग्यता परखेगी। लेकिन ऐसी आरंभिक परख के बिना आज के रूस में क्रांतिकारी गतिविधियां असंभव हैं।

अपने नये साथियों को गतिविधियों का यह नया तरीक़ा सुझाते हुए हम वह दृष्टिकोण व्यक्त कर रहे हैं, जिस पर हम लंबे अनुभव से पहुंचे हैं और साथ ही यह दृढ़ विश्वास भी कि यह तरीक़ा ही क्रांतिकारी गतिविधियों की सफलता की सबसे अधिक गारंटी देता है।

साइबेरिया निर्वासन
के दौरान १८९७ के
अंत में लिखित

खंड २,
पृ० ४६७-४७०

रूसी सामाजिक-जनवादियों के बीच में प्रतिगामी प्रवृत्ति

(उद्धरण)

...सभी देशों के मज़दूर आंदोलन के इतिहास से यह पता चलता है कि मज़दूरों के सबसे अग्रणी संस्तर ही समाजवाद के विचारों को सबसे पहले और सबसे अच्छी तरह ग्रहण करते हैं। इन संस्तरों से ही वे हरावल मज़दूर आते हैं जिन्हें हर मज़दूर आंदोलन आगे बढ़ाता है, वे मज़दूर जो मज़दूर समूहों का पूरा विश्वास पा सकते हैं, जो सर्वहारा की शिक्षा और संगठन के कार्य में अपना सर्वस्व अर्पित करते हैं, जो पूरी तरह सचेतन रूप से समाजवाद को स्वीकार करते हैं और जिन्होंने स्वतंत्र रूप से समाजवादी सिद्धांत निरूपित तक कर लिये हैं। हर जानदार मज़दूर आंदोलन अपने ऐसे नेता, अपने प्रूदों और वाइयां, वाइटलिंग और बेबेल सामने लाता रहा है। रूसी मज़दूर आंदोलन भी इस मामले में यूरोप से पीछे नहीं रहनेवाला है। आज जबकि शिक्षित समाज ईमानदारी भरे, अवैध साहित्य में दिलचस्पी खो रहा है, मज़दूरों में ज्ञान की और समाजवाद की उत्कट अभिलाषा बढ़ रही है, मज़दूरों में सच्चे वीर सामने आ रहे हैं, जो अपने जीवन के बेहूदा हालात के बावजूद, फ़ैक्टरी में जड़ीभूत कर देनेवाले कारावासीय श्रम के बावजूद ऐसा चरित्र और इतना दृढ़ संकल्प रखते हैं कि वे अध्ययन में जुटे रहते हैं और अपने को सचेतन सामाजिक-जनवादी "मज़दूर बुद्धिजीवी" बनाते हैं। रूस में ऐसे "मज़दूर बुद्धिजीवी" अब हैं और हमें इस बात के लिए पूरा प्रयत्न करना चाहिए कि इनकी संख्या निरंतर बढ़े, इनकी उच्च बौद्धिक आवश्यकताएं पूरी हों, कि इनके बीच से रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के नेता बनें। वह समाचारपत्र, जो सभी रूसी

सामाजिक-जनवादियों का मुखपत्र बनना चाहता है, उसे इन अग्रणी मज़दूरों के स्तर पर ही होना चाहिए; उसे न केवल अपने स्तर को कृत्रिम रूप से नीचा नहीं करना चाहिए, बल्कि उल्टे, उसे निरंतर ऊंचा उठाना चाहिए, विश्व सामाजिक-जनवाद के सभी कार्यनीतिक, राजनीतिक और सैद्धांतिक प्रश्नों पर ध्यान देना चाहिए। ऐसा होने पर ही मज़दूर बुद्धिजीवियों की आवश्यकताएं पूरी होंगी और वे रूसी मज़दूरों के और **परिणामतः** रूसी क्रांति के ध्येयों को अपने हाथों में ले लेंगे।

संख्या में कम अग्रणी मज़दूरों के संस्तर के बाद औसत मज़दूरों का व्यापक संस्तर आता है। ये मज़दूर भी समाजवाद के लिए लालायित हैं, मज़दूर अध्ययन मंडलों में भाग लेते हैं, समाजवादी अख़बार और पुस्तकें पढ़ते हैं, प्रचार-कार्य में भाग लेते हैं। उपरोक्त संस्तर से ये केवल इसी बात में भिन्न हैं कि ये सामाजिक-जनवादी मज़दूर आंदोलन का स्वतंत्र रूप से संचालन नहीं कर सकते। उस समाचारपत्र में, जो पार्टी का मुखपत्र होगा, औसत मज़दूर कुछ लेख नहीं समझ पायेगा, जटिल सैद्धांतिक या व्यावहारिक प्रश्न उसके लिए पूरी तरह स्पष्ट नहीं होगा। इससे यह निष्कर्ष क़तई नहीं निकलता कि अख़बार को अपना स्तर अपने अधिकांश पाठकों के स्तर तक नीचे लाना चाहिए। उलटे, अख़बार को उनका स्तर ऊंचा उठाना चाहिए और औसत मज़दूरों के संस्तर से अग्रणी मज़दूरों को सामने लाने में मदद करनी चाहिए। मज़दूर आंदोलन के इतिवृत्त में और प्रचार के निकटतम प्रश्नों में ही सबसे अधिक रुचि लेनेवाले तथा **स्थानीय** व्यावहारिक गतिविधियों में रत ऐसे मज़दूर को अपने हर क़दम के साथ सारे रूसी मज़दूर आंदोलन का, उसके ऐतिहासिक कार्यभार का, समाजवाद के अंतिम ध्येय का विचार जोड़ना चाहिए, सो ऐसे समाचारपत्र को जिसके अधिकांश पाठक औसत मज़दूर ही हैं, हर स्थानीय और संकीर्ण प्रश्न के साथ समाजवाद और राजनीतिक संघर्ष को जोड़ना चाहिए।

अंततः, औसत संस्तर के बाद सर्वहारा के निम्नतर संस्तर के समूह आते हैं। बहुत संभव है कि समाजवादी समाचारपत्र पूरी तरह या प्रायः पूरी तरह उनकी समझ से परे होगा (आख़िर पश्चिमी यूरोप में भी सामाजिक-जनवादी मतदाताओं की संख्या सामाजिक-जनवादी अख़बारों के पाठकों की संख्या से कहीं अधिक है), लेकिन इससे यह निष्कर्ष

निकालना बिल्कुल बेतुका होगा कि सामाजिक-जनवादियों के समाचारपत्र को मज़दूरों के यथासंभव अधिक निम्नतर संस्तर के अनुरूप बनाना चाहिए। इससे तो केवल यही निष्कर्ष निकलता है कि ऐसे संस्तरों पर प्रचार के दूसरे साधनों से प्रभाव डालना चाहिए: अधिक सरल, सुबोध भाषा में लिखी पुस्तिकाओं, मौखिक प्रचार तथा मुख्यत: स्थानीय घटनाओं पर परचों द्वारा। सामाजिक-जनवादियों को तो इतने तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए: बहुत संभव है कि मज़दूरों के निम्नतर संस्तरों में वर्ग-चेतना जगाने के पहले क़दम वैध ज्ञान-प्रसार कार्यों के रूप में ही उठाये जाने चाहिए। **पार्टी** के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि वह **इन कार्यों का उपयोग करे**, इन्हें उस दिशा में ही लक्षित करे, जहां इनकी सबसे अधिक आवश्यकता है; वैध ज्ञान-प्रसारकों को उस ज़मीन को जोतने के लिए भेजे, जिसमें बाद में सामाजिक-जनवादी प्रचारक बीज बोयेंगे। बेशक मज़दूरों के निम्नतर संस्तरों में प्रचार-कार्य में प्रचारकों को अपनी निजी विशिष्टताओं, स्थान, व्यवसाय आदि की विशिष्टताओं का उपयोग करने की सर्वाधिक व्यापक संभावनाएं मिलनी चाहिए। "कार्यनीति और प्रचार को गड्डमड्ड नहीं करना चाहिए," बर्नस्टीन के ख़िलाफ़ पुस्तक में काउत्स्की लिखते हैं। "प्रचार का तरीक़ा व्यक्तिगत और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए। प्रचार-कार्य में हर प्रचारक को वे साधन चुनने की छूट देनी चाहिए, जो उसके पास हैं: कोई प्रचारक अपने जोश से सबसे अधिक प्रभावित करता है, तो कोई दूसरा अपने तीखे कटाक्षों से, जबकि तीसरा ढेरों मिसालें देकर, वग़ैरह, वगैरह। प्रचारक के अनुरूप होते हुए प्रचार को जनता के भी अनुरूप होना चाहिए। प्रचारक को ऐसे बोलना चाहिए कि सुनने-वाले उसकी बातें समझें; उसे यह ध्यान में रखना चाहिए कि श्रोता क्या कुछ जानते हैं। कहना न होगा कि ये सब बातें केवल किसानों के बीच प्रचार-कार्य पर ही लागू नहीं होती हैं। गाड़ीवानों से ऐसे बात नहीं करनी चाहिए, जैसे जहाज़ियों से और जहाज़ियों से वैसे बात नहीं करनी चाहिए, जैसे छापाख़ाने के मज़दूरों से। **प्रचार-कार्य व्यक्तियों के अनुरूप** होना चाहिए, लेकिन हमारी **कार्यनीति** – हमारी राजनीतिक **गतिविधियां एक ही** होनी चाहिए" (पृ० २-३)। सामाजिक-जनवादी सिद्धांत के अग्रणी प्रतिनिधि के इन शब्दों में पार्टी की सारी गतिविधियों में प्रचार-कार्य का मर्म बड़ी अच्छी तरह व्यक्त किया गया

है। ये शब्द बताते हैं कि उन लोगों के संदेह कितने निराधार हैं, जो यह सोचते हैं कि राजनीतिक संघर्ष चलानेवाली क्रांतिकारी पार्टी गठित किया जाना प्रचार-कार्य में बाधक होगा, उसे पृष्ठभूमि में डाल देगा या प्रचारकों की स्वतंत्रता सीमित करेगा। इसके विपरीत सुसंगठित पार्टी ही व्यापक प्रचार-कार्य कर सकती है, सभी आर्थिक और राजनीतिक प्रश्नों पर प्रचारकों को आवश्यक निर्देश (और सामग्री) दे सकती है, प्रचार-कार्य की हर स्थानीय सफलता का उपयोग सभी रूसी मज़दूरों की शिक्षा के लिए कर सकती है, प्रचारकों को ऐसे लोगों के बीच या ऐसे स्थानों पर भेज सकती है, जहां वे सर्वाधिक सफलता से काम कर सकते हैं। सुसंगठित पार्टी में ही प्रचारक की योग्यता रखनेवाले लोग अपने को पूरी तरह इस कार्य को अर्पित करने की दशा में होंगे, जिससे प्रचार-कार्य का भी और सामाजिक-जनवादी कार्य के शेष सभी पहलुओं का भी हित होगा। इससे यह पता चलता है कि जो व्यक्ति आर्थिक संघर्ष के पीछे राजनीतिक प्रचार-कार्य को भुला देता है, जो मज़दूर आंदोलन को राजनीतिक पार्टी के संघर्ष में संगठित करने की आवश्यकता को भुला देता है, वह, और सब बातों के अलावा सर्वहारा के निम्नतर संस्तरों को मज़दूरों के ध्येय में शामिल करने का कार्य सुदृढ़ आधार पर और सफलतापूर्वक करने के अवसर तक से अपने आप को वंचित करता है।

१८९९ के अंत में
लिखित

खंड ४,
पृ० २६८-२७१

1. All NGOs
2. All independent social workers
3. All progressive writers
4. બાંધકામ મજૂર

हमारे आंदोलन के तात्कालिक कार्यभार

रूसी सामाजिक-जनवादी एकाधिक बार यह घोषणा कर चुके हैं कि रूसी मज़दूर वर्ग की पार्टी का सबसे पहला राजनीतिक कार्यभार निरंकुश शासन का पतन और राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति होना चाहिए। १५ से भी अधिक साल पहले रूसी सामाजिक-जनवाद के प्रतिनिधियों, 'श्रम-मुक्ति' दल[3] के सदस्यों ने इसकी घोषणा की थी, यही घोषणा आज से ढाई साल पहले रूसी सामाजिक-जनवादी संगठनों के उन प्रतिनिधियों ने भी की थी, जिन्होंने १८९८ के वसंत में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी[4] की स्थापना की थी। लेकिन इन अनेक घोषणाओं के बावजूद, रूस में सामाजिक-जनवादियों के राजनीतिक कार्यभारों का प्रश्न आज भी मुख्य है। हमारे आंदोलन के बहुत से प्रतिनिधि इस प्रश्न के उपरोक्त हल में संदेह व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं कि आर्थिक संघर्ष का महत्व ही निर्णायक है, वे सर्वहारा वर्ग के राजनीतिक कार्यभारों को पृष्ठभूमि में हटाते हैं, इन कार्यभारों को संकुचित और सीमित करते हैं, यहां तक कहते हैं कि रूस में स्वतंत्र मज़दूर पार्टी गठित करने की बातें दूसरों के शब्दों को दोहराना मात्र है, कि मज़दूरों को केवल आर्थिक संघर्ष करना चाहिए और राजनीति को बुद्धिजीवियों व उदारपंथियों के लिए छोड़ देना चाहिए। नये विश्वास के प्रतीक कुख्यात *Credo*[5] की इस अंतिम घोषणा का अर्थ तो सीधे-सीधे रूसी सर्वहारा वर्ग को नाबालिग़ मानना और सामाजिक-जनवादी कार्यक्रम को पूर्णतः अस्वीकार करना ही है। 'राबोचाया मीस्ल'[6] ने भी (विशेषतः अपने 'पृथक परिशिष्ट' में) सारतः यही विचार

व्यक्त किया है। रूसी सामाजिक-जनवादी ढुलमुलपन के दौर से, आत्म-अस्वीकृति की हद तक संदेहों के दौर से गुज़र रहे हैं। एक ओर मज़दूर आंदोलन समाजवाद से कट रहा है: मज़दूरों को आर्थिक संघर्ष करने में तो मदद दी जाती है, लेकिन ऐसा करते हुए उन्हें सारे आंदोलन के समाजवादी ध्येय और राजनीतिक कार्यभार नहीं समझाये जाते या पर्याप्त रूप से नहीं समझाये जाते। दूसरी ओर समाजवाद मज़दूर आंदोलन से कट रहा है: रूसी समाजवादी फिर से यही बातें अधिक करने लगे हैं कि सरकार के विरुद्ध संघर्ष अकेले बुद्धिजीवी वर्ग को ही केवल अपने बूते पर करना चाहिए, क्योंकि मज़दूर केवल आर्थिक संघर्ष तक ही सीमित रहते हैं।

हमारे विचार में ऐसी दुखद स्थिति तीन कारणों से उत्पन्न हुई है। पहले, अपनी गतिविधियों के आरंभ में रूसी सामाजिक-जनवादियों ने अपना काम मंडलों में प्रचार तक ही सीमित रखा। और फिर जन-समूहों में प्रचार-कार्य शुरू करने पर हम दूसरी चरम सीमा पर जाने से अपने को सदा नहीं रोक पाये। दूसरे, अपनी गतिविधियों के आरंभ में हमें प्रायः 'नरोद्नाया वोल्या'-वादियों[7] के साथ संघर्ष में अपने अस्तित्व के अधिकार की रक्षा करनी पड़ी थी, जो "राजनीति" का अर्थ मज़दूर आंदोलन से पृथक गतिविधियां ही समझते थे और वे राजनीति को केवल षड्यंत्रात्मक संघर्ष तक ही सीमित करते थे। ऐसी नीति को अस्वीकार करते हुए सामाजिक-जनवादी दूसरी चरम सीमा पर जाकर राजनीति को पूरी तरह ही पृष्ठभूमि में रखने लगे। तीसरे, छोटे-छोटे स्थानीय मज़दूर मंडलों में अलग-अलग रूप से काम करते हुए सामाजिक-जनवादी ऐसी क्रांतिकारी पार्टी गठित करने की आवश्यकता की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देते थे, जो स्थानीय दलों की सभी गति-विधियों को संगठित करे और क्रांतिकारी कार्य ठीक से चलाना संभव बनाये। स्वाभाविक ही है कि मुख्यतः अलग-अलग काम करने में आर्थिक संघर्ष का ही स्थान मुख्य रहता है।

इन सभी उपरोक्त परिस्थितियों के फलस्वरूप आंदोलन के एक पहलू पर ही ध्यान केंद्रित होने लगा। "आर्थिक" प्रवृत्ति ने (यदि इसे "प्रवृत्ति" कहा जा सकता है, तो) इस संकीर्णता को विशेष सिद्धांत के रूप में प्रतिष्ठित करने के प्रयास किये। इस ध्येय के लिए उसने फ़ैशनेबुल बर्नस्टीनवाद का, फ़ैशनेबुल "मार्क्सवाद की आलोचना"

का, जो नये लेबल तले पुराने बुर्जुआ विचारों का प्रचार-प्रसार करती है, उपयोग करने के भी प्रयास किये। इन प्रयासों से ही रूसी मज़दूर आंदोलन और राजनीतिक स्वतंत्रता के अग्रणी सेनानी रूसी सामाजिक जनवादियों के बीच संबंध क्षीण होने का ख़तरा पैदा हुआ है। और हमारे आंदोलन का सर्वाधिक तात्कालिक कार्यभार इस संबंध को सुदृढ़ करना ही है।

सामाजिक-जनवादी आंदोलन समाजवाद के साथ मज़दूर आंदोलन का संयोजन ही है, इसका कार्यभार मज़दूर आंदोलन के हर अलग-अलग चरण में उसकी निष्क्रिय सेवा करना नहीं है, बल्कि सारे आंदोलन के हितों का प्रतिनिधित्व करना, इस आंदोलन को उसका चरम लक्ष्य, उसके राजनीतिक कार्यभार इंगित करना, उसकी राजनीतिक और विचारधारात्मक स्वतंत्रता की रक्षा करना है। सामाजिक-जनवाद से कटा मज़दूर आंदोलन नगण्य हो जाता है और अनिवार्यतः उसमें बुर्जुआ-पन आ जाता है: केवल आर्थिक संघर्ष करते हुए मज़दूर वर्ग अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता खोता है, दूसरी पार्टियों का दुमछल्ला बन जाता है, इस महान सिद्धांत से ग़द्दारी करता है: "मज़दूरों की मुक्ति स्वयं मज़दूरों को ही हासिल करनी चाहिए"।[8] सभी देशों में ऐसा काल हुआ है, जब मज़दूर आंदोलन और समाजवाद एक दूसरे से अलग-अलग अस्तित्वमान थे और अपने विशिष्ट मार्ग पर बढ़ते रहे थे – और सभी देशों में इस पार्थक्य के कारण समाजवाद और मज़दूर आंदोलन कमज़ोर पड़े; सभी देशों में मज़दूर आंदोलन के साथ समाजवाद के संयोजन से ही दोनों के लिए सुदृढ़ आधार बना। लेकिन हर देश में मज़दूर आंदोलन के साथ समाजवाद का संयोजन ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुसार, अपने विशिष्ट रास्ते से तथा समय व स्थान की परिस्थितियों के अनुसार तैयार किया गया। रूस में समाजवाद और मज़दूर आंदोलन के संयोजन की आवश्यकता की सिद्धांत रूप में घोषणा तो बहुत पहले से हो चुकी है, – लेकिन व्यवहार में इस संयोजन का काम इन दिनों ही हो रहा है। संयोजन की यह प्रक्रिया बहुत कठिन प्रक्रिया है, और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि इसके साथ भांति-भांति के संदेह और ढुलमुलपन पैदा हो रहे हैं।

अतीत से हमें क्या सबक़ मिलता है?

सारे रूसी समाजवाद के इतिहास से ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई,

जिसमें स्वेच्छाचारी सरकार के विरुद्ध संघर्ष और राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति ही उसके सर्वाधिक तात्कालिक कार्यभार बन गये; यानी हमारा समाजवादी आंदोलन स्वेच्छाचारी शासन के विरुद्ध संघर्ष पर ही केंद्रित रहा। दूसरी ओर इतिहास से यह भी स्पष्ट हुआ कि रूस में मेहनतकश वर्गों के अग्रणी प्रतिनिधियों से समाजवादी चिंतन का विलगाव दूसरे देशों की अपेक्षा कहीं अधिक है, और यह कि यदि यह विलगाव बना रहता है, तो रूसी क्रांतिकारी आंदोलन भी बेदम ही रहेगा। इसे देखते हुए रूसी सामाजिक-जनवादियों का सीधे-सीधे यह कार्यभार बनता है कि वह सर्वहारा जन-समूहों में समाजवादी विचार और राजनीतिक चेतना फैलाये और ऐसी क्रांतिकारी पार्टी गठित करे, जिसका स्वतःस्फूर्त मज़दूर आंदोलन के साथ अटूट संबंध हो। रूसी सामाजिक-जनवादियों ने इस दिशा में काफ़ी कुछ किया है, लेकिन अभी इससे भी अधिक करना बाक़ी है। आंदोलन के बढ़ने के साथ-साथ सामाजिक-जनवादियों का कार्यक्षेत्र अधिकाधिक व्यापक और उनके काम अधिक नानाविध हो रहे हैं, आंदोलन के अधिकाधिक कार्यकर्ता उन विभिन्न दैनंदिन कार्यभारों की पूर्ति में अपनी शक्ति लगा रहे हैं, जो प्रचार की रोज़मर्रा की ज़रूरतों से उत्पन्न होते हैं। ऐसा होना बिल्कुल नियमसंगत और अनिवार्य है, लेकिन इससे हमारे लिए इस बात की ओर ख़ास ध्यान देता ज़रूरी हो जाता है कि गतिविधियों का दैनंदिन कार्यभार और संघर्ष के कुछ अलग-अलग तरीक़े अपने आप में ही सब कुछ होकर न रह जायें, कि तैयारी के काम को ही प्रमुख और एकमात्र काम न मान लिया जाये।

मज़दूर वर्ग के राजनीतिक विकास और राजनीतिक संगठन में सहयोग प्रदान करना हमारा प्रमुख और मूलभूत कार्यभार है। जो लोग इस कार्यभार को पृष्ठभूमि में धकेलते हैं, जो सभी दैनंदिन कार्यभारों और संघर्ष के अलग-अलग तरीक़ों को इस प्रमुख कार्यभार के अधीन नहीं लाते, वे ग़लत रास्ते पर चलते हैं और आंदोलन को गंभीर क्षति पहुंचाते हैं। इसे पृष्ठभूमि में धकेलनेवाले सर्वप्रथम वे लोग हैं, जो क्रांतिकारियों का यह आह्वान करते हैं कि वे मज़दूर आंदोलन से कटें, अलग-अलग षड्यंत्रकारी मंडलों के बल पर सरकार से संघर्ष करें। इस कार्यभार को पृष्ठभूमि में धकेलनेवाले दूसरे लोग वे हैं, जो राजनीतिक प्रचार-प्रसार और संगठन के अंतर्य व पैमाने को सीमित करते

हैं, जो यह मानते हैं कि मज़दूरों को उनके जीवन के केवल असाधारण क्षणों में, केवल समारोही अवसरों पर ही "राजनीति" की दावत देना संभव है और उचित है; जो बड़े जतन से स्वेच्छाचारी शासन के विरुद्ध संघर्ष के बदले स्वेच्छाचारी शासन से रियायतों की मांगें करते हैं और इस बात के लिए पर्याप्त जतन नहीं करते हैं कि अलग-अलग रियायतों की इन मांगों को स्वेच्छाचारी शासन के विरुद्ध क्रांतिकारी मज़दूर पार्टी के नियमित, योजनाबद्ध और अनम्य संघर्ष के स्तर तक उठाया जाये।

"संगठित होइये!" 'राबोचाया मीस्ल' समाचारपत्र सभी सुरों में मज़दूरों को यही अलाप सुनाता रहता है और "आर्थिक" प्रवृत्ति के समर्थक भी इसके सुर में सुर मिलाते हैं। बेशक हम पूरी तरह से इस आह्वान का समर्थन करते हैं, लेकिन साथ में यह भी अवश्य जोड़ेंगे: परस्पर सहायता समाजों में, हड़ताल निधियों में और मज़दूर अध्ययन मंडलों में ही नहीं, बल्कि राजनीतिक पार्टी में भी संगठित होइये, स्वेच्छाचारी सरकार के विरुद्ध और सारे पूंजीवादी समाज के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष के लिए राजनीतिक पार्टी में संगठित होइये। ऐसे संगठन के बिना मज़दूर सचेतन वर्ग संघर्ष के स्तर तक नहीं उठ सकते, ऐसे संगठन के बिना मज़दूर आंदोलन बेदम ही रहेगा, केवल निधियों, मंडलों और परस्पर सहायता समाजों के बूते मज़दूर वर्ग कभी भी अपना महान ऐतिहासिक कार्यभार – अपनी और सारी रूसी जनता की राजनीतिक व आर्थिक दासता की बेड़ियां तोड़ने का कार्यभार पूरा नहीं कर पायेगा। आंदोलन को संगठित करने और उसका संचालन करने की योग्यता रखनेवाले अपने राजनीतिक नेता, अपने अग्रणी प्रतिनिधि आगे बढ़ाये बिना आज तक किसी भी वर्ग ने प्रभुत्व नहीं पाया है। रूसी मज़दूर वर्ग भी यह दिखा चुका है कि वह ऐसे लोगों को पैदा कर सकता है: पिछले पांच-छह बरसों में बहुत बड़े पैमाने पर फैला रूसी मज़दूरों का संघर्ष इस बात का साक्षी है कि मज़दूर वर्ग में कितनी विराट क्रांतिकारी शक्ति छिपी हुई है, कि कैसे सरकार के निर्ममतम दमन से भी समाजवाद लाने को उतावले मज़दूरों की संख्या घट नहीं बढ़ रही है। १८९८ में हमारे साथियों की कांग्रेस में कार्यभार सही-सही निर्धारित किये गये हैं, दूसरों के शब्द नहीं दोहराये गये हैं, "बुद्धिजीवियों" का उफान मात्र नहीं व्यक्त किया गया है। ... और

2*

अब हमें पार्टी के कार्यक्रम, संगठन और कार्यनीति के प्रश्न को तात्कालिक कार्यसूची में रखकर इन कार्यभारों की पूर्ति में दृढ़तापूर्वक जुट जाना चाहिए। अपनी पार्टी के मूलभूत सिद्धांतों पर अपने विचार हम व्यक्त कर ही चुके हैं और बेशक यहां इन पर विस्तार से ग़ौर करने का स्थान नहीं है। आगामी कुछ अंकों में संगठन के प्रश्नों पर कतिपय लेख देने का इरादा हम रखते हैं। यह हमारा एक सबसे ज्वलंत प्रश्न है। इस मामले में हम रूसी क्रांतिकारी आंदोलन के पुराने कार्यकर्ताओं से बहुत पिछड़ गये हैं; हमें इस चूक को साफ़-साफ़ क़बूल करना चाहिए और अपने क्रांतिकारी कार्य के अधिक गोपनीय तरीक़े सोचने, इस कार्य के अपयुक्त तरीक़ों का तथा राजनीतिक पुलिस की आंखों में धूल झोंकने और पुलिस के जाल से बचने के रास्तों का नियमित रूप से प्रचार करने में अपनी सारी शक्ति लगानी चाहिए। हमें ऐसे लोग तैयार करने चाहिए, जो अपनी केवल खाली शामें नहीं, बल्कि अपना सारा जीवन क्रांति को समर्पित करें, हमें इतना बड़ा संगठन तैयार करना चाहिए कि उसमें हमारे कार्य के विभिन्न रूपों के लिए आवश्यक श्रम-विभाजन हो सके। अंततः, जहां तक कार्यनीति के प्रश्नों की बात है, यहां हम इतना ही कहेंगे: सामाजिक-जनवादी अपने हाथ नहीं बांधते हैं, राजनीतिक संघर्ष की पहले से सोची गई किसी एक योजना या विधि से अपनी गतिविधियां सीमित नहीं करते हैं। वे तो संघर्ष के सभी साधनों को स्वीकार करते हैं, बशर्ते वे पार्टी की उपलब्ध शक्ति के अनुकूल हों और उनसे तत्संबंधी परिस्थितियों में पाये जा सकनेवाले अधिक से अधिक परिणाम पाना संभव हो। यदि पार्टी मज़बूत और सुसंगठित है, तो एक अकेली हड़ताल भी राजनीतिक प्रदर्शन बन सकती है, सरकार पर एक राजनीतिक विजय बन सकती है। यदि पार्टी मज़बूत और सुसंगठित है, तो किसी एक स्थान पर हुआ विद्रोह भी विजयी क्रांति तक बढ़ सकता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि कुछ मांगों के लिए सरकार से संघर्ष करना, कुछ रियायतें हासिल कर लेना – यह सब शत्रु के साथ छोटी-छोटी मुठभेड़ें हैं, यह सब – अग्रिम चौकियों पर छोटी-मोटी टक्करें ही हैं, जबकि निर्णायक संघर्ष तो आगे है। हमारे सामने शत्रु का क़िला अपनी सारी शक्ति समेटे खड़ा है और वहां से हम पर गोले बरसाये जा रहे हैं, गोलियों की बौछार हो रही है, जो हमारे श्रेष्ठ सेनानियों के

प्राण ले रही हैं। हमें यह क़िला फ़तह करना है, और यदि हम जागृत हो रहे सर्वहारा की सारी शक्तियों को रूसी क्रांतिकारियों की सारी शक्तियों के साथ एक पार्टी में मिला लेंगे, जिसकी ओर रूस के सभी जीवंत और ईमानदार लोग आकर्षित होंगे, तो हम अवश्य ही यह क़िला फ़तह कर लेंगे। तभी रूसी मज़दूर क्रांतिकारी प्योत्र अलेक्सेयेव[9] की यह महान भविष्यवाणी सच होगी : "करोड़ों मेहनतकशों का मज़बूत हाथ उठेगा और सिपाहियों की संगीनों से रक्षित तानाशाही का जुआ उतार फेंकेगा।"

१६०० के अक्तूबर–
नवंबर के शुरू
में लिखित

खंड ४,
पृ० ३७१-३७७

क्या करें?

(उद्धरण)

३

ट्रेड-यूनियनवादी और सामाजिक-जनवादी राजनीति

(ङ) जनवाद के लिए सबसे आगे बढ़कर लड़नेवाले के रूप में मज़दूर वर्ग

हम देख चुके हैं कि अधिक से अधिक व्यापक राजनीतिक आंदोलन चलाना और इसलिए सर्वांगीण राजनीतिक भंडाफ़ोड़ का संगठन करना गतिविधि का एक बिल्कुल ज़रूरी और **सबसे ज़्यादा तात्कालिक ढंग से** ज़रूरी कार्यभार है, बशर्ते कि यह गतिविधि सचमुच सामाजिक-जनवादी ढंग की हो। परंतु हम इस नतीजे पर **केवल** इस आधार पर पहुंचे थे कि मज़दूर वर्ग को राजनीतिक शिक्षा और राजनीतिक ज्ञान की फ़ौरन ज़रूरत है। लेकिन यह सवाल को पेश करने का एक बहुत संकुचित ढंग है, कारण कि यह आम तौर पर हर सामाजिक-जनवादी आंदोलन के और ख़ास तौर पर वर्तमान काल के रूसी सामाजिक-जनवादी आंदोलन के आम जनवादी कार्यभारों को भुला देता है। अपनी बात को और ठोस ढंग से समझाने के लिए हम मामले के उस पहलू को लेंगे, जो अर्थवादियों के सबसे ज़्यादा "नज़दीक" है, यानी हम व्यावहारिक पहलू को लेंगे। "हर आदमी यह मानता है" कि मज़दूर वर्ग की राजनीतिक चेतना को बढ़ाना ज़रूरी है। सवाल यह है कि यह काम **कैसे** किया जाये, इसको करने के लिए क्या आवश्यक है? आर्थिक संघर्ष मज़दूरों को केवल मज़दूर वर्ग के प्रति सरकार के रवैये से संबंधित सवाल उठाने की "प्रेरणा देता है" और इसलिए हम "आर्थिक संघर्ष को ही राजनीतिक रूप देने" की **चाहे जितनी भी कोशिश करें**, इस लक्ष्य की सीमाओं के अंदर-अंदर रहते हुए हम मज़दूरों की राजनीतिक चेतना को **कभी भी ऊंचा** (सामाजिक-जनवादी राजनीतिक चेतना के स्तर तक) **नहीं उठा पायेंगे**, कारण कि ये

सीमाएं बहुत संकुचित हैं। मार्तीनोव का सूत्र[10] हमारे लिए थोड़ा-बहुत महत्व रखता है, इसलिए नहीं कि उससे चीज़ों को उलझा देने की मार्तीनोव की योग्यता प्रकट होती है, बल्कि इसलिए कि उससे वह बुनियादी ग़लती साफ़ हो जाती है, जो सारे अर्थवादी करते हैं, अर्थात उनका यह विश्वास कि मज़दूरों की राजनीतिक वर्ग चेतना को उनके आर्थिक संघर्ष के **अंदर से** बढ़ाया जा सकता है, अर्थात इस संघर्ष को एकमात्र (या कम से कम मुख्य) प्रारंभिक बिंदु मानकर, उसे अपना एकमात्र (या कम से कम मुख्य) आधार बनाकर राजनीतिक वर्ग चेतना बढ़ायी जा सकती है। यह दृष्टिकोण बुनियादी तौर पर ग़लत है। अर्थवादी लोग उनके ख़िलाफ़ हमारे वाद-विवाद से नाराज़ होकर इन मतभेदों के मूल कारणों पर गंभीरतापूर्वक विचार करने से इनकार करते हैं, जिसका यह परिणाम होता है कि हम एक दूसरे को क़तई नहीं समझ पाते, दो अलग-अलग ज़बानों में बोलते हैं।

मज़दूरों में राजनीतिक वर्ग चेतना **बाहर से ही** लायी जा सकती है, यानी केवल आर्थिक संघर्ष के बाहर से, मज़दूरों और मालिकों के संबंधों के क्षेत्र के बाहर से। वह जिस एकमात्र क्षेत्र से आ सकती है, वह राज्यसत्ता तथा सरकार के साथ **सभी** वर्गों तथा संस्तरों के संबंधों का क्षेत्र है, वह **सभी** वर्गों के आपसी संबंधों का क्षेत्र है। इसलिए इस सवाल का जवाब कि मज़दूरों तक राजनीतिक ज्ञान ले जाने के लिए क्या करना चाहिए, केवल यह नहीं हो सकता कि "मज़दूरों के बीच जाओ" – अधिकतर व्यावहारिक कार्यकर्त्ता, विशेषकर वे लोग, जिनका झुकाव अर्थवाद की ओर है, यह जवाब देकर ही संतोष कर लेते हैं। **मज़दूरों** तक राजनीतिक ज्ञान ले जाने के लिए सामाजिक-जनवादी कार्यकर्ताओं को **आबादी के सभी वर्गों के बीच जाना** चाहिए और अपनी सेना की टुकड़ियों को **सभी दिशाओं में** भेजना चाहिए।

हमने इस बेडौल सूत्र को जान-बूझकर चुना है, हमने जान-बूझकर अपना मत अति सरल, एकदम दो-टूक ढंग से व्यक्त किया है – इसलिए नहीं कि हम विरोधाभासों का प्रयोग करना चाहते हैं, बल्कि इसलिए कि हम अर्थवादियों को वे काम करने की 'प्रेरणा देना" चाहते हैं, जिन्हें वे बड़े अक्षम्य ढंग से अनदेखा कर देते हैं, हम उन्हें ट्रेड-यूनियनवादी राजनीति और सामाजिक-जनवादी राजनीति के बीच

अंतर देखने की "प्रेरणा देना" चाहते हैं, जिसे समझने से वे इनकार करते हैं। अतएव हम पाठकों से यह प्रार्थना करेंगे कि वे झुंझलायें नहीं, बल्कि अंत तक ध्यान से हमारी बात सुनें।

पिछले चंद बरसों में जिस तरह का सामाजिक-जनवादी मंडल सबसे अधिक प्रचलित हो गया है, उसे ही ले लीजिये और उसके काम की जांच कीजिये। "मज़दूरों के साथ उसका संपर्क" रहता है और वह इससे संतुष्ट रहता है, वह परचे निकालता है, जिनमें कारख़ानों में होनेवाले अनाचारों, पूंजीपतियों के साथ सरकार के पक्षपात और पुलिस के ज़ुल्म की निंदा की जाती है। मज़दूरों की सभाओं में जो बहस होती है, वह इन विषयों की सीमा के बाहर कभी नहीं जाती या जाती भी है, तो बहुत कम। ऐसा बहुत कम देखने में आता है कि क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास के बारे में, हमारी सरकार की घरेलू तथा विदेश नीति के प्रश्नों के बारे में, रूस तथा यूरोप के आर्थिक विकास की समस्याओं के बारे में और आधुनिक समाज में विभिन्न वर्गों की स्थिति के बारे में भाषणों या वाद-विवादों का संगठन किया जाता हो। और जहां तक समाज के अन्य वर्गों के साथ सुनियोजित ढंग से संपर्क स्थापित करने और बढ़ाने की बात है, उसके बारे में तो कोई सपने में भी नहीं सोचता। वास्तविकता यह है कि इन मंडलों के अधिकतर सदस्यों की कल्पना के अनुसार आदर्श नेता वह है, जो एक समाजवादी राजनीतिक नेता के रूप में नहीं, बल्कि ट्रेड-यूनियन के सचिव के रूप में अधिक काम करता है, क्योंकि हर ट्रेड-यूनियन का, मिसाल के लिए, किसी ब्रिटिश ट्रेड-यूनियन का सचिव आर्थिक संघर्ष चलाने में हमेशा मज़दूरों की मदद करता है, वह कार-ख़ानों में होनेवाले अनाचारों का भंडाफोड़ करने में मदद करता है, उन क़ानूनों तथा पगों के अनौचित्य का परदाफ़ाश करता है, जिनसे हड़ताल करने और धरना देने (हर किसी को यह चेतावनी देने के लिए कि अमुक कारख़ाने में हड़ताल चल रही है) की स्वतंत्रता पर आघात होता है, वह मज़दूरों को समझाता है कि पंच-अदालत का जज, जो स्वयं बुर्जुआ वर्गों से आता है, पक्षपातपूर्ण होता है, आदि, आदि। सारांश यह कि "मालिकों तथा सरकार के ख़िलाफ़ आर्थिक संघर्ष" ट्रेड-यूनियन का प्रत्येक सचिव चलाता है और उसके संचालन में मदद करता है। पर इस बात को हम जितना ज़ोर देकर कहें थोड़ा

है कि बस **इतने ही से** सामाजिक-जनवाद **नहीं हो जाता**, कि सामाजिक-जनवादी का आदर्श ट्रेड-यूनियन का सचिव नहीं, बल्कि एक ऐसा **जन-नायक** होना चाहिए, जिसमें अत्याचार और उत्पीड़न के प्रत्येक उदाहरण से, वह चाहे किसी भी स्थान पर हुआ हो और उसका चाहे किसी भी वर्ग या संस्तर से संबंध हो, विचलित हो उठने की क्षमता हो; उसमें इन तमाम उदाहरणों का सामान्यीकरण करके पुलिस की हिंसा तथा पूंजीवादी शोषण का एक अविभाज्य चित्र बनाने की क्षमता होनी चाहिए; उसमें प्रत्येक घटना का, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, लाभ उठाकर अपने समाजवादी विश्वासों तथा अपनी जनवादी मांगों को **सभी लोगों को** समझा सकने और सभी **लोगों को** सर्वहारा के मुक्ति-संग्राम का विश्व ऐतिहासिक महत्व समझा सकने की क्षमता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, (इंगलैंड की सबसे शक्तिशाली ट्रेड-यूनियनों में से एक, बॉयलर-मेकर्स सोसाइटी के विख्यात सचिव एवं नेता) राबर्ट नाइट जैसे नेता की विल्हेल्म लीब्कनेख़्त जैसे नेता से तुलना करके देखिये और इन दोनों पर उन अंतरों को लागू करने की कोशिश कीजिये, जिनमें मार्तीनोव ने 'ईस्क्रा'[11] के साथ अपने मतभेदों को प्रकट किया है। आप पायेंगे – मैं मार्तीनोव के लेख पर नज़र डालना शुरू कर रहा हूं – कि जहां राबर्ट नाइट "जनता का कुछ ठोस कार्रवाइयों के लिए आह्वान" ज़्यादा करते थे (पृ० ३९), वहां विल्हेल्म लीब्कनेख़्त "सारी वर्तमान व्यवस्था का या उसकी आंशिक अभिव्यक्तियों का क्रांतिकारी स्पष्टीकरण" करने की ओर अधिक ध्यान देते थे (पृ० ३८-३९); जहां राबर्ट नाइट "सर्वहारा की तात्कालिक मांगों को निर्धारित करते थे तथा उनको प्राप्त करने के उपाय बताते थे" (पृ० ४१), वहां विल्हेल्म लीब्कनेख़्त यह करने के साथ-साथ "विभिन्न विरोधी संस्तरों की सक्रिय गतिविधियों का संचालन करने" तथा "उनके लिए काम का एक सकारात्मक कार्यक्रम निर्दिष्ट करने"* से नहीं हिचकते थे (पृ० ४१); राबर्ट नाइट

---

* मिसाल के लिए, फ़्रांस और प्रशा के युद्ध[12] के समय लीब्कनेख़्त ने **पूरे जनवादी पक्ष** के लिए कार्रवाई का एक कार्यक्रम निर्दिष्ट किया था – और मार्क्स तथा एंगेल्स ने तो १८४८ में यह और भी बड़े पैमाने पर किया था।

ही थे, जिन्होंने "जहां तक संभव हो, आर्थिक संघर्ष को ही राजनीतिक रूप देने" की कोशिश की (पृ० ४२) और वह "सरकार के सामने ऐसी ठोस मांगें रखने में, जिनसे कोई ठोस नतीजा निकलने की उम्मीद हो", बड़े शानदार ढंग से कामयाब हुए (पृ० ४३); लेकिन लीब्कनेख़्त "एकांगी" ढंग का "भंडाफोड़" करने में अधिक मात्रा में लगे रहते थे (पृ० ४०); जहां राबर्ट नाइट "नीरस दैनिक संघर्ष की प्रगति" को अधिक महत्व देते थे (पृ० ६१), वहां लीब्कनेख़्त "आकर्षक एवं पूर्ण विचारों के प्रचार" को ज़्यादा महत्वपूर्ण समझते थे (पृ० ६१); जहां लीब्कनेख़्त ने अपनी देखरेख में निकलनेवाले पत्र को "क्रांतिकारी विरोध-पक्ष का एक ऐसा मुखपत्र बना दिया था, जिसने हमारे देश की अवस्था का, विशेषतया राजनीतिक अवस्था का, जहां तक वह आबादी के सबसे विविध संस्तरों के हितों से टकराती थी, भंडाफोड़ किया" (पृ० ६३), वहां राबर्ट नाइट "सर्वहारा वर्ग के संघर्ष के साथ घनिष्ठ और सजीव संपर्क रखते हुए मज़दूर वर्ग के ध्येय के लिए काम करते थे (पृ० ६३) – यदि "घनिष्ठ और सजीव संपर्क" रखने का मतलब स्वयंस्फूर्ति की पूजा करना है, जिस पर हम ऊपर क्रिचेव्स्की तथा मार्तीनोव के उदाहरण का उपयोग करते हुए विचार कर चुके हैं – और "अपने प्रभाव के क्षेत्र को सीमित कर लेते थे", क्योंकि मार्तीनोव की तरह उनका भी यह विश्वास था कि ऐसा करके वह "उस प्रभाव को और गहरा बना देते थे" (पृ० ६३)। संक्षेप में, आप देखेंगे कि मार्तीनोव सामाजिक-जनवाद को de facto * ट्रेड-यूनियनवाद के स्तर पर उतार लाते हैं, हालांकि वह ऐसा स्वभावतः इसलिए नहीं करते कि वह सामाजिक-जनवाद का भला नहीं चाहते, बल्कि केवल इसलिए करते हैं कि प्लेख़ानोव को समझने की तकलीफ़ गवारा करने के बजाय उन्हें प्लेख़ानोव को और गूढ़ बनाने की जल्दी पड़ी हुई है।

लेकिन आइये, अपने बयान की ओर लौट आयें। हमने कहा था कि यदि कोई सामाजिक-जनवादी सचमुच सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक चेतना को सर्वांगीण रूप से विकसित करना आवश्यक समझता है, तो उसे "आबादी के सभी वर्गों के बीच जाना" चाहिए। इससे नीचे

---

* – वस्तुतः। – **सं०**

लिखे ये सवाल पैदा होते हैं: यह कैसे किया जाये? क्या यह करने के लिए हमारे पास काफ़ी शक्तियां हैं? क्या सभी अन्य वर्गों में इस प्रकार का काम करने के लिए कोई आधार मौजूद है? क्या ऐसा करने का अर्थ या इसका नतीजा वर्गीय दृष्टिकोण से पीछे हटना नहीं होगा? आइये, इन सवालों पर थोड़ा विचार करें।

हमें सिद्धांतकारों के रूप में, प्रचारकों, आंदोलनकर्ताओं और संगठनकर्ताओं के रूप में "आबादी के सभी वर्गों के बीच जाना" चाहिए। इस बात में किसी को संदेह नहीं है कि सामाजिक-जनवादियों के सैद्धांतिक काम का लक्ष्य विभिन्न वर्गों की सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति की सभी विशेषताओं का अध्ययन होना चाहिए। परंतु कारख़ानों के जीवन की विशेषताओं का अध्ययन करने का जितना प्रयत्न किया जाता है, उसकी तुलना में इस प्रकार के अध्ययन का काम बहुत ही कम, हद दरजे तक कम, किया जाता है। समितियों और मंडलों में आपको कितने ही ऐसे लोग मिलेंगे, जो मसलन धातु-उद्योग की किसी विशेष शाखा के अध्ययन में ही डूबे हुए हैं, पर इन संगठनों में आपको ऐसे सदस्य शायद ही कभी ढूंढ़े मिलेंगे, जो (जैसा कि अकसर होता है, किसी कारणवश व्यावहारिक काम नहीं कर सकते) हमारे देश के सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन के किसी ऐसे तात्कालिक प्रश्न के संबंध में विशेष रूप से सामग्री एकत्रित कर रहे हों, जो आबादी के अन्य हिस्सों में सामाजिक-जनवादी काम करने का साधन बन सके। मज़दूर वर्ग के आंदोलन के वर्तमान नेताओं में से अधिकतर में प्रशिक्षा के अभाव की चर्चा करते हुए हम इस प्रसंग में भी प्रशिक्षा की बात का ज़िक्र किये बिना नहीं रह सकते, क्योंकि "सर्वहारा के संघर्ष के साथ घनिष्ठ और सजीव संपर्क" की अर्थवादी अवधारणा से इसका भी गहरा संबंध है। लेकिन निस्संदेह, मुख्य बात है जनता के सभी संस्तरों के बीच **प्रचार** और **आंदोलन**। पश्चिमी यूरोप के सामाजिक-जनवादी कार्यकर्ता को इस मामले में उन सार्वजनिक सभाओं और प्रदर्शनों से, जिनमें भाग लेने की **सबको** स्वतंत्रता होती है, और इस बात से बड़ी आसानी हो जाती है कि वह संसद के अंदर **सभी** वर्गों के प्रतिनिधियों से बातें करता है। हमारे यहां न तो संसद है और न सभा करने की आज़ादी, फिर भी हम वैसे मज़दूरों की बैठकें करने में समर्थ हैं, जो **सामाजिक-जनवादी** की बातों को सुनना चाहते हैं। हमें

आबादी के उन सभी वर्गों के प्रतिनिधियों की सभाएं बुलाने में भी समर्थ होना चाहिए, जो किसी **जनवादी** की बातों को सुनना चाहते हैं, कारण कि वह आदमी सामाजिक-जनवादी नहीं है, जो व्यवहार में यह भूल जाता है कि "कम्युनिस्ट हर क्रांतिकारी आंदोलन का समर्थन करते हैं"[13], कि इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि अपने समाजवादी विश्वासों को एक क्षण के लिए भी न छिपाते हुए हम **समस्त जनता के सामने आम जनवादी कार्यभारों** की व्याख्या करें तथा उन पर ज़ोर दें। वह आदमी सामाजिक-जनवादी नहीं है, जो व्यवहार में यह भूल जाता है कि **सभी** आम जनवादी समस्याओं को उठाने, तीक्ष्ण बनाने और हल करने में उसे और **सब लोगों से आगे रहना है** ...

४

अर्थवादियों का नौसिखुआपन और क्रांतिकारियों का संगठन

(क) नौसिखुआपन किसे कहते हैं?

१८९४-१९०१ के काल के एक लाक्षणिक सामाजिक-जनवादी मंडल के कार्य का संक्षिप्त विवरण देकर हम इस सवाल का जवाब देने का प्रयत्न करेंगे। हम यह बता चुके हैं कि इस काल में समस्त विद्यार्थी युवकों का समुदाय मार्क्सवाद में डूबा हुआ था। ज़ाहिर है कि ये विद्यार्थी मार्क्सवाद में केवल एक सिद्धांत के रूप में नहीं डूबे हुए थे, बल्कि यों कहें कि वे एक सिद्धांत के रूप में उसकी ओर इतना ज़्यादा आकर्षित नहीं हुए थे, जितना इसलिए कि वह उन्हें इस प्रश्न का उत्तर देता था: "क्या करें?", उसे वे दुश्मन के ख़िलाफ़ मैदान में उतर पड़ने के आह्वान के रूप में देखते थे। और ये नये योद्धा ही भोंडे हथियार और प्रशिक्षा लेकर मैदान में उतरते थे। बहुत से उदाहरणों में तो उनके पास प्रायः एक भी हथियार और ज़रा भी प्रशिक्षा नहीं होती थी। वे इस तरह लड़ने चलते थे, मानो किसान खेत में अपने हल छोड़कर और केवल एक-एक लाठी हाथ में उठाकर वहां

से लड़ने के लिए दौड़ पड़े हों। विद्यार्थियों का मंडल, जिसका आंदोलन के पुराने सदस्यों से कोई संपर्क नहीं होता, जिसका दूसरे नगरों के मंडलों से, यहां तक कि उसी शहर के अन्य भागों के मंडलों से (या दूसरे विश्वविद्यालयों के मंडलों से) कोई संपर्क नहीं होता, जो क्रांतिकारी कार्य की विभिन्न शाखाओं का कोई संगठन नहीं करता, जो थोड़े-बहुत लंबे समय के लिए भी कार्य की कोई विधिवत योजना नहीं बनाता – ऐसा मंडल झट मज़दूरों से संपर्क क़ायम करके काम शुरू कर देता है। मंडल धीरे-धीरे अपना प्रचार-कार्य और आंदोलन-कार्य बढ़ाता जाता है, अपने काम से वह मज़दूरों के अपेक्षाकृत बड़े हिस्सों की और पढ़े-लिखे वर्गों के भी कुछ लोगों की सहानुभूति प्राप्त कर लेता है, जिनसे उसे रुपया भी मिल जाता है और जिनमें से "समिति" युवकों के नये दल भरती कर लेती है। समिति की (या संघर्ष करनेवाली लीग की) आकर्षणशक्ति बढ़ जाती है, उसका कार्यक्षेत्र विस्तृत हो जाता है और उसका काम बिल्कुल स्वयंस्फूर्त ढंग से फैल जाता है : वे ही लोग, जो एक साल या चंद महीने पहले विद्यार्थी मंडल की सभाओं में बोला करते थे और इस प्रश्न पर बहस किया करते थे कि "किधर जाना है", जिन्होंने मज़दूरों के साथ संपर्क क़ायम किया था और क़ायम रखा था और जो परचे लिखते और छापते थे, अब क्रांतिकारियों के दूसरे दलों से संपर्क क़ायम करते हैं, साहित्य जुटाते हैं, एक स्थानीय पत्र निकालने की तैयारी शुरू करते हैं, प्रदर्शन संगठित करने की बातें करने लगते हैं और अंत में खुली जंग शुरू कर देते हैं (यह खुली जंग परिस्थितियों के अनुसार कई रूप ले सकती है, जैसे पहले आंदोलनात्मक परचे का प्रकाशन, या पत्र के पहले अंक का निकलना, या पहले प्रदर्शन का संगठित किया जाना)। और आम तौर पर उनकी पहली कार्रवाई ही फ़ौरन पूरी तरह असफल हो जाती है। फ़ौरन और पूरी तरह इसलिए कि यह खुली जंग एक लंबे और दृढ़ संघर्ष की किसी सुव्यवस्थित और अच्छी तरह से सोच-विचारकर बनायी गयी और क़दम-ब-क़दम तैयार की गयी योजना का परिणाम नहीं थी, बल्कि वह केवल मंडलों के परंपरागत काम के स्वयंस्फूर्त विकास का परिणाम थी ; कारण कि लगभग हर जगह पुलिस स्वभावतया स्थानीय आंदोलन के मुख्य नेताओं को जानती थी, क्योंकि उन्होंने अपने स्कूली ज़माने में ही "नाम कमा लिया था" और पुलिस सिर्फ़ इस इंतज़ार में रहती

थी कि उचित अवसर आये, तो छापा मारे, वह मंडल को अपना काम बढ़ाने के लिए जान-बूझकर काफ़ी समय दे देती थी, ताकि corpus delicti* प्रकाश में आ सकें और कई पहचाने हुए आदमियों को सदा खुला छोड़े रहती थी, ताकि वे "नयी नसल पैदा कर सकें" (जहां तक मैं जानता हूं, हमारे लोग और राजनीतिक पुलिसवाले, दोनों ही इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग करते हैं)। इस तरह की जंग की तुलना बरबस उन किसानों की जंग से ही करनी पड़ती है, जो लाठियां लेकर आधुनिक फ़ौज से लड़ने निकल पड़ते हैं। और इस आंदोलन की जीवन-शक्ति को देखकर सचमुच आश्चर्य होता है, क्योंकि उसके योद्धाओं में प्रशिक्षण का पूर्ण अभाव होते हुए भी यह आंदोलन फैलता गया, बढ़ता गया और विजय भी हासिल करता गया। यह सच है कि ऐतिहासिक दृष्टि-कोण से शुरू-शुरू में अस्त्रों का पिछड़ा हुआ होना न केवल अवश्यंभावी था, बल्कि **उचित भी** था, क्योंकि उससे बड़े पैमाने पर योद्धाओं को भरती करने में मदद मिलती थी। परंतु जब गंभीर लड़ाइयां शुरू हुईं (१८९६ की गरमियों में हुई हड़तालों से ही दरअसल ये लड़ाइयां शुरू हो गयी थीं), तब हमारे जुझारू संगठन में जो दोष थे, वे अधिकाधिक प्रकट होने लगे। शुरू में सरकार घबरा गयी और उसने अनेक ग़लत क़दम भी उठाये (उदाहरण के लिए, उसने समाजवादियों के कुकर्मों का वर्णन करते हुए जनता के नाम एक अपील निकाली, या राजधानी से निर्वासित करके मज़दूरों को प्रांतीय औद्योगिक केंद्रों में भेज दिया), परंतु बहुत जल्द उसने अपने को संघर्ष की नयी परि-स्थितियों के अनुरूप ढाल लिया और हर तरह के अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित अपने ख़ुफ़िया एजेंटों, गुप्तचरों और राजनीतिक पुलिसवालों के दस्ते जगह-जगह तैनात कर दिये। नित नयी जगहों पर छापे मारे जाने लगे, उनकी लपेट में इतने अधिक लोग आये और स्थानीय मंडलों का इस बुरी तरह सफ़ाया हुआ कि आम मज़दूरों से उनका एक-एक नेता छिन गया, आंदोलन ने इतना असंगठित और इतना अविश्वसनीय छुटपुट रूप धारण किया कि काम में क्रम और तालमेल बनाये रखना बिल्कुल असंभव हो गया था। स्थानीय नेताओं का बुरी तरह इधर-उधर बिखरे रहना, मंडलों का सांयोगिक गठन, सैद्धांतिक, राजनीतिक तथा संगठ-

---

* – अपराध-तत्व। – **सं०**

नात्मक प्रश्नों के संबंध में प्रशिक्षण का अभाव और संकुचित दृष्टिकोण –ये तमाम बातें इन परिस्थितियों का लाज़िमी नतीजा थीं, जिनका हमने ऊपर वर्णन किया है। हालत यह हो गयी कि कई जगहों पर मज़दूर हममें डटकर काम करने तथा गुप्त बातों को छिपा रखने की क्षमता का अभाव देखकर बुद्धिजीवियों में विश्वास खोने लगे और उनसे कन्नी काटने लगे, वे कहने लगे कि बुद्धिजीवी बहुत लापरवाह होते हैं और अपने को बहुत शीघ्र पुलिस के हवाले कर देते हैं!..

(ख) मज़दूरों का संगठन और क्रांतिकारियों का संगठन

..."सौ मूर्खों के मुक़ाबले एक दर्जन बुद्धिमानों का सफ़ाया करना ज़्यादा आसान है।" यह विलक्षण सत्य (जिसके लिए सौ मूर्ख सदा आपकी प्रशंसा करेंगे) आपको इतना स्पष्ट केवल इसलिए लगता है कि तर्क करते-करते आप यकायक एक प्रश्न को छोड़ दूसरे प्रश्न पर पहुंच गये हैं। आपने जिस बात की चर्चा शुरू की थी और जिसकी चर्चा अब भी कर रहे हैं, वह है एक "समिति" अथवा "संगठन" का सफ़ाया हो जाने की बात, और अब आप यकायक "गहराई" में आंदोलन की "जड़ों" का सफ़ाया होने के प्रश्न पर पहुंच गये हैं। ज़ाहिर है कि हमारे आंदोलन को मिटाना इसलिए असंभव है कि उसकी सैकड़ों और लाखों जड़ें जनता में बहुत गहराई तक पहुंच चुकी हैं, परंतु इस समय चर्चा का विषय यह नहीं है। जहां तक "गहरी जड़ों" का प्रश्न है, तो आज भी, हमारे तमाम नौसिखुआपन के बावजूद, कोई हमारा "सफ़ाया" नहीं कर सकता, फिर भी हम यह शिकायत करते हैं और शिकायत किये बिना नहीं रह सकते कि "**संगठनों**" का सफ़ाया हो जाता है और उसके परिणामस्वरूप आंदोलन का क्रम बनाये रखना असंभव हो जाता है। लेकिन आपने चूंकि **संगठनों** का सफ़ाया हो जाने का सवाल उठाया है और इस सवाल पर आप अड़े रहना ही चाहते हैं, इसलिए मैं ज़ोर देकर कहता हूं कि सौ मूर्खों की तुलना में एक दर्जन बुद्धिमानों का सफ़ाया करना कहीं ज़्यादा मुश्किल है। और आप भीड़ को मेरे "जनवाद विरोधी" विचारों, आदि के ख़िलाफ़ चाहे जितना भी भड़कायें, पर मैं सदा इस प्रस्थापना की पैरवी करूंगा। जैसा कि मैं बार-बार

कह चुका हूं, संगठन के संबंध में "बुद्धिमानों" से मेरा मतलब **पेशेवर क्रांतिकारियों** से है। उसमें इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि उनको विद्यार्थियों में से प्रशिक्षित किया गया है या मज़दूरों में से। मैं ज़ोर देकर यह कहता हूं: (१) नेताओं के एक स्थायी और आंदोलन का क्रम बनाये रखनेवाले संगठन के बिना कोई भी क्रांतिकारी आंदोलन टिकाऊ नहीं हो सकता; (२) जितने अधिक व्यापक पैमाने पर जनता स्वयंस्फूर्त ढंग से संघर्ष में खिंचते हुए आंदोलन का आधार बनेगी और उसमें भाग लेगी, ऐसा संगठन बनाना उतना ही ज़्यादा ज़रूरी होता जायेगा, और इस संगठन को उतना ही अधिक मज़बूत बनना होगा (क्योंकि जनता के अधिक पिछड़े हुए हिस्सों को गुमराह करना लफ़्फ़ाज़ों के लिए ज़्यादा आसान होता है); (३) इस प्रकार के संगठन में मुख्यतया ऐसे लोगों को होना चाहिए, जो अपने पेशे के रूप में क्रांतिकारी कार्य करते हों; (४) स्वेच्छाचारी राज्य में इस प्रकार के संगठन की सदस्यता को हम जितना ही अधिक ऐसे लोगों तक **सीमित** रखेंगे, जो अपने पेशे के रूप में क्रांतिकारी कार्य करते हों और जो राजनीतिक पुलिस को मात देने की विद्या सीख चुके हों, ऐसे संगठन का "सफ़ाया करना" उतना ही अधिक मुश्किल होगा; और (५) मज़दूर वर्ग तथा समाज के अन्य वर्गों के उतने ही **अधिक** लोगों के लिए यह संभव हो सकेगा कि वे आंदोलन में शामिल हों और उसमें सक्रिय काम करें।

मैं अपने अर्थवादी, आतंकवादी और "अर्थवादी-आतंकवादी"*

---

* 'स्वोबोदा'[14] को आतंकवादी न कहकर शायद यह नाम देना अधिक उचित होगा, क्योंकि 'क्रांतिवाद का पुनरुत्थान' शीर्षक लेख में आतंकवाद का समर्थन किया गया है और जिस लेख की हम इस समय आलोचना कर रहे हैं, उसमें अर्थवाद की हिमायत की गयी है। 'स्वोबोदा' के बारे में कहा जा सकता है कि नेकी सोचे, बदी करे। 'स्वोबोदा' के मंशा और इरादे बड़े भले हैं—पर नतीजा होता है सरासर गड़बड़ी; इसका मुख्य कारण यह है कि 'स्वोबोदा' संगठन के क्रम को अटूट रखना तो ज़रूरी समझता है, पर वह क्रांतिकारी चिंतन तथा सामाजिक-जनवादी सिद्धांत के क्रम के अटूट रहने की आवश्यकता को नहीं मानता। वह पेशेवर क्रांतिकारी को पुनर्जीवित करना चाहता

मित्रों को निमंत्रण देता हूं कि वे इन प्रस्थापनाओं का खंडन करें। इस समय मैं केवल अंत की दो प्रस्थापनाओं की चर्चा करूंगा। यह प्रश्न कि "एक दर्जन बुद्धिमानों" का सफ़ाया करना ज़्यादा आसान है या "सौ मूर्खों" का, अंत में उस प्रश्न का रूप धारण कर लेता है, जिस पर हम ऊपर विचार कर चुके हैं, यानी यह कि जब सख़्त गोपनीयता रखना आवश्यक हो, तब क्या एक जन-**संगठन** बनाना संभव है? किसी जन-संगठन में हम वह सख़्त गोपनीयता हासिल नहीं कर सकते, जो सरकार के ख़िलाफ़ दृढ़ तथा सिलसिलेवार संघर्ष चलाने के लिए परम अनिवार्य है। परंतु तमाम गुप्त कामों को पेशेवर क्रांतिकारियों की यथासंभव छोटी से छोटी संख्या के हाथों में केंद्रित कर देने का मतलब यह नहीं होता कि ये क्रांतिकारी ही "सब लोगों के लिए सोचा करेंगे" और भीड़ **आंदोलन** में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेगी। इसके विपरीत भीड़ अपने बीच में से अधिकाधिक संख्या में पेशेवर क्रांतिकारियों को पैदा करेगी, क्योंकि वह समझेगी कि चंद विद्यार्थियों और आर्थिक संघर्ष चलानेवाले चंद मज़दूरों का एक जगह जमा होकर एक "समिति" बना लेना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि पेशेवर क्रांतिकारी बनने के लिए वर्षों का प्रशिक्षण आवश्यक होता है; तब भीड़ केवल नौसिखुए तरीक़ों के ही बारे में नहीं, बल्कि ऐसे प्रशिक्षण के बारे में भी "सोचेगी"। **संगठन** के गुप्त कामों के केंद्रीकरण का यह मतलब कदापि नहीं होता कि **आंदोलन** के सभी कामों का केंद्रीकरण कर दिया जायेगा। अवैध अख़बार के काम में जनता का बड़ी से बड़ी संख्या में सक्रिय भाग लेना इस बात से कोई कम नहीं हो जायेगा कि अख़बार से संबंधित गुप्त काम "एक दर्जन" पेशेवर क्रांतिकारियों के हाथों में केंद्रित रहेंगे, बल्कि इसके विपरीत दस गुना **बढ़ जायेगा**।

है ('क्रांतिवाद का पुनरुत्थान') और इसके लिए वह एक तो उत्तेजना पैदा करनेवाले आतंकवादी कार्यों का प्रयोग करने, और, दूसरे, "औसत मज़दूरों का संगठन बनाने" का सुझाव रखता है ('स्वोबोदा', अंक १, पृ० ६६ और उससे आगे), जिन्हें "बाहर से धक्का देने" की कम आवश्यकता पड़े। दूसरे शब्दों में वह घर को गरम रखने के लिए लकड़ी जुटाने के वास्ते घर को ही ढा देना चाहता है।

इस प्रकार और केवल इसी प्रकार हम इस बात की गारंटी कर सकेंगे कि अवैध साहित्य को पढ़ने, उसके लिए लिखने और कुछ हद तक उसको बांटने का भी काम **एक तरह से गुप्त काम नहीं रह जायेगा**, क्योंकि बहुत जल्द पुलिस इस नतीजे पर पहुंच जायेगी कि हज़ारों की संख्या में बंटनेवाले प्रकाशनों की एक-एक प्रति पर सरकार की पूरी अदालती और प्रशासनिक दफ़्तरशाही को लगाना उपहासास्पद और असंभव है। यह बात न केवल प्रकाशनों पर, बल्कि आंदोलन के प्रत्येक पहलू पर, और यहां तक कि प्रदर्शनों पर भी लागू होती है। प्रदर्शन में जनता के बड़ी संख्या में और सक्रिय भाग लेने में कोई कमी नहीं आयेगी, बल्कि उसमें इस बात से और फ़ायदा होगा कि इस काम के सारे गुप्त पहलुओं – परचे तैयार करना, मोटे तौर पर योजनाएं बनाना, हर शहरी मोहल्ले, हर औद्योगिक इलाक़े तथा हर स्कूल-कालेज के लिए नेताओं को नियुक्त करना, आदि – को "एक दर्जन" ऐसे अनुभवी क्रांतिकारियों के हाथों में केंद्रित कर दिया जाये, जिनकी प्रशिक्षा अपने पेशे के मामले में पुलिसवालों की टक्कर की हो (मैं जानता हूं कि मेरे "ग़ैर-जनवादी" विचारों पर एतराज़ किया जायेगा, पर इस विवेकहीन एतराज़ का मैं बाद में उचित जवाब दूंगा)। यदि बहुत ही गुप्त कामों को क्रांतिकारियों के एक संगठन के हाथों में केंद्रित कर दिया जायेगा, तो इससे ऐसे अनेक अन्य संगठनों के कार्य के विस्तार और गुण में कोई कमी नहीं आयेगी, बल्कि इसके विपरीत उसमें बढ़ती ही होगी, जो आम जनता के लिए होते हैं और इसलिए कम से कम बाक़ायदा होते हैं और यथासंभव कम गुप्त होते हैं, जैसे मज़दूरों की ट्रेड-यूनियनें, मज़दूरों के आत्म-शिक्षा मंडल, अवैध साहित्य पढ़नेवाले मंडल, आबादी के अन्य **तमाम** संस्तरों में काम करनेवाले समाजवादी मंडल और जनवादी मंडल भी, इत्यादि, इत्यादि। ऐसे मंडलों, ट्रेड-यूनियनों और संगठनों को हर जगह और **बड़ी से बड़ी** संख्या में होना चाहिए और उन्हें तरह-तरह के काम करने चाहिए। पर इन संगठनों को और **क्रांतिकारियों** के संगठन को **एक चीज़ समझना**, उनके बीच जो फ़र्क़ है, उसको मिटा देना और जनता की इस बात की हद दरजे की धुंधली समझ को कि जन-आंदोलन में काम करने के लिए कुछ ऐसे लोगों का होना ज़रूरी है, जो केवल सामाजिक-जनवादी कार्य करते हों, और कि ऐसे लोगों को बडे धैर्य और अध्यवसाय के साथ अपने को पेशेवर

क्रांतिकारी बनने की प्रशिक्षा **देनी चाहिए** – और भी धुंधला बना देना बेतुकी और हानिकर बात है।

हां, यह समझ अविश्वसनीय रूप से धुंधली पड़ गयी है। संगठन के मामले में हमारा सबसे बड़ा गुनाह यह है कि **हमने अपने नौसिखुएपन से रूस में क्रांतिकारियों की प्रतिष्ठा को धक्का पहुंचाया है।** जो आदमी सिद्धांत के मामले में ढीला-ढाला और ढुलमुल है, जिसका दृष्टिकोण संकुचित है, जो अपनी काहिली को छिपाने के लिए जनता की स्वयंस्फूर्ति की दुहाई देता है, जो जन-नायक के रूप में नहीं, बल्कि ट्रेड-यूनियन के सचिव के रूप में अधिक काम करता है, जो ऐसी किसी व्यापक तथा साहसी योजना पेश करने में असमर्थ है, जिसका विरोधी भी आदर करें, और जो ख़ुद अपने पेशे की कला में – राजनीतिक पुलिस को मात देने की कला में – अनुभवहीन और फूहड़ साबित हो चुका है, ज़ाहिर है कि ऐसा आदमी क्रांतिकारी नहीं, दयनीय नौसिखुआ है!

इन तीखे शब्दों से कोई सक्रिय कार्यकर्ता नाराज़ न हो, क्योंकि जहां तक अपर्याप्त प्रशिक्षण का प्रश्न है, मैं सबसे पहले अपने को ऐसे लोगों में शामिल करता हूं। मैं एक मंडल में [15] काम किया करता था, जिसने अपने लिए बड़ा लंबा-चौड़ा, सर्वतोमुखी कार्यक्रम बना रखा था, और उस मंडल के सदस्य, हम सभी लोग, इस बात का एहसास करके घोर पीड़ा का अनुभव करते थे कि हम इतिहास के एक ऐसे क्षण में नौसिखुए साबित हो रहे हैं, जबकि हम एक प्रसिद्ध उक्ति को बदलकर यह कह सकते थे: हमें क्रांतिकारियों का एक संगठन दे दो और हम पूरे रूस को उलट देंगे! उन दिनों जो शरम मुझे जलाती थी, उसकी मैं जितनी ही याद करता हूं, उतना ही मुझे उन नामधारी सामाजिक-जनवादियों पर क्रोध आता है, जिनकी सीखें क्रांतिकारियों के नाम को कलंकित करती हैं और जो यह नहीं समझते कि हमारा काम क्रांतिकारियों को नौसिखुओं के धरातल पर उतार लाने की पैरवी करना नहीं, बल्कि नौसिखुओं को **ऊपर उठाकर** क्रांतिकारियों के धरातल पर पहुंचा देना है।

(घ) संगठनात्मक कार्य का विस्तार

हम ब – व से "कार्य-क्षेत्र में उतरने के योग्य क्रांतिकारी शक्तियों की उस कमी के बारे में" सुन चुके हैं, "जो न केवल पीटर्सबर्ग में, बल्कि सारे रूस में महसूस की जा रही है"। इस बात से शायद ही किसी का मतभेद होगा। परंतु सवाल यह है कि इस कमी का कारण क्या है? ब – व लिखते हैं:

"हम इस घटना के ऐतिहासिक कारणों की व्याख्या में नहीं जायेंगे; यहां हम केवल इतना ही कहेंगे कि जिस समाज का मनोबल दीर्घकालीन राजनीतिक प्रतिक्रियावाद ने तोड़ दिया हो और पुराने तथा नये आर्थिक परिवर्तनों ने जिसे छिन्न-भिन्न कर रखा हो, वह **बहुत ही छोटी संख्या में ऐसे लोगों को** अपने बीच से पैदा करता है, **जो क्रांतिकारी कार्य करने के योग्य हों**; कि मज़दूर वर्ग अवश्य कुछ ऐसे क्रांतिकारी मज़दूर कार्यकर्ताओं को जन्म देता है, जिनसे ग़ैर-क़ानूनी संगठनों को कुछ हद तक नया बल मिलता है, परंतु इन क्रांतिकारियों की संख्या वक़्त की ज़रूरत को देखते हुए बहुत नाकाफ़ी होती है। इसका और कारण यह भी है कि कारख़ाने में रोज़ाना साढ़े ग्यारह घंटे काम करनेवाले मज़दूर की स्थिति ऐसी होती है कि वह मुख्यतया आंदोलनकर्ता का ही काम कर सकता है; लेकिन प्रचार और संगठन, अवैध साहित्य का पुनर्मुद्रण और वितरण, परचों का प्रकाशन, आदि ऐसी ज़िम्मेदारियां हैं, जो लाज़िमी तौर पर मुख्यतया बहुत ही थोड़े-से बुद्धिजीवियों के कंधों पर आ पड़ती हैं" ('राबोचेये देलो', अंक पृ० ३८–३९)।

ब – व से हमारा बहुत-सी बातों पर मतभेद है। ख़ास तौर पर उन शब्दों से, जिन पर हमने ज़ोर दिया है और जिनसे यह बात सबसे ज़्यादा साफ़ हो जाती है कि ब – व यद्यपि हमारे नौसिखुएपन से तंग आ गये हैं (जैसे कि स्थिति पर सोचनेवाला हर व्यावहारिक कार्यकर्ता तंग आ गया है), परंतु अर्थवाद से दबे होने के कारण वह इस असहनीय स्थिति से निकलने का कोई रास्ता तलाश करने में असमर्थ हैं। सच बात यह है कि समाज "काम" के योग्य **बहुत-से** व्यक्तियों को जन्म देता है, पर हम उन सबसे काम नहीं ले पाते। इस दृष्टि से हमारे आंदोलन की संकटमय तथा संक्रमणकालीन अवस्था का संक्षेप

में इस प्रकार वर्णन किया जा सकता है: **हमें लोग नहीं मिलते – हालांकि लोग बेशुमार हैं।** लोग बेशुमार हैं, क्योंकि मज़दूर वर्ग तथा समाज के अन्य विभिन्न हिस्से भी वर्ष प्रति वर्ष अधिकाधिक ऐसे लोगों को जन्म देते जाते हैं, जो असंतुष्ट हैं और अपना असंतोष व्यक्त करना चाहते हैं, जो उस निरंकुशता के ख़िलाफ़ संघर्ष में भरसक मदद करना चाहते हैं, जिसके असहनीय रूप को अभी सबने तो नहीं पहचाना है, पर जिसे बढ़ती हुई संख्या में लोग दिनोंदिन अधिक तेज़ी से महसूस करने लगे हैं। साथ ही, हमें लोग इसलिए नहीं मिलते कि हमारे पास ऐसे नेता नहीं हैं, ऐसे राजनीतिक नेता, इतने प्रतिभाशाली संगठनकर्ता नहीं हैं, जो इतने व्यापक आधार पर और साथ ही ऐसे सुचारु तथा समुचित ढंग से काम का संगठन कर सकें, जिससे सभी प्रकार की शक्तियों का, यहां तक कि छोटी से छोटी और महत्वहीन शक्तियों का भी उसमें भाग लेना संभव हो। "क्रांतिकारी संगठनों की प्रगति तथा विकास" न केवल मज़दूर वर्ग के आंदोलन के विकास की तुलना में पिछड़ा हुआ है, जिसे ब–व भी मानते हैं, बल्कि वह जनता के हर हिस्से के आम जनवादी आंदोलन के विकास की तुलना में भी पिछड़ा हुआ है। (आज ब–व शायद यह समझेंगे कि इससे उनके निष्कर्ष की ही पुष्टि होती है।) आंदोलन का स्वयंस्फूर्त आधार जितना विशाल है, उसकी तुलना में क्रांतिकारी कार्य का विस्तार बहुत संकुचित है, उसे चारों ओर से "मालिकों तथा सरकार के ख़िलाफ़ आर्थिक संघर्ष" के तुच्छ सिद्धांत ने जकड़ रखा है। फिर भी इस समय न सिर्फ़ राजनीतिक आंदोलनकर्ताओं को, बल्कि सामाजिक-जनवादी संगठनकर्ताओं को भी "आबादी के सभी वर्गों में जाना" चाहिए*। शायद ही किसी व्यावहारिक कार्यकर्ता

---

* मिसाल के लिए, कुछ समय से फ़ौज में जनवादी भावना का असंदिग्ध उत्थान स्पष्टतः दिखाई दे रहा है। आंशिक रूप से इसका कारण यह है कि अब उन्हें मज़दूरों और विद्यार्थियों जैसे "दुश्मनों" से ज़्यादा अधिकाधिक बार सड़कों पर लड़ना पड़ रहा है। जब हमारे उपलब्ध साधन इस बात की इजाज़त दें, तब हमें अवश्य ही फ़ौज के सिपाहियों और अफ़सरों के बीच प्रचार और आंदोलन पर तथा हमारी पार्टी से संबंधित "सैनिक संगठन" बनाने पर गंभीरता के साथ ध्यान देना चाहिए।

को इस बात में संदेह होगा कि सामाजिक-जनवादी अपने संगठनात्मक कार्य की हज़ारों छोटी-मोटी ज़िम्मेदारियों को विभिन्न वर्गों के अलग-अलग प्रतिनिधियों के बीच बांट सकते हैं। विशेषीकरण का अभाव हमारे काम की शैली का एक सबसे गंभीर दोष है, जिसके बारे में ब – व ने भी सख़्त और सही शिकायत की है। हमारे समान लक्ष्य में पृथक-पृथक "कार्रवाइयां" जितनी छोटी होंगी, उन्हें करने के लिए हमें उतने ही अधिक आदमी मिल जायेंगे (इनमें से अधिकांश लोग ऐसे होते हैं, जो क़तई पेशेवर क्रांतिकारी नहीं बन सकते) और पुलिस के लिए इन तमाम "छोटे-मोटे कामों को पूरा करनेवाले कार्यकर्ताओं" को "जाल में फंसाना" उतना ही ज़्यादा मुश्किल हो जायेगा, और तब वह किसी छोटे-से मामले में होनेवाली गिरफ़्तारी से कोई इतना बड़ा "मुक़दमा" भी न खड़ा कर सकेगी, जिससे "ख़ुफ़िया पुलिस" पर सरकार के ख़र्च का कोई औचित्य साबित हो सके। जहां तक हमारी मदद करने के लिए तैयार लोगों की संख्या का सवाल है, यह हम पिछले अध्याय में ही बता चुके हैं कि इस मामले में पिछले पांच वर्षों में बहुत ज़्यादा परिवर्तन हो चुका है। लेकिन दूसरी ओर, काम के इन तमाम छोटे-छोटे टुकड़ों को एक लड़ी में पिरोने के लिए, जिससे कि काम तो बंटे, पर आंदोलन न बंट जाये, और इस प्रकार के छोटे-मोटे काम करनेवालों के मन में यह विश्वास पैदा करने के लिए कि उनका काम आवश्यक और महत्वपूर्ण है, जिस विश्वास के बिना वे कभी काम न करेंगे*, यह ज़रूरी है कि हमारे पास परखे हुए क्रांतिकारियों का एक

---

* मुझे इस समय एक फ़ैक्टरी इंस्पेक्टर की याद आ रही है, जिसके बारे में मुझे एक साथी ने वताया था। यह फ़ैक्टरी इंस्पेक्टर सामाजिक-जनवादियों की मदद करना चाहता था और वास्तव में कर भी रहा था, पर उसे इस बात की बड़ी सख़्त शिकायत थी कि वह नहीं जानता कि उसकी दी हुई "इत्तिला" क्रांतिकारी केंद्र तक पहुंचती भी है या नहीं, उसकी मदद की सचमुच कितनी ज़रूरत है और वह जो कुछ छोटी-मोटी सेवा कर सकता है, उसका उपयोग करने की क्या संभावनाएं हैं। इसमें शक नहीं कि हर व्यावहारिक कार्यकर्ता इसी प्रकार के अनेक उदाहरण दे सकता है कि अपने नौसिखुएपन के कारण हम कितने ही सहयोगियों को खो बैठते थे। हमारे लिए इस तरह की सेवाएं,

मज़बूत संगठन हो। ऐसा संगठन जितना ही गुप्त होगा, जनता को पार्टी में उतना ही व्यापक और उतना ही दृढ़ विश्वास होगा, और जैसा कि हम जानते हैं, युद्ध के समय न केवल अपनी सेना का ख़ुद अपनी शक्ति में विश्वास दृढ़ करना, बल्कि दुश्मन को और सभी **तटस्थ** लोगों को भी इस ताक़त का यक़ीन दिलाना आवश्यक होता है; कभी-कभी तो कुछ शक्तियों की मित्रतापूर्ण तटस्थता ही मामले का निपटारा कर देती है। यदि हमारे पास ऐसा संगठन हो, जो मज़बूत सैद्धांतिक नींव पर खड़ा हो और जिसके पास एक सामाजिक-जनवादी पत्र भी हो, तो इसका कोई डर नहीं रहेगा कि आंदोलन की ओर जो बहुत से "बाहरी" लोग आकर्षित हुए हैं, वे उसे पथभ्रष्ट कर देंगे (इसके विपरीत, ख़ास तौर पर आजकल, जब चारों ओर नौसिखुएपन का बोल-बाला है, हम यह देखते हैं कि बहुत से सामाजिक-जनवादियों का झुकाव तो *Credo* की ओर है, और वे केवल अपने को ही सामाजिक-जनवादी

जो स्वतः तो बहुत "छोटी" होती हैं, पर मिलकर बहुत अमूल्य हो जाती हैं, न केवल कारख़ानों के दफ़्तरों के, बल्कि डाक विभाग, रेल विभाग, चुंगी विभाग के कर्मचारी तथा अफ़सर भी, अभिजात वर्ग में, पादरियों में और जीवन के **प्रत्येक** क्षेत्र में, यहां तक कि पुलिस और दरबारियों में से आनेवाले लोग भी कर सकते थे और करते थे! यदि हमारे पास एक असली पार्टी होती, क्रांतिकारियों का एक सच्चा और जुझारू संगठन होता, तो अपने इन तमाम "सहायकों" में से हम किसी पर भी बेजा बोझ न लादते, उन्हें हमेशा और हर बार अपने अवैध संगठन के हृदयस्थल में घसीटने की कोशिश न करते, बल्कि इसके विपरीत हम इन सभी कार्यकर्ताओं का बड़े ध्यानपूर्वक पोषण करते, यहां तक कि ऐसे लोगों को इस प्रकार के कामों का ख़ास तौर पर प्रशिक्षण भी देते और यह बात सदा ध्यान में रखते कि बहुत-से विद्यार्थी तब पार्टी की कहीं अधिक सेवा कर सकते हैं, जब वे "अल्प-कालीन" क्रांतिकारी न बनकर किसी ओहदे या पद पर बने रहें और पार्टी का केवल "सहायक" बनना क़बूल करें। परंतु मैं फिर कहता हूं कि इस कार्यनीति का उपयोग करने का अधिकार उसी संगठन को है, जिसने अपने पैर जमा लिये हों और जिसके पास सक्रिय कार्यकर्ताओं की कोई कमी न हो।

मानते हैं)। संक्षेप में, विशेषीकरण लाज़िमी तौर से केंद्रीकरण की पूर्वापेक्षा करता है और उसका बिना शर्त तक़ाज़ा करता है।

लेकिन खुद ब – व, जिन्होंने विशेषीकरण की आवश्यकता इतनी अच्छी तरह बतायी है, हमारी राय में अपने उपरोक्त तर्क के दूसरे भाग में इस चीज़ के महत्व को कम कर देते हैं। मज़दूर क्रांतिकारियों की संख्या अपर्याप्त है – वह कहते हैं। यह बात एकदम सच है और हम फिर इस बात पर ज़ोर देकर कहेंगे कि "एक निकटवर्ती पर्यवेक्षक ने" इस बारे में जो "मूल्यवान राय दी है", उससे सामाजिक-जनवादी आंदोलन के वर्तमान संकट के कारणों और फलस्वरूप उन्हें दूर करने के उपायों के बारे में हमारे मत की पूर्णतया पुष्टि होती है। न केवल सभी क्रांतिकारी आम तौर पर जनता के स्वयंस्फूर्त उभार की तुलना में पिछड़े हुए हैं, बल्कि मज़दूर क्रांतिकारी भी मज़दूर जनता के स्वयंस्फूर्त उभार की तुलना में पिछड़े हुए हैं। यह **तथ्य** अत्यंत स्पष्ट रूप से, "व्यावहारिक" दृष्टि से भी इस बात की पुष्टि कर देता है कि मज़दूरों के प्रति हमारे कर्त्तव्यों को लेकर हमें अकसर जो "शिक्षणशास्त्र" पढ़ाया जाता है, वह न केवल बेतुका है, बल्कि **राजनीतिक दृष्टि से प्रतिक्रियावादी भी है।** इस तथ्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारा सबसे पहला और सबसे ज़रूरी कर्त्तव्य यह है कि हम ऐसे मज़दूर क्रांति-कारियों के प्रशिक्षण का प्रबंध करें, जो **पार्टी कार्य के मामले में** उसी स्तर के साथी बन सकें, जिस स्तर के साथी बुद्धिजीवियों में से आये हुए क्रांतिकारी होते हैं ("पार्टी कार्य के मामले में" शब्दों पर हमने ज़ोर दिया है, क्योंकि अनिवार्य होते हुए भी और मामलों में मज़दूरों को बुद्धिजीवियों के स्तर पर ले आना न तो इतना आसान है और न इतना ज़रूरी ही है)। अतएव **मुख्यतया** हमें मज़दूरों को क्रांतिकारियों के स्तर तक **उठाने** की ओर ही ध्यान देना चाहिए; हमारा काम कदापि यह नहीं है कि हम "मज़दूर जनता" के स्तर पर **उतर** आयें, जैसा कि अर्थवादी चाहते हैं, या अनिवार्य रूप से "औसत मज़दूर" के स्तर पर उतर आयें, जैसा कि 'स्वोबोदा' चाहता है (जो इस संबंध में अर्थवादी "शिक्षणशास्त्र" की दूसरी सीढ़ी पर चढ़ जाता है)। मैं मज़दूरों के लिए सुबोध साहित्य की आवश्यकता से, और विशेष रूप से पिछड़े हुए मज़दूरों के लिए विशेष प्रकार के सुबोध (पर निस्संदेह सतही नहीं) साहित्य की आवश्यकता से ज़रा

भी इनकार नहीं करता। पर मुझे जो बात बुरी लगती है, वह यह है कि "शिक्षणशास्त्र" के प्रश्नों को सदा राजनीति और संगठन के प्रश्नों से उलझा दिया जाता है। आप महानुभाव, जो "औसत मज़दूरों" के बारे में बहुत ही चिंता प्रकट करते हैं, मज़दूर राजनीति या मज़दूर संगठन की चर्चा करने से पहले **नीचे झुकने** की अपनी इच्छा द्वारा असल में मज़दूरों का अपमान ही करते हैं। गंभीर बातों के बारे में सीधे ही खड़े होकर बातें कीजिये, और शिक्षाशास्त्र की बातें शिक्षा-शास्त्रियों के लिए ही छोड़ दीजिये, राजनीतिज्ञों और संगठनकर्ताओं को उनमें न घसीटिये! क्या बुद्धिजीवियों में भी उन्नत लोग, "औसत लोग" और "आम लोग" नहीं होते? क्या हर आदमी यह नहीं मानता कि बुद्धिजीवियों के लिए भी सुबोध साहित्य की आवश्यकता होती है और क्या ऐसा साहित्य लिखा नहीं जाता? मान लीजिये कि किसी ने कालेज या हाई स्कूल के विद्यार्थियों को संगठित करने के बारे में एक लेख लिखा हो और उसमें बार-बार – इस अंदाज़ से मानो कोई नया आविष्कार किया गया हो – यह दुहराया गया हो कि सबसे पहले हमें "औसत विद्यार्थियों का" संगठन बनाना चाहिए। यदि कोई ऐसा लेख लिखेगा, तो उसका मज़ाक बनाया ही जायेगा और यह उचित भी होगा। उससे कहा जायेगा: महाशय, यदि आपके दिमाग़ में संगठन के बारे में कुछ विचार हों, तो बताइये, इसे हम ख़ुद तय कर लेंगे कि कौन "औसत दर्जे" में आता है, कौन उसके ऊपर है और कौन औसत से नीचे है। लेकिन यदि आपके पास संगठन के बारे में **अपने** कोई विचार नहीं हैं, तो "आम लोगों" और "औसत लोगों" की इस बहस से आप केवल हमें उकता देंगे। आपको समझना चाहिए कि "राज-नीति" और "संगठन" के सवाल अपने आप में इतने गंभीर हैं कि उन पर केवल बहुत गंभीरता से ही विचार किया जा सकता है: हम मज़दूरों को (और विश्वविद्यालयों तथा हाई स्कूलों के विद्यार्थियों को) शिक्षा देकर इस **योग्य बना** सकते हैं कि हम उनके साथ इन प्रश्नों पर **चर्चा कर सकें** और हमें उन्हें ऐसी शिक्षा देनी चाहिए; पर जब आप एक बार इन सवालों को उठा देते हैं, तो फिर आपको उनका असली जवाब देना ही चाहिए, "औसत लोगों" या "आम लोगों" की ओर **न** हटें, कोरी लफ़्फ़ाज़ी करके छुटकारा पाने की कोशिश न करें*।

---

* 'स्वोबोदा' ने अंक १, पृ० ६६ पर 'संगठन' शीर्षक लेख में

अपने ध्येय के वास्ते पूरी तरह तैयार होने के लिए मज़दूर क्रांतिकारी को भी पेशेवर क्रांतिकारी बनना होगा। इसलिए ब–व का यह कहना सही नहीं है कि मज़दूर चूंकि साढ़े ग्यारह घंटे कारख़ाने में बिताता है, इसलिए (आंदोलन के काम को छोड़कर) बाक़ी सभी क्रांतिकारी कामों का बोझ "**लाज़िमी तौर पर** मुख्यतया बहुत ही थोड़े-से बुद्धिजीवियों के कंधों पर आ पड़ता है"। पर ऐसा होना "लाज़िमी" नहीं है। ऐसा इसलिए होता है कि हम लोग पिछड़े हुए हैं, क्योंकि हम यह नहीं मानते कि हर योग्य मज़दूर को **पेशेवर** आंदोलनकर्ता, संगठनकर्ता, प्रचारक, साहित्य-वितरक, आदि बनने में मदद करना हमारा कर्त्तव्य है। इस मामले में हम बहुत शरमनाक ढंग से अपनी शक्ति का अपव्यय करते हैं; जिस वस्तु की हमें विशेष ध्यानपूर्वक हिफ़ाज़त करनी चाहिए, उसकी देखरेख करने की हममें योग्यता नहीं है। जर्मनों को देखिये: उनके पास हमसे सौ गुनी अधिक शक्तियां हैं, परंतु वे अच्छी तरह समझते हैं कि "औसत लोगों" के बीच से सही माने में योग्य आंदोलनकर्ता, आदि अकसर नहीं निकलते हैं। इसलिए वे हर योग्य मज़दूर को तुरंत ऐसी परिस्थितियों में रखने का प्रयत्न करते हैं, जिनमें वह अपनी क्षमताओं का अधिक से अधिक विकास तथा उपयोग कर सके: उसे पेशेवर आंदोलनकर्ता बनाया जाता है, उसे अपने कार्य का क्षेत्र बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, उसे एक कारख़ाने से बढ़कर पूरे उद्योग में और एक स्थान से बढ़कर

लिखा है: "मज़दूरों की सेना की पदचाप उन तमाम मांगों को बल देगी, जो रूसी **श्रमिकों** की ओर से उठायी जायेंगी।" ज़ाहिर है कि "श्रमिक" यहां मोटे टाइप में छपा है! और यही लेखक आगे कहते हैं: "मैं बुद्धिजीवियों का विरोधी क़तई नहीं हूं, लेकिन"... (इसी "**लेकिन**" शब्द का श्चेद्रीन ने यह अर्थ बताया था: कान कभी माथे के ऊपर नहीं निकल सकते!)... "लेकिन मुझे इस बात पर हमेशा बहुत झुंझलाहट होती है, जब कोई आकर बड़े सुंदर और आकर्षक शब्द कह देता है और यह मांग करता है कि उन शब्दों को उनकी (उसकी?) सुंदरता और अन्य गुणों के कारण स्वीकार कर लिया जाना चाहिए" (पृ० ६२)। हां, इस पर मुझे भी "हमेशा बहुत झुंझलाहट होती है"...

पूरे देश में अपना कार्य-क्षेत्र फैलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। वह अपने पेशे में अनुभव और दक्षता प्राप्त करता है, वह अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है और अपना ज्ञान बढ़ाता है, वह दूसरे स्थानों के और दूसरी पार्टियों के प्रमुख राजनीतिक नेताओं को नज़दीक से देखता है, वह ख़ुद भी उनके स्तर तक उठने का प्रयत्न करता है, वह मज़दूर वर्ग के वातावरण के ज्ञान तथा समाजवादी विश्वासों की ताज़गी का उस पेशेवर कौशल के साथ अपने में समन्वय करने की कोशिश करता है, जिसके बिना सर्वहारा अपने बहुत ही दक्ष शत्रुओं के ख़िलाफ़ दृढ़ संघर्ष **नहीं** चला **सकता**। आम मज़दूर इसी तरह और केवल इसी तरह बेबेल और आयर जैसे आदमी पैदा करते हैं। परंतु जो चीज़ राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र देश में बहुत बड़ी हद तक अपने आप ही हो जाती है, उसी को रूस में सुनियोजित ढंग से हमारे संगठनों को पूरा करना होगा। जिस मज़दूर आंदोलनकर्ता में थोड़ी भी प्रतिभा हो और जो थोड़ा भी होनहार हो, उसे कारख़ाने में ग्यारह घंटे रोज़ काम करने के लिए **छोड़ नहीं देना चाहिए**। हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि उसकी जीविका का भार पार्टी अपने ऊपर ले ले, कि वह ठीक समय पर भूमिगत हो जाये और अपने कार्य-क्षेत्र को बदल दे, अन्यथा उसका अनुभव नहीं बढ़ेगा, उसका दृष्टिकोण व्यापक नहीं बनेगा और वह राजनीतिक पुलिस के ख़िलाफ़ संघर्ष में चंद साल भी खड़ा नहीं रह सकेगा। जैसे-जैसे मज़दूर जनता का स्वयंस्फूर्त उभार विस्तार और गहराई में बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे मज़दूर जनता अपने बीच से न केवल प्रतिभाशाली आंदोलकर्ताओं को, बल्कि प्रतिभाशाली संगठनकर्ताओं, प्रचारकों और "व्यावहारिक कार्यकर्ताओं" को भी बढ़ती हुई संख्या में उत्पन्न करती जाती है– यहां "व्यावहारिक कार्यकर्ताओं" का प्रयोग हमने उसके सबसे अच्छे अर्थों में किया है (हमारे बुद्धिजीवियों में उनकी संख्या बहुत ही कम है, क्योंकि वे प्रायः रूसी स्वभाव के मुताबिक़ किसी हद तक लापरवाह और सुस्त होते हैं)। जब हमारे पास ऐसे विशेष प्रशिक्षित मज़दूर क्रांतिकारियों के दस्ते होंगे, जो काफ़ी तैयारियां कर चुके होंगे (और निस्संदेह इनमें "हर प्रकार के अस्त्रधारी" क्रांतिकारी होंगे), तब दुनिया की कोई राजनीतिक पुलिस उनका मुक़ाबला नहीं कर सकेगी, क्योंकि क्रांति में अटूट निष्ठा रखनेवाले व्यक्तियों के इन

दस्तों को आम मज़दूरों के व्यापकतम हिस्सों का पूर्ण विश्वास प्राप्त होगा। यह सीधे-सीधे हमारा **दोष** है कि हम मज़दूरों को पेशेवर क्रांतिकारी प्रशिक्षण का यह मार्ग अपनाने के लिए, जो उनका और "बुद्धिजीवियों" का समान मार्ग है, बहुत ही कम "धकेलते" हैं और अकसर ऐसी बातों के बारे में मूर्खतापूर्ण भाषण सुना-सुनाकर हम उन्हें पीछे घसीटते रहते हैं कि आम मज़दूर या "औसत मज़दूर" किन बातों को "समझ सकते" हैं, आदि।

और मामलों की तरह इस मामले में भी हमारे संगठनात्मक काम का सीमित विस्तार निस्संदेह इस बात से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है कि हम अपने सिद्धांतों तथा राजनीतिक कार्यभारों को एक छोटे दायरे तक सीमित रखते हैं (यद्यपि अधिकतर अर्थवादी और नौसिखुए व्यावहारिक कार्यकर्ता इस बात को नहीं समझते)। स्वयंस्फूर्ति की पूजा करने की भावना के कारण हमें उन बातों से एक क़दम भी इधर-उधर उठाने में डर लगता है, जिन्हें आम जनता "समझ सकती है", हमें डर लगता है कि हम कहीं जनता की तात्कालिक एवं प्रत्यक्ष आवश्यकताओं में ही जुटे रहने से बहुत ऊपर न उठ जायें। लेकिन महानुभावो, डरिये नहीं! याद रखिये कि संगठन के मामले में हम इतने नीचे स्तर पर खड़े हैं कि **बहुत ज़्यादा ऊपर उठ सकने** का विचार तक मन में लाना मूर्खता है!

शरद, १९०१ – फ़रवरी, १९०२ में लिखित

खंड ६, पृ० ७८-८३, १००-१०२, १२३-१३४

प० ग० स्मिदोविच के नाम पत्र

२.८.१९०२

प्रिय च०, आपका पत्र मिला। अभी बस दो शब्दों में ही उत्तर दे रहा हूं: तबीयत बहुत ख़राब है, पड़ा हुआ हूं।

आपने जो मुद्दा उठाया है, उस पर मैंने **एक भी** पत्र नहीं देखा है। मुझे लगता है कि आप ग़लतफ़हमी में पड़ गये हैं। मज़दूर मंडलों, दलों और संगठनों को बढ़ाने और मज़बूत करने के बजाय उन्हें "वि-संगठित" करने की बात सोच ही कौन सकता है? आपने लिखा है कि मैंने यह नहीं इंगित किया कि कैसे एक बिल्कुल गोपनीय संगठन मज़दूर जन-समूहों के साथ संबंध बनाये रख सकता है। ऐसी बात नहीं है, क्योंकि (हालांकि यह vient sans dire * ही है) स्वयं आपने पृ० ९६ पर वह स्थान उद्धृत किया है, जिसमें "अनेक अन्य [जी हां, ध्यान दीजिये – **अनेक अन्य**] संगठनों" (यानी पेशेवर क्रांतिकारियों के केंद्रीय संगठन के अलावा दूसरे संगठनों)** की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है और कहा गया है कि उन्हें "**बड़ी से बड़ी संख्या में** होना चाहिए और उन्हें तरह-तरह के काम करने चाहिए"। लेकिन आप व्यर्थ ही वहां **निर्विवाद** अंतर्विरोध देखते हैं, जहां मैंने केवल सोपान-क्रम निर्धारित किया है और इसकी अंतिम कड़ियों की सीमाएं ही इंगित की हैं। पेशेवर क्रांतिकारियों के अत्यंत गुप्त और ठोस नाभिक (केंद्र) से **शुरू करके** और "सदस्यों के बिना" **जन-संगठन तक** – कड़ियों

---

* स्व:स्पष्ट। – **सं०**

** 'क्या करें?' (देखें इस पुस्तक के पृ० २२-४४)। – **सं०**

की पूरी श्रृंखला है। मैंने तो कड़ियों के बदलते स्वरूप की केवल दिशा ही इंगित की है: **संगठन जितना अधिक "जनव्यापी" हो, उतना ही उसका रूप ढीला-ढाला चाहिए, उतना ही कम वह गोपनीय होना चाहिए** – यही है मेरा मूल विचार। और आप इसे यों समझना चाहते हैं कि जन-समूहों और क्रांतिकारियों के बीच मध्यस्थ नहीं होने चाहिए!! ज़रा रहम कीजिये! सारी बात ही इन मध्यस्थों की है। यदि मैं सिरों की कड़ियों के गुण इंगित करता हूं और बीच की कड़ियों की आवश्यकता पर ज़ोर देता हूं (**जी हां, मैं ज़ोर ही दता हूं**), तो यह स्वत:स्पष्ट है कि ये बीच की कड़ियां "क्रांतिकारियों के संगठन" और "जन-संगठन" के **मध्य में** स्थित होंगी, अपनी संरचना के लिहाज़ से **मध्य में** होंगी, यानी ये केंद्र से कम संकीर्ण और गोपनीय होंगी, लेकिन "बुनकर संघ," आदि से अधिक। उदाहरण के लिए "फ़ैक्टरी मंडल" में "मध्यस्थ" ढूंढ़ना अनिवार्य है (**कहना न होगा** कि हर फ़ैक्टरी में मध्यस्थों का मंडल हो – इसकी हमें भरसक चेष्टा करनी चाहिए): एक ओर, सारी या प्राय: सारी फ़ैक्टरी को अमुक अग्रणी मज़दूर को **जानना**, उस पर विश्वास करना, उसकी बातें मानना चाहिए। दूसरी ओर, "मंडल" को काम ऐसे चलाना चाहिए कि उसके **सभी** सदस्यों को लोग **न** जान **सकें**, कि जन-समूहों से सबसे अधिक संपर्क रखनेवाले उसके सदस्य को रंगे हाथों **न** पकड़ा **जा सके**, उसका भेद खुल ही न सके। क्या यह निष्कर्ष उस सब से नहीं निकलता, जो लेनिन ने लिखा है?

"फ़ैक्टरी मंडल" का आदर्श बिल्कुल स्पष्ट है: चार-पांच (मैं मिसाल के तौर पर कह रहा हूं) क्रांतिकारी मज़दूर – जन-समूह को उन **सबको** नहीं जानना चाहिए। शायद उनमें से एक को जानना चाहिए और उसका भेद हर तरह से छिपाये रखना चाहिए, उसके बारे में लोग कहा करें – अपना आदमी है, बड़ा तेज़ दिमाग़ है, **हालांकि क्रांति में हिस्सा नहीं लेता** (मालूम तो नहीं पड़ता)। एक का केंद्र से संपर्क हो। दोनों का एक-एक एवज़ी हो। वे **कुछेक** मंडल (ट्रेड-यूनियन, शिक्षा, साहित्य वितरण, गुप्तचरी, अस्त्र-शस्त्र, इत्यादि के) चलायें। कहना न होगा कि भेदियों को पकड़ने के लिए या हथियार हासिल करने के लिए जो मंडल होंगे उनकी गोपनीयता वह नहीं होगी, जो 'ईस्क्रा' पढ़ने या वैध साहित्य पढ़ने के लिए चलाये जा रहे मंडल

की। गोपनीयता मंडल के सदस्यों की संख्या के विपरीत अनुपात में तथा **सीधे संघर्ष** से मंडल के ध्येयों की दूरी के सीधे अनुपात में होगी।

पता नहीं, इस सबके बारे में अलग से लिखने की ज़रूरत है या नहीं – यदि आप सोचते हैं कि ज़रूरत है, तो मेरा पत्र लौटा दें, मैं इस पर मनन करूंगा और आपके पत्र पर भी सामग्री के तौर से। आशा है कि यहां पीटर्सबर्ग के साथी से मुलाक़ात होगी और विस्तार से बातें भी।

आपका हाथ कसकर दबाता हूं।
आपका, लेनिन

खंड ४६,
पृ० २१०-२११

हमारे संगठनात्मक कार्यभारों के बारे में एक साथी को पत्र

(उद्धरण)

... आगे, दूसरे अनुच्छेद में आप लिखते हैं कि समिति को "स्थानीय संगठन का संचालन करना" चाहिए (शायद यह कहना बेहतर होगा : "पार्टी के सारे स्थानीय कार्य का और पार्टी के सभी स्थानीय संगठनों का संचालन करना चाहिए", लेकिन मैं सूत्र के ब्योरों में नहीं जाऊंगा) और यह कि समिति में मज़दूर भी और बुद्धिजीवी भी होने चाहिए, उन्हें दो समितियों में बांटना हानिकारक है। यह पूर्णतः और निर्विवाद रूप से सही है। रूसी सामाजिक-जनवादी पार्टी की समिति एक होनी चाहिए और उसमें पूर्णतः सचेतन सामाजिक-जनवादी होने चाहिए, जो अपने को पूरी तरह सामाजिक-जनवादी गतिविधियों को अर्पित करते हों। इस बात की ख़ास तौर पर कोशिश करनी चाहिए कि अधिक से अधिक मज़दूर पूर्णतः सचेतन और पेशेवर क्रांतिकारी बनें तथा समिति में स्थान पायें।* चूंकि समिति **एक** होगी, दो नहीं, इसलिए यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि समिति के सदस्य **व्यक्तिगत रूप से** बहुत से मज़दूरों को जानते हों। मज़दूरों के बीच जो कुछ होता है उस सबका संचालन करने के लिए हर जगह पहुंच पाना, बहुत सारे लोगों को जानना, हर तरह के रास्ते रखना, वग़ैरह, वग़ैरह बहुत ज़रूरी है। इसलिए समिति में जहां तक संभव हो, मज़दूरों के बीच से ही निकले मज़दूर आंदोलन के सभी **अगुआ** होने चाहिए, समिति को स्थानीय आंदोलन

---

* समिति में ऐसे मज़दूर-क्रांतिकारियों को लाने की कोशिश करनी चाहिए, जिनके मज़दूर जन-समूहों में सबसे अधिक संपर्क हों और सबसे अच्छा "नाम" हो।

के **सभी** पहलुओं का मार्गदर्शन करना चाहिए और पार्टी के **सभी** स्थानीय संगठनों, शक्तियों व साधनों को अपने नियंत्रण में लेना चाहिए। समिति कैसे गठित होनी चाहिए – इसकी चर्चा आपने नहीं की है। संभवतः इस मामले में भी हम एक दूसरे से सहमत होंगे कि इस मामले में कोई ख़ास नियम बनाने की शायद ही कोई ज़रूरत है; समिति कैसे गठित की जाये – यह स्थानीय सामाजिक-जनवादियों का ही काम है। बहरहाल, इतना भले ही इंगित किया जा सकता है कि समिति में नये सदस्य बहुमत (या दो तिहाई सदस्यों, आदि) के फ़ैसले से ही लिये जायेंगे, कि समिति को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसके संपर्कों की सूची विश्वसनीय (क्रांतिकारी दृष्टि से) तथा सुरक्षित (राजनीतिक दृष्टि से) हाथों में हो और समिति पहले से ही अपने उम्मीदवार-सदस्य तैयार करे। जब हम केंद्रीय निकाय और केंद्रीय समिति गठित कर लेंगे, तो नई समितियों के गठन में इनकी शिरकत और सहमति अनिवार्य होगी। जहां तक संभव हो समिति के सदस्यों की संख्या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिए (ताकि ये सदस्य सुशिक्षित हों और क्रांतिकारी गतिविधियों के अपने क्षेत्र में माहिर हों), लेकिन साथ ही इनकी संख्या काम के **सभी** पहलुओं को संभाल सकने तथा पूरा प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने और पालन के लिए अनिवार्य निर्णय ले सकने के लिए पर्याप्त भी होनी चाहिए। यदि कहीं सदस्यों की संख्या काफ़ी अधिक हो जाये और उनके लिए अक्सर मिलना खतरनाक हो, तो शायद समिति में से एक ख़ास, बहुत छोटा-सा (यही कोई पांच या शायद उससे भी कम लोगों का) दल अलग करना होगा। इस **संचालक** दल में समिति का सचिव तो अवश्य ही शामिल होना चाहिए और साथ में कुल जमा सारे कार्य का व्यावहारिक संचालन करने के योग्य लोग भी। इस दल के लिए तो यह बात **ख़ास तौर पर महत्वपूर्ण** होगी कि वह उम्मीदवार सदस्य तैयार रखे, ताकि गिरफ़्तारियां होने पर दल का काम न रुके। संचालक दल की कार्रवाइयों को, इसके सदस्यों के नामों, आदि को समिति की आम सभा में अनुमोदित किया जाना चाहिए।

आगे, समिति **के बाद** आपने उसके अधीन निम्न संस्थाएं सुझायी हैं: १) परिचर्चा सभाएं ("श्रेष्ठतम" क्रांतिकारियों की बैठकें), २) ज़िला मंडल और, ३) इनमें प्रत्येक से जुड़े प्रचारक मंडल, ४) कारख़ाना

मंडल तथा, ५) ज़िले (इलाक़े) विशेष के कारख़ाना मंडलों के "प्रतिनिधियों की सभाएं"। मैं आप से पूरी तरह सहमत हूं कि आगे के **सभी** संगठन (जो कि बहुत अधिक और बहुत विविध होने चाहिए, आपके द्वारा गिनाये संगठनों के अलावा भी) समिति के अधीन होने चाहिए तथा (बहुत बड़े नगरों के लिए) इलाक़ाई दल और (सदा व सर्वत्र) कारख़ाना दल होने चाहिए। लेकिन कुछ तफ़सीलों में मुझे लगता है मैं आपसे पूरी तरह सहमत नहीं हूं। मिसाल के लिए, परिचर्चा सभाओं" के बारे में मैं सोचता हूं कि इनकी **कोई ज़रूरत नहीं है।** "श्रेष्ठतम क्रांतिकारी" तो सारे के सारे समिति में होने चाहिए या फिर ख़ास कामों में लगे होने चाहिए (छपाई, परिवहन, प्रचार दौरों जैसे कामों में या उदाहरणतः पासपोर्ट ब्यूरो के संगठन में, भेदियों और उकसानेवालों से निबटनेवाली टुकड़ियां या सेना में अपने दल, आदि संगठित करने में)।

"सभाएं" तो समिति में भी और **हर** ज़िले में भी, हर कारख़ाना, प्रचार, व्यावसायिक (बुनकरों, मैकेनिकों, चर्मकारों, आदि के), विद्यार्थी, साहित्यिक, आदि मंडलों में भी होती रहेंगी। तो फिर इनके लिए अलग संस्था की क्या ज़रूरत है?

आगे, आपने बिल्कुल उचित ही यह मांग की है कि "सभी इच्छुकों" को सीधे 'ईस्क्रा' को लिखने का अवसर दिया जाये। लेकिन "सीधे" का मतलब यह नहीं समझना चाहिए कि "सभी इच्छुकों" को 'ईस्क्रा' के संपादकीय कार्यालय का पता और रास्ता बताया जाये, बल्कि यह कि **सभी इच्छुकों** के पत्र संपादक-मंडल तक पहुंचाये जायें। पते **काफ़ी बड़ी संख्या में** लोगों को दिये जाने चाहिए, लेकिन सभी इच्छुकों को नहीं, बल्कि केवल विश्वसनीय क्रांतिकारियों को, जो गोपनीय कार्य करने का कौशल रखते हैं – और हर ज़िले में शायद एक व्यक्ति को नहीं – जैसा कि आपने सुझाया है बल्कि कुछेक को। यह भी ज़रूरी है कि काम में भाग लेनेवाले सभी लोगों को, सभी और हर तरह के मंडलों को अपने निर्णय, इच्छाएं और अनुरोध **समिति** तक भी **और** केंद्रीय निकाय व केंद्रीय समिति तक भी पहुंचाने का **अधिकार प्राप्त हो।** यदि हम यह सुनिश्चित कर लेंगे तो **पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं से सलाह-मशविरा** प्राप्त होता रहेगा, और इसके लिए "परिचर्चा सभा" जैसी भारी-भरकम और अगोपनीय संस्थाएं

स्थापित करने की आवश्यकता नहीं होगी। बेशक हमें अधिक से अधिक संख्या में सभी स्तरों के कार्यकर्ताओं के लिए **व्यक्तिगत मुलाक़ातों** का प्रबंध पाना चाहिए – लेकिन यह गोपनीयता बनाये रख सकने पर ही सब कुछ निर्भर है। रूस में तो आम सभाएं विरले ही अपवाद के तौर पर ही हो सकती हैं और इन सभाओं में "श्रेष्ठतम क्रांतिकारियों" को जाने देने में अधिकतम सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि उकसानेवाले के लिए आम सभा में किसी तरह पहुंच पाना और भेदिये के लिए सभा में भाग ले रहे किसी व्यक्ति का पीछा कर पाना आसान है। मैं सोचता हूं कि शायद ऐसा करना ज़्यादा अच्छा हो: जब बड़ी (मान लीजिये ३० से १०० तक लोगों की) सभाएं करना (जैसे कि गर्मियों में जंगल में, या ख़ास तौर पर खोजे गये किसी गुप्त मकान में) संभव हो, तो समिति ऐसी सभा में १-२ "श्रेष्ठतम क्रांतिकारियों" को भेजे और इस बात का **ख़्याल रखे** कि सभा में उचित लोग ही भाग लें, यानी, उदाहरण के लिए कारख़ाना मंडलों, आदि के विश्वसनीय सदस्यों को ही अधिक से अधिक संख्या में निमंत्रण दिये जायें। लेकिन ऐसी सभाओं का कोई लेखा नहीं रखना चाहिए, नियमावली में इन्हें शामिल नहीं करना चाहिए, ये नियमित नहीं होनी चाहिए, ऐसा नहीं करना चाहिए कि सभा में भाग लेनेवाला प्रत्येक व्यक्ति वहां दूसरे सभी लोगों को जानता हो, यानी यह जानता हो कि हर कोई किसी न किसी मंडल का प्रतिनिधि है, इत्यादि ; इसीलिए मैं न केवल "परिचर्चा सभा" के विरुद्ध हूं, बल्कि "प्रतिनिधियों की सभा" के भी। इन दोनों संस्थाओं के स्थान पर मैं प्राय: निम्न नियम बनने का सुझाव रखूंगा। समिति को अधिक से अधिक संख्या में ऐसे लोगों की, जो आंदोलन में व्यावहारिक रूप से भाग लेते हैं और आम तौर पर मज़दूरों की भी सभाएं आयोजित करनी चाहिए। सभा का समय, स्थान, अवसर चुनना और इसमें कौन भाग लेगा, इसका फ़ैसला करना – यह सब समिति का काम हो और वही ऐसे आयोजनों की गोपनीयता के लिए उत्तरदायी भी हो। कहना न होगा कि इससे मज़दूरों द्वारा घूमते-फिरते हुए, जंगल में सैर करते हुए और भी अधिक अनौपचारिक सभाएं करने पर कोई बंदिश नहीं लगती है। हो सकता है, इस सबका नियमावली में कुछ भी उल्लेख न करना ही बेहतर हो।

आगे, जहां तक ज़िला दलों का सवाल है, मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं कि उनका एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम साहित्य के **वितरण** का उचित प्रबंध करना ही है। मेरे विचार में, ज़िला-दलों को मुख्यत: समितियों और कारख़ानों के बीच **मध्यस्थ** ही होना चाहिए, मध्यस्थ और शायद प्रमुख रूप से **हरकारा** ही। उनका मुख्य कार्य समिति से प्राप्त साहित्य का गोपनीयता के नियमों के अनुसार उचित वितरण ही होना चाहिए। यह कार्यभार अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि वितरकों के विशेष ज़िला-दल के **ज़िले के सभी कारख़ानों के साथ**, ज़िले के यथासंभव अधिक **मज़दूर घरों** के साथ नियमित संबंध स्थापित हो जायें तो इसका प्रदर्शनों के लिए भी और विद्रोह के लिए भी अपार महत्व होगा। साहित्य, परचों, आदि के तेज़ी से और सही-सही वितरण का प्रबंध कर लेने, अपने एजेंटों के पूरे जाल को इस काम में अभ्यस्त बना लेने का मतलब है भविष्य के प्रदर्शनों या विद्रोह की तैयारी का आधे से **अधिक** काम कर लेना। उत्तेजना, हड़ताल, असंतोष के क्षण में साहित्य के वितरण का समय निकल चुका होता है – यह काम तो धीरे-धीरे ही ढर्रे पर आ सकता है, जबकि महीने में दो या तीन बार **अनिवार्यत:** वितरण होता हो। यदि अख़बार नहीं है, तो परचे बांटे जा सकते हैं, लेकिन किसी भी हालत में वितरण मशीनरी को निष्क्रिय नहीं रहने देना चाहिए। इस मशीनरी को यहां तक परिष्कृत करने की कोशिश करनी चाहिए कि एक रात में ही सेंट पीटर्सबर्ग की सारी मज़दूर आबादी को सूचित करना और यों कहिये कि कार्रवाइयों के लिए तैयार करना संभव हो जाये। यह किसी भी हालत में कोई यूटोपियाई लक्ष्य नहीं है, बशर्ते केंद्र से संकीर्णतर मध्यस्थ मंडलों को और उनसे आगे वितरकों को परचे पहुंचाने का काम नियमित रूप से होता हो। मेरे विचार में ज़िला-दल का कार्य-क्षेत्र केवल मध्यस्थता के और हस्तांतरण के कार्यों से आगे नहीं बढ़ाना चाहिए, या, सही-सही कहा जाये, तो अत्याधिक सावधानी से बढ़ाया जाना चाहिए अन्यथा इससे गोपनीयता को भी और काम की समग्रता को भी क्षति ही पहुंचेगी। बेशक पार्टी के सभी प्रश्नों पर बैठकें ज़िला-मंडलों में भी होंगी, लेकिन स्थानीय आंदोलन के सभी सामान्य प्रश्नों को **हल करने का काम** केवल समिति का ही होना चाहिए। प्रचार और वितरण के तरीक़ों के सवालों में ही ज़िला-दलों को स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए। ज़िला-दल की संरचना

समिति द्वारा निर्धारित होनी चाहिए यानी समिति अपने एक-दो सदस्यों (या ग़ैर-सदस्यों) को किसी ज़िले में अपना प्रतिनिधि **नियुक्त करती है** और इन प्रतिनिधियों को **ज़िला-दल गठित करने** का काम सौंपती है। इस दल के सभी सदस्यों को भी समिति ही एक तरह से पदासीन करती है। ज़िला-दल समिति की शाखा है, जिसे अपने अधिकार केवल समिति से ही मिलते हैं।

अब मैं प्रचारक मंडलों के प्रश्न पर आता हूं। हमारी प्रचार शक्तियों की क्षीणता को देखते हुए हर ज़िले में अलग से ऐसा मंडल गठित करना शायद ही संभव है और शायद ही वांछनीय भी। प्रचार कार्य तो सारी समिति को एक समान भावना में करना चाहिए और यह कार्य पूरी तरह केंद्रीकृत होना चाहिए, सो मैं इस काम की कल्पना इस रूप में करता हूं: समिति अपने कुछ सदस्यों को प्रचारकों का दल संगठित करने का काम सौंपती है (यह दल समिति की शाखा या समिति की **संरचनाओं में से एक होगा**)। इस दल को, गोपनीयता के लिए ज़िला-दलों की **सेवाओं** का उपयोग करते हुए समिति के "अधीन" आनेवाले **सारे शहर**, सारे इलाक़े में प्रचार कार्य करना चाहिए। आवश्यकता होने पर यह दल उपदल भी बना सकता है, एक तरह से अपने कार्यों का एक भाग आगे सौंप सकता है, लेकिन यह सब समिति की अनुमति से ही हो सकता है, समिति को सदा, बिना शर्त हर दल, उपदल या मंडल में, जिनका आंदोलन से ज़रा सा भी संबंध है, अपना प्रतिनिधि भेजने का अधिकार होना चाहिए।

आंदोलन के लिए काम करनेवाले सभी दलों – उच्च और माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के दल, या उदाहरण के लिए सरकारी अधिकारियों में समर्थकों के दल, परिवहन, छपाई, पासपोर्ट दल, गुप्त फ़्लैटों का प्रबंध करनेवाले दल, भेदियों पर नज़र रखनेवाले दल, सैनिकों के दल, हथियार सप्लाई करनेवाले दल और उदाहरणतः "लाभदायक वित्तीय कारोबार" आयोजित करनेवाले दल, इत्यादि – इन सभी दलों का संगठन इसी ढांचे के अनुसार, समिति या उसकी संस्थाओं की शाखाओं के ढांचे के अनुसार होना चाहिए। गोपनीय संगठन चलाने का सारा कौशल इस बात में होना चाहिए कि **हर चीज़ का** और **हर किसी का** उपयोग किया जाये, "सबको और हर किसी को काम दिया जाये", साथ ही सारे आंदोलन का **संचालन** बनाये रखा

जाये, बेशक, इसे सत्ता के बल पर नहीं, प्रतिष्ठा के बल पर, उद्यम के बल पर, अधिक गहरे अनुभव, अधिक विविध ज्ञान तथा अधिक प्रखर प्रतिभा के बल पर बनाये रखा जाये। यह बात मैं उस प्राय: की जानेवाली आपत्ति के सिलसिले में कह रहा हूं कि यदि **संयोगवश** अपार सत्ता प्राप्त **अयोग्य** व्यक्ति केंद्र में पहुंच जाये, तो कड़ा केंद्रीकरण बहुत आसानी से ही सारे हेतु के लिए घातक बन सकता है। बेशक ऐसा होना संभव है, लेकिन इससे बचने का उपाय चुनाव-सिद्धांत और विकेंद्रीकरण नहीं हो सकता, इसका तो किसी भी न्यूनाधिक विशाल पैमाने पर उपयोग कतई संभव नहीं है और यहां तक कि स्वेच्छाचारी शासन के अंतर्गत क्रांतिकारी कार्य के लिए सीधे-सीधे घातक ही है। कोई भी नियमावली इसके ख़िलाफ़ उपाय नहीं बताती, ये उपाय तो "साथियों के प्रभाव" की कार्रवाइयां ही हो सकती हैं – सभी और प्रत्येक उपदलों के प्रस्तावों से शुरू करके, आगे उन्हें केंद्रीय निकाय और केंद्रीय समिति में भेजकर और अंतत: (और कोई चारा न रहने पर) बिल्कुल अयोग्य व्यक्तियों को **सत्ताच्युत** करके। समिति को यथासंभव अधिक पूर्ण श्रम-विभाजन करने की कोशिश करनी चाहिए, यह याद रखते हुए कि क्रांतिकारी कार्य के विभिन्न पहलुओं के लिए विभिन्न योग्यताएं चाहिए, कि कभी-कभी जो व्यक्ति संगठन कार्य के बिल्कुल योग्य नहीं है, वही अद्वितीय वक्ता होगा, या वह व्यक्ति, जो बिल्कुल गोपनीय कार्य करने में असमर्थ है, प्रचार कार्य में अत्युत्तम होगा, इत्यादि।

हां, प्रचारकों के सिलसिले में मैं कुछ शब्द इस व्यवसाय में अयोग्य लोगों को **ठूसने** और इस तरह प्रचार का स्तर गिराने के ख़िलाफ़ कहना चाहता हूं। हमारे यहां कभी-कभी हर विद्यार्थी को बिना सोचे-विचारे प्रचारक मान लिया जाता है, और **हर नौजवान** यह मांग करता है कि "उसे मंडल दिया जाये", वग़ैरह, वग़ैरह। इसका विरोध करना चाहिए, क्योंकि इससे क्षति बहुत अधिक होती है। ऐसे प्रचारक **बहुत कम** हैं, जिनके सिद्धांतों में सुसंगति है और जो सचमुच योग्य हैं (और ऐसा प्रचारक बनने के लिए काफ़ी अध्ययन करना और अनुभव पाना आवश्यक है)। सो, ऐसे लोगों को ख़ास तौर से इस काम में दक्षता दिलानी चाहिए, उन्हें पूरी तरह से काम में लगाया जाना चाहिए और उनका बहुत ध्यान रखना चाहिए। ऐसा प्रबंध करना चाहिए कि ऐसे लोग सप्ताह में कुछेक व्याख्यान दे सकें, ज़रूरत पड़ने पर

ठीक समय पर दूसरे नगरों में जा सकें, वैसे भी इस बात का प्रबंध करना चाहिए कि योग्य प्रचारक विभिन्न नगरों का दौरा लगाया करें। जबकि क्रांतिकारी कार्य के क्षेत्र में नये-नये आये नौजवानों को व्यावहारिक कार्यों में ही अधिक लगाया जाना चाहिए, जिसकी उपेक्षा करते हुए हम विद्यार्थियों के मंडलों में जाने मात्र को ही आशावादी ढंग से "प्रचार कार्य" कह लेते हैं। बेशक, गंभीर व्यावहारिक कार्यों के लिए भी अच्छी तैयारी ज़रूरी है, लेकिन फिर भी यहां "नौसिखुओं" के लिए काम ढूंढ़ पाना आसान है।

अब कारख़ाना मंडलों को लें। ये हमारे लिए विशेषतः महत्वपूर्ण हैं – आख़िर आंदोलन की सारी प्रमुख शक्ति **बड़े** कारख़ानों में मज़दूरों के संगठनबद्ध होने में ही निहित है, क्योंकि न केवल संख्या की दृष्टि से, बल्कि अपने प्रभाव, विकास तथा संघर्ष-क्षमता की दृष्टि से भी मज़दूर वर्ग का बड़ा भाग विशाल कारख़ानों (और मिलों) में ही होता है। हर कारख़ाना हमारा गढ़ होना चाहिए। इसके लिए "कारख़ाने का" मज़दूर संगठन भी अंदर से इतना ही गोपनीय और बाहर से, यानी बाह्य संबंधों में इतना ही "बहुशाखी" होना चाहिए। हर क्रांतिकारी संगठन की भांति इसकी भी टोह दूर-दूर तक और विविधतम दिशाओं में होनी चाहिए। मैं इस बात पर ज़ोर देता हूं कि यहां भी क्रांतिकारी मज़दूरों का दल ही नाभिक और संचालक होना चाहिए, "स्वामी" होना चाहिए। हमें तो "कारख़ाना" मंडलों के स्तर **तक** भी शुद्धतः मज़दूर या ट्रेड-यूनियन क़िस्म के सामाजिक-जनवादी संगठनों की परंपरा से नाता तोड़ लेना चाहिए। कारख़ाना दल या कारख़ाना (मिल) समिति (उसे उन दूसरे दलों से अलग करने के लिए, जो बहुत बड़ी संख्या में होने चाहिए) बहुत थोड़े से **क्रांतिकारियों** से बनी होनी चाहिए और इन क्रांतिकारियों को कारख़ाने में सारा सामाजिक-जनवादी कार्य करने के निर्देश और अधिकार **सीधे समिति से** प्राप्त होने चाहिए। कारख़ाना समिति के सभी सदस्यों को अपने आपको समिति के एजेंट मानना चाहिए, जिनके लिए समिति के सभी आदेश मानना अनिवार्य है, उस "सक्रिय सेना" के सभी "नियमों और रीतियों" का पालन करना अनिवार्य है जिसमें वे भरती हुए हैं और जिसमें से युद्धकाल में अधिकारियों की अनुमति के बिना निकलने का उन्हें अधिकार नहीं है। इसलिए यह बात बहुत माने रखती है

कि कारख़ाना समिति के सदस्य कौन हैं, सो इन उपसमितियों का उचित रूप से संगठन करना ही समिति का एक प्रमुख कार्यभार होना चाहिए। मैं इस काम की कल्पना इस रूप में करता हूं: समिति अपने अमुक सदस्यों को (साथ ही, मान लीजिये अमुक मज़दूरों को, जो किन्हीं कारणों से समिति में शामिल नहीं हैं, लेकिन अपने अनुभव, लोगों के ज्ञान, बुद्धि और अपने संबंधों के लिहाज़ से उपयोगी हो सकते है) हर जगह कारख़ाना उपसमितियां गठित करने का काम सौंपती है। ये लोग ज़िला प्रतिनिधियों के साथ सलाह-मशविरा करते हैं, कतिपय भेंटें आयोजित करते हैं, कारख़ाना उपसमितियों की सदस्यता के उम्मीदवारों को परखते हैं, उनसे अच्छी तरह जिरह करते हैं आवश्यकता होने पर उनकी प्रलोभन से परीक्षा लेते हैं, और ऐसा करते हुए स्वयं किसी कारख़ाने की उपसमिति के लिए **अधिक से अधिक** उम्मीदवारों को जांचने-परखने की कोशिश करते हैं और अंततः हर कारख़ाना मंडल के लिए सदस्यों की सूची समिति के सामने पेश करते हैं या यह सुझाव देते हैं कि अमुक मजदूर को पूरी उपसमिति गठित करने, उसके लिए सदस्य चुनने, नामज़द करने का अधिकार दे दिया जाये। इस प्रकार, समिति ही यह तय करेगी कि इन एजेंटों में से कौन उसके साथ संपर्क रखेगा और **कैसे** (नियमतः ज़िला प्रतिनिधियों के ज़रिए, लेकिन इस आम नियम में संशोधन और परिवर्तन भी हो सकते हैं)। इन कारख़ाना उपसमितियों के महत्व को देखते हुए हमें जहां तक संभव हो यह कोशिश करनी चाहिए कि **हर** उपसमिति के पास केंद्रीय निकाय को अपना संदेश भेजने के लिए पता भी हो, और उसके संपर्कों की **सूची** भी सुरक्षित स्थान पर रखी हो (यानी वे सूचनाएं, जो गिरफ़्तारियां होने पर उपसमिति का काम तुरंत ही फिर से शुरू करने के लिए आवश्यक हैं, उन्हें यथासंभव अधिक नियमित और पूर्ण रूप से पार्टी के केंद्र को भेजा जाता रहे, ताकि वहां उन्हें ऐसे स्थान पर सुरक्षित रखा जाये, जहां रूसी राजनीतिक पुलिस की पहुंच नहीं है)। कहना न होगा कि ये पते भेजने का काम समिति अपनी समझ के अनुसार और उसके पास उपलब्ध जानकारी के अनुसार करती है, न कि इन पतों के वितरण के अस्तित्वहीन "जनवादी" अधिकार के आधार पर। अंततः, शायद यह कहना भी फालतू नहीं होगा कि कभी-कभी कुछ सदस्योंवाली कारख़ाना उपसमिति के स्थान

पर समिति की ओर से एक एजेंट (और उसका एक एवज़ी) नियुक्त कर देना आवश्यक होगा या अधिक **सुविधाजनक होगा।** कारख़ाना उपसमिति को गठित होते ही विभिन्न कारख़ाना दलों और मंडलों की स्थापना में जुट जाना चाहिए। ये दल और मंडल नाना कार्यों के लिए, गोपनीयता और संगठनात्मक रूपों के विभिन्न स्तरोंवाले होने चाहिए, जैसे कि साहित्य के प्रचार और वितरण के मंडल (यह एक सबसे महत्वपूर्ण कार्यभार है और इसका प्रबंध ऐसा होना चाहिए कि हमारी अपनी सच्ची डाक व्यवस्था हो, कि न केवल साहित्य के वितरण के, बल्कि साहित्य को घर-घर पहुंचाने के भी, जांचे और परखे हुए तरीक़े हों, कि सभी घरों के पते और उन तक पहुंचने का रास्ता मालूम हो), अवैध साहित्य पढ़ने के मंडल, भेदियों पर नज़र रखने के मंडल*, व्यावसायिक आंदोलन और आर्थिक संघर्ष का संचालन करने के मंडल, ऐसे प्रचारकों के मंडल, जो **पूरी तरह से वैध रूप से** बातचीत (मशीनों के बारे में, निरीक्षण, इत्यादि के बारे में) शुरू कर सकते हैं और देर तक चलाये रख सकते हैं ताकि खुले-आम और निरापद होकर बोल सकें, ताकि लोगों की टोह ले सकें, ज़मीन टटोल सकें, वग़ैरह, वग़ैरह।** कारख़ाना उपसमिति को यह कोशिश करनी चाहिए कि तरह-तरह के मंडलों (या एजेंटों) के जाल में अधिक से अधिक मज़दूर, सारा कारख़ाना ही आ जाये। उपसमिति के काम की सफलता इसी बात से आंकी जानी चाहिए कि ये मंडल

---

* हमें मज़दूरों को यह समझाना चाहिए कि बेशक कभी-कभी भेदियों, उकसानेवालों और गद्दारों की हत्या के अलावा और कोई चारा नहीं बचा रह सकता, लेकिन इसे एक नियम बनाना बिल्कुल अवांछनीय और ग़लत है, कि हमें ऐसा संगठन बनाने की कोशिश करनी चाहिए, जो भेदियों का पर्दाफ़ाश करके और उनका पीछा करके उन्हें **निष्क्रिय** बनाने में सक्षम हो। सभी भेदियों को मारा तो नहीं जा सकता मगर उनका पता लगानेवाला और मज़दूर जन-समूहों को **शिक्षित करनेवाला** संगठन बनाया **जा सकता है और बनाया जाना चाहिए।**

** हमें जुझारू दल भी चाहिए, जिनमें फ़ौज में रह चुके या विशेषतः बलवान और फ़ुर्तीले मज़दूर भरती हों, ताकि वे जुलूसों में, जेलों से साथियों को छुड़ाने, आदि में काम आ सकें।

कितने अधिक हैं, कि बाहर से आये प्रचारक के लिए उनमें घुसना संभव है या नहीं, और सब से बड़ी बात **साहित्य के वितरण** का, जानकारी और संवाद पाने का नियमित काम सही-सही होता है कि नहीं।

अतः संगठन का समान्य रूप, मेरे विचार में, ऐसा होना चाहिए : सारे स्थानीय आंदोलन, सारे स्थानीय सामाजिक-जनवादी कार्य की अगुआ समिति होनी चाहिए। इससे इसके आधीनस्थ संस्थाएं और शाखाएं निकलनी चाहिए, जैसे कि, पहले, **कार्यकारी एजेंटों का जाल,** जो (जहां तक संभव हो) सारे मज़दूर जन-समूह में व्याप्त हो और **ज़िला**-दलों व कारख़ाना (मिल) उपसमितियों के रूप में संगठित हो। यह जाल शांति के समय में साहित्य, परचे, घोषणापत्र और समिति की गुप्त सूचनाएं फैलायेगा ; हलचल के समय में यह प्रदर्शन, जुलूस और दूसरी ऐसी सामूहिक कार्रवाइयां आयोजित करेगा। दूसरे, सारे आंदोलन के लिए कार्य करनेवाले भांति-भांति के मंडल और दल (प्रचार, परिवहन, विभिन्न गोपनीय कार्रवाइयां, आदि) भी समिति से ही निकले होंगे। सभी दलों, मंडलों, उपसमितियों, इत्यादि को समिति की संस्था या शाखाएं माना जाना चाहिए। इनमें कुछ सीधे-सीधे रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी में शामिल होने की इच्छा व्यक्त करेंगे और समिति की स्वीकृति पा लेने पर, उसमें शामिल हो जायेंगे (समिति के निर्देश पर या उसके साथ सहमति के आधार पर) निश्चित कार्यभार ग्रहण करेंगे, पार्टी निकायों के आदेशों का पालन करने का दायित्व स्वीकार करेंगे, पार्टी के सभी सदस्यों जैसे अधिकार पायेंगे, समिति के पहले उम्मीदवार सदस्यों में गिने जायेंगे, इत्यादि। दूसरे रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी में शामिल नहीं होंगे वे पार्टी के सदस्यों द्वारा संगठित मंडलों या पार्टी के किसी दल से संलग्न मंडलों, आदि के रूप में ही बने रहेंगे।

अपने सभी **आंतरिक** मामलों में इन **सभी** मंडलों के सदस्यों को पूर्णतः समान अधिकार प्राप्त होंगे, वैसे ही जैसे समिति के सदस्यों में सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं। इसमें एकमात्र अपवाद यह होगा कि स्थानीय समिति के साथ (और केंद्रीय समिति व केंद्रीय निकाय के साथ भी) **व्यक्तिगत** संबंधों का अधिकार इस समिति द्वारा नियुक्त व्यक्ति (व्यक्तियों) को होगा। दूसरे सभी मामलों में इस व्यक्ति को शेष

सभी के जैसे अधिकार प्राप्त होंगे और इन शेष सदस्यों को भी स्थानीय समिति को भी और केंद्रीय समिति व केंद्रीय निकाय को भी संवाद भेजने का ((परंतु व्यक्तिगत रूप से नहीं) अधिकार होगा। इस प्रकार, उपरोक्त अपवाद से वस्तुतः समान अधिकारों का उल्लंघन नहीं होगा, बल्कि यह गोपनीयता की सख़्त मांगों को देखते हुए आवश्यक क़दम ही होगा। वह समिति का सदस्य, जो "अपने" दल का संवाद समिति, केंद्रीय समिति या केंद्रीय निकाय तक नहीं पहुंचाता है, वह पार्टी दायित्व के सीधे-सीधे उल्लंघन का उत्तरदायी होगा। आगे, जहां तक विभिन्न मंडलों की गोपनीयता और संगठन-रूप का सवाल है, यह इनके कार्यों पर निर्भर होगा – इसके अनुसार यहां नानाविध संगठन होंगे (अधिकतम "सख़्त", संकीर्ण, संकुचित से लेकर अधिकतम "खुले", व्यापक, मुक्त रूपवाले संगठन तक)। उदाहरण के लिए वितरकों के दल के लिए घोरतम गोपनीयता और सैनिक अनुशासन आवश्यक है। प्रचारकों के दल के लिए भी गोपनीयता ज़रूरी है, लेकिन सैनिक अनुशासन कहीं कम। वैध साहित्य पढ़नेवाले या व्यावसायिक ज़रूरतों और मांगों के बारे में वार्ताएं आयोजित करनेवाले मज़दूरों के दल के लिए और भी कम गोपनीयता चाहिए, इत्यादि। वितरकों के दल रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के होने चाहिए और उन्हें पार्टी के सदस्यों व अधिकारियों की निश्चित संख्या को जानना चाहिए। श्रम की व्यावसायिक परिस्थितियों का अध्ययन करनेवाले और व्यावसायिक मांगें तैयार करनेवाले दल के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह पार्टी का हो। पार्टी के एक-दो सदस्यों **की सहायता से** आत्म-शिक्षा में रत विद्यार्थियों, अफ़सरों, दफ़्तरों के कर्मचारियों के दल के लिए तो पार्टी से संबंध के बारे में जानना भी आवश्यक नहीं है, इत्यादि। लेकिन एक बात में हमें इन सभी शाखा-दलों में **अधिकतम संगठनबद्धता** की **बिना शर्त** मांग करनी चाहिए, इस बात में कि इनमें भाग ले रहा पार्टी का हर सदस्य इन दलों के काम के लिए औपचारिक रूप से उत्तरदायी है, और उसका कर्त्तव्य है कि वह **सभी** ऐसे क़दम उठाये, जिनसे केंद्रीय समिति और केंद्रीय निकाय को प्रत्येक ऐसे दल के सदस्यों के बारे में, उसके काम की विधि के बारे में और इस काम के **अंतर्य** के बारे में **अधिकतम जानकारी मिलती रहे।** यह इसलिए भी आवश्यक है ताकि केंद्र को सारे आंदोलन की **सारी** तस्वीर

पता हो, इसलिए भी कि अधिकतम व्यापक दायरे से विभिन्न पार्टी पदों के लिए लोग चुने जा सकें, इसलिए भी कि एक श्रेष्ठ दल से (केंद्र के माध्यम से) रूस के सभी ऐसे दल कुछ सीख सकें, और इसलिए भी कि उकसानेवालों और दूसरे संदिग्ध लोगों को घुसने से रोका जा सके – संक्षेप में, यह बात सभी मामलों में निरपवाद और नितांत आवश्यक है।

अब यह किया कैसे जाये? समिति को नियमित रिपोर्टें देकर, ऐसी यथासंभव अधिक रिपोर्टों के यथासंभव अधिक बड़े भाग के अंतर्य से केंद्रीय निकाय को परिचित कराके, केंद्रीय समिति और स्थानीय समिति के सदस्यों को हर तरह के मंडलों में जाने का अवसर देकर और अंततः इन मंडलों के साथ संपर्कों की सूची यानी प्रत्येक मंडल के कुछेक सदस्यों के नाम और पते अनिवार्यतः सुरक्षित स्थान पर (केंद्रीय निकाय में भी और केंद्रीय समिति के अधीन पार्टी ब्यूरो में भी) पहुंचाकर। यदि रिपोर्टें दी जाती हैं और संपर्कों की सूची पेश की जाती है, तभी यह कहा जा सकता है कि अमुक मंडल में भाग ले रहे पार्टी सदस्य ने अपना दायित्व पूरा किया है; ऐसा होने पर ही सारी पार्टी व्यावहारिक कार्य कर रहे हर मंडल से कुछ **सीखने** की स्थिति में होगी; तभी गिरफ़्तारियां हमारे लिए भयानक नहीं होंगी, क्योंकि विभिन्न मंडलों के साथ संपर्कों की सूची होने पर हमारी केंद्रीय समिति के प्रतिनिधि के लिए **तुरंत** ही एवज़ियों को ढूंढ़ना और फिर से काम चलाना आसान होगा। समिति की गिरफ़्तारी से तब सारी मशीनरी फ़ेल नहीं होगी, बल्कि केवल नेता ही हट जायेंगे, जिनका स्थान लेनेवाले सदा तैयार रहेंगे। यह कोई न कहे कि गोपनीयता के कारण रिपोर्टें भेजना और संपर्कों की सूचना देना असंभव है: इच्छा होनी चाहिए, रिपोर्टें और संपर्कों की सूची भेजना (या पहुंचाना) सदा संभव है और **संभव रहेगा**, जब तक हमारी समितियां रहेंगी, केंद्रीय समिति या केंद्रीय निकाय रहेगा।

१-११ (१४-२४) सितंबर, १९०२ की अवधि में लिखित

खंड ७, पृ० ९-२१

रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस में पार्टी की नियमावली पर विचार-विमर्श के समय दिया गया भाषण
२ (१५) अगस्त, १९०३

(उद्धरण)

... मुख्य प्रश्न पर आते हुए अब मैं कहूंगा कि साथी त्रोत्स्की साथी प्लेख़ानोव का विचार बिल्कुल नहीं समझे हैं, इसलिए अपने तर्कों में प्रश्न के मर्म से कन्नी ही काट गये हैं। उन्होंने बुद्धिजीवियों और मज़दूरों की, वर्ग दृष्टिकोण और जन-आंदोलन की चर्चा की है, लेकिन एक बुनियादी सवाल नहीं देख पाये: क्या मेरा सूत्र पार्टी के सदस्य की अवधारणा को संकीर्ण बनाता है या अधिक व्यापक? यदि वह अपने आप से यह सवाल पूछते, तो सहज ही देख लेते कि मेरा सूत्र इस अवधारणा को संकुचित करता है, जबकि मार्तोव का इसे अधिक व्यापक बनाता है[17], क्योंकि वह (स्वयं मार्तोव के ही सही शब्दों में) "लचीला" है। अब इसमें कोई संदेह नहीं कि पार्टी जीवन के ऐसे दौर में, जिससे कि हम आजकल गुज़र रहे हैं, इस "लचीलेपन" से ही सारे ढुलमुल, भ्रांत और अवसरवादी तत्वों के लिए द्वार खुल जाते हैं। इस सीधे-साधे और प्रत्यक्ष निष्कर्ष का खंडन करने के लिए यह सिद्ध करना चाहिए कि ऐसे तत्व नहीं हैं, मगर साथी त्रोत्स्की ने ऐसा करने की सोची तक नहीं। वैसे यह सिद्ध किया भी नहीं जा सकता, क्योंकि सब जानते हैं कि ऐसे तत्व कम नहीं हैं, कि वे मज़दूर वर्ग में भी हैं। इन दिनों ही पार्टी की लाइन की अटलता और सिद्धांतों की शुद्धि की रक्षा इसलिए और भी अधिक आवश्यक हो जाती है कि पार्टी की एकता पुनर्स्थापित होने पर इसमें बहुत से अस्थिर तत्व भी शामिल होंगे और पार्टी की वृद्धि के साथ-साथ इन तत्वों की संख्या भी बढ़ेगी। साथी त्रोत्स्की ने मेरी पुस्तक 'क्या करें?' के मूलभूत

विचार को बिल्कुल सही नहीं समझा, इसीलिए उन्होंने कहा कि पार्टी गोपनीय संगठन नहीं है (बहुत-से दूसरे लोगों ने भी यह आपत्ति की है)। वह यह भूल गये हैं कि मैंने अपनी पुस्तक में सबसे गोपनीय और सबसे संकीर्ण संगठनों से लेकर अपेक्षाकृत व्यापक और "खुले" (lose) संगठनों तक के कई क़िस्मों के विभिन्न संगठन सुझाये हैं। वह यह भूल गये हैं कि पार्टी को मज़दूर वर्ग के अपार जन-समूह का केवल हरावल दस्ता, मार्गदर्शक होना चाहिए, मज़दूर वर्ग तो सारा (या प्रायः सारा) ही पार्टी संगठनों के "नियंत्रण और संचालन में" काम करता है, लेकिन वह सारा का सारा पार्टी में शामिल नहीं होता और न ही होना चाहिए। वाक़ई, देखिये तो साथी त्रोत्स्की अपनी बुनियादी ग़लती के कारण कैसे-कैसे निष्कर्ष निकालते हैं। उन्होंने यहां हमें बताया है कि यदि मज़दूरों की क़तार-दर-क़तारें गिरफ़्तार हों और वे सब यह कहें कि वे पार्टी के सदस्य नहीं हैं, तो हमारी पार्टी बड़ी अजीब होगी। क्या बात इससे उलट नहीं है? क्या साथी त्रोत्स्की का तर्क ही अजीब नहीं है? वह उस बात को ही दुखद मान रहे हैं, जिस पर ज़रा से भी अनुभवी क्रांतिकारी को केवल ख़ुशी ही होती। यदि हड़तालों और जुलूसों में भाग लेने के लिए गिरफ़्तार किये जानेवाले सैकड़ों और हज़ारों लोग पार्टी संगठनों के सदस्य न निकलें, तो इससे यही सिद्ध होगा कि हमारे संगठन अच्छे हैं और हम अपना कार्यभार पूरा कर रहे हैं – नेताओं के कमोबेश छोटे दायरे को गोपनीय रख रहे हैं और आंदोलन में अधिक से अधिक लोगों को शामिल कर रहे हैं।

जो लोग मार्तोव के सूत्र का समर्थन कर रहे हैं उनकी ग़लती की जड़ यह है कि वे हमारे पार्टी जीवन की एक बुनियादी बुराई को न केवल नज़रंदाज़ कर रहे हैं, बल्कि इस बुराई को पवित्रता का जामा पहना रहे हैं। यह बुराई इस बात में है कि प्रायः सार्विक राजनीतिक असंतोष के वातावरण में, ऐसी परिस्थितियों में जबकि हमें अपना काम पूरी तरह छिपकर करना पड़ रहा है, जबकि हमारी गतिविधियों का बड़ा भाग तंग गुप्त मंडलों तक, यहां तक कि व्यक्तिगत मुलाक़ातों तक सीमित है – ऐसे हालात में गाल बजानेवालों को काम करनेवालों से अलग करना प्रायः असंभव हो रहा है। शायद ही दूसरा कोई ऐसा देश हो, जिसमें लोगों की इन दो श्रेणियों का मिला होना इतनी आम बात हो, जहां इससे इतनी असीम अस्तव्यस्तता और

क्षति होती हो जितनी रूस में। बुद्धिजीवियों में ही नहीं, मज़दूर वर्ग में भी हम इस बुराई से बुरी तरह पीड़ित हैं, और साथी मार्तोव का सूत्र इस बुराई को अनुमोदित करता है। यह सूत्र तो **हर किसी को** पार्टी सदस्य बनाने की ओर ही अनिवार्यतः लक्षित है। साथी मार्तोव को स्वयं सशर्त यह बात स्वीकार करनी पड़ी है: "आप चाहते हैं, तो मान लीजिये, हां ऐसा ही है," उन्होंने कहा। लेकिन यही तो हम नहीं चाहते! इसीलिए तो हम मार्तोव के सूत्र का इतनी दृढ़ता से विरोध कर रहे हैं। बेहतर है कि काम करनेवाले दस लोग अपने आपको पार्टी का सदस्य न कहें (सच्चे कर्मी पदों के पीछे नहीं भागते-फिरते!), बजाय इसके कि एक गाल बजानेवाले को पार्टी का सदस्य कहलाने का अधिकार और अवसर मिले। यही वह सिद्धांत है, जो मुझे अकाट्य लगता है और जिसके कारण मार्तोव से संघर्ष करने पर मजबूर हूं। मेरे सामने यह आपत्ति रखी गई है कि पार्टी के सदस्यों को अधिकार तो हम कोई देते नहीं, सो दुरुपयोग भी नहीं हो सकते। ऐसी आपत्तियां एकदम निराधार हैं: यदि यह नहीं इंगित किया गया है कि पार्टी के सदस्य को कौनसे ख़ास अधिकार मिलते हैं, तो, ध्यान दीजिये कि पार्टी के अधिकारों को सीमित करने के बारे में भी कुछ नहीं कहा गया है। यह तो हुई पहली बात। दूसरी बात, और यही मुख्य बात है, अधिकारों को छोड़कर भी, यह नहीं भूलना चाहिए कि पार्टी का हर सदस्य पार्टी के लिए उत्तरदायी है और **पार्टी अपने हर सदस्य के लिए उत्तरदायी है।** राजनीतिक गतिविधियों के हमारे यहां जो हालात हैं, सच्चा राजनीतिक संगठन जैसी भ्रूणावस्था में है, उसमें जो लोग संगठन के सदस्य नहीं हैं, उनको सदस्यता का अधिकार देना और ऐसे लोगों का, जो संगठन में शामिल नहीं हैं (और शायद, जान-बूझकर शामिल नहीं हैं) – उनका दायित्व पार्टी पर डालना सीधे-सीधे ख़तरनाक और हानिकर है। साथी मार्तोव को यह विचार भयानक लगा कि जो पार्टी का सदस्य नहीं है, वह उत्साह और उद्यम से किये गये अपने सारे कार्य के बावजूद अदालत में अपने को पार्टी का सदस्य नहीं कह सकेगा। मुझे इस बात से कोई डर नहीं लगता है। इसके विपरीत, किसी भी पार्टी संगठन में शामिल न होकर भी अपने को पार्टी-सदस्य कहनेवाला व्यक्ति अदालत में अशोभनीय व्यवहार करे, तो इससे गंभीर क्षति होगी। इस

बात का खंडन नहीं किया जा सकता कि ऐसा व्यक्ति संगठन के नियंत्रण और नेतृत्व में काम करता था, इन शब्दों की अस्पष्टता के कारण ही ऐसा खंडन करना असंभव है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि "नि-यंत्रण और नेतृत्व में" शब्दों का नतीजा यह होगा कि **न नियंत्रण होगा और न ही नेतृत्व।** केंद्रीय समिति कभी भी सभी काम करने-वालों, लेकिन संगठन में शामिल न होनेवाले लोगों पर सच्चा नियंत्रण नहीं रख सकेगी। हमारा कार्यभार है केंद्रीय समिति के हाथों में **सच्चा** नियंत्रण देना। हमारा काम है अपनी पार्टी की दृढ़ता, धैर्य और शुद्धता की रक्षा करना। हमें पार्टी के सदस्य के नाम और महत्व को ऊंचा, अधिक ऊंचा तथा और भी ऊंचा उठाने की चेष्टा करनी चाहिए। इसीलिए मैं मार्तोव के सूत्र के खिलाफ़ हूं।

खंड ७,
पृ० २८८-२९१

'ईस्क्रा'[18] के संपादकों के नाम पत्र

संपादक-मंडल को पत्र

'क्या न करें' लेख हमारे पार्टी जीवन के ऐसे प्रश्न उठाता है, जो इतने महत्वपूर्ण हैं और वर्तमान समय में इतने तात्कालिक हैं कि संपादक-मंडल द्वारा अपने पत्र में सबको लिखने के उदार, आतिथ्य-पूर्ण निमंत्रण को तुरंत स्वीकारने का लोभ संवरण करना मुश्किल है – 'ईस्क्रा' में नियमित रूप से लिखते रहे व्यक्ति के लिए तो यह और भी मुश्किल है, यह ख़ास तौर से मुश्किल है, आज के ऐसे क्षण में, जब अपनी आवाज़ उठाने में हफ़्ते भर की देर कर देने का मतलब होगा आवाज़ उठाने से बिल्कुल ही इनकार कर देना।

लेकिन मैं अपना मत व्यक्त करना चाहूंगा, ताकि कुछ अनिवार्य नहीं तो संभाव्य ग़लतफ़हमियां दूर हो सकें।

सबसे पहले मैं यह कहूंगा कि लेखक अपने इस आग्रह में हज़ार बार सही है कि पार्टी की एकता बनाये रखना, उसे नई फूट से बचाना आवश्यक है – ख़ास तौर से उन मतभेदों के कारण हो सकनेवाली फूट से, जिन्हें महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता। शांतिप्रियता, मृदुता और तत्परता का आह्वान तो सदा ही नेता के लिए शोभनीय होता है और आजकल तो विशेषतः है। इसमें ज़रा भी संदेह नहीं कि न केवल भूतपूर्व अर्थवादियों पर, बल्कि "कुछ हद तक असंगति" से ग्रस्त सामाजिक-जनवादियों के छोटे-छोटे गुटों पर भी लानत भेजने या उन्हें पार्टी से निकालना बिल्कुल अविवेकपूर्ण होगा, इस हद तक अविवेकपूर्ण कि हम लेखक की उन लोगों पर झुंझलाहट अच्छी तरह समझते हैं, जो उसे पार्टी से निष्कासन की वकालत करने में समर्थ लट्ठमार, अड़ियल,

5–1015

मूढ़ सोबाकेविच[19] लगते हैं। हम तो इससे भी आगे जाते हैं: जब हमारा पार्टी कार्यक्रम और पार्टी संगठन होगा, तो हमें अपने पार्टी के मुखपत्र के द्वार न केवल विचारों के आदान-प्रदान के लिए आतिथ्य-पूर्वक खोलने चाहिए, बल्कि उन गुटों या लेखक के शब्दों में छोटे-छोटे गुटों को भी, जो अपनी असंगति के कारण संशोधनवाद के कुछ सिद्धांतों की रक्षा करते हैं और जो किन्हीं कारणों से अलग और विशिष्ट गुट के अस्तित्व का आग्रह करते हैं, उन्हें नियमित रूप से अपने मतभेद व्यक्त करने का, चाहे वे कितने ही अकिंचन क्यों न हों, अवसर देना चाहिए। "अराजकतावादी व्यक्तिवाद" के प्रति बिल्कुल दो टूक और सोबाकेविच जैसा हठीला रुख़ न अपनाने के लिए ही हमारे विचार में जो कुछ किया जा सकता है, वह सभी कुछ करना आवश्यक है। यहां तक कि केंद्रीयतावाद के सुंदर नक़शों से और अनुशासन के बिना शर्त पालन से कुछ हद तक हटने तक सभी कुछ करना आवश्यक है, ताकि इन छोटे-छोटे गुटों को अपनी भड़ास निकालने की आज़ादी मिल जाये, ताकि सारी पार्टी को मतभेदों की गहनता या अकिंचनता तोलने या और यह तय करने का अवसर मिले कि कहां, किस बात में और ठीक **किसकी ओर से असंगति** देखने में आ रही है।

वाक़ई, अब वक़्त आ गया है कि मंडलोंवाली गुटबंदी की परंपराओं मे दृढ़तापूर्वक नाता तोड़ लिया जाये और **जन-समूहों** पर आधारित पार्टी में निश्चयभरा नारा रखा जाये: **अधिक रोशनी** डालो, पार्टी **सब कुछ** जाने, सभी और हर तरह के मतभेदों का, संशोधनवाद की ओर लौटने के क़दमों का, अनुशासन से हटने, आदि की कार्रवाइयों का मूल्यांकन करने के लिए **सारी, एकदम सारी सामग्री** उसके सामने रखी जाये। पार्टी के कार्यकर्ताओं के सारे समूह के स्वतंत्र चिंतन पर अधिक विश्वास करना चाहिए – वे ही और केवल वे ही फूट की प्रवृत्ति रखनेवाले छोटे-छोटे गुटों का असाधारण जोश ठंडा कर सकेंगे, अपने धीरे-धीरे, अदृश्य किंतु दृढ़ प्रभाव से उनमें पार्टी अनुशासन के पालन की "सदिच्छा" जगा सकेंगे, अराजकतावादी व्यक्तिवाद का पारा उतार सकेंगे, अपनी उदासीनता के तथ्य मात्र से ही फूटपरस्त तत्वों द्वारा बढ़ाये-चढ़ाये जानेवाले मतभेदों की नगण्यता दर्ज कर देंगे, दिखा देंगे और सिद्ध कर देंगे।

"क्या न करें?" (आम तौर पर क्या न करें और फूट न डालने

के लिए क्या न करें) – इस प्रश्न के उत्तर में मैं सबसे पहले कहूंगा : फूट के जो कारण पैदा होते और बढ़ते हैं उन्हें पार्टी से न छिपाया जाये, उन परिस्थितियों और घटनाओं में से, जो ऐसे कारण बनते हैं, कुछ भी न छिपाया जाये। यही नहीं, केवल पार्टी से ही नहीं, बल्कि जहां तक संभव हो, बाहरी जनता से भी न छिपाया जाये। "जहां तक संभव हो" मैंने उन बातों को ध्यान में रख कर कहा है, जिन्हें गोपनीयता के पालन के लिए छिपाना आवश्यक है – लेकिन हमारी फूटों में ऐसी परिस्थितियां नगण्य भूमिका अदा करती हैं। व्यापक प्रचार – यही उन फूटों से बचने का, जिनसे अभी बचा जा सकता है, और उन फूटों से जो अवश्यंभावी हो गई हैं, क्षति न्यूनतम करने का एकमात्र और सबसे विश्वसनीय साधन है।

वाक़ई, ज़रा उन दायित्वों पर ग़ौर करिये, जो पार्टी पर इस परिस्थिति से पड़ते हैं कि उसका वास्ता अब मंडलों से नहीं, **जन-समूहों** से है। हमारी पार्टी केवल शब्दों में ही जन-समूहों की पार्टी न हो, इसके लिए हमें पार्टी के सभी कार्यों में अधिकाधिक व्यापक जन-समूहों की शिरकत सुनिश्चित करनी चाहिए। इस शिरकत के लिए उन्हें राजनीतिक उदासीनता से विरोध और संघर्ष की ओर, विरोध की सामान्य भावना से सामाजिक-जनवादी दृष्टिकोण की सचेतन स्वीकृति की ओर, इस दृष्टिकोण को स्वीकार करने से आंदोलन के समर्थन की ओर, समर्थन से पार्टी की संगठित सदस्यता तक निरंतर ऊंचे ही ऊंचे स्तर तक उठाना चाहिए। अब जिन कार्यों की पूर्ति से जन-समूहों पर हमारे प्रभाव का स्वरूप निर्भर करता है, उन्हीं के व्यापक प्रचार के बिना, उनसे सबको अवगत कराये बिना क्या हम यह परिणाम पा सकते हैं? मामूली मतभेदों पर फूट पड़ने लगी, तो मज़दूर हमें समझना बंद कर देंगे और वैसे ही छोड़ देंगे, जैसे सेना के बिना सेनापति को सब छोड़ देते हैं, – लेखक कहता है और बिल्कुल सही कहता है। सो, मज़दूर हमें समझना बंद **न कर सकें** और संघर्ष में उनके अनुभव से, उनकी सर्वहारा की सहज-अनुभूति से **हम** "नेता" भी **कुछ सीख सकें** – इसके लिए यह आवश्यक है कि संगठित मज़दूर फूट के जो कारण पैदा होते हैं, उन पर नज़र रखना (जन-समूहों की हर पार्टी में ऐसे कारण सदा होते रहे हैं और होते रहेंगे), इन कारणों को आंकना और रूस के या विदेश के किसी "पो-

5*

शख़ान्य ''[20] में जो कुछ घटता है, उसे सारी पार्टी के, सारे आंदोलन के हितों की दृष्टि से देखना-समझना सीखें।

लेखक का इस बात पर ज़ोर देना सोलहो आने सच है कि हमारी केंद्रीय समिति को बहुत से अधिकार प्राप्त होंगे और उससे जवाबदेही भी उतनी ही सख़्त होगी। जी हां, यह बिल्कुल सही है। और ठीक इसीलिए यह ज़रूरी है कि **सारी पार्टी** नियमित रूप से, शनैः शनैः और अडिगतापूर्वक केंद्रीय समिति के लिए उपयुक्त लोग **शिक्षित करे**, कि वह इस उच्च पद के हर उम्मीदवार की **सारी गतिविधियों** को अपने सामने यों देखे, मानो हथेली पर सब कुछ रखा हो, कि वह उनकी व्यक्तिगत विशिष्टताओं तक से, उनके कमज़ोर और मज़बूत पहलुओं से, उनकी जीतों और "हारों" से परिचित हो। लेखक ने इन हारों के कारणों के बारे में कुछ बहुत ही बारीक, प्रत्यक्षतः समृद्ध अनुभव पर आधारित टिप्पणियां की हैं। ये टिप्पणियां इतनी बारीकी भरी हैं, इसीलिए यह आवश्यक है कि सारी पार्टी इनका उपयोग करे, कि वह अपने हर "नेता" की हर "हार" को, चाहे वह आंशिक ही हो, **सदा देखे**। कोई भी राजनीतिक कार्यकर्ता ऐसा नहीं है, जिसके जीवन में कोई न कोई हार न हुई हो, और यदि हम जन-समूहों पर प्रभाव की बात, जन-समूहों की "सद्भावना" जीतने की बात गंभीरता से करते हैं, तो हमें पूरी शक्ति से इस बात का प्रयास करना चाहिए कि इन हारों को मंडलों और गुटों के सड़ांध भरे वातावरण में छिपाया न जाये, बल्कि सबके फ़ैसले के लिए पेश किया जाये। पहली नज़र में यह अटपटा लगता है, कभी-कभी यह किसी निश्चित नेता के लिए "ठेसजनक" लग सकता है, – लेकिन हमें झेंप की इस झूठी भावना पर क़ाबू पाना है, यह पार्टी के सम्मुख, मज़दूर वर्ग के सम्मुख हमारा कर्त्तव्य है। इस तरह और केवल इसी तरह हम सारे प्रभावशाली पार्टी कार्यकर्ताओं के सारे समूह को (न कि मंडल या गुट में संयोगवश एकत्रित लोगों को) अपने नेताओं को जानने का और **उनमें से प्रत्येक को उसके लायक़ नंबर देने** का अवसर प्रदान करेंगे। केवल व्यापक प्रचार ही सभी मताग्रहपूर्ण एकतरफ़ा, नख़रे भरे विचलनों को ठीक करता है, वही कभी-कभी छोटे-छोटे गुटों के बीच अटपटे और हास्यास्पद "चिल्लपों" को पार्टी की आत्मशिक्षा के लिए लाभप्रद और आवश्यक सामग्री में बदलता है।

रोशनी दो, अधिक रोशनी! हमें विराट वाद्यवृंद चाहिए; हमें अनुभव पाना चाहिए, ताकि उसमें भूमिकाएं सही-सही बांट सकें, ताकि एक को भावुक वायलिन, दूसरे को रूखा डबल-बास, और तीसरे को संगीत निर्देशक की छड़ी दे सकें। पार्टी के मुखपत्र में और सभी पार्टी प्रकाशनों में लेखक के अनुपम आह्वान के अनुसार सभी मतों का स्वागत हो, सभी लोग हमारे "झगड़ों-टंटों" का फ़ैसला करें, चाहे वे किसी भी सुर के बारे में हों, जो किसी के मत में बहुत ऊंचा चला गया हो और किसी के मत में नीचा रह गया और किसी अन्य के मत में बेसुरा ही निकला हो। ऐसी खुली बहसों से ही नेताओं का ऐसा वृंद बन पायेगा, जो आपस में वाक़ई सुर मिला सकेंगे, ऐसा होने पर ही मज़दूर ऐसी स्थिति में होंगे कि हमें समझना बंद **नहीं कर सकेंगे** और ऐसा होने पर ही हमारे "सैनिक मुख्यालय" को सचमुच ही उस सेना की **सचेतन सद्भावना** प्राप्त होगी, जो अपने सेनापतियों का अनुकरण करती है और साथ ही उनका पथप्रदर्शन भी।

'ईस्क्रा', अंक ५३,
२५ नवंबर, १९०३

खंड ८,
पृ० ९३-९७

अ० अ० बोग्दानोव और स० इ० गूसेव के नाम पत्र
११ फ़रवरी, १९०५

(उद्धरण)

... 'व्पेर्योद'[21] के लिए सहकर्मी चाहिए।

हमारी गिनती बहुत कम है। यदि रूस से और २-३ लोग स्थायी तौर पर हमारे लिए लिखनेवाले नहीं मिलते, तो फिर 'ईस्क्रा' से संघर्ष की बकवास करने की ज़रूरत नहीं है। हमें पैम्फ़्लेटों और पर्चों की ज़रूरत है, बड़ी सख़्त ज़रूरत है।

हमें युवा शक्तियां चाहिए। मेरी तो राय यह है कि जो लोग यह कहने की जुर्रत करते हैं कि लोग नहीं हैं, उन्हें खड़े-खड़े गोली से उड़ा दिया जाये। रूस में लोगों की कोई कमी नहीं है। बस हमें खुलकर और हिम्मत से, हिम्मत से और खुलकर, जी हां, एक बार फिर खुलकर और एक बार फिर हिम्मत से नौजवानों से **डरे बिना** उन्हें भरती करना चाहिए। आज हलचल का[22] समय है। नौजवान ही – विद्यार्थी और उनसे भी बढ़कर युवा मज़दूर – सारे संघर्ष के भाग्य का फ़ैसला करेंगे। निश्चलता की, ओहदों के सामने सिर झुकाने, आदि की अपनी पुरानी आदतों से पिंड छुड़ाइये। नौजवानों से 'व्पेर्योद' वालों के **सैकड़ों** मंडल बनाइये और उन्हें दबकर काम करने की प्रेरणा दीजिये। नौजवानों को लेकर समिति **तिगुनी** बड़ी कीजिये, पांच या दस उपसमितियां बनाइये, हर ईमानदार और उत्साही व्यक्ति को उनसे संबद्ध कीजिये। हर उपसमिति को बिना किसी हीले-हुज्जत के परचे लिखने और छापने का अधिकार दीजिये (किसी ने कुछ ग़लती की भी, तो कोई डर नहीं : हम 'व्पेर्योद' में "विनम्रता" से ठीक कर देंगे)। क्रांतिकारी पहलक़दमी रखनेवाले सभी लोगों को तूफ़ानी गति से संगठित करना

और उन्हें काम में लगाना चाहिए। इस बात से मत डरिये कि वे प्रशिक्षित नहीं हैं, इस बात पर मत कंपकंपाइये कि उन्हें अनुभव नहीं है, कि वे विकसित नहीं हैं। पहली बात, यदि आप उन्हें संगठित और प्रेरित नहीं कर पायेंगे, तो वे मेंशेविकों[23] और गपोनों के पीछे चल देंगे और अपनी उसी अनुभवहीनता से पांच गुना अधिक नुक़सान कर बैठेंगे। दूसरे, अब तो घटनाएं ही उन्हें **हमारी भावना में** शिक्षित करेंगी। घटनाएं अभी से हर किसी को 'व्पेर्योद' की ही भावना में शिक्षित कर रही हैं।

बस **सैकड़ों** मंडल संगठित करो, संगठित करो और संगठित करो, समिति की (सोपानक्रम की) सदाशयपूर्ण बेवकूफ़ियां एकदम पीछे हटा दो। हलचल का समय है। या तो आप हर संस्तर में हर तरह के, हर क़िस्म के, सामाजिक-जनवादी काम के लिए **नये**, नौजवान, ताज़े, उत्साही सैनिक संगठन तैयार करेंगे, या फिर आप "समिति" के नौकरशाहों का यश कमाकर शहीद हो जायेंगे।

मैं 'व्पेर्योद' में इस बारे में लिखूंगा और कांग्रेस में भी बोलूंगा। मैं आपको विचारों के आदान-प्रदान के लिए प्रेरित करने की एक और **कोशिश के तौर पर** लिख रहा हूं, इस कोशिश में कि आप दर्जन भर **युवा, ताज़े** मज़दूर (और दूसरे) मंडलों को संपादक-मंडल के **सीधे सम्पर्क** में लायें, हालांकि... हालांकि, सच्चे मन से कहूं, तो मुझे कोई उम्मीद नहीं कि आप ये साहसपूर्ण कामनाएं पूरी करेंगे। बस शायद इतना ही होगा कि दो महीने बाद आप मुझे तार से जवाब देने को कहेंगे कि मैं "योजना" में अमुक परिवर्तनों से सहमत हूं कि नहीं... पहले से जवाब दिये देता हूं कि मैं सहमत हूं...

कांग्रेस में भेंट तक।

लेनिन

पुनश्च। 'व्पेर्योद' को रूस पहुंचाने के काम में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का कार्यभार रखना चाहिए। सेंट पीटर्सबर्ग में ग्राहक बढ़ाने के लिए ज़ोरदार प्रचार कीजिये। विद्यार्थी और ख़ास तौर पर **मज़दूर** अपने पतों पर ही दसियों-सैकड़ों प्रतियां मंगायें। इन दिनों के माहौल में इससे डरना बेतुका है। सब कुछ तो पुलिस पकड़ नहीं पायेगी।

आधे-तिहाई तो पहुंचेंगे ही और यही बहुत है। नौजवानों के हर मंडल को यह विचार सुझाइये और वे तो विदेश से संपर्क बनाने के अपने सैकड़ों रास्ते खोज लेंगे। 'व्पेर्योद' को पत्र भेजने के लिए पते अधिक से अधिक लोगों को दीजिये।

खंड ९,
पृ० २४७-२४८

सामाजिक-जनवादी संगठनों में मज़दूरों और बुद्धिजीवियों के संबंधों के प्रश्न पर रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की तीसरी कांग्रेस में भाषण [24]

२० अप्रैल (३ मई), १९०५

मैं उन साथियों से सहमत नहीं हो सकता, जिन्होंने यह कहा कि इस सवाल को अधिक व्यापक बनाना उचित नहीं है। यह सर्वथा उचित है। यहां यह कहा गया है कि सामाजिक-जनवादी विचारों के अनुयायी और प्रचारक मुख्यतः बुद्धिजीवी ही रहे हैं। यह कहना ग़लत है। "अर्थवाद" [25] के दिनों में क्रांतिकारी विचार मज़दूरों में ही अधिक फैले थे, बुद्धिजीवियों में नहीं। साथी अक्सेलरोद की भूमिका के साथ छपे पैम्फ़लेट का लेखक "रबोची" भी इस बात की पुष्टि करता है।

साथी सेर्गेयेव यहां कहते रहे हैं कि निर्वाचन सिद्धांत से अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होगी। यह ग़लत है। यदि **वास्तव में** निर्वाचन सिद्धांत लागू किया जाये, तो उसके फलस्वरूप हमें कहीं अधिक जानकारी रहेगी। आगे, यह इंगित किया गया है कि फूटों की पहल आम तौर पर बुद्धिजीवियों ने ही की है। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन इससे सवाल हल नहीं होता। मैं अपने छपे लेखों में बहुत पहले से यह परामर्श देता आया हूं कि समितियों में अधिक से अधिक संख्या में मज़दूर रखे जायें। दूसरी कांग्रेस के बाद की अवधि में यह दायित्व ठीक से पूरा नहीं होता रहा है – व्यावहारिक कार्यकर्ताओं के साथ वार्ताओं से मैं इसी नतीजे पर पहुंचा हूं। यदि सरातोव में समिति में केवल एक मज़दूर को रखा गया है, तो इसका मतलब है कि मज़दूरों के बीच से उचित लोगों को नहीं चुन सके। निस्संदेह, पार्टी में भीतरी फूट भी इसका एक कारण रही है: समितियों पर नियंत्रण के लिए संघर्ष का व्यावहारिक कार्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है। इसीलिए हमारी कोशिश यह थी कि कांग्रेस जल्दी से जल्दी बुलायी जाये।

भावीं केंद्रीय समिति का यह कार्यभार होगा कि हमारी अधिसंख्य समितियों का पुनर्गठन करे। हमें समितिवालों की निष्क्रियता दूर करनी है। (**तालियां और सीटियां**)।

मैं सुन रहा हूं कि साथी सेर्गेयेव सीटी बजा रहे हैं, जबकि जो समितिवाले नहीं हैं, वे तालियां बजा रहे हैं। मैं सोचता हूं कि हमें इस मामले को अधिक व्यापक दृष्टिकोण से देखना चाहिए। मज़दूरों को समितियों में लाना न केवल शैक्षिक, बल्कि राजनीतिक कार्यभार है। मज़दूरों में वर्ग की सहज चेतना है, और थोड़ा-सा राजनीतिक अभ्यास पाकर मज़दूर काफ़ी जल्दी ही तपे-मंजे सामाजिक-जनवादी बन जाते हैं। मैं इस बात का ज़ोरों से समर्थन करूंगा कि हमारी समितियों में हर दो बुद्धिजीवियों के पीछे आठ मज़दूर हों। यदि लेखों में व्यक्त किया गया परामर्श कि मज़दूरों को यथासंभव समितियों में लिया जाये, अपर्याप्त सिद्ध हुआ है, तो यह उचित होगा कि ऐसा परामर्श कांग्रेस की ओर से व्यक्त किया जाये। यदि आपके पास कांग्रेस का सुस्पष्ट और सुनिश्चित निर्देश होगा, तो आपके पास लफ़्फ़ाज़ी के ख़िलाफ़ संघर्ष का ज़ोरदार साधन होगा: यही कांग्रेस की स्पष्ट इच्छा है।

खंड १०,
पृ० १६२-१६३

इवान वसील्येविच बाबुश्किन

(निधन-सूचना)

हम अभिशप्त काल में रह रहे हैं, जब ऐसी बातें संभव हैं: पार्टी का विलक्षण कार्यकर्ता, जिस पर सारी पार्टी को गर्व है, वह साथी, जिसने अपना सारा जीवन मज़दूरों के हेतु को अर्पित किया, लापता हो जाता है। और उसके निकटतम संबंधी, जैसे कि पत्नी और मां, घनिष्ठतम साथी बरसों तक यह नहीं जानते कि उसका क्या हुआ: कहीं कठोर श्रम-कारावास में वह हड्डियां गला रहा है या किसी जेल में उसने दम तोड़ दिया है या शत्रु के साथ टक्कर में वीरगति को प्राप्त हुआ है। यही इवान वसील्येविच बाबुश्किन के साथ हुआ, जिन्हें रेन्नेनकाम्प्फ़ ने गोली मार डाली। अभी हाल ही में हमें उनकी मृत्यु का पता चला है।

इवान वसील्येविच का नाम हमारे मन के निकट है, हमारे मन को प्रिय है, केवल हम सामाजिक-जनवादियों के मन को ही नहीं। जितने भी लोगों ने उन्हें जाना, सभी के मन में उनका तेज, उनकी गहन और प्रबल क्रांतिकारी भावना, अपने हेतु में उनकी निष्ठा और शब्दाडंबर से दूरी देखकर उनके प्रति प्रेम और आदर जागा। पीटर्सबर्ग के इस मज़दूर ने १८९५ में दूसरे वर्ग-चेतन साथियों के साथ मिलकर नेवस्कया ज़स्तावा के इलाक़े में सेम्यान्निकोव और अलेक्सान्द्रोव कारख़ानों के व कांच फ़ैक्टरी के मज़दूरों के बीच ज़ोरदार काम किया, मंडल गठित किये, पुस्तकालय खोले और सारा समय स्वयं भी पूरी लगन से शिक्षा पाता रहा।

उनके सारे विचार एक ही बात पर केंद्रित थे कि काम कैसे

अधिक फैलाया जाये। १८९४ के पतझड़ में सेंट पीटर्सबर्ग में निकाले गये **पहले प्रचार परचे** को, जो सेम्यान्निकोव कारख़ाने के मज़दूरों को संबोधित था, तैयार करने में इवान वसील्येविच ने सक्रिय भाग लिया और ख़ुद अपने हाथों से उसे बांटने का काम किया। जब सेंट-पीटर्सबर्ग में 'मज़दूर वर्ग की मुक्ति के लिए संघर्ष करनेवाली लीग'[27] गठित हुई, तो इवान वसील्येविच उसके एक सबसे सक्रिय सदस्य बने और अपनी गिरफ़्तारी तक उसमें काम करते रहे। पीटर्सबर्ग में उनके साथ काम करते रहे पुराने साथियों – 'ईस्क्रा' के संस्थापकों – ने उनके साथ इस विचार पर सलाह-मशविरा किया था कि विदेश में ऐसा राजनीतिक समाचारपत्र स्थापित किया जाये, जो सामाजिक-जनवादी पार्टी की एकता और सुदृढ़ता बढ़ाने में सहायक हो, और इस विचार पर उनका ज़ोरदार समर्थन पाया था। जब तक इवान वसील्येविच आज़ाद रहे, 'ईस्क्रा' को सच्चे मज़दूरों के संवादों की कोई कमी नहीं रही। 'ईस्क्रा' के पहले बीस अंक देखिये, शूया, इवानोवो-वोज़्नेसेन्स्क, ओरेख़ोवो-ज़ूयेवो तथा केंद्रीय रूस के दूसरे स्थानों से ये सारे संवाद – इनमें प्रायः सभी इवान वसील्येविच के हाथों से गुज़रे। 'ईस्क्रा' और मज़दूरों के बीच घनिष्ठतम संबंध बनाने के लिए वे प्रयत्नशील रहे। वे 'ईस्क्रा' के सबसे कर्मठ संवाददाता और जोशीले समर्थक थे। केंद्रीय रूस से बाबुश्किन दक्षिण में, येकातेरीनोस्लाव नगर को चले गये (वहां उन्हें गिरफ़्तार करके अलेक्सान्द्रोव्स्क की जेल में रखा गया। वहां से अपने एक साथी के साथ खिड़की के सींकचे काटकर वे भाग निकले। एक भी विदेशी भाषा उन्हें नहीं आती थी, तो भी लंदन पहुंच गये, जहां तब 'ईस्क्रा' का संपादकीय कार्यालय था। बहुत सी बातें हुई थीं तब, बहुत से सवालों पर मिलकर सोच-विचार किया था। लेकिन इवान वसील्येविच पार्टी की दूसरी कांग्रेस में भाग नहीं ले पाये... जेलों और निर्वासन ने उन्हें देर तक कुछ करने योग्य न छोड़ा। क्रांति की उठती लहर नये कार्यकर्ताओं को, पार्टी के नये नेताओं को सामने ला रही थी, और बाबुश्किन इस बीच पार्टी के जीवन से कटे सुदूर उत्तर में, वेर्ख़ोयांस्क में, रह रहे थे। पर उन्होंने समय व्यर्थ नहीं गंवाया, अध्ययन करते रहे, संघर्ष के लिए अपने को तैयार करते रहे, निर्वासन में अपने साथी मज़दूरों के बीच सक्रिय रहे, उन्हें सचेतन सामाजिक-जनवादी और बोल्शेविक बनाने के प्रयासों

में जुटे रहे। १९०५ में राज-क्षमा का आदेश आया और बाबुश्किन रूस को लौट चले। लेकिन उन दिनों साइबेरिया में भी ज़ोरों से संघर्ष चल रहा था और वहां भी बाबुश्किन जैसे लोगों की ज़रूरत थी। वे इर्कूत्स्क समिति के सदस्य बन गये और तन-मन से काम में जुट गये। उन्हें सभाओं में भाषण देने पड़ते थे, सामाजिक-जनवादी आंदोलन चलाना और विद्रोह का संगठन करना पड़ता था। जब बाबुश्किन अपने पांच अन्य साथियों के साथ – खेदवश हम उनके नाम नहीं जानते – एक अलग रेल डिब्बे में हथियारों की बड़ी खेप चिता* नगर को ले जा रहे थे, तो साइबेरिया में विद्रोह को कुचलने के लिए भेजे गये रेन्नेनकाम्प्फ़** के अभियान दल ने रेलगाड़ी रोक ली और छहों के छहों को बिना किसी सुनवाई के वहीं पर जल्दबाज़ी में खोदी गयी एक साझी क़ब्र के किनारे खड़ा करके गोलियों से मार डाला। वे वीरों की मौत मरे। प्रत्यक्षदर्शी सैनिकों ने और इस रेलगाड़ी पर जो रेल कर्मचारी थे, उन्होंने उनकी मृत्यु के बारे में बताया। बाबुश्किन ज़ारशाही के लठैत की पाशविक बर्बरता के शिकार हुए। लेकिन मरते समय वह यह जानते थे कि जिस हेतु को उन्होंने अपना जीवन अर्पित किया है, वह नहीं मरेगा, कि लाखों-करोड़ों लोग यह कार्य करेंगे, कि इस हेतु के लिए दूसरे साथी मज़दूर प्राण देंगे, कि वे तब तक लड़ते रहेंगे, जब तक कि विजय नहीं पा लेते। ...

* * *

कुछ लोग ये क़िस्से गढ़ और फैला रहे हैं कि रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी "बुद्धिजीवियों की" पार्टी है, कि मज़दूर उससे कटे हुए हैं, कि रूस में मज़दूर सामाजिक-जनवाद के बिना सामाजिक-जनवादी हैं, कि ऐसा ख़ास तौर पर क्रांति से पहले और बहुत हद तक क्रांति के दौरान था। उदारतावादी उस क्रांतिकारी जन-

---

* बाद में ज्ञात हुआ कि वे हथियार चिता नगर से ले जा रहे थे। – सं०

** बाद में पता चला कि विद्रोह को कुचलने के लिए भेजा गया दल अ० न० मेल्लेर-ज़ाकोमेल्स्की का था। – सं०

संघर्ष से, जिसका नेतृत्व १९०५ में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी ने किया, अपनी घृणा के कारण यह झूठ फैला रहे हैं और समाजवादियों में कुछ अपनी नासमझी या लापरवाही के कारण इसे दोहरा रहे हैं। इवान वसील्येविच बाबुश्किन का जीवन, इस **ईस्क्रा-समर्थक मज़दूर** का दस वर्ष का सामाजिक-जनवादी कार्य उदारपंथियों के इस झूठ का साफ़ खंडन करता है। बाबुश्किन उन अग्रणी मज़दूरों में से एक थे, जिन्होंने क्रांति से **दस साल पहले मज़दूरों** की सामाजिक-जनवादी पार्टी बनानी शुरू की थी। सर्वहारा-समूहों में **ऐसे** अग्रणी लोगों के अथक, वीरतापूर्ण और सतत कार्य के बिना रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी दस साल तो क्या, दस महीनों तक भी न बनी रह पाती। **ऐसे** अग्रणी लोगों की गतिविधियों की बदौलत ही, उनके समर्थन की बदौलत ही १९०५ तक रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी ऐसी पार्टी बन गयी थी जो अक्तूबर और दिसंबर के महान दिनों में सर्वहारा के साथ **अभिन्न रूप से एकाकार हो गयी,** जिसने न केवल दूसरी दूमा में, बल्कि तीसरी यमदूत सभाई दूमा में [28] भी अपने **मज़दूर प्रतिनिधियों** के रूप में यह संबंध बनाये रखा।

उदारतावादी (कैडेट) [29] पहली दूमा के अध्यक्ष स० अ० मूरोम्त्सेव को, जिनका अभी कुछ समय पहले निधन हुआ है, जन-नायक बनाना चाहते हैं। हमें, सामाजिक-जनवादियों को, ज़ारशाही सरकार के प्रति अपनी घृणा प्रकट करने का मौक़ा नहीं चूकना चाहिए, उस सरकार के प्रति, जो मूरोम्त्सेव जैसे नरमपंथी और नपुंसक अधिकारियों पर भी अत्याचार करती थी। मूरोम्त्सेव सिर्फ़ नरमपंथी अधिकारी थे। जनवादी तो उन्हें किसी भी तरह से नहीं कहा जा सकता। वह जन-साधारण के क्रांतिकारी संघर्ष से डरते थे। वह ऐसे संघर्ष से रूस के लिए मुक्ति पाने की आशा नहीं करते थे, बल्कि स्वेच्छाचारी ज़ारशाही की सद्भावना से, रूसी जनता के इस निकटतम और निर्मम शत्रु के साथ **समझौते** से। ऐसे लोगों को रूसी क्रांति का जन-नायक कहना हास्यास्पद ही है।

लेकिन ऐसे जन-नायक हैं। ये बाबुश्किन जैसे लोग हैं। वे लोग, जिन्होंने क्रांति से पहले साल-दो साल नहीं, बल्कि पूरे दस साल मज़दूर वर्ग की मुक्ति के लिए संघर्ष को अर्पित किये। ये वे लोग हैं, जिन्होंने इक्के-दुक्कों की आतंकवादी कार्रवाइयों में अपनी शक्ति व्यर्थ नहीं गंवायी,

बल्कि दृढ़तापूर्वक, अडिगता से सर्वहारा जन-समूहों में काम करते रहे, **उनकी** वर्ग-चेतना, **उनका** संगठन, **उनकी** क्रांतिकारी गतिविधियां विकसित करने में मदद करते रहे। ये वे लोग हैं, जिन्होंने संकट की घड़ी आने पर, क्रांति के शुरू होने पर, कोटि-कोटि लोगों के गतिशील होने पर स्वेच्छाचारी ज़ारशाही के विरुद्ध सशस्त्र जन-संघर्ष की अगुआई की। स्वेच्छाचारी ज़ारशाही से जो कुछ जीता गया वह **केवल** जन-समूहों के संघर्ष से ही जीता गया, उस संघर्ष से, जिसका नेतृत्व बाबु-श्किन जैसे लोगों ने किया।

ऐसे लोगों के बिना रूसी जनता सदा दासों और तलवा चाटनेवालों की जनता रहती। ऐसे लोगों के साथ रूसी जनता हर तरह के शोषण से पूर्ण मुक्ति पा लेगी।

१९०५ के दिसंबर विद्रोह के पांच वर्ष पूरे हो गये हैं। आइये, हम शत्रु के साथ संघर्ष में वीरगति को प्राप्त हुए अग्रणी मज़दूरों की स्मृति में शीश नवाकर यह वर्षगांठ मनायें। मज़दूर साथियों से हमारा अनुरोध है कि वे उन दिनों के संघर्ष के बारे में संस्मरण जमा करके हमें भेजें, बाबुश्किन के बारे में अतिरिक्त जानकारी भी भेजें और १९०५ के विद्रोह में शहीद हुए दूसरे सामाजिक-जनवादी मज़दूरों के बारे में भी। हम ऐसे मज़दूरों की जीवनियों की पुस्तिका छापने का इरादा रखते हैं। ऐसी पुस्तिका उन सब लोगों को करारा जवाब होगी, जो रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी में पूरा विश्वास नहीं रखते और जो उसकी भूमिका को घटाकर दिखाना चाहते हैं। ऐसी पुस्तिका युवा मज़दूरों के लिए श्रेष्ठ पठन-सामग्री होगी। वे इससे यह सीखेंगे कि हर वर्ग-चेतन मज़दूर को कैसे जीना और काम करना चाहिए।

'राबोचाया गज़ेता'
अंक २, १८(३१) दिसंबर, १९१०

खंड २०,
पृ० ७९-८३

समाजवाद और युद्ध

(युद्ध के प्रति रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी का रुख़)

(उद्धरण)

अध्याय २

रूस में वर्ग और पार्टियां

राजकीय दूमा में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर दल और युद्ध

राजकीय दूमा के सामाजिक-जनवादी सदस्यों के बीच १९१३ में फूट पड़ी। एक ओर छेईद्ज़े के नेतृत्व में अवसरवाद के सात समर्थक थे, जो उन सात ग़ैर-सर्वहारा गुबेर्नियाओं से [30] चुने गये थे, जहां मज़दूरों की संख्या कुल २,१४,००० थी। दूसरी ओर, वे छह सदस्य थे, जिनमें से **सभी** मज़दूर श्रेणी के थे और रूस के सबसे ज़्यादा उद्योगीकृत केंद्रों से चुने गये थे, जहां मज़दूरों की संख्या १०,०८,००० थी।

फूट में मुख्य प्रश्न था: क्रांतिकारी मार्क्सवाद की कार्यनीति **अथवा** अवसरवादी सुधारवाद की कार्यनीति? व्यावहारिक रूप में यह मतभेद मुख्यतः संसद **के बाहर** जन-समुदायों के बीच कार्य के क्षेत्र में सामने आया। अगर उक्त कार्य करनेवाले क्रांतिकारी बुनियाद पर क़ायम रहना चाहते, तो उन्हें रूस में अपना काम ग़ैर-क़ानूनी तरीक़े से चलाना पड़ता। छेईद्ज़े का दल ग़ैर-क़ानूनी काम को नामंज़ूर करनेवाले विसर्जनवादियों [31] का वफ़ादार साथी बना रहा और मज़दूरों के साथ हर बातचीत में, हर सभा में उनकी वकालत करता रहा। इसी वजह से फूट पड़ी। छह सदस्यों ने दूमा में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर दल बनाया। एक साल के काम ने निर्विवाद रूप से प्रकट कर दिया कि रूसी मज़दूरों की विशाल बहुसंख्या इसी दल का समर्थन करती है।

युद्ध शुरू होने पर मतभेद बहुत ही स्पष्ट रूप से सामने आया। छेईद्ज़े का दल संसदीय कार्रवाई तक ही सीमित रहा। उसने युद्ध ऋणों के पक्ष में मत नहीं दिये, क्योंकि अगर वह वैसा करता, तो

मज़दूरों में अपने ख़िलाफ़ ग़ुस्से का एक तूफ़ान खड़ा कर लेता। (हमने देखा है कि रूस में टुटपुंजिया त्रुदोवीकों[32] तक ने युद्ध ऋणों के पक्ष में मत नहीं दिये।) लेकिन छेईद्ज़े के दल ने सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद के ख़िलाफ़ कोई विरोध प्रकट नहीं किया।

हमारी पार्टी की राजनीतिक लाइन को अभिव्यक्त करते हुए रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर दल दूसरे ढंग से पेश आया। वह युद्ध के प्रति विरोध को मज़दूर वर्ग में अधिक से अधिक गहरे ले गया, उसने रूसी सर्वहारा वर्ग के व्यापक समुदायों में साम्राज्यवाद विरोधी प्रचार चलाया।

इसका मज़दूरों में हार्दिक स्वागत हुआ, जिससे सरकार डर गयी और उसे ख़ुद अपने ही क़ानूनों को खुलेआम तोड़कर हमारे संसदीय साथियों को गिरफ़्तार करने तथा साइबेरिया[33] में आजीवन निर्वासित करने के लिए मज़बूर होना पड़ा। हमारे साथियों की गिरफ़्तारी के पहले ही सरकारी एलान में ज़ारशाही सरकार ने लिखा:

> "सामाजिक-जनवादी संगठनों के चंद सदस्यों ने इस संबंध में एक बिल्कुल ही असाधारण स्थिति अपनायी। उनकी सरगर्मियों का उद्देश्य ग़ैर-क़ानूनी अपीलों और ज़बानी प्रचार के ज़रिए युद्ध के ख़िलाफ़ आंदोलन करके रूस की फ़ौजी ताक़त को हिला देना था।"

ज़ारशाही के ख़िलाफ़ संघर्ष को "अस्थायी तौर से" बंद करने की वानडरवेल्डे की प्रसिद्ध अपील का नकारात्मक जवाब अपनी केंद्रीय समिति की मार्फ़त **केवल** हमारी पार्टी ने दिया। बेल्जियम में ज़ार के राजदूत प्रिंस कुदाशेव की गवाही से अब यह बात मालूम हो चुकी है कि वानडरवेल्डे ने उक्त अपील अकेले नहीं, बल्कि ज़ार के उपरोक्त राजदूत के सहयोग से तैयार की थी। विसर्जनवादियों का नेतृत्वकारी केंद्र वानडरवेल्डे से सहमत था और उसने अधिकारिक रूप से अख़बारों में बयान दिया कि वह "अपनी सरगर्मियों में **युद्ध का विरोध नहीं करेगा**"।

हमारे संसदीय सथियों पर ज़ारशाही सरकार का बुनियादी आरोप यह था कि उन्होंने वानडरवेल्डे को दिये गये अपने नकारात्मक जवाब को मज़दूरों में प्रचारित किया।

6-1015

ज़ारशाही अभियोक्ता श्री नेनारोकोमोव ने मुक़दमे के समय जर्मन और फ़्रांसीसी समाजवादियों को हमारे साथियों के लिए आदर्श के रूप में पेश किया। उन्होंने कहा : "जर्मन सामाजिक-जनवादियों ने युद्ध ऋणों के पक्ष में मत दिये और अपने को सरकार का मित्र सिद्ध किया। जर्मन सामाजिक-जनवादी इस तरह पेश आये, लेकिन रूसी सामाजिक-जनवाद के बदक़िस्मत सूरमा इस तरह पेश नहीं आये... बेल्जियम और फ़्रांस के समाजवादी एकमत होकर अन्य वर्गों के साथ अपने झगड़ों को भूल गये, वे पार्टी के मतभेदों को भूल गये और बेहिचक झंडे के नीचे खड़े हो गये।" लेकिन, उन्होंने कहा, रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर दल के सदस्य अपनी पार्टी की केंद्रीय समिति की हिदायत पर उस तरह पेश नहीं आये...

मुक़दमे की कार्रवाई ने उस व्यापक ग़ैर-क़ानूनी युद्ध विरोधी आंदोलन की एक शानदार तस्वीर उजागर कर दी, जो सर्वहारा जनता के बीच हमारी पार्टी चला रही थी। ज़ारशाही अदालत, निस्संदेह, दूर-दराज़ तक उन सारी सरगर्मियों को "उजागर" नहीं कर पायी, जिन्हें हमारे साथी इस क्षेत्र में चला रहे थे। फिर भी जितना कुछ उजागर हुआ, उससे यह प्रकट हो गया था कि चंद महीनों की कम मुद्दत में भी कितना कुछ किया गया था।

अदालत में हमारे दलों और हमारी समितियों द्वारा युद्ध के ख़िलाफ़ और अंतर्राष्ट्रीय कार्यनीति के पक्ष में जारी किये गये ग़ैर-क़ानूनी घोषणा-पत्र पढ़े गये। रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर दल के सदस्य रूस भर में वर्ग-चेतन मज़दूरों के संपर्क में थे और मार्क्सवादी दृष्टिकोण से युद्ध का मूल्यांकन करने में मज़दूरों की सहायता करने के लिए दल भरसक सब कुछ कर रहा था।

ख़ार्कोव गुबेर्निया के मज़दूरों के प्रतिनिधि कामरेड मुरानोव ने अदालत में कहा :

"यह समझते हुए कि जनता ने मुझे राजकीय दूमा में आरामकुर्सी पर बैठे रहने के लिए नहीं भेजा है, मैं मज़दूर वर्ग की मन:स्थिति जानने के लिए जगह-जगह घूमा।" उन्होंने अदालत में यह भी स्वीकार किया कि उन्होंने हमारी पार्टी के ग़ैर-क़ानूनी आंदोलनकर्ता के काम की ज़िम्मे-दारी ली थी और उराल में उन्होंने वेर्ख़्नेइसेत्स्क कारख़ाने तथा दूसरी जगहों में मज़दूर समितियां संगठित की थीं। अदालती कार्रवाई ने

दिखा दिया कि युद्ध छिड़ने के बाद रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर दल के सदस्य प्रचार-कार्य के लिए प्रायः सारे रूस में घूमे, कि मुरानोव, पेत्रोव्स्की, बदायेव तथा दूसरों ने मज़दूरों की अनगिनत बैठकों का इंतज़ाम किया, जिनमें युद्ध विरोधी प्रस्ताव पास किये गये, इत्यादि।

ज़ारशाही सरकार ने अभियुक्तों को मृत्युदंड की धमकी दी। यही वजह थी कि ख़ुद मुक़दमे के दौरान वे सब इतनी बहादुरी से पेश नहीं आये, जितनी बहादुरी से कामरेड मुरानोव पेश आये थे। उन्होंने यह कोशिश की कि ज़ारशाही अभियोक्ताओं के लिए उन्हें मुजरिम ठहराना मुश्किल हो जाये। इस बात को रूसी सामाजिक-अंधराष्ट्र-वादी अब कमीनेपन के साथ इस्तेमाल कर रहे हैं, ताकि प्रश्न का यह सार धुंधला बना दिया जाये कि मज़दूर वर्ग को किस प्रकार की संसदीय पद्धति की आवश्यकता है?

संसदीय पद्धति को मान्यता मिलती है ज़्यूदेकुम और हाइने से, सेम्बा और वाइयां से, बिसोलाती और मुसोलिनी से, छेईद्ज़े और प्लेख़ानोव से [34] तथा संसदीय पद्धति को मान्यता मिलती है दूमा में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर दल के हमारे साथियों से, उसको मान्यता मिलती है बुल्गारिया और इटली के साथियों से, जिन्होंने अंधराष्ट्रवाद से संबंध-विच्छेद कर लिया है। संसदीय पद्धति की विभिन्न क़िस्में होती हैं। कुछ लोग संसदीय अखाड़े का इस्तेमाल अपनी सरकारों की अनुकंपा प्राप्त करने अथवा अधिक से अधिक छेईद्ज़े के दल की तरह हर चीज़ से हाथ धो लेने के लिए करते हैं। दूसरे लोग संसदीय पद्धति का इस्तेमाल करते हैं अंत तक क्रांतिकारी बने रहने के लिए, ज़्यादा से ज़्यादा मुश्किल परिस्थितियों में भी समाजवादी और अंतर्राष्ट्रीय-तावादी की हैसियत से अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए। कुछ लोगों की संसदीय सरगर्मियां उन्हें मंत्रिमंडल की गद्दियों पर पहुंचा देती हैं; दूसरे लोगों की संसदीय सरगर्मियां उन्हें जेलों में, जलावतनी में, सख़्त क़ैदों में पहुंचा देती हैं। कुछ लोग बुर्जुआ वर्ग की सेवा करते हैं और दूसरे सर्वहारा वर्ग की। कुछ लोग सामाजिक-साम्राज्यवादी हैं और दूसरे क्रांतिकारी मार्क्सवादी।

जुलाई-अगस्त, १९१५ में लिखित

खंड २६, पृ० ३३२-३३५

प्रतियोगिता कैसे संगठित की जानी चाहिए ?

पूंजीवादी लेखक प्रतियोगिता, निजी उद्यमशीलता तथा पूंजीपतियों और पूंजीवादी व्यवस्था के अन्य सभी उत्कृष्ट गुणों और वरदानों की प्रशंसा करने में पोथियां रंगते आये हैं। समाजवादियों पर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि वे इन गुणों के महत्व को समझने से इनकार करते हैं तथा "मानव-प्रकृति" की उपेक्षा करते हैं। परंतु वास्तव में पूंजीवाद ने बहुत पहले ही लघु स्वतंत्र माल-उत्पादन, जिसके अंतर्गत प्रतियोगिता किसी हद तक उद्यमशीलता, क्रियाशीलता तथा साहसपूर्ण पहलक़दमी का विकास कर सकती थी, के स्थान पर बड़े और बहुत बड़े पैमाने के कारख़ाना-उत्पादन, संयुक्त पूंजी कंपनियों, सिंडीकेटों और दूसरी इजारेदारियों को स्थापित कर दिया है। **ऐसे** पूंजीवाद के अंतर्गत प्रतियोगिता का अर्थ है **बहुसंख्यक** आबादी, उसके विशाल बहुमत की १०० मेहनतकशों में से ९९ मेहनतकशों की उद्यमशीलता, क्रियाशीलता तथा साहसपूर्ण पहलक़दमी का अविश्वसनीय रूप से पाशविक दमन, इसका यह भी अर्थ है कि प्रतियोगिता का स्थान वित्तीय धोखाधड़ी, कुनबापरस्ती और सामाजिक सोपान की ऊपर की सीढ़ियों पर जी-हुज़ूरी ले लेती है।

प्रतियोगिता को समाप्त करना तो दूर रहा इसके विपरीत समाजवाद पहली बार उसके सचमुच ही **व्यापक** तथा सचमुच ही **जन-व्यापी** पैमाने पर उपयोग का, श्रमजीवी जनता के बहुमत को वास्तव में श्रम के एक ऐसे क्षेत्र में ले आने का अवसर उत्पन्न करता है जिसमें वे अपनी योग्यताओं का परिचय दे सकते हैं, अपनी क्षमताओं का विकास कर सकते

हैं तथा अपनी प्रतिभाओं का परिचय दे सकते हैं, ये प्रतिभाएं जनसाधारण में, उन लोगों में इतनी प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं, जिन्हें लाखों-करोड़ों की तादाद में पूंजीवाद दबाता था, कुचलता था और जिनका वह गला घोंटा करता था।

अब जबकि एक समाजवादी सरकार सत्तारूढ़ है, हमारा कर्त्तव्य है कि हम प्रतियोगिता संगठित करें।

बुर्जुआ वर्ग के ख़ुशामदी टट्टू और टुकड़ख़ोर समाजवाद के बारे में कहते थे कि वह एकसमान बंधी-बंधायी उकतानेवाली, नीरस फ़ौजी बैरक जैसी व्यवस्था है। थैलीशाहों के पिट्ठुओं और शोषकों के तलवे सहलानेवाले बुर्जुआ बुद्धिजीवी महानुभाव जनता को समाजवाद का "हौवा दिखाते" थे, जबकि पूंजीवाद के ही अधीन इस जनता के भाग्य में यही बदा था कि वह कठोर श्रम-कारावास को, कोल्हू के बैल जैसे नीरस, कमरतोड़ देनेवाले श्रम तथा बैरकी अनुशासन को भुगते और आधा पेट भरकर घोर दरिद्रता का जीवन व्यतीत करे। इस कठोर श्रम-कारावास से जनता की मुक्ति की दिशा में पहला क़दम ज़मींदारियों की ज़ब्ती है, मज़दूर नियंत्रण की स्थापना और बैंकों का राष्ट्रीयकरण है। अगले क़दम होंगे मिलों का राष्ट्रीयकरण तथा पूरी आबादी का उपभोक्ता समितियों में, जो साथ ही उत्पादित माल की बिक्री करनेवाली समितियां भी हैं, अनिवार्य रूप से संगठन, अनाज तथा अन्य जीवनोपयोगी वस्तुओं के व्यापार की राजकीय इजारेदारी।

केवल अब जाकर ही उद्यमशीलता, प्रतियोगिता तथा साहसपूर्ण पहलक़दमी के जन-व्यापी पैमाने पर प्रकट होने का अवसर उत्पन्न हुआ है। प्रत्येक कारख़ाना, जिससे पूंजीपति को ख़ारिज कर दिया गया है या जिसमें कम से कम उस पर सच्चे मज़दूर नियंत्रण के द्वारा अंकुश लगा दिया गया है, प्रत्येक गांव, जिससे ज़मींदार शोषक खदेड़ा जा चुका है और, जिसमें उसकी ज़मीन ज़ब्त कर ली गयी है, अब एक ऐसा क्षेत्र बन गया है जिसमें मेहनतकश इन्सान अपनी प्रतिभा प्रकट कर सकता है, अपनी कमर सीधी कर सकता है, अपना सिर उठा सकता है, तनकर खड़ा हो सकता और यह महसूस कर सकता है कि वह भी एक इन्सान है। सदियों तक दूसरों के लिए काम करने के बाद, शोषक के लिए बेगार करने के बाद उसके लिए अब **स्वयं अपने लिए काम** करना और यही नहीं, अपने काम में आधुनिक टेक्नोलाजी

और संस्कृति की उपलब्धियों का इस्तेमाल करना संभव हो गया है।

ज़ाहिर है, विवशता की स्थिति में काम करने की जगह अपने लिए काम करने की स्थिति में मानव-इतिहास के अन्दर यह महानतम परिवर्तन, टकरावों, कठिनाइयों, विरोधों तथा पुराने हरामख़ोरों और उनके टुकड़ख़ोरों के ख़िलाफ़ बलप्रयोग के बिना नहीं हो सकता। इस विषय में किसी भी मज़दूर के दिमाग़ में कोई भ्रम नहीं है। मज़दूर और ग़रीब किसान, जिन्हें घोर अभाव, शोषकों के लिए लंबे वर्षों के दास-श्रम, इन शोषकों की गालियों की बौछारों और ज़ोर-ज़ुल्म की कार्रवाइयों ने तपा दिया है, यह समझते हैं कि इन शोषकों के प्रतिरोध की कमर तो **तोड़ने** में समय लगेगा। मज़दूर और किसान लोग बुद्धिजीवी महानुभावों की, 'नोवाया जीज़्न'[35] के इर्द-गिर्द खड़े लोगों की भावुकतापूर्ण भ्रांतियों से या चिकनी-चुपड़ी बातों से किंचित प्रभावित नहीं हैं, उन लोगों की बातों से जो "गला फाड़-फाड़कर" पूंजीपतियों की "लानत-मलामत" किया करते थे और हाथ उठा-उठाकर और पैर पटक-पटककर उनके ख़िलाफ़ अपने जज़्बात का इज़हार किया करते थे, लेकिन जो कथनी से **करनी** का, अपनी धमकियों को अमली शक्ल देने का, पूंजीपतियों को **निकाल बाहर** करने के काम को व्यवहार में पूरा करने का समय आने पर फूट-फूट कर रो पड़े और पिटे पिल्लों की तरह पें-पें करने लगे।

विवशता की स्थिति में काम करने से स्वयं अपने लिए काम करने की स्थिति में, विराट, राष्ट्रीय (और कुछ हद तक अंतर्राष्ट्रीय, विश्व) पैमाने पर नियोजित तथा संगठित श्रम की स्थिति में इस महान परिवर्तन के लिए – शोषकों के प्रतिरोध के दमन के लिए "**सैनिक**" कार्रवाइयों के अलावा – सर्वहारा तथा ग़रीब किसानों द्वारा ज़बर्दस्त **संगठनात्मक**, संगठनकारी प्रयास अपेक्षित है। संगठनात्मक कार्य कल के दास-स्वामियों (पूंजीपतियों) और उनके गुर्गों के गिरोहों को – बुर्जुआ बुद्धिजीवी महानुभावों को – सैनिक उपायों से निर्ममतापूर्वक कुचलने के कार्य के साथ अभिन्न रूप से मिलकर एकाकार हो गया है। कल के दास-स्वामी और उनके "बुद्धिजीवी" पिट्ठू यही सोचते और कहते रहते हैं, "हम हमेशा से संगठनकर्ता और मुखिया रहे हैं। हमने हुक़ूमत की है और हम हुक़ूमत करते रहना चाहते हैं। हम 'जनसाधारण' की, मज़दूरों और किसानों की आज्ञा का पालन करने से इनकार

करेंगे। हम उनकी अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे । हम अपने ज्ञान को थैलीशाहों के विशेषाधिकारों की तथा जनता पर पूंजी के शासन की रक्षा का एक अस्त्र बना देंगे।"

बुर्जुआ वर्ग तथा बुर्जुआ बुद्धिजीवी यही सोचते, कहते और करते हैं। उनके **आत्मस्वार्थ** की दृष्टि से उनका आचरण समझ में आने लायक़ है। सामंती ज़मींदारों के टुकड़ख़ोरों और पिट्ठुओं को भी, गोगोल द्वारा चित्रित पादरियों, क़लमघिस्सू लेखकों और नौकरशाहों को, बेलीन्स्की से नफ़रत करनेवाले "बुद्धिजीवियों" को भी भूदास-व्यवस्था से जुदा होना बहुत "मुश्किल" लगा था। परंतु शोषकों तथा उनके "बुद्धि-जीवी" चाकरों के हेतु का कोई भविष्य नहीं है। मज़दूर और किसान उनके प्रतिरोध को भंग करने लगे हैं – हालांकि बदक़िस्मती से वे अभी इस काम को पर्याप्त दृढ़ता, अडिगता और निर्ममता के साथ नहीं कर रहे हैं – परंतु इसमें संदेह नहीं कि वे उनके प्रतिरोध को **चूर-चूर कर देंगे।**

"वे" सोचते हैं कि समाजवादी क्रांति ने जिन महान, सचमुच वीरतापूर्ण – इस शब्द के विश्व ऐतिहासिक अर्थ में – संगठनात्मक कार्यों को श्रमजीवी जनता के कंधों पर डाल दिया है, उनसे निबट पाने में "जनसाधारण", "साधारण" मज़दूर और ग़रीब किसान असमर्थ होंगे। बुद्धिजीवी लोग, जो पूंजीपतियों तथा पूंजीवादी राज्य की सेवा करने के अभ्यस्त हैं, अपने को सांत्वना देने के लिए कहते हैं: "आप हमारे बिना काम नहीं चला सकते।" परंतु उनकी इस उद्धत धारणा में बिल्कुल कोई सच्चाई नहीं है; शिक्षित लोग जनता के पक्ष में, श्रमजीवी जनता के पक्ष में दिखाई देने लगे हैं और पूंजी के चाकरों के प्रतिरोध को भंग करने में उसकी सहायता कर रहे हैं। किसानों और मज़दूर वर्ग के बीच बहुत से योग्य संगठनकर्ता हैं और ये लोग अभी-अभी अपनी हस्ती का एहसास करने लगे हैं, जागृत होने लगे हैं, महान, प्राणवान सृजनात्मक कार्य की ओर बढ़ने लगे हैं और स्वयं अपनी शक्तियों के बल पर समाजवादी निर्माण का कार्य पूरा करने में जुटने लगे हैं।

सृजनात्मक **संगठनात्मक** कार्य के क्षेत्र में मजदूरों की और सामान्यतः समस्त श्रमिक तथा शोषित जनता की इस स्वतंत्र पहलक़दमी का अधिक से अधिक व्यापक रूप में विकास करना आज का यदि सबसे महत्वपूर्ण

नहीं, तो एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य अवश्य है। हर हालत में यह ज़रूरी है कि हम इस पुराने, **हास्यास्पद**, बर्बर, घृणित, निंदनीय पूर्वाग्रह को नष्ट कर दें कि तथाकथित "उच्चतर वर्गों" के लोग ही, धनवान ही और जो लोग धनवानों की पाठशाला से दीक्षित होकर बाहर आये हैं, वे ही राज्य का प्रशासन चलाने और समाजवादी समाज के संगठनात्मक विकास को निर्देशित करने की क्षमता रखते हैं।

पुरानी सड़ी-गली परिपाटी, निष्प्राण धारणाएं, दासानुरूप प्रवृत्तियां और इनसे भी अधिक, पूंजीपतियों की नीच स्वार्थान्धता इस पूर्वाग्रह का पोषण करती हैं, उनका हित इस बात में है कि वे लूटमार करते हुए प्रशासन चलायें और प्रशासन चलाते हुए लूटमार करते रहें। जी नहीं, मज़दूर क्षण भर के लिए भी यह नहीं भूलेंगे कि उन्हें ज्ञान की शक्ति की अपेक्षा है। मज़दूरों की जो असाधारण ज्ञान-पिपासा विशेषतः इस समय दिखाई पड़ रही है, उससे पता चलता है कि सर्वहारा वर्ग के अंदर इस तरह की ग़लत धारणाएं न तो हैं और न ही हो सकती हैं। परंतु हर वह **साधारण** मज़दूर व किसान, जो पढ़-लिख सकता है, जो लोगों को परख सकता है तथा जिसे व्यावहारिक अनुभव है, **संगठनात्मक** ार्य करने की क्षमता रखता है। "जनसाधारण" के बीच, जिनका ज़िक्र बुर्जुआ बुद्धिजीवी इतनी उद्धतता और हिक़ारत के साथ करते हैं, ऐसे **बहुत-से** स्त्री-पुरुष मौजूद हैं। मज़दूर वर्ग तथा किसानों के बीच इस प्रकार की प्रतिभा के समृद्ध स्रोत का अभी तक इस्तेमाल नहीं किया गया है।

मज़दूरों और किसानों में अभी भी "संकोच की भावना" है, वे अभी इस बात के अभ्यस्त नहीं हुए हैं कि अब **वे** ही **शासक** वर्ग हैं; उनमें अभी पर्याप्त दृढ़ता का अभाव है। क्रांति **एक ही झटके में** इन गुणों का ऐसे लाखों-करोड़ों लोगों में संचार नहीं कर सकती थी, जो डंडे के भय के बीच जीवन भर तंगी और भूख की वजह से काम करने के लिए विवश थे। परंतु अक्तूबर, १६१७ की क्रांति इसीलिए शक्तिशाली, प्राणवान तथा अपराजेय है कि वह इन गुणों को **जागृत** करती है, पुराने अवरोधों को छिन्न-भिन्न करती है, जीर्ण-शीर्ण बंधनों को काटती है और श्रमजीवी जनता को नये जीवन के **स्वतंत्र** सृजन के पथ पर आगे बढ़ाती है।

हिसाब-किताब और नियंत्रण रखना – यही मज़दूरों, सैनिकों तथा

किसानों के प्रतिनिधियों की प्रत्येक सोवियत का, प्रत्येक उपभोक्ता समिति का, प्रत्येक सप्लाई संघ अथवा समिति का, प्रत्येक कारख़ाना समिति या सामान्यत: मज़दूर नियंत्रण निकाय का **मुख्य** आर्थिक कार्य है।

यह ज़रूरी है कि हम श्रम के मापदंड तथा उत्पादन के साधनों को उस ग़ुलाम के नज़रिये से देखने की आदत से लड़ें, जिसका एकमात्र उद्देश्य अपने काम के भार को हल्का करना या **बुर्जुआ** वर्ग से कुछ टुकड़े हासिल करना होता है। कम से कम अग्रणी, वर्ग-चेतन मज़दूरों ने यह लड़ाई शुरू कर दी है और वे अपनी पांतों में उन नवागंतुकों का डटकर विरोध कर रहे हैं, जो लड़ाई के ज़माने में ख़ासकर बड़ी तादाद में कारख़ानों की दुनिया में आये और जो अब **जनता** के कारख़ाने के साथ, उस कारख़ाने के साथ जो अब जनता की संपत्ति बन गया है उसी पुराने तरीक़े से पेश आना चाहते हैं और "केक का बड़े से बड़ा टुकड़ा लेकर चंपत हो जाना" अपना एकमात्र लक्ष्य बनाना चाहते हैं। सभी वर्ग-चेतन तथा विचारशील किसान और मेहनतकश लोग अग्रणी मज़दूरों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर यह लड़ाई चलायेंगे।

हिसाब-किताब तथा नियंत्रण, **बशर्ते कि** यह राजकीय सत्ता के सर्वोच्च निकाय – मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों द्वारा या **इस** सत्ता द्वारा निर्देशित तथा अधिकृत रूप में क्रियान्वित किया जाये – व्यापक, सामान्य, सार्वत्रिक हिसाब-किताब और नियंत्रण, श्रम की मात्रा तथा उत्पादों के वितरण का हिसाब-किताब और नियंत्रण – यही सर्वहारा वर्ग के राजनीतिक शासन के स्थापित तथा सुरक्षित हो चुकने पर समाजवादी पुनर्गठन का **सारतत्व** होता है।

समाजवाद में संक्रमण के लिए आवश्यक हिसाब-किताब और नियंत्रण जनता द्वारा ही क्रियान्वित किया जा सकता है। हिसाब-किताब रखने और **अमीरों, ठगों, कामचोरों और गुंडों** पर कठोर अंकुश लगाने के काम में **आम** मज़दूरों और किसानों के स्वैच्छिक और निष्ठापूर्ण सहयोग के द्वारा ही, ऐसे सहयोग के द्वारा ही जिसकी विशिष्टता क्रांतिकारी उत्साह होता है, अभिशप्त पूंजीवादी समाज के इन अवशेषों पर, मानवता की इस तलछट पर, समाज के इन बुरी तरह सड़े-गले और क्षयग्रस्त जर्जर अंगों पर, इस छूत की बीमारी पर, इस महामारी पर, इस नासूर पर, जो समाज-

वाद को पूंजीवाद से विरासत में मिला है, विजय पायी जा सकती है।

मज़दूरो और किसानो, श्रमिक और शोषित लोगो! ज़मीन, बैंक और कारख़ाने अब समस्त जनता की संपत्ति बन गये हैं! यह ज़रूरी है कि आप **ख़ुद** उत्पादन तथा उत्पादों के वितरण का हिसाब-किताब रखने और नियंत्रण करने के काम को शुरू करें – यही रास्ता और यही समाजवाद की विजय का **एकमात्र** रास्ता है, यही उसकी विजय की एकमात्र गारंटी है, समस्त शोषण पर, अभाव पर, दरिद्रता पर विजय की गारंटी है। इसलिए कि रूस में इतना काफ़ी अनाज, लोहा, लकड़ी, ऊन, कपास, फ़्लैक्स मौजूद है कि हर आदमी की ज़रूरतें पूरी की जा सकती हैं, बशर्ते कि श्रम तथा श्रम के उत्पादों का उचित प्रकार से वितरण किया जाये, बशर्ते कि इस वितरण पर समस्त जनता द्वारा **व्यावहारिक, कामकाजी** नियंत्रण स्थापित किया जाये, बशर्ते कि हम जनता के शत्रुओं – अमीरों और उनके टुकड़ख़ोरों, ठगों, कामचोरों और गुंडों को – राजनीति में **ही नहीं**, वरन **प्रतिदिन के आर्थिक** जीवन में भी पराजित कर सकें।

जनता के इन शत्रुओं, समाजवाद के शत्रुओं, श्रमजीवी जनता के शत्रुओं के प्रति ज़रा भी रहम न दिखाया जाये! अमीरों के और उनके टुकड़ख़ोरों, बुर्जुआ बुद्धिजीवियों के ख़िलाफ़ आख़िरी दम तक लड़ाई चलायें! ठगों, कामचोरों और गुंडों के ख़िलाफ़ लड़ाई चलायें! ये सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं, एक ही कोख से जन्मे हैं – पूंजीवाद के संपोले हैं, उस अभिजातीय तथा बुर्जुआ समाज की औलाद हैं, उस समाज की, जिसमें मुट्ठी भर लोग जनता को लूटते थे और अपमानित करते थे, जिसमें ग़रीबी और तंगी से मजबूर होकर हज़ारों लोगों ने गुंडागर्दी, भ्रष्टाचार और ठगी का रास्ता अपनाया और फलतः वे मानवीयता का प्रत्येक लक्षण खो बैठे; वही समाज, जो मेहनतकश इन्सान के अंदर अनिवार्यतः इस इच्छा का पोषण करता था कि वह किसी न किसी तरह, फ़रेब के ज़रिए ही सही, शोषण से छुटकारा पाये, किसी तरकीब से घृणित श्रम से क्षण भर के लिए ही सही, बच निकले और जिस उपाय से भी हो सके, जिस क़ीमत पर भी हो सके कम से कम रोटी का एक टुकड़ा हासिल करे ताकि वह भूखों न मरने पाये और अपने तथा अपने सगे-संबंधियों की भूख की ज्वाला शांत कर सके।

अमीर और ठग ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जिन **जोंकों** का पूंजीवाद पोषण करता है, ये उनकी दो मुख्य श्रेणियां हैं; वे समाजवाद के मुख्य शत्रु हैं। यह ज़रूरी है कि इन शत्रुओं पर समस्त जनता की ख़ास निगरानी रहे; समाजवादी समाज के क़ानूनों और विनियमों के रंच मात्र भी उल्लंघन के लिए उन्हें सख़्त से सख़्त सज़ा दी जानी चाहिए। इस संबंध में किसी भी प्रकार की कमज़ोरी, हिचकिचाहट या भावुकता का परिचय देना समाजवाद के प्रति अक्षम्य अपराध करना होगा।

ये जोंकें समाजवादी समाज को नुक़सान न पहुंचा सकें, इसके लिए ज़रूरी है कि हम संपन्न कार्य की मात्रा का हिसाब-किताब तथा वितरण पूरी जनता द्वारा संगठित करायें जिसमें लाखों-लाख मज़दूर तथा किसान स्वेच्छा से, जोश के साथ और क्रांतिकारी उत्साह के साथ भाग लें। और इस हिसाब-किताब और नियंत्रण का संगठन करने के लिए, जो किसी भी ईमानदार, होशियार और कुशल मज़दूर और किसान की **क्षमता से बिल्कुल बाहर नहीं है**, यह ज़रूरी है कि हम उनकी उस संगठनात्मक प्रतिभा को जागृत करें जो उनमें मौजूद है; यह ज़रूरी है कि हम संगठनात्मक उपलब्धि के क्षेत्र में उनके बीच **प्रतियोगिता** का भाव जागृत करें तथा इस प्रतियोगिता को राष्ट्रव्यायी पैमाने पर संगठित करें; मज़दूरों और किसानों को अवश्य ही इस स्थिति में लाना होगा कि वे शिक्षित व्यक्ति के अनिवार्य परामर्श तथा "शिक्षितों" के बीच अकसर पाये जानेवाले **फूहड़पन** पर "साधारण" मज़दूर और किसान द्वारा अनिवार्य नियंत्रण के बीच अंतर को स्पष्ट रूप से समझ सकें।

यह फूहड़पन, यह लापरवाही, वक़्त की पाबन्दी का अभाव, अधीरताभरी जल्दबाज़ी, काम करने की जगह बहस करने की, करनी की जगह कथनी की प्रवृत्ति, हर तरह का काम शुरू करने और एक को भी पूरा न करने की प्रवृत्ति – ये सब "शिक्षितों" की विशेषताएं हैं, इनका कारण यह नहीं है कि वे स्वभाव से बुरे हैं, इनका कारण यह तो और भी नहीं है कि उनकी नीयत बुरी है; इनका कारण है उनकी ज़िंदगी का तर्ज़ व तरीक़ा, उनके काम का सारा माहौल, अत्यधिक थकावट, मानसिक श्रम का शारीरिक श्रम से अस्वाभाविक बिलगाव, आदि, आदि।

हमारी क्रांति की ख़ामियों, ग़लतियों और दोषों में वे कम महत्वपूर्ण नहीं हैं, जिनका कारण हमारे बीच मौजूद बुद्धिजीवियों की ये शोचनीय – परंतु इस समय अनिवार्य – विशेषताएं तथा बुद्धिजीवियों के **संगठनात्मक** कार्य पर **मज़दूरों** द्वारा पर्याप्त नियंत्रण का **अभाव** है।

मज़दूरों और किसानों में अभी भी "भीरुता" है; यह ज़रूरी है कि वे अपनी इस भीरुता को दूर करें और वे **निश्चय ही** इसे दूर करेंगे। हम शिक्षितों, बुद्धिजीवियों तथा विशेषज्ञों के परामर्श तथा निर्देशों के बिना काम नहीं चला सकते। हर समझदार मज़दूर और किसान इस बात को बख़ूबी समझता है और हमारे बीच मौजूद बुद्धि-जीवी इस बात की शिकायत नहीं कर सकते कि मज़दूर और किसान उनके प्रति ध्यान नहीं देते या उन्हें बिरादराना इज़्ज़त नहीं देते। लेकिन परामर्श तथा निर्देश एक चीज़ है और **व्यावहारिक** हिसाब-किताब तथा नियंत्रण का संगठन दूसरी ही चीज़ है। अक्सर बुद्धिजीवी लोग बहुत अच्छे परामर्श तथा निर्देश देते हैं, लेकिन इनको **क्रियान्वित** करने, "कथनी के करनी" में रूपांतरण पर **व्यावहारिक नियंत्रण** रखने के मामले में वे सरासर बेतुके, **हास्यास्पद** तथा लज्जास्पद रूप से "अनाड़ी" तथा अयोग्य साबित होते हैं।

ठीक इसी मामले में हम "जनता" के बीच से आनेवाले, मिल मज़दूरों और मेहनतकश किसानों के बीच से आनेवाले व्यावहारिक संगठनकर्ताओं की सहायता तथा उनकी **नेतृत्वकारी भूमिका के बिना** काम नहीं चला सकते। "बर्तन-भांड़े देवता नहीं बनाते" यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे मज़दूरों और किसानों को अपने मन में ख़ूब अच्छी तरह बैठा लेना चाहिए। उन्हें अवश्य ही समझना चाहिए कि अब सब कुछ **व्यावहारिक कार्य** पर ही निर्भर है। वह ऐतिहासिक घड़ी आ पहुंची है जब सिद्धांत का व्यवहार में रूपांतरण हो रहा है, जब सिद्धांत व्यवहार द्वारा प्राणशक्ति पा रहा है, व्यवहार द्वारा संशोधित किया तथा परखा जा रहा है; जब मार्क्स के ये शब्द, "वास्तविक आंदोलन का हर क़दम एक दर्जन कार्यक्रमों से अधिक महत्वपूर्ण होता है"[36], ख़ास तौर पर लागू होते हैं, विशेष रूप से चरितार्थ हो रहे हैं... धनवानों और ठगों पर व्यवहारतः अंकुश लगाने, प्रतिबंध लगाने, उनमें एक-एक की ख़बर रखने और उनको क़ाबू में रखने की दिशा में हर क़दम समाजवाद के हक़ में एक दर्जन बेहतरीन दलीलों से ज़्यादा क़ीमत रखता

है क्योंकि "सिद्धांत, मेरे मित्र, नीरस तथा विवर्ण है परंतु जीवन का अमर वृक्ष हरा-भरा है"[37]।

मज़दूरों और किसानों की पांतों से आनेवाले व्यावहारिक संगठन-कर्ताओं के बीच प्रतियोगिता का संगठन करना आवश्यक है। इस संबंध में ऊपर से रूढ़िबद्ध रूपों को स्थापित करने और एकरूपता लादने की हर कोशिश का, जिसकी ओर बुद्धिजीवियों का ख़ास तौर पर रुझान होता है, मुक़ाबला किया जाना चाहिए। ऊपर से थोपे गये बंधे-बंधाये रूपों तथा एकरूपता का जनवादी तथा समाजवादी केंद्रवाद के साथ कोई मेल नहीं होता। ब्योरे की बातों में, ख़ास स्थानीय विशेषताओं में, अपनाये जानेवाले रुख़ के **तरीक़ों में**, नियंत्रण रखने के **तरीक़ों में**, जोंकों (धनिकों और ठगों, हिस्टीरिया के शिकार फूहड़ बुद्धि-जीवियों, आदि, आदि) का सफ़ाया करने और उन्हें बेअसर बना देने के **तरीक़ों में विविधता** होने से बुनियादी बातों की, आधारभूत बातों की, सारतत्व की एकता भंग नहीं, बल्कि सुनिश्चित होती है।

पेरिस कम्यून ने[38] इस बात की एक बेहतरीन मिसाल पेश की थी कि आम लोगों में नीचे से पहलक़दमी, स्वाधीनता, काम करने की आज़ादी और स्फूर्ति को बंधे-बंधाये रूपों से मुक्त स्वैच्छिक केंद्रवाद से किस प्रकार मिलाना चाहिए। हमारी सोवियतें भी इसी मार्ग का अनुसरण कर रही हैं। परंतु उनमें अभी भी "भीरुता" है, उन्होंने अभी पूरे ज़ोर से आगे बढ़ना शुरू नहीं किया है, समाजवादी व्यवस्था का निर्माण करने के अपने महान सृजनात्मक कार्य में वे अभी पूरी तरह मैदान में नहीं उतरी हैं। यह ज़रूरी है कि सोवियतें अधिक साहस के साथ काम करें और ज़्यादा पहलक़दमी दिखायें। श्रम तथा उत्पादों के विनिमय के हिसाब-किताब तथा नियंत्रण के व्यावहारिक संगठनकर्ताओं के रूप में सभी "कम्यूनों" – मिलों, गांवों, उपभोक्ता समितियों तथा सप्लाई समितियों – को एक दूसरे से **होड़** करनी चाहिए। इस हिसाब-किताब और नियंत्रण का कार्यक्रम बहुत साफ़ और सीधा-सादा है और सभी की समझ में आनेवाला है – सबको रोटी मिले; सबको टिकाऊ जूते और अच्छे कपड़े मिलें, आरामदेह घर मिलें; सभी ईमान-दारी से काम करें; एक भी ठग को (और उनको भी, जो काम से जी चुराते हैं) स्वच्छन्द न घूमने दिया जाये, बल्कि क़ैदख़ाने में रखा जाये या कठोरतम अनिवार्य श्रम का दंड दिया जाये। जो दुर्दशा ठग

की होती है, वही निरपवाद रूप से उस धनिक की होती चाहिए, जो समाजवाद के क़ानूनों और नियमों का उल्लंघन करता है, न्याय की बात भी यही है। "जो काम नहीं करेगा, वह खायेगा भी नहीं" – समाजवाद का यही **व्यावहारिक** आदेश है। हमें इस मामले में इसी प्रकार का **व्यावहारिक** संगठन करना चाहिए। हमारे "कम्यूनों" को और हमारे मज़दूर तथा किसान संगठनकर्ताओं को ऐसी **व्यावहारिक** सफलताओं पर गर्व करना चाहिए। यह बात ख़ास तौर पर बुद्धिजीवी संगठनकर्ताओं पर लागू होती है (**विशेषकर** इसलिए कि बुद्धिजीवी अपने सामान्य निर्देशों तथा प्रस्तावों पर गर्व करने के **बहुत** आदी होते हैं, **हद से ज्यादा** आदी होते हैं)।

हिसाब-किताब रखने और धनिकों, ठगों और कामचोरों पर नियंत्रण लागू करने के हज़ारों व्यावहारिक रूप तथा तरीक़े निकाले जाने चाहिए और उन्हें स्वयं कम्यूनों, शहरों और गांवों की छोटी-छोटी इकाइयों के व्यावहारिक अनुभव की कसौटी पर परखना चाहिए। इस मामले में विविधता प्रभावकारिता की गारंटी है, एक ही समान लक्ष्य – रूस की सरज़मीन को सभी कीड़े-मकोड़ों और पिस्सुओं, यानी ठगों, ख़ून चूसनेवाले खटमलों अर्थात धनवानों, आदि से **मुक्त** करने के लक्ष्य – की पूर्त्ति में सफलता की गारंटी है। दस-बारह अमीरों, एक दर्जन ठगों, आधा दर्जन कामचोर मज़दूरों को, जो काम से जी चुराते हैं (वैसी ही गुंडई से, जैसी गुंडई से पेत्रोग्राद के बहुत-से कंपोज़ीटर, ख़ासकर पार्टी के छापाख़ानों के कंपोज़ीटर, अपने काम से जी चुराते हैं) एक जगह जेल में बंद कर दिया जायेगा। दूसरी जगह उनसे शौचालय साफ़ कराये जायेंगे, तीसरी जगह उन्हें सज़ा काटने के बाद "पीले टिकट" दिये जायेंगे ताकि जब तक वे सुधरते नहीं, हर आदमी उन्हें ख़तरनाक समझकर उन पर कड़ी नज़र रख सके। चौथी जगह दस कामचोरों में से एक को मौक़े पर गोली मार दी जायेगी। पांचवीं जगह मिले-जुले तरीक़े इस्तेमाल किये जायेंगे, उदाहरण के लिए अमीरों, बुर्जुआ बुद्धिजीवियों, ठगों और गुंडों को, जिनका सुधार किया जा सकता है, कुछ शर्तों पर रिहा करके उन्हें शीघ्रातिशीघ्र अपने को सुधारने का अवसर दिया जायेगा। इस मामले में जितनी विविधता होगी, हमारा सामान्य अनुभव उतना ही बेहतर, उतना ही समृद्ध होगा, समाजवाद उतने ही निश्चित रूप से तथा उतनी ही तेज़ी से कामयाब होगा, और

व्यवहार के ज़रिए संघर्ष के **बेहतरीन** तरीक़ों और साधनों का निश्चय करना उतना ही सहज होगा।

किस कम्यून में, बड़े शहर के किस इलाक़े में, किस कारख़ाने में और किस गांव में **न** तो भूखे लोग हैं, **न** बेरोज़गार हैं, **न** कामचोर अमीर हैं, **न** बुर्जुआ वर्ग के वे घृणित चाकर, वे भीतरघाती हैं, जो अपने को बुद्धिजीवी कहते हैं? श्रम की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए, ग़रीबों के लिए अच्छे नये घर बनाने के लिए, अमीरों के घरों में ग़रीबों को बसाने के लिए, हर ग़रीब परिवार के हर बच्चे के लिए एक बोतल दूध का नियमित प्रबंध करने के लिए किस जगह सबसे ज़्यादा काम किया गया है? कम्यूनों, समुदायों, उत्पादक-उपभोक्ता संस्थाओं तथा समितियों और मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों की सोवियतों के बीच इन्हीं मुद्दों को लेकर प्रतियोगिता का विकास होना चाहिए। यही वह काम है जिसके दौरान **प्रतिभा रखनेवाले संगठन-कर्ताओं को व्यवहार में** सामने आना चाहिए और उन्हें तरक़्क़ी देकर राज्य-प्रशासन के काम में लगाना चाहिए। जनता के बीच प्रतिभा का अभाव नहीं है। वह केवल दबी हुई है। यह आवश्यक है कि उसे प्रकट होने का अवसर दिया जाये। **एकमात्र यह प्रतिभा ही** जनता के पूरे समर्थन से रूस को बचा सकती है और समाजवाद के ध्येय की रक्षा कर सकती है।

२४-२७ दिसंबर,
१९१७ (६-९ जनवरी, १९१८) को
लिखित

खंड ३५,
पृ० १९५-२०५

६-८ मार्च, १९१८ को हुई रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की सातवीं असाधारण कांग्रेस में कार्यक्रम का कच्चा मसविदा

(उद्धरण)

सोवियत सत्ता के बारे में दस प्रस्थापनाएं

सोवियत सत्ता का सुदृढ़ीकरण और विकास

जन आंदोलन और क्रांतिकारी संघर्ष द्वारा प्रस्तुत रूप, अनुभव से परखे जा चुके रूप – सर्वहारा और ग़रीब किसानों (अर्द्ध-सर्वहाराओं) के अधिनायकत्व के नाते सोवियत सत्ता का सुदृढ़ीकरण और विकास।

राज्य सत्ता के इस रूप के लिए, राज्य की इस नयी क़िस्म के लिए ऐतिहासिक रूप से निर्धारित कार्यभारों की पूर्ति (अधिक व्यापक, सार्विक और योजनाबद्ध पूर्ति) से ही सुदृढ़ीकरण और विकास होना चाहिए। ये कार्यभार हैं:

(१) पूंजीवाद द्वारा उत्पीड़ित मेहनतकशों और शोषित जन-समूहों को, और केवल उन्हें ही, यानी मज़दूरों और ग़रीब किसानों, अर्द्ध-सर्वहाराओं को ऐक्यबद्ध और संगठित करना, कहना न होगा कि शोषक वर्गों तथा टुटपुंजिया वर्ग के अमीर प्रतिनिधियों को ऐसे संगठन में कोई स्थान नहीं होना चाहिए;

(२) उत्पीड़ित वर्गों के सर्वाधिक सक्रिय, क्रियाशील, वर्ग-चेतन भाग को, उनके हरावल दस्ते को संगठित करना, जिसे सारी मेहनतकश आबादी को राज्य के संचालन में स्वतंत्र भाग की सैद्धांतिक नहीं, व्यावहारिक शिक्षा देनी है।

(४) (३) संसदवाद का (वैधानिक कार्य और कार्यपालिका के कार्य के विलगाव के अर्थ में) उन्मूलन; विधि-निर्माण और कार्यपालिका के राजकीय कार्य का संयोजन। प्रशासन का विधायी कार्य में विलय।

(३) (४) राज्य सत्ता और राज्य संचालन के सारे तंत्र का जन-समूहों

के साथ जनवाद के पुराने रूपों की अपेक्षा अधिक घनिष्ठ संबंध।

(५) मज़दूरों और किसानों की ऐसी सशस्त्र शक्ति का निर्माण, जो जनता से कम से कम कटी हो (सोवियतें=सशस्त्र मज़दूर और किसान)। सारी जनता को पूरी तरह शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित करने की दिशा में पहले क़दम के तौर पर – सर्वव्यापी शस्त्रीकरण का सुसंगठित कार्य।

(६) कम औपचारिकता, प्रतिनिधियों के निर्वाचन और उन्हें वापस बुलाने की अधिक सहजता के बल पर अधिक पूर्ण जनवाद।

(७) उत्पादक-आर्थिक इकाइयों और व्यवसायों के साथ घनिष्ठ (और सीधा) संबंध (कारख़ानों में, किसानों और शिल्पियों के हलक़ों में चुनाव)। इस घनिष्ठ संबंध से गहन समाजवादी पुनर्गठन संभव होता है।

(८) (पूरी तरह नहीं, तो अंशतः पूर्ववर्ती प्रस्थापना में शामिल है) – नौकरशाही ख़त्म करने की, उसके बिना काम चलाने की संभावना – इस संभावना की क्रियान्वयन की शुरूआत।

(९) जनवाद के प्रश्नों में बुर्जुआ और सर्वहारा वर्गों की, अमीरों और ग़रीबों की औपचारिक समानता की औपचारिक स्वीकृति से हटकर मेहनतकशों तथा शोषित जन-समूहों द्वारा स्वतंत्रता (जनवाद) के उपयोग की व्यावहारिक पूर्ति को केंद्रीय बिंदु बनाना।

(१०) राज्य के सोवियत संगठन का आगे विकास इस बात में निहित होना चाहिए कि सोवियत का हर सदस्य सोवियत की बैठकों में भाग लेने के साथ-साथ राज्य के संचालन का स्थायी कार्य भी करें ; – और फिर इस बात में कि सारी आबादी शनैःशनैः सोवियत संगठनों में भी (जो मेहनतकशों के संगठनों के अधीन हों) तथा राजकीय प्रशासन कार्य में भी भाग ले।

खंड ३६,
पृ० ७१-७३

आर्थिक परिषदों की पहली अखिल रूसी कांग्रेस में दिया गया भाषण

२६ मई, १९१८

साथियो, मुझे इजाज़त दीजिये कि सबसे पहले मैं जन-कमिसार परिषद की ओर से आर्थिक परिषदों की कांग्रेस का अभिनंदन करूं।

साथियो, इस समय सर्वोच्च आर्थिक परिषद के सामने एक अत्यंत दुष्कर कार्यभार है, परंतु वह अत्यंत फलप्रद भी है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि अक्तूबर क्रांति की उपलब्धियां जितनी अधिक विकसित होती रहेंगी, उसने जो उथल-पुथल शुरू की है, वह जितनी ही गहन होगी, समाजवादी क्रांति की उपलब्धियां जितने दृढ़ रूप में स्थापित होंगी और समाजवादी व्यवस्था जितनी अधिक मज़बूत बनती जायेगी, आर्थिक परिषदों की भूमिका उतनी ही अधिक और ऊंचे स्तर की होगी। राज्य की तमाम संस्थाओं में परिषदें ही टिकाऊं रहनेवाली संस्थाएं हैं। और हम समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के जितने निकट पहुंचेंगे, उनकी स्थिति में उतना ही स्थायित्व आयेगा और एक विशुद्ध प्रशासनिक संगठन की, ऐसे संगठन की जो मात्र प्रशासन-कार्य में लगा हो, आवश्यकता कम हो जायेगी। जब हम शोषकों के प्रतिरोध को अंतिम रूप से समाप्त कर लेंगे, जब मेहनतकश अवाम समाजवादी उत्पादन को संगठित करना सीख लेंगे, तब इस प्रशासनिक संगठन को, पुराने राज्य के इस प्रशासनिक तंत्र को – इस शब्द के उचित, शुद्ध तथा संकीर्ण अर्थ में – विलुप्त होना ही है, जबकि सर्वोच्च आर्थिक परिषद की क़िस्म के संगठन के लिए यह निश्चित है कि वह संगठित समाज की सभी मुख्य क्रियाओं को संपन्न करते हुए विकसित होगा, बढ़ेगा और शक्ति अर्जित करेगा।

साथियो, यही कारण है कि जब मैं अपनी सर्वोच्च आर्थिक परिषद के तथा स्थानीय परिषदों के, जिनके क्रियाकलाप के साथ उसका घनिष्ठ तथा अभिन्न संबंध है, अनुभव पर ग़ौर करता हूं, तब मेरी यह धारणा बनती है कि इस बात के बावजूद कि अभी बहुत कुछ ऐसा है जो अधूरा है, अपूर्ण है और असंगठित है, इसका बिल्कुल कोई कारण नहीं है कि हम निराशाजनक निष्कर्षों पर पहुंचें। कारण, सर्वोच्च आर्थिक परिषद ने जो कार्यभार अपने सामने रखा है और सभी प्रादेशिक तथा स्थानीय परिषदों ने अपने सामने जो कार्यभार रखा है, वह इतना विराट है, इतना सर्वव्यापक है कि हम सब अपने चतुर्दिक जो देखते हैं उसमें हमारे लिए आशंकित होने का बिल्कुल कोई कारण नहीं है। अकसर – बेशक हमारे नज़रिये से शायद बहुत अकसर, – "सात बार नापो और एक बार काटो" वाली कहावत पर अमल नहीं किया जाता। लेकिन बदक़िस्मती से समाजवादी ढंग से अर्थव्यवस्था का संगठन करने की बात इतनी सीधी-सादी नहीं है जितनी कि यह कहावत है।

समस्त सत्ता के – और इस दफ़ा राजनीतिक नहीं, यहां तक कि मुख्य रूप से राजनीतिक सत्ता नहीं, बल्कि आर्थिक सत्ता के अर्थात उस सत्ता के, जो दैनंदिन मानवीय जीवन के गहन आधारों को प्रभावित करती है – एक नये वर्ग के हाथ में और, इससे भी बढ़कर, एक ऐसे वर्ग के हाथ में अंतरित होने से, जो मानवजाति के इतिहास में पहली बार जनसंख्या के विशाल बहुमत का, श्रमिक तथा शोषित जनता के समस्त समुदाय का नेता है, हमारे कार्य अधिक जटिल हो गये हैं। कहने की ज़रूरत नहीं कि हमारे सम्मुख उपस्थित संगठनात्मक कार्यभारों के सर्वोच्च महत्व और चरम कठिनाई को देखते हुए यह असंभव है कि ऐसे वक़्त जब हमें अनिवार्यतः करोड़ों लोगों के जीवन के गहनतम आधारों को बिल्कुल ही नये ढंग से संगठित करना है, हम "सात बार नापो और एक बार काटो" वाली कहावत के मुताबिक़ मामले को सीधे-सादे ढंग से निपटा सकें। वास्तव में हम इस स्थिति में नहीं हैं कि हम किसी चीज़ को अनगिनत बार नापें और जब उसे अंतिम बार नाप लें और देख लें कि नाप सही और उपयुक्त है तब उसे काटें और फ़िट कर दें। हमें आगे बढ़ते हुए ही, अनेक संस्थाओं को आज़माते हुए, उनके काम को देखते हुए, उन्हें श्रमजीवी जनता के सामूहिक, सम्मिलित अनुभव की, और सर्वोपरि, उनके

7*

साथियो, यही कारण है कि जब मैं अपनी सर्वोच्च आर्थिक परिषद के तथा स्थानीय परिषदों के, जिनके क्रियाकलाप के साथ उसका घनिष्ठ तथा अभिन्न संबंध है, अनुभव पर ग़ौर करता हूं, तब मेरी यह धारणा बनती है कि इस बात के बावजूद कि अभी बहुत कुछ ऐसा है जो अधूरा है, अपूर्ण है और असंगठित है, इसका बिल्कुल कोई कारण नहीं है कि हम निराशाजनक निष्कर्षों पर पहुंचें। कारण, सर्वोच्च आर्थिक परिषद ने जो कार्यभार अपने सामने रखा है और सभी प्रादेशिक तथा स्थानीय परिषदों ने अपने सामने जो कार्यभार रखा है, वह इतना विराट है, इतना सर्वव्यापक है कि हम सब अपने चतुर्दिक जो देखते हैं उसमें हमारे लिए आशंकित होने का बिल्कुल कोई कारण नहीं है। अकसर – बेशक हमारे नज़रिये से शायद बहुत अकसर, – "सात बार नापो और एक बार काटो" वाली कहावत पर अमल नहीं किया जाता। लेकिन बदक़िस्मती से समाजवादी ढंग से अर्थव्यवस्था का संगठन करने की बात इतनी सीधी-सादी नहीं है जितनी कि यह कहावत है।

समस्त सत्ता के – और इस दफ़ा राजनीतिक नहीं, यहां तक कि मुख्य रूप से राजनीतिक सत्ता नहीं, बल्कि आर्थिक सत्ता के अर्थात उस सत्ता के, जो दैनंदिन मानवीय जीवन के गहन आधारों को प्रभावित करती है – एक नये वर्ग के हाथ में और, इससे भी बढ़कर, एक ऐसे वर्ग के हाथ में अंतरित होने से, जो मानवजाति के इतिहास में पहली बार जनसंख्या के विशाल बहुमत का, श्रमिक तथा शोषित जनता के समस्त समुदाय का नेता है, हमारे कार्य अधिक जटिल हो गये हैं। कहने की ज़रूरत नहीं कि हमारे सम्मुख उपस्थित संगठनात्मक कार्यभारों के सर्वोच्च महत्व और चरम कठिनाई को देखते हुए यह असंभव है कि ऐसे वक़्त जब हमें अनिवार्यतः करोड़ों लोगों के जीवन के गहनतम आधारों को बिल्कुल ही नये ढंग से संगठित करना है, हम "सात बार नापो और एक बार काटो" वाली कहावत के मुताबिक़ मामले को सीधे-सादे ढंग से निपटा सकें। वास्तव में हम इस स्थिति में नहीं हैं कि हम किसी चीज़ को अनगिनत बार नापें और जब उसे अंतिम बार नाप लें और देख लें कि नाप सही और उपयुक्त है तब उसे काटें और फ़िट कर दें। हमें आगे बढ़ते हुए ही, अनेक संस्थाओं को आज़माते हुए, उनके काम को देखते हुए, उन्हें श्रमजीवी जनता के सामूहिक, सम्मिलित अनुभव की, और सर्वोपरि, उनके

7*

अपने काम के नतीजों की कसौटी पर परखते हुए, अपनी आर्थिक इमारत की तामीर करनी होगी, हमें अपना बढ़ाव जारी रखते हुए ही यह काम करना होगा, यही नहीं, हमें यह काम शोषकों के प्रचंड संघर्ष तथा उन्मत्त प्रतिरोध की स्थिति में करना होगा। इन शोषकों का उन्माद उतना ही बढ़ता जाता है जितना हम उस क्षण के समीप आते जाते हैं जब हम पूंजीवादी शोषण के आख़िरी सड़े दांत को निकाल सकने में समर्थ होंगे। यह समझ में आनेवाली बात है कि हमें एक संक्षिप्त अवधि में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की विभिन्न शाखाओं में प्रशासन के प्रकारों, विनियमों तथा निकायों को भले ही कई बार बदलना पड़े, तो भी इन परिस्थितियों में हमारे लिए निराश होने का बिल्कुल कोई कारण नहीं है, हालांकि यह बात ज़रूर है कि इससे बुर्जुआओं और शोषकों को, जिनकी कोमलतम भावनाओं को ठेस पहुंचती है, द्वेषपूर्ण प्रलाप के लिए काफ़ी मौक़ा मिल जाता है। बेशक जो लोग इस काम में अत्यंत घनिष्ठ तथा प्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं – जैसे कि प्रमुख जल बोर्ड – उनके लिए प्रशासन के विनियमों, प्रतिमानों और क़ानूनों को तीन-तीन बार बदलना हमेशा ख़ुशग़वार नहीं होता; इस तरह के काम से जो ख़ुशी हासिल होती है वह बहुत ज़्यादा नहीं हो सकती। परंतु यदि हम आदेशों को बार-बार बदलने की प्रत्यक्ष अप्रियता से अपने को कुछ हद तक दूर रख लें, अगर हम उस विराट विश्व ऐतिहासिक महत्व के कार्य में कुछ और गहराई तक तथा कुछ और दूर तक जायें, जिसे रूसी सर्वहारा को अपनी अभी भी अपर्याप्त शक्तियों के बल पर पूरा करना है, तो यह बात फ़ौरन समझ में आ जायेगी कि प्रशासन की विभिन्न व्यवस्थाओं में और अनुशासन के विभिन्न रूपों में इससे भी कहीं अधिक नाना परिवर्तन तथा व्यावहारिक परीक्षण अनिवार्य है; यह बात फ़ौरन ही समझ में आ जायेगी कि ऐसे विराट कार्य में हम यह कभी दावा नहीं कर सकते और किसी भी समझदार समाजवादी ने, जिसने भविष्य की संभावनाओं के बारे में कभी कुछ लिखा है, यह कभी सोचा भी नहीं कि हम किसी पूर्वनिर्धारित निर्देश के अनुसार और एकबारगी ही नये समाज के संगठन के रूपों को तत्काल ही स्थापित और संघटित कर सकते हैं।

हम इतना ही जानते थे कि पूंजीवादी समाज का ज्ञान रखनेवाले सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञों ने, उसके विकास का पूर्वानुमान करनेवाले बेहतरीन

दिमागों ने, हमें ठीक-ठीक इतना ही बताया था कि इस प्रकार का रूपांतरण ऐतिहासिक रूप से अनिवार्य है, और उसे किसी एक मुख्य दिशा में बढ़ना होगा और यह कि इतिहास के निर्णय के अनुसार उत्पादन-साधनों पर निजी स्वामित्व का अंत पूर्वनिश्चित है, कि निजी स्वामित्व की व्यवस्था का विस्फोट होगा और शोषकों का अनिवार्यतः संपत्तिहरण किया जायेगा। यह बात वैज्ञानिक सूक्ष्मता के साथ सिद्ध की गयी और जब हमने समाजवाद का झंडा हाथ में लिया, जब हमने समाजवादी होने का एलान किया, जब हमने समाजवादी पार्टियों की स्थापना की, जब हमने समाज को बदला, तब हम इस बात को जानते थे। जब हमने समाजवादी पुनर्गठन संपन्न करने के उद्देश्य से सत्ता अपने हाथ में लीं, हम यह बात जानते थे; मगर हम यह नहीं जान सकते थे कि रूपांतरण के रूप क्या होंगे या वास्तविक पुनर्गठन करने में प्रगति की रफ़्तार क्या होगी। इस मामले में सामूहिक अनुभव, करोड़ों का अनुभव ही निर्णायक रूप से हमारा मार्गदर्शन कर सकता है, ठीक इसलिए कि हमारे काम के लिए, समाजवाद के निर्माण के काम के लिए, समाज की उन उच्चतर श्रेणियों के हज़ारों-लाखों लोगों का अनुभव अपर्याप्त है जिन्होंने अब तक सामंती समाज और पूंजीवादी समाज में इतिहास का निर्माण किया है। हम उस ढर्रे पर नहीं चल सकते, ठीक इसलिए कि हम संयुक्त अनुभव पर, करोड़ों मेहनतकश लोगों के अनुभव का सहारा लेते हैं।

इसलिए हम जानते हैं कि संगठन के काम में, जो कि सोवियतों का मुख्य और बुनियादी काम है, अनिवार्यतः अनगिनत प्रयोग करने होंगे, अनगिनत क़दम उठाने होंगे, अनगिनत तबदीलियां करनी होंगी, अनगिनत मुश्किलों का सामना करना होगा, ख़ासकर इस सवाल के मामले में कि हम किस तरह हर आदमी को उसकी माक़ूल जगह पर बैठायें, कारण यह है कि इस मामले में हमें अभी तक कोई अनुभव नहीं है। यहां हर क़दम पर हमें अपना रास्ता ख़ुद निकालना पड़ता है, और इस रास्ते पर चलते हुए हम जितनी बड़ी ग़लतियां करेंगे उतना ही यह अधिक निश्चित होता जायेगा कि ट्रेड-यूनियनों की सदस्य-संख्या में प्रत्येक वृद्धि के साथ, श्रमजीवी जनता, शोषित जनता के ख़ेमे से, जो अभी तक पुरानी परंपरा और आदत के मुताबिक़ जीवन-यापन करती रही है, सोवियत संगठनों के निर्माणकर्त्ताओं के ख़ेमे में

एक हज़ार या एक लाख और आदमियों के आ जाने से उन लोगों की संख्या में बढ़ोतरी होती जायेगी, जो योग्य सिद्ध होंगे और उचित रूप से काम का संगठन कर सकेंगे।

आर्थिक परिषद, सर्वोच्च आर्थिक परिषद के सामने जो दूसरे दर्जे के काम हैं, उनमें एक को, जो ख़ासकर बार-बार सामने आता है, यानी बुर्जुआ विशेषज्ञों का उपयोग करने के काम को लीजिये। हम सब जानते हैं, कम से कम वे लोग जानते हैं, जो विज्ञान तथा समाजवाद को अपनी स्थिति का आधार बनाते हैं कि यह काम तभी पूरा किया जा सकता है – और यह काम उसी हद तक पूरा किया जा सकता है जिस हद तक अंतर्राष्ट्रीय पूंजीवाद श्रम की भौतिक तथा तकनीकी पूर्वापेक्षाओं को विकसित कर चुका है – जब वह बहुत बड़े पैमाने पर तथा विज्ञान के आधार पर और इसलिए बड़ी संख्या में वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के आधार पर संगठित किया जाये। हम जानते हैं कि उसके बिना समाजवाद असंभव है। यदि हम उन समाजवादियों की कृतियों को दोबारा पढ़ें, जिन्होंने पिछली अर्द्ध-शताब्दी में पूंजीवाद के विकास का पर्यवेक्षण किया है और जो बार-बार इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि समाजवाद आकर रहेगा, तो हम यह पायेंगे कि निरपवाद रूप से उन सभी ने यह कहा है कि समाजवाद ही विज्ञान को पूंजीवादी बंधनों से, पूंजी की दासता से, ग़लीज़ पूंजीवादी लोलुपता के हितों की दासता से मुक्त करेगा। समाजवाद ही यह संभव बनायेगा कि सामाजिक उत्पादन तथा वितरण का वैज्ञानिक ढर्रे पर व्यापक विस्तार किया जाये और उन्हें श्रमजीवी जनता के जीवन के भार को हल्का करने और, जहां तक संभव हो सके, उसकी ख़ुशहाली को बढ़ाने के ध्येय के वास्तव में अधीन किया जाये। यह काम समाजवाद ही कर सकता है, और हम जानते हैं कि उसे यह काम लाज़िमी तौर पर करना होगा। इस सच्चाई की समझ में ही मार्क्सवाद की पूरी जटिलता और उसकी पूरी शक्ति निहित है।

हमें यह काम उन तत्वों का सहारा लेते हुए करना होगा जो समाज-वाद के विरोधी हैं, क्योंकि पूंजी जितना ही वृहत् आकार धारण करती है, उतना ही बुर्जुआ वर्ग का जुल्म बढ़ता है और वह मज़दूरों को दबाता है। आज जबकि सत्ता सर्वहारा और ग़रीब किसानों के हाथ में है और सरकार जनता द्वारा समर्थित कार्यभार अपने सम्मुख रख रही है, हमें इन समाजवादी तबदी-

लियों को बुर्जुआ विशेषज्ञों की मदद से लाना होगा, जो बुर्जुआ समाज में प्रशिक्षित हुए हैं, जो और किन्हीं अवस्थाओं से परिचित नहीं हैं, जो किसी भी अन्य सामाजिक व्यवस्था की परिकल्पना नहीं कर सकते। इसलिए उस सूरत में भी जब ये विशेषज्ञ बिल्कुल ईमानदार हों और अपने काम के प्रति निष्ठा रखते हों, उनमें हज़ारों बुर्जुआ पूर्वाग्रह व्याप्त होते हैं, वे हज़ारों सूत्रों से, जिनसे वे स्वयं अनभिज्ञ हैं, उस बुर्जुआ समाज के साथ बंधे हुए होते हैं, जो पतनशील है, मरणशील है और इसीलिए जो प्रचंड प्रतिरोध कर रहा है।

हम अपने प्रयासों और अपनी उपलब्धियों के रास्ते में आनेवाली इन कठिनाइयों को अपने आप से छिपा नहीं सकते। मुझे एक भी समाजवादी की ऐसी कृति, भावी समाजवादी समाज के बारे में एक भी विख्यात समाजवादी के ऐसे मत का ध्यान नहीं है, जिसमें उस ठोस व्यावहारिक कठिनाई की ओर इशारा किया गया हो, जो मज़दूर वर्ग के सामने तब आती है, जब वह सत्ता ग्रहण करता है, जब वह पूंजीवाद द्वारा संचित ज्ञान, प्रविधि तथा संस्कृति के अत्यंत विपुल भंडार को – ऐतिहासिक दृष्टि से अनिवार्य और हमारे लिए आवश्यक इस कुल भंडार को – पूंजीवाद के साधन से समाजवाद के साधन में बदलने का काम अपने ज़िम्मे लेता है। सामान्य सूत्र के रूप में, अमूर्त तर्क-वितर्क के रूप में यह कार्य सहज साध्य है, परंतु उस पुंजीवाद के विरुद्ध संघर्ष के दौरान, जो तुरंत से नहीं मरता, बल्कि जो उसकी मौत की घड़ी जितनी नज़दीक आती है उतना ही अधिक उग्र प्रतिरोध करता है, इस कार्य को पूरा करने के लिए भारी प्रयास अपेक्षित है। यदि इस क्षेत्र में प्रयोग होते हैं, यदि हम आंशिक ग़लतियों का बार-बार सुधार करते हैं तो यह अनिवार्य ही है, क्योंकि हम राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के इस या उस क्षेत्र में विशेषज्ञों को पूंजीवाद के चाकरों से श्रमजीवी जनता के सेवकों में, उनके सलाहकारों में एकदम से नहीं बदल सकते। अगर हम यह काम एकदम नहीं कर सकते, तो इससे तनिक भी निराशा नहीं होनी चाहिए, क्योंकि हमने अपने सामने जो काम निर्धारित किया है, वह विश्व ऐतिहासिक महत्व का और कठिनाई का काम है। हम इस बात की ओर से आंख नहीं मूंदते कि हम अकेले ही एक देश में – चाहे वह देश रूस की अपेक्षा कहीं कम पिछड़ा हुआ

क्यों न होता, चाहे हम चार साल के अभूतपूर्व, कष्टप्रद, कठोर तथा विनाशकारी युद्ध के बाद की स्थिति से कहीं बेहतर स्थिति में क्यों न होते, तो भी – एक देश में, अकेले, हम समाजवादी क्रांति को केवल अपने प्रयासों से पूर्णतया संपन्न नहीं कर सकते। रूस में इस समय जो समाजवादी क्रांति चल रही है, उससे विमुख होकर जो शक्तियों की प्रकट अनुपातहीनता की ओर इशारा करता है, वह उस रूढ़िवादी "घोंघे" की तरह है, जो अपने सामने एक हाथ से आगे नहीं देख पाता, जो यह भूल जाता है कि इतिहास में न्यूनाधिक महत्व का ऐसा एक भी परिवर्तन नहीं होता, जिसमें शक्तियों की अनुपातहीनता की कई मिसालें मौजूद न हों। शक्तियां संघर्ष की प्रक्रिया में क्रांति के साथ-साथ बढ़ती जाती हैं। जब देश ने गहन परिवर्तन का मार्ग अपना लिया तो उस देश को तथा वहां विजय प्राप्त करनेवाली मज़दूर वर्ग की पार्टी को इस बात का श्रेय मिलता है कि उन्होंने उन कार्यों को व्यावहारिक ढंग से पूरा करने का बीड़ा उठाया जो पहले केवल अमूर्त रूप से, सैद्धांतिक ढंग से प्रस्तुत किये जाते थे। यह अनुभव कभी भी भुलाया नहीं जायेगा। आज ट्रेड-यूनियमों में तथा स्थानीय संगठनों में एकताबद्ध मज़दूर राष्ट्रव्यापी पैमाने पर समूचे उत्पादन का संगठन करने के व्यावहारिक काम में जो अनुभव प्राप्त कर रहे हैं, उससे उन्हें वंचित नहीं किया जा सकता, चाहे रूसी क्रांति और अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी क्रांति कितने ही मुश्किल उतार-चढ़ाव के दौर से क्यों न गुज़रें। यह अनुभव इतिहास में समाजवाद की उपलब्धि के रूप में अंकित है और उसी की बुनियाद पर भावी विश्व क्रांति अपनी समाजवादी इमारत का निर्माण करेगी।

आपकी अनुमति से मैं एक और समस्या का ज़िक्र करना चाहूंगा, जो शायद सबसे कठिन समस्या है, जिसका व्यावहारिक समाधान सर्वोच्च आर्थिक परिषद को ढूंढ़ निकालना है, यह है श्रम-अनुशासन की समस्या। ठीक बात तो यह है कि इस समस्या का उल्लेख करते हुए हमें संतोष के साथ यह मानना चाहिए और इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि ट्रेड-यूनियनों ने ही, उनके सबसे बड़े संगठन अर्थात धातुकर्मी संघ की केंद्रीय समिति और अखिल रूसी ट्रेड-यूनियन परिषद ने ही, जो करोड़ों मेहनतकश लोगों को एकताबद्ध करनेवाले सर्वोच्च ट्रेड-यूनियन संगठन हैं, सबसे पहले इस समस्या को – जिसका कि विश्व ऐतिहासिक

महत्व है – स्वतंत्र रूप से सुलझाने की दिशा में काम करना शुरू किया। इस बात को समझने के लिए यह ज़रूरी है कि हम उन आंशिक, महत्वहीन असफलताओं, उन अविश्वसनीय कठिनाइयों को निरपेक्ष भाव से देखें जो अलग-अलग ली जायें तो अलंघ्य प्रतीत होती हैं। यह ज़रूरी है कि हम एक उच्चतर धरातल पर उठकर सामाजिक अर्थव्यवस्था के ऐतिहासिक परिवर्तन का निरीक्षण करें। हमने जिस काम का बीड़ा उठाया है उसका विराट रूप हम इस दृष्टिकोण से ही समझ सकते हैं। तभी इस तथ्य का विराट महत्व समझा जा सकता है कि अब समाज के सबसे आगे बढ़े हूए प्रतिनिधि, श्रमिक तथा शोषित लोग ख़ुद पहलक़दमी करके वह कार्यभार ग्रहण कर रहे हैं, जिसे अब तक सामंती रूस में १८६१[39] तक मुट्ठी भर भूस्वामी पूरा करते थे और जिसे वे अपना ख़ास काम समझा करते थे। उस ज़माने में राज्यव्यापी समन्वय तथा अनुशासन स्थापित करना उनका ही काम था।

हम जानते हैं कि सामंती भूस्वामियों ने इस अनुशासन को किस प्रकार स्थापित किया। जनता के अधिकांश भाग के लिए यह अनुशासन उत्पीड़न तथा अपमान था, कठोर श्रम-कारावास की असह्य यंत्रणा था। भूदासता से लेकर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था तक के इस पूरे संक्रमण को याद कीजिये। आपने जो कुछ भी अपनी आंखों से देखा है – हालांकि आप में से अधिकांश ने अपनी आंखों से नहीं देखा होगा – उससे, और पुरानी पीढ़ियों से जो ज्ञान आपको मिला है, उससे आप जानते हैं कि १८६१ के बाद नयी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में संक्रमण, डंडे के पुराने सामंती अनुशासन से, नितांत अर्थशून्य, उद्धत तथा क्रूर अवमानना और वैयक्तिक हिंसा के अनुशासन से पूजीवादी अनुशासन में, क्षुधा-पीड़ा के अनुशासन में, तथाकथित स्वतंत्र उजरती श्रम में, जो वास्तव में पूंजीवादी दासता का अनुशासन था, संक्रमण ऐतिहासिक रूप से कितना सहज प्रतीत होता था। इसका कारण यह था कि मानवजाति एक शोषक के हाथ से निकलकर दूसरे के चंगुल में फंस गयी ; जनता के श्रम का शोषण-दोहन करनेवाली एक अल्पसंख्या की जगह एक और अल्पसंख्या आ गयी, और ये लोग भी जनता के श्रम का शोषण-दोहन करनेवाले लोग थे ; क्योंकि सामंती ज़मींदारों की जगह पूंजीपति आ गये, एक अल्पसंख्या की जगह दूसरे अल्पसंख्या आ गयी, जबकि श्रमिक

तथा शोषित वर्ग पहले की ही तरह उत्पीड़ित रहे। और एक शोषक के अनुशासन से दूसरे शोषक के अनुशासन में यह परिवर्तन लाने में भी अगर दशाब्दियों तक नहीं, तो वर्षों तक अवश्य प्रयास करना पड़ा। इस परिवर्तन में संक्रमण-काल अगर दशाब्दियों तक नहीं, तो वर्षों तक अवश्य चलता रहा। इस काल में पुराने सामंती ज़मींदार निहायत ईमानदारी से यह यक़ीन करते रहे कि हर चीज़ तबाह हो रही और बिखर रही है, कि भूदासता के बिना देश का प्रबंध करना असंभव है, जबकि नये पूंजीवादी मालिक के रास्ते में क़दम-क़दम पर अमली मुश्किलें पेश आती थीं और वह अपने उद्यम को अलाभप्रद समझकर छोड़ भी देता था। इस संक्रमण की कठिनाई का भौतिक प्रमाण, एक ठोस प्रमाण यह है कि उस काल में रूस मशीनों का आयात विदेशों से करता था ताकि देश में बेहतरीन मशीनें इस्तेमाल की जा सकें, लेकिन हुआ यह कि इन मशीनों को चलाने के लिए लोग ही नहीं मिलते थे और न ही प्रबंधकर्ता मिलते थे। पुराने सामंती अनुशासन से नये बुर्जुआ पूंजीवादी अनुशासन में संक्रमण इतना कठिन था कि आप रूस भर में यह देख सकते थे कि बेहतरीन मशीनें यूं ही पड़ी हुई हैं और उनका इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है।

इसलिए, साथियो, अगर आप मामले को इस नज़रिये से देखें, तो आप अपने को उन लोगों के, उन वर्गों के, उन बुर्जुआओं और उनके टुकड़ख़ोरों के चकमे में आने नहीं देंगे, जिनका एक ही काम है घबराहट पैदा करना, निराशा पैदा करना, हमारे पूरे काम के बारे में घोर निराशा पैदा करना ताकि वह व्यर्थ प्रतीत हो और जो अनुशासन के उल्लंघन तथा भ्रष्टाचार की हर मिसाल की ओर उंगली उठाते हैं और इस बिना पर क्रांति को अलाभप्रद समझकर उसका परित्याग करते हैं, गोया संसार में, इतिहास में, एक भी वास्तव में ऐसी महान क्रांति कभी हुई हो जिसमें भ्रष्टाचार नहीं था, अनुशासनहीनता नहीं थी और जनता द्वारा एक नये अनुशासन के सृजन के दौरान कष्टप्रद प्रायोगिक क़दम न उठाये गये हों। हमें यह नहीं भूलना है कि पहली मरतबा इतिहास में एक ऐसी मंज़िल की शुरूआत हुई है जब करोड़ों श्रमिक और शोषित लोग एक नये अनुशासन का, श्रम-अनुशासन का, बिरादराना संबंधों के अनुशासन का, सोवियत अनुशासन का वास्तव में सृजन कर रहे हैं। हम यह दावा नहीं करते, न यह उम्मीद

करते हैं कि इस क्षेत्र में हम बहुत जल्द कामयाबियां हासिल करेंगे। हम यह जानते हैं कि इस काम में इतिहास का एक पूरा युग लग जायेगा। हमने इतिहास के इस युग का सूत्रपात किया है, इस युग में हम पूंजीवादी समाज के अनुशासन को एक ऐसे देश में, जो अभी भी बुर्जुआ देश है, छिन्न-भिन्न कर रहे हैं और हमें इस बात पर गर्व है कि राजनीतिक चेतना रखनेवाले सभी मज़दूर और निरपवाद रूप से सभी मेहनतकश किसान इस अनुशासन को छिन्न-भिन्न करने में सहायता दे रहे हैं, यह वह युग है, जिसमें जनता ख़ुद-ब-ख़ुद पहलक़दमी करके – ऊपर से निर्देशित होकर नहीं, बल्कि स्वयं अपने जीवन अनुभव द्वारा निर्देशित होकर – यह समझ हासिल कर रही है कि उसे श्रमजीवी जनता के शोषण व ग़ुलामी पर आधारित इस अनुशासन को संयुक्त श्रम के नये अनुशासन में, पूरे रूस के, करोड़ों की आबादीवाले देश के एकताबद्ध, संगठित मज़दूरों और मेहनतकश किसानों के नये अनुशासन में बदल देना होगा। यह अत्यधिक कठिन काम है लेकिन साथ ही सार्थक काम भी है, क्योंकि जब हम इस काम को अमली तौर पर पूरा कर चुकेंगे तभी हम पूंजीवादी समाज के ताबूत में आख़िरी कील ठोंककर उसे दफ़ना सकेंगे।

खंड ३६,
पृ० ३७७-३८६

रूसी संघात्मक जनतंत्र के उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश के बारे में

जन-कमिसार परिषद के निर्णय का मसविदा

जन-कमिसार परिषद जन-शिक्षा कमिसारियात को निर्देश देती है कि वह अविलंब ऐसे निर्णय और क़दम तैयार करे, जिनसे कि उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश पाने के प्रत्याशियों की संख्या रिक्त स्थानों से अधिक होने पर फ़ौरी क़दम उठाये जा सकें, ताकि सभी इच्छुकों को शिक्षा पाने का अवसर मिले और यह सुनिश्चित हो कि संपन्न वर्गों को कोई वास्तविक या क़ानूनी विशेषाधिकार न मिलें। निस्संदेह सर्वहारा और ग़रीब किसानों के प्रत्याशियों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए, जिन्हें बड़े पैमाने पर छात्रवृत्तियां भी दी जायेंगी।

२ अगस्त, १९१८ को
लिखित

खंड ३७,
पृ० ३४

ट्रेड-यूनियनों के कार्यभार

(उद्धरण)

३

इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए ट्रेड-यूनियनों के इस समय कार्यभार निम्नलिखित हैं।

ट्रेड-यूनियन "तटस्थता" की किसी भी तरह की बात नहीं की जा सकती। तटस्थता के लिए कोई भी मुहिम या तो प्रतिक्रांति का पाखंडपूर्ण छद्मावरण है या फिर वह वर्ग चेतना का पूर्ण अभाव है।

अब हम ट्रेड-यूनियन आंदोलन के मूल नाभिक में इतने मज़बूत हैं कि हम यूनियनों के अंदर पिछड़े हुए तथा निष्क्रिय, ग़ैर-कम्युनिस्ट तत्वों तथा उन मज़दूरों को भी, जो कुछ मामलों में अब भी टुटपुंजिया हैं, अपने प्रभाव तथा सर्वहारा अनुशासन के अंतर्गत ला सकते हैं।

इसलिए अब मुख्य कार्य शक्तिशाली शत्रु का प्रतिरोध भंग करना नहीं रह गया है, क्योंकि सर्वहाराओं तथा अर्द्ध-सर्वहाराओं के बीच सोवियत रूस का ऐसा दुश्मन नहीं रह गया है, अब मुख्य कार्य है सर्वहारा वर्ग तथा अर्द्ध-सर्वहारा वर्ग के कतिपय टुटपुंजिया भागों के पूर्वाग्रहों पर अडिग, सतत, अधिक व्यापक शैक्षणिक तथा संगठनात्मक कार्य द्वारा क़ाबू पाना, सोवियत सत्ता का आधार, जिसका विस्तार अपर्याप्त है, निरंतर विस्तृत करना (अर्थात राजकीय प्रशासन में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेनेवाले मज़दूरों तथा ग़रीब किसानों की संख्या बढ़ाना), पिछड़ी हुई मेहनतकश जनता को शिक्षित करना (प्रबंध में व्यावहारिक शिरकत द्वारा, न केवल पुस्तकों, भाषणों तथा अख़बारों के द्वारा) तथा सामान्यतया ट्रेड-यूनियन आंदोलन के इन नये कार्यभारों के लिए और उदाहरण के लिए, ग़रीब किसान जैसे कहीं बड़ी तादादवाले अर्द्ध-

सर्वहारा जन-समुदाय को आकृष्ट करने के लिए **नये संगठनात्मक रूपों** की खोज करना।

उदाहरणार्थ, **समस्त** ट्रेड-यूनियन सदस्यों को कमिसार प्रणाली के ज़रिए, समय-समय पर नियुक्त नियंत्रण ग्रुपों में शिरकत, आदि, आदि के ज़रिए राजकीय प्रशासन की ओर आकृष्ट करना चाहिए। घरेलू नौकरानियों को पहले सहकारी कार्य की ओर, आबादी को खाद्य सामग्रियां मुहैया करने, उनके उत्पादन की देखरेख करने, आदि की ओर, फिर अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण और कम "संकुचित" कार्य की ओर – निस्संदेह, आवश्यक धीमी गति से – आकृष्ट करना चाहिए।

मज़दूरों के साथ-साथ "विशेषज्ञों" को राजकीय कार्य की ओर आकृष्ट करना चाहिए और उन पर नज़र रखनी चाहिए।

संक्रमणात्मक रूप संगठन की नयी सीमाओं की अपेक्षा करते हैं। इस प्रकार, उदाहरणार्थ, ग़रीब किसान समितियां ज़बर्दस्त भूमिका अदा कर रही हैं। यह ख़तरा हो सकता है कि सोवियतों के साथ उनके विलय के परिणामस्वरूप अर्द्ध-सर्वहाराओं का **जन-समुदाय** स्थायी संगठन की सीमाओं के **बाहर** रह जाये। परंतु हम ग़रीब किसानों को संगठित करने के कार्यभार को इस बहाने तिलांजलि नहीं दे सकते कि वे उजरत पर काम करनेवाले लोग नहीं हैं। यह सम्भव ही नहीं, आवश्यक भी है कि नये रूपों की तलाश की जाये, बार-बार तलाश की जाये, भले ही यह कार्य, उदाहरण के लिए, ग़रीब किसानों की यूनियनें (सम्भवतः वही ग़रीब किसान समितियां) **ग़रीब से ग़रीब** लोगों की ऐसी यूनियनों के रूप में गठित करके किया जाये, जिनकी (क) अनाज में मुनाफ़ाख़ोरी करने तथा अनाज के बहुत ऊंचे दामों में दिलचस्पी न हो, जो (ख) प्रत्येक के लिए एकसमान पग उठाकर अपनी दशा सुधारने की कोशिश करें, जो (ग) समाजीकृत कृषि को सुदृढ़ बनाने की कोशिश करें, जिनकी (घ) शहरी मज़दूरों के साथ स्थायी साहचर्य में दिलचस्पी हो, आदि।

ऐसी ग़रीब किसान यूनियन अखिल-रूसी ट्रेड-यूनियन परिषद का **एक विशेष विभाग** हो सकती है ताकि उसे पूर्णतया सर्वहारा तत्वों पर छाने से रोका जा सके। इसका रूप बदला जा सकता है और उसकी तलाश की जा सकती है व्यवहार को देखते हुए, नयी संक्रमणात्मक

सामाजिक क़िस्मों को अपनी परिधि में लानेवाले नये कार्यभार को देखते हुए (गांव के ग़रीब सर्वहारा नहीं हैं, अब तो वे अर्द्ध-सर्वहारा भी नहीं हैं, परंतु यह **वे** लोग हैं, **जो** उर्द्ध-सर्वहारा के सबसे समीप हैं, क्योंकि पूंजीवाद अभी तक मरा नहीं है, साथ ही यह **वे** लोग हैं, जो समाजवाद में संक्रमण के प्रति अत्यंत सहानुभूतिशील हैं) ... *

दिसंबर, १९१८–
जनवरी, १९१९ के
आरंभ में लिखित

खंड ३७,
पृ० ४०४-४०६

* यहां पांडुलिपि ख़त्म हो जाती है। – **सं०**

दूसरी अखिल रूसी ट्रेड-यूनियन कांग्रेस में रिपोर्ट २० जनवरी, १९१९

(उद्धरण)

...हम जानते हैं कि सर्वहारा ने कई हज़ार, शायद दसियों हज़ार मज़दूरों को राजकीय प्रशासन के लिए आगे बढ़ाया है। हम जानते हैं कि नये वर्ग – सर्वहारा – के अब राजकीय प्रशासन की प्रत्येक शाखा में, समाजीकृत किये जा चुके या शीघ्र समाजीकृत किये जानेवाले उद्यमों के प्रत्येक विभाग में, अर्थव्यवस्था की प्रत्येक शाखा में अपने प्रतिनिधि हैं। सर्वहारा को यह मालूम है। वह काम को अमली जामा पहनाने में जुट गया है और वह अब देख सकता है कि हमें इन्हीं ढर्रों पर अग्रसर होना चाहिए, कि हमें यह कहने की कि मेहनतकश जनता की ट्रेड-यूनियनों का राजकीय कार्यतंत्र के साथ पूरी तरह विलय हो चुका है, स्थिति में पहुंचने से पहले बहुत-सारे पग उठाने पड़ेंगे। यह तब होगा, जब मज़दूर एक वर्ग के दूसरे वर्ग द्वारा दमन के निकायों को पूरी तरह अपने हाथों में ले लेंगे। और हमें पूरा यक़ीन है कि यह होकर रहेगा।

अब मैं आपका ध्यान अगले व्यावहारिक कार्य पर केंद्रित करना चाहता हूं। हमें आर्थिक प्रशासन तथा नयी अर्थव्यवस्था के निर्माण में मेहनतकश जनता की शिरकत निरंतर बढ़ाते जाना चाहिए। यदि हम यह कार्यभार पूरा नहीं करते, यदि हम ट्रेड-यूनियनों को आज की तुलना में दस गुना ज़्यादा लोगों को राजकीय प्रशासन में सीधी शिरकत के लिए प्रशिक्षित करने के निकायों में परिणत नहीं करते, तो हम कम्युनिज़्म के निर्माण को कभी पूर्ण नहीं कर सकेंगे। यह हम साफ़-साफ़ समझते हैं। इसकी हमारे प्रस्ताव में चर्चा की गयी है तथा यह

ऐसा मामला है, जिसकी ओर मैं ख़ास तौर पर आपका ध्यान खींचना चाहता हूं।

इतिहास की इस महानतम क्रांति में, जब सर्वहारा ने राजकीय सत्ता की बागडोर संभाल ली है, ट्रेड-यूनियनों के सारे प्रकार्यों में गहन परिवर्तन हो रहा है। ट्रेड-यूनियनें नये समाज की प्रमुख निर्माता बनती जा रही हैं, क्योंकि इस समाज का लाखों-लाख लोग ही निर्माण कर सकते हैं। भूदासत्व के युग में इन निर्माताओं की संख्या सैकड़ों में थी; पूंजीवाद के युग में राज्य के निर्माताओं की संख्या हज़ारों, दसियों हज़ार थी। समाजवादी क्रांति दसियों लाख लोगों की राजकीय प्रशासन में सक्रिय, प्रत्यक्ष तथा व्यावहारिक शिरकत से ही निर्मित की जा सकती है। यह है हमारा लक्ष्य। परंतु हम अभी वहां नहीं पहुंचे हैं।

ट्रेड-यूनियनों को जानना चाहिए कि एक और भी कार्यभार है, जो उन कार्यभारों से – हिसाब-किताब, कार्य के प्रतिमानों की स्थापना, संगठनों के एकीकरण से – अधिक ऊंचा तथा अधिक महत्वपूर्ण है, जो अंशतः अब भी प्रचलित हैं तथा अंशतः कालातीत हो चुके हैं और बहरहाल यदि वे प्रचलित भी हैं, तब भी वे हमारी नज़रों में केवल मामूली ही हो सकते हैं। यह कार्यभार है जनता को पुस्तकों से नहीं, भाषणों या सभाओं से नहीं, वरन व्यावहारिक अनुभव से प्रशासन की कला सिखाना ताकि सर्वहारा के हरावल दस्ते के बजाय, जिसे सर्वहारा वर्ग ने अपने बीच से पेश किया और जिसे आदेश देने तथा संगठन करने के लिए तैयार किया गया है, मज़दूरों के अधिकाधिक नये दस्ते विभिन्न विभागों में प्रवेश कर सकें और इस अग्रणी दस्ते के स्थान पर उस जैसे दस नये दस्ते आ सकें। यह बहुत बड़ा तथा कठिन कार्य प्रतीत हो सकता है। परंतु यह इतना ज़बर्दस्त नहीं लगेगा, यदि हम रुककर यह सोचें कि क्रांति के अनुभव ने कितनी शीघ्रतापूर्वक हमें अक्तूबर क्रांति के उपरांत सामने आये बहुत बड़े कार्यभारों से निबटने में सक्षम बनाया है तथा मेहनतकश जनता, जिसके लिए ज्ञान के द्वार बंद थे तथा जिसका उसके लिए कोई उपयोग नहीं था, अब कैसे ज्ञान-पिपासु हो गयी है।

हम यह पायेंगे कि हम इस कार्यभार से निबट सकते हैं तथा मेहनतकश जनों की विशाल संख्या को यह सिखा सकते हैं कि राज्य तथा

8–1015

उद्योग का कैसे संचालन किया जा सकता है। हमें पता चलेगा कि हम व्यावहारिक कार्यकलाप का विकास कर सकते हैं तथा उस घातक पूर्वाग्रह को चकनाचूर कर सकते हैं, जो दशकों तथा शताब्दियों से मेहनतकश जनता के दिमाग़ में रोपा जाता रहा है, अर्थात यह पूर्वाग्रह कि राजकीय प्रशासन विशेष सुविधाप्राप्त मुट्ठी भर लोगों का परिरक्षित क्षेत्र है, कि यह एक विशेष कला है। यह सच नहीं है। हमसे लाज़िमी तौर पर ग़लतियां होंगी, परंतु हर ग़लती राजकीय प्रशासन में कोई विशेष पाठ्यक्रम सीख रहे मुट्ठी भर छात्रों को नहीं, वरन उन लाखों-लाख मेहनतकश जनों को शिक्षित करने का काम करेगी, जो प्रत्येक ग़लती के परिणामों को व्यक्तिशः झेलेंगे। वे स्वयं देखेंगे कि उनके सामने उत्पादों का हिसाब-किताब रखने और वितरण करने का तथा श्रम-उत्पादकता बढ़ाने का तात्कालिक कार्यभार है, वे अनुभव के ज़रिए देखेंगे कि सत्ता उनके अपने हाथों में है और यदि वे स्वयं अपनी सहायता नहीं करेंगे, तो कोई उनकी सहायता नहीं करेगा। यह है नयी मनोवृत्ति, जो मज़दूर वर्ग में जग रही है। यह है ज़बर्दस्त ऐतिहासिक महत्व का नया कार्यभार, जो सर्वहारा के सामने है और जिसे किसी अन्य की तुलना में ट्रेड-यूनियनों के सदस्यों तथा ट्रेड-यूनियन आंदोलन के नेताओं के दिमाग़ों में गहरी जड़ पकड़नी चाहिए। वे मात्र ट्रेड-यूनियनें नहीं हैं। आज वे केवल इसी हद तक ट्रेड-यूनियनें हैं कि वे पुरानी पूंजीवादी प्रणाली से सूत्रबद्ध एकमात्र सम्भव ढांचे के अंतर्गत गठित हैं और मेहनतकश जनों की अधिकतम संख्या को अपनी परिधि में लाती हैं। परंतु उनका कार्यभार मेहनतकश जनों के रिज़र्व से अथक रूप से नयी शक्तियां प्राप्त करते हुए तथा उन्हें सबसे कठिन कार्यभारों की ओर ले जाते हुए इन लाखों, दसियों लाख मेहनतकश जनों को कार्यकलाप के सरल से उच्चतर रूपों की ओर ले जाना है। इस तरह वे अधिकाधिक लोगों को राजकीय प्रशासन की कला सिखा सकेंगी। यह उनका काम है कि वे सर्वहारा वर्ग के संघर्ष के साथ तादात्म्यता स्थापित करें, जिसने अपना अधिनायकत्व स्थापित किया है तथा जो पूरी दुनिया के सामने उसकी रक्षा कर रहा है, सर्वत्र उन अधिकाधिक औद्योगिक मज़दूरों तथा समाजवादियों को अपनी ओर करता जा रहा है, जो कल तक ही सामाजिक-देशद्रोहियों तथा सामाजिक-प्रतिरक्षा-वादियों के आदेशों को सहन करते थे, परंतु जो आज अधिकाधिक

रूप में कम्युनिज़्म तथा कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के झंडे को स्वीकार करते जा रहे हैं।

इस झंडे को संभाले रहें, और साथ ही समाजवाद के निर्माताओं की क़तारें निरंतर बढ़ाते रहें। याद रखें कि ट्रेड-यूनियनों के कार्यभार हैं नये जीवन का निर्माण करना तथा लाखों, दसियों लाख को प्रशिक्षित करना, जो अनुभव से ग़लतियों से बचना सीखेंगे तथा पुराने पूर्वाग्रहों का परित्याग करेंगे, जो अपने अनुभव से सीखेंगे कि राज्य तथा उद्योग का कैसे संचालन किया जाता है। यही इस बात की एकमात्र पक्की गारंटी है कि समाजवाद के ध्येय की पूर्ण विजय होगी तथा अतीत की ओर पलटने की कोई भी गुंजाइश असंभव होगी।

खंड ३७,
पृ० ४५०-४५३

'मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था की नियमावली' के मसविदों पर टिप्पणियां और उनमें अनुपूर्तियां

साथी स्तालिन को। प्रतियां अवानेसोव, तोम्स्की और अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष-मंडल के सदस्य किसेल्योव को।

केंद्रीय समिति द्वारा दिये गये निर्देश के आधार पर मेरे विचार में तीनों मसविदों से एक तैयार करना चाहिए।

मेरे विचार में ये बातें इसमें जोड़नी चाहिए:

१) राजकीय नियंत्रण आयोग में मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था का "विभाग" अस्थायी होना चाहिए, राजकीय नियंत्रण आयोग के **सभी** विभागों में मज़दूर किसान निरीक्षण चालू कराने के लिए, और फिर एक विशेष विभाग के नाते इसे ख़त्म हो जाना चाहिए।

२) ध्येय: **सारा** मेहनतकश जन-समुदाय, पुरुष भी और **स्त्रियां तो विशेषतः** मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के काम में भाग लें।

३) इसके लिए स्थानीय संगठनों में सूचियां बनायी जायें (संविधान के अनुसार), क्लर्कों को उनमें न रखा जाये, इत्यादि,

– बाक़ी सभी लोग **बारी-बारी से** मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के काम में भाग लें।

४) यह शिरकत भाग लेनेवालों के विकास के स्तर के अनुसार अलग-अलग तरह की हो: अनपढ़ तथा बिल्कुल अविकसित मज़दूरों और किसानों के लिए "श्रोता" या गवाह या काम "सीखनेवाले" की भूमिका से शुरू करके पढ़े-लिखे, विकसित तथा किसी न किसी तरह **परखे जा चुके** मज़दूरों और किसानों को पूरे (या प्रायः पूरे) अधिकार देने तक।

५) खाद्य-पदार्थों, **मालों**, गोदामों, औज़ारों, सामग्रियों, ईंधन, इत्यादि के हिसाब-किताब पर मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के नियंत्रण की ओर विशेष ध्यान दिया जाये (इसके लिए आवश्यक सही-सही नियम तैयार किये जायें) और यह नियंत्रण **अधिक व्यापक** बनाया जाये (भोजनालय, आदि के हिसाब-किताब पर तो ख़ास तौर से)।

स्त्रियों को, उनमें **एक-एक को अनिवार्यतः** इस काम में लगाया जाये।

६) बहुत सारे लोगों को इस काम में आकृष्ट करने के सिलसिले में गड़बड़ न पैदा हो, इसके लिए काम में शिरकत शनैः शनैः होनी चाहिए, इसके लिए बारी लगा देनी चाहिए, इत्यादि, इत्यादि। शिरकत के रूपों पर भी अच्छी तरह सोच-विचार करना चाहिए (२-३ या विरले ही, ख़ास मामलों में इससे अधिक लोग, ताकि वे क्लर्कों का ध्यान व्यर्थ ही न बंटायें)।

७) ब्योरेवार निर्देश तैयार करने चाहिए।

८) (विशेष निर्देश के अनुसार) राजकीय निरीक्षण आयोग के अधिकारियों का दायित्व होना चाहिए कि वे पहले, सभी कार्र-वाइयों में भाग लेने के लिए मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के प्रति-निधियों (उनके ग्रूपों) को आमंत्रित करें; दूसरे, मज़दूरों और किसानों के **ग़ैर-पार्टी** सम्मेलनों में व्याख्यान दें (राजकीय नियंत्रण के मूलभूत सिद्धांतों और तरीक़ों के बारे में ये व्याख्यान विशेषतः अभिपुष्ट कार्यक्रम के अनुसार हों, सुबोध हों; या शायद व्याख्यानों के स्थान पर पुस्ति-काएं पढ़ी जायें, जो हम (यानी राजकीय नियंत्रण आयोग, स्तालिन और अवानेसोव, पार्टी के विशेष सहयोग से) प्रकाशित करेंगे और इस पुस्तिका पर टीका पढ़ी जाये)।

९) केंद्र में राजकीय निरीक्षण आयोग के काम में भाग लेने के लिए किसानों को (अनिवार्यतः ग़ैर-पार्टी किसानों को) **धीरे-धीरे** उनके गांवों से बुलाया जाये: प्रति गुबेर्निया से १-२ से शुरूआत की जा सकती है, फिर परिवहन और दूसरी परिस्थितियों को देखते हुए गिनती **बढ़ायी** जा सकती है। यही बात ग़ैर-पार्टी मज़दूरों के लिए भी।

१०) राजकीय नियंत्रण आयोग के काम में मेहनतकशों की शिरकत की धीरे-धीरे पार्टी और ट्रेड-यूनियनों के ज़रिए जांच शुरू की जाये, यानी उनके ज़रिए यह जांच की जाये कि क्या सभी लोग भाग ले रहे हैं या नहीं और भाग लेनेवालों को राज्य संचालन का काम सिखाने की दृष्टि से उनकी शिरकत के क्या परिणाम हुए हैं।

लेनिन

२४.१.१९२०

खंड ४०,
पृ० ६५-६६

राष्ट्रीय आर्थिक परिषदों की तीसरी अखिल रूसी कांग्रेस में भाषण २७ जनवरी, १६२०

(उद्धरण)

... हमारा दोष यह है कि हम यह सोचते हैं कि हम सब कुछ अपने आप कर सकते हैं। हमारी सबसे गंभीर कमी कार्याधिकारियों का अभाव है, फिर भी हमें यह पता नहीं है कि उन्हें सामान्य मज़दूरों तथा किसानों के बीच से कैसे प्राप्त किया जाये, जबकि उनके बीच प्रतिभावान प्रशासक तथा संगठनकर्ता भरे पड़े हैं। आम और अधिकांश मामलों में नितांत निरर्थक विवाद का परित्याग करके कामकाजी तरीक़े अपनाना बेहतर होगा और जितनी जल्दी यह किया जायेगा, उतना अच्छा होगा। तब हम उन्नत वर्ग के संगठनकर्ताओं के कर्त्तव्यों की सचमुच पूर्ति करेंगे तथा हज़ारों-हज़ार नये प्रतिभावान संगठनकर्ता चुन लेंगे। हमें उन्हें आगे बढ़ाना होगा, उनकी जांच-परख करनी होगी, उन्हें कार्यभार, अधिकाधिक जटिल कार्यभार सौंपने होंगे। मुझे आशा है कि राष्ट्रीय आर्थिक परिषदों की कांग्रेस के बाद, किये जा चुका कार्य की समीक्षा के बाद हम यह रास्ता अपनायेंगे तथा संगठनकर्ताओं की संख्या को कई गुना बढ़ायेंगे, ताकि उस अतीव पतली परत को मज़बूत बना सकें तथा बढ़ा सकें, जो गत दो वर्षों के दौरान घिस चुकी है। इसलिए कि हम अपने लिए जो कार्यभार, रूस को ग़रीबी, भूख तथा ठंड से बचाने का जो कार्यभार निर्धारित कर रहे हैं, उसकी पूर्ति के लिए हमें ऐसे दस गुने ज़्यादा संगठनकर्ताओं की आवश्यकता है, जो लाखों-लाख लोगों के सामने उत्तरदायी होंगे।

खंड ४०,
पृ० ७८

ब्लागुशा-लेफ़ोर्तोवो ज़िले के ग़ैर-पार्टी सम्मेलन में भाषण ९ फ़रवरी, १९२०

(उद्धरण)

... अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति का एक सबसे महत्वपूर्ण निर्णय, जिस पर मेरी राय में सबसे गहरा ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, हमारी संस्थाओं में नौकरशाही के विरुद्ध संघर्ष से सरोकार रखता है। एक पग है हमारे राजकीय नियंत्रण को मज़दूर किसान नियंत्रण में अथवा मज़दूर निरीक्षण संस्था में रूपांतरित करने के लिए अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति का निर्णय। पुराने अधिकारियों को बाहर धकेले बिना – जैसे हमने सेना से विशेषज्ञों को बाहर नहीं धकेला था और उनके साथ मज़दूर कमिसार संलग्न कर दिये थे – हमें इन बुर्जुआ विशेषज्ञों के साथ मज़दूरों के ग्रुप संलग्न करने चाहिए, जो उन पर नज़र रखें, उनसे सीखें तथा इस काम को अपने हाथों में ले लें। मज़दूरों को समस्त राजकीय संस्थाओं में स्थान पाना चाहिए और पूरे राजकीय कार्यतंत्र की देखरेख करनी चाहिए। और यह काम ग़ैर-पार्टी मज़दूरों द्वारा किया जाना चाहिए, जिन्हें मज़दूरों तथा किसानों के ग़ैर-पार्टी सम्मेलनों में अपने प्रतिनिधि चुनने चाहिए। उन्हें कम्युनिस्टों की सहायता के लिए आगे बढ़ना चाहिए, जो काम के ज़बर्दस्त बोझ से दबे हुए हैं। हमें इस कार्यतंत्र में अधिक से अधिक मज़दूर तथा किसान भरने चाहिए। हम इस काम से निबटेंगे तथा उसे पूरा करेंगे, और इस तरह अपनी संस्थाओं से नौकरशाही मिटा देंगे। व्यापक ग़ैर-पार्टी जन-समुदाय को सारे राजकीय मामलों पर नज़र रखनी चाहिए तथा स्वयं शासन करना सीखना चाहिए।

खंड ४०,
पृ० १२७-१२८

मज़दूरों तथा लाल सेना के प्रतिनिधियों की मास्को सोवियत की बैठक में दिया गया भाषण ६ मार्च, १९२०

(उद्धरण)

... यह ज़रूरी है कि मज़दूर और किसान जन-समुदाय, जिन्हें पूरे राज्य का निर्माण करना है, राजकीय नियंत्रण के संगठन से काम की शुरूआत करें। आपको यह संगठन तभी प्राप्त होगा, जब आप आम मज़दूरों और किसानों के बीच जायें, नौजवान मज़दूरों और किसानों के बीच जायें, जो अभूतपूर्व रूप से राज्य के प्रशासन का कार्य स्वयं संभालने की स्वतंत्र इच्छा द्वारा प्रेरित हुए हैं और जो इसके लिए कटिबद्ध तथा कृतसंकल्प हैं। हमने लड़ाई के अनुभव से बहुत-कुछ सीखा है और हम उन हज़ारों लोगों को, जो सोवियतों के "स्कूल" से गुज़र चुके हैं और राजकाज चलाने में समर्थ हैं, आगे बढ़ायेंगे। यह आवश्यक है कि मज़दूर निरीक्षण संस्था के लिए आप भीरु से भीरु और अपरिपक्व से अपरिपक्व मज़दूरों को भी भर्ती करें और उन्हें तरक़्क़ी दें। उन्हें इस काम में प्रगति करने दीजिये। जब वे यह देख लें कि मज़दूर निरीक्षण संस्था राजकाज चलाने में किस प्रकार भाग लेता है, तब उन्हें उन सीधे-सादे कामों से, जिन्हें पूरा करने में वे समर्थ हैं – पहले-पहल केवल प्रत्यक्षदर्शियों के रूप में – राज्य के अधिक महत्वपूर्ण कार्यों को संभालने की दिशा में धीरे-धीरे बढ़ने दीजिये। आपको व्यापकतम स्रोतों से भारी संख्या में सहायक प्राप्त होंगे, जो शासन का भार संभालेंगे, जो आपका हाथ बंटाने के लिए और काम करने के लिए आपके पास आयेंगे। हमें बीसियों हज़ार अग्रणी मज़दूरों की ज़रूरत है। आप सहारे के लिए ग़ैर-पार्टी मज़दूरों और किसानों की ओर रुख़ करें, उनके पास जायें, क्योंकि चारों ओर शत्रुओं से घिरे होने के कारण हमारी पार्टी को संकुचित पार्टी ही बने रहना चाहिए। ऐसे समय, जब विरोधी तत्व लड़ाई, छल-कपट और उकसावे के हर तरीक़े का इस्तेमाल कर

हमारे साथ चिपक जाना चाहते हैं और इस बात का फ़ायदा उठाना चाहते हैं कि शासक पार्टी की सदस्यता अनेक विशेषाधिकार प्रदान करती है, हमारे लिए यह और भी ज़रूरी हो जाता है कि हम ग़ैर-पार्टी लोगों के साथ मिल-जुलकर काम करें। मज़दूर तथा किसान-निरीक्षण से संबंधित क़ानूनों के अंतर्गत हमें शासन कार्य में ग़ैर-पार्टी मज़दूरों और किसानों का तथा उनके सम्मेलनों का उपयोग करने का अधिकार प्राप्त है। यह निरीक्षण संगठन एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम उन मज़दूरों और किसानों की संख्या बढ़ा सकते हैं, जो कुछ ही वर्षों के भीतर घरेलू मोर्चे पर विजय प्राप्त करने में हमारी सहायता करेंगे। यह विजय बहुत दिनों तक उतने सीधे-सादे, प्रत्यक्ष और निर्णायक ढंग से नज़र नहीं आयेगी, जितनी युद्ध के मोर्चे पर मिली विजय नज़र आती है। यह विजय सतर्कता तथा परिश्रम की अपेक्षा करती है, और मास्को तथा उसके इर्द-गिर्द के स्थानों के विकास के काम को पूरा करके, परिवहन-व्यवस्था की पुनःस्थापना तथा उस सामान्य आर्थिक संगठन की पुनःस्थापना के सामान्य कार्य को संपन्न करने में सहायता देकर आप इस विजय को सुनिश्चित बना सकते हैं, जिससे हमें मुनाफ़ाख़ोरों के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव को समाप्त करने तथा पूंजीवाद की पुरानी परंपराओं को मिटाने में सहायता मिलेगी। इस काम में अगर कुछ वर्ष लग भी जायें, तो कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। ऐसे हालात में भी इस प्रकार के सामाजिक सुधार अभूतपूर्व होंगे और इस क्षेत्र में हमारे लिए अपने सामने ऐसे कर्त्तव्य रखना, जो अल्प अवधि के लिए ही निर्दिष्ट हों, एक बहुत बड़ी ग़लती होगी।

अंत में मैं आपकी अनुमति से यह आशा तथा विश्वास व्यक्त करना चाहूंगा कि नयी मास्को सोवियत, अपनी पूर्ववर्ती सोवियत द्वारा गृह युद्ध [41] के दौरान संचित समस्त अनुभव का ध्यान रखते हुए युवाजनों के बीच से नयी शक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करेगी और आर्थिक विकास के कार्यों में उसी स्फूर्ति, दृढ़ता तथा आग्रह के भाव से जुट जायेगी, जिसका परिचय हमने सैनिक मामलों से निबटते हुए दिया है, और इस प्रकार वह ऐसी जीतों को हासिल करेगी, जो शायद उतनी शानदार न होंगी लेकिन जो ज़्यादा ठोस और पक्की होंगी।

खंड ४०,
पृ० १६८-२०२

स्थानीय सोवियत संस्थाओं को श्रम और रक्षा परिषद के निर्देश (मसविदा)

(उद्धरण)

आर्थिक विकास कार्यों से संबद्ध राजकीय अधिकारियों की संख्या में वृद्धि

इस वृद्धि की हमें सख़्त ज़रूरत है, लेकिन इसके लिए बहुत कम नियमित प्रयास किये जा रहे हैं। पूंजीवाद में निजी स्वामी दूसरों से चोरी-छिपे और उन्हें झांसा देकर अच्छे कारिंदे, मैनेजर, डायरेक्टर पाने की कोशिश करते थे। दसियों बरसों तक वे यह काम करते थे और केवल कुछेक सर्वश्रेष्ठ फ़र्में ही अच्छे परिणाम पाती थीं। अब मज़दूरों और किसानों का राज्य ही "स्वामी" है और उसे आर्थिक निर्माण के लिए सर्वश्रेष्ठ कर्मी चुनने चाहिए, विशेष और आम कार्यों के, स्थानीय और अखिल राजकीय परिमाण के कार्यों के संगठनकर्ता और प्रबंधक ढूंढ़ने चाहिए और यह काम व्यापक स्तर पर, योजनाबद्ध और नियमित रूप से तथा **खुले तौर पर** करना चाहिए। अभी भी अक्सर हम सोवियत सत्ता की प्रारंभिक अवधि में बनी स्थिति के अवशेष देखते हैं: भीषण गृह युद्ध और ज़बरदस्त तोड़-फोड़ के उन दिनों का ही यह नतीजा है कि कम्युनिस्ट लोग शासकों के संकुचित दायरे में सीमित हो रहे हैं, पर्याप्त संख्या में ग़ैर-पार्टी लोगों की सेवाएं अर्जित करने से या तो वे डरते हैं, या उन्हें ऐसा करना आता ही नहीं।

हमें तुरंत ही और पूरी मुस्तैदी से इस कमी को दूर करने में जुट जाना चाहिए। मज़दूरों, किसानों और बुद्धिजीवियों के जन-समूह से अनेक सुयोग्य और ईमानदार ग़ैर-पार्टी लोग सामने आ रहे हैं, जिन्हें हमें आर्थिक निर्माण के अधिक महत्वपूर्ण पदों पर लगाना चाहिए, जबकि नियंत्रण और मार्गदर्शन कम्युनिस्टों के हाथों में बनाये रखना चाहिए। दूसरी ओर, कम्युनिस्टों पर ग़ैर-पार्टी लोगों का भी नियंत्रण

होना चाहिए ; इसके लिए ऐसे मज़दूरों और किसानों के समूहों को, जिनकी ईमानदारी परखी जा चुकी है, एक ओर मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के काम में भाग लेने के लिए तथा दूसरी ओर, किसी पद-ओहदे के बिना कम्युनिस्टों के काम की अनौपचारिक जांच और मूल्यांकन के लिए आमंत्रित करना चाहिए।

स्थानीय संस्थाओं, ख़ास तौर पर वोलोस्तों[42], उयेज़्दों, ज़िलों की संस्थाओं को, जो मज़दूर और किसान जन-समूहों को सबसे अच्छी तरह जानती हैं, श्रम और रक्षा परिषद को अपनी रिपोर्टों में उन ग़ैर-पार्टी लोगों के नामों की सूची देनी चाहिए, जिन्होंने अपने काम में अपनी ईमानदारी सिद्ध की है या जो ग़ैर-पार्टी सम्मेलनों में सामने आये हैं या जिन्हें अपने कारख़ाने, गांव, वोलोस्त, आदि में निर्विवाद आदर प्राप्त है ; – और फिर यह इंगित करना चाहिए कि इन लोगों से आर्थिक निर्माण के क्षेत्र में क्या काम लिया जा रहा है। "काम" से अभिप्राय यह होना चाहिए कि ये लोग किन पदों पर हैं, और **किसी पद-ओहदे के बिना नियंत्रण कार्य में या अनधिकृत जांच में** और नियमित अनौपचारिक सम्मेलनों, इत्यादि में क्या **भाग** ले रहे हैं।

इन प्रश्नों के उत्तर अनिवार्यतः नियमित रूप से दिये जाने चाहिए। इसके बिना समाजवादी राज्य आर्थिक निर्माण के कार्य में जन-समूहों की शिरकत का काम ठीक से नहीं कर पायेगा। नये, ईमानदार और समाजवाद में निष्ठा रखनेवाले कर्मी हैं। ग़ैर-पार्टी लोगों में ऐसे कर्मी बहुत हैं। हम उन्हें नहीं जानते। स्थानीय रिपोर्टों से ही हमें उन्हें जानने में, अधिक व्यापक और शनैः शनैः व्यापक होते काम में उन्हें परखने में मदद मिलेगी, कम्युनिस्ट पार्टी इकाइयों के जन-समूहों से कटने जैसी बुराई से, जो कि बहुत-से स्थानों पर देखने में आ रही है, बचने में मदद मिलेगी।

२१.५.१९२१

खंड ४३,
पृ० २८०-२८१

पार्टी की सफ़ाई पर

पार्टी की सफ़ाई का काम प्रत्यक्षतः गंभीर और विराट महत्व का काम बन गया है।

ऐसे स्थान हैं जहां पार्टी की सफ़ाई मुख्यतः ग़ैर-पार्टी मज़दूरों के अनुभव और सुझावों के आधार पर, इन सुझावों की ओर ध्यान देते हुए, ग़ैर-पार्टी सर्वहारा समूह के प्रतिनिधियों की राय लेते हुए की जा रही है। यह सब सबसे अधिक मूल्यवान, सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यदि हम सचमुच **इसी तरह से** ऊपर से नीचे तक बिना किसी अपवाद के पार्टी की सफ़ाई कर पायें, तो क्रांति की उपलब्धि वास्तव में बहुत बड़ी होगी।

क्रांति की उपलब्धियां अब पहले जैसी नहीं हो सकतीं। युद्ध के मोर्चे से आर्थिक मोर्चे की ओर तथा नयी आर्थिक नीति[43] की ओर संक्रमण के साथ, श्रम-उत्पादकता और श्रम-अनुशासन बढ़ाने के कार्यभारों के ही प्रमुख होने के साथ इन उपलब्धियों का भी बदलना अनिवार्य है। ऐसे समय में क्रांति की प्रमुख उपलब्धि आंतरिक परिष्कार ही है, ऐसा परिष्कार, जो ज्वलंत नहीं, तड़क-भड़क भरा नहीं, तुरंत दिखायी नहीं देता, श्रम का – उसके संगठन और परिणामों का परिष्कार ; सर्वहारा और पार्टी दोनों को भ्रष्ट करनेवाले टुटपुंजिया और टुटपुंजिया-अराजकतावादी तत्वों के विरुद्ध संघर्ष के अर्थ में परिष्कार। ऐसा परिष्कार करने के लिए पार्टी से उन तत्वों को निकाल देना चाहिए, जो जन-समूहों से कटते हैं (जन-समूहों की नज़रों में पार्टी को बदनाम करनेवाले तत्वों से सफ़ाई की बात तो कहने की ज़रूरत

ही नहीं)। बेशक जन-समुदाय के सभी सुझावों को हम नहीं मानेंगे, क्योंकि जन-समुदाय भी कभी-कभी – ख़ास तौर पर असाधारण थकावट तथा अत्यधिक कठिनाइयों और अभावों से उत्पन्न परिक्लांति के दिनों में – ऐसी भावनाओं में बह जाता है, जिन्हें अग्रणी कदापि नहीं कहा जा सकता। लेकिन लोगों को आंकने में, पार्टी में "आ घुसे", "कमिसार बन बैठे" और "नौकरशाह बन गये" लोगों के प्रति नकारात्मक रुख़ में ग़ैर-पार्टी सर्वहारा समुदाय के सुझाव और बहुत-से मामलों में ग़ैर-पार्टी किसानों के सुझाव अत्यंत मूल्यवान हैं। मेहनतकश जन-समूह बड़ी संवेदनशीलता से ईमानदार और निष्ठावान कम्युनिस्टों और उन लोगों के बीच फ़र्क कर लेते हैं, जिनके प्रति ख़ून-पसीने से रोटी कमानेवालों, किसी तरह के विशेषाधिकार और सिफ़ारिश न रखनेवालों के मन में घृणा उठती है।

ग़ैर-पार्टी मेहनतकशों के सुझावों को ध्यान में रखते हुए पार्टी की सफ़ाई करना महान कार्य है। इससे हमें गंभीर परिणाम मिलेंगे। इससे पार्टी अपने वर्ग का पहले से अधिक शक्तिशाली हरावल दस्ता बनेगी, अपने वर्ग से अधिक दृढ़ता से जुड़ा तथा अनेकानेक अनगिनत कठिनाइयों और ख़तरों के बीच उसे विजय की ओर ले जाने में अधिक सक्षम हरावल दस्ता बनेगी।

भूतपूर्व मेंशेविकों[44] से सफ़ाई को मैं पार्टी की सफ़ाई का एक विशेष कार्यभार कहूंगा। मेरे विचार में १९१८ के आरंभ के बाद पार्टी में आये मेंशेविकों में से एक सौवें हिस्से से अधिक को पार्टी में नहीं रहने देना चाहिए और सो भी पार्टी में छोड़े जा रहे हर मेंशेविक को तीन बार, चार बार परखकर। क्यों? क्योंकि एक प्रवृत्ति के नाते मेंशेविकों ने १९१८-१९२१ की अवधि में अपने दो गुण साफ़ दिखा दिये हैं: पहला – मज़दूरों के बीच व्याप्त प्रमुख प्रवृत्ति के अनुसार बड़ी कुशलता से अपने को ढाल लेना, उससे "आ चिपकना", दूसरा – और भी अधिक कौशल से श्वेत गार्डियों[45] की तन-मन से सेवा करना, कथनी में उनसे इनकार करते हुए करनी में उनकी सेवा करना। ये दोनों गुण मेंशेविकवाद के सारे इतिहास का तर्कसंगत परिणाम हैं। अक्सेलरोद की "मज़दूर कांग्रेस", कैडेटों[46] (और राजतंत्र) के प्रति कथनी और करनी में मेंशेविकों का रुख़, इत्यादि याद करना ही पर्याप्त है। मेंशेविक रूसी कम्युनिस्ट पार्टी से जो "आ चिपके" हैं,

ही नहीं)। बेशक जन-समुदाय के सभी सुझावों को हम नहीं मानेंगे, क्योंकि जन-समुदाय भी कभी-कभी – ख़ास तौर पर असाधारण थकावट तथा अत्यधिक कठिनाइयों और अभावों से उत्पन्न परिक्लांति के दिनों में – ऐसी भावनाओं में बह जाता है, जिन्हें अग्रणी कदापि नहीं कहा जा सकता। लेकिन लोगों को आंकने में, पार्टी में "आ घुसे", "कमिसार बन बैठे" और "नौकरशाह बन गये" लोगों के प्रति नकारात्मक रुख़ में ग़ैर-पार्टी सर्वहारा समुदाय के सुझाव और बहुत-से मामलों में ग़ैर-पार्टी किसानों के सुझाव अत्यंत मूल्यवान हैं। मेहनतकश जन-समूह बड़ी संवेदनशीलता से ईमानदार और निष्ठावान कम्युनिस्टों और उन लोगों के बीच फ़र्क़ कर लेते हैं, जिनके प्रति ख़ून-पसीने से रोटी कमानेवालों, किसी तरह के विशेषाधिकार और सिफ़ारिश न रखनेवालों के मन में घृणा उठती है।

ग़ैर-पार्टी मेहनतकशों के सुझावों को ध्यान में रखते हुए पार्टी की सफ़ाई करना महान कार्य है। इससे हमें गंभीर परिणाम मिलेंगे। इससे पार्टी अपने वर्ग का पहले से अधिक शक्तिशाली हरावल दस्ता बनेगी, अपने वर्ग से अधिक दृढ़ता से जुड़ा तथा अनेकानेक अनगिनत कठिनाइयों और ख़तरों के बीच उसे विजय की ओर ले जाने में अधिक सक्षम हरावल दस्ता बनेगी।

भूतपूर्व मेंशेविकों[44] से सफ़ाई को मैं पार्टी की सफ़ाई का एक विशेष कार्यभार कहूंगा। मेरे विचार में १९१८ के आरंभ के बाद पार्टी में आये मेंशेविकों में से एक सौवें हिस्से से अधिक को पार्टी में नहीं रहने देना चाहिए और सो भी पार्टी में छोड़े जा रहे हर मेंशेविक को तीन बार, चार बार परखकर। क्यों? क्योंकि एक प्रवृत्ति के नाते मेंशेविकों ने १९१८-१९२१ की अवधि में अपने दो गुण साफ़ दिखा दिये हैं: पहला – मज़दूरों के बीच व्याप्त प्रमुख प्रवृत्ति के अनुसार बड़ी कुशलता से अपने को ढाल लेना, उससे "आ चिपकना", दूसरा – और भी अधिक कौशल से श्वेत गार्डियों[45] की तन-मन से सेवा करना, कथनी में उनसे इनकार करते हुए करनी में उनकी सेवा करना। ये दोनों गुण मेंशेविकवाद के सारे इतिहास का तर्कसंगत परिणाम हैं। अक्सेलरोद की "मज़दूर कांग्रेस", कैडेटों[46] (और राजतंत्र) के प्रति कथनी और करनी में मेंशेविकों का रुख़, इत्यादि याद करना ही पर्याप्त है। मेंशेविक रूसी कम्युनिस्ट पार्टी से जो "आ चिपके" हैं,

सो मैकियावेलीवाद के कारण इतना नहीं (हालांकि १९०३ में ही मेंशेविकों ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि वे बुर्जुआ कूटनीति की चालों के पूरे उस्ताद हैं), जितना इसलिए कि वे "अनुकूलनशील" हैं। अनुकूलनशीलता हर अवसरवादी की ख़ूबी होती है (वैसे हर तरह की अनुकूलनशीलता अवसरवाद नहीं है); और मेंशेविक अवसरवादी होने के नाते एक तरह से अपने "सिद्धांत के कारण" अपने को मज़दूर वर्ग में व्याप्त प्रमुख प्रवृत्ति के अनुकूल ढालते हैं, रक्षात्मक रंग चढ़ा लेते हैं – जैसे ख़रगोश जाड़ों में सफ़ेद हो जाता है। मेंशेविकों की यह ख़ूबी जाननी चाहिए और उसे ध्यान में रखना चाहिए। और इसे ध्यान में रखने का मतलब है पार्टी को ९९ प्रतिशत तक उन मेंशेविकों से साफ़ करना, जो १९१८ के बाद यानी तब, जबकि बोल्शेविकों की विजय पहले संभाव्य और फिर निस्संदेह हो गयी, पार्टी में आये हैं।

पार्टी से लुच्चों का, नौकरशाह बने, बेईमान, ढुलमुल कम्युनिस्टों का तथा मेंशेविकों का, जिन्होंने अपना लबादा बदल लिया है, लेकिन मन से मेंशेविक ही रहे हैं, सफ़ाया किया जाना चाहिए।

२० सितंबर, १९२१

खंड ४४,
पृ० १२२-१२४

सोवियतों की नौवीं अखिल रूसी कांग्रेस
२३–२८ दिसंबर, १९२१

(उद्धरण)

३

आर्थिक सरगर्मी के सवालों पर सोवियतों की नौवीं अखिल रूसी कांग्रेस का आदेश
२८ दिसंबर, १९२१

... ६. सोवियतों की नौवीं कांग्रेस उन सभी निकायों तथा संस्थाओं से, जो आर्थिक कार्यकलाप में लगे हुए हैं, मांग करती है कि वे राजकीय कार्यकलाप के इस क्षेत्र में सभी सुयोग्य ग़ैर-पार्टी मज़दूरों और किसानों की सेवाएं अर्जित करने के काम में अभी से कहीं ज़्यादा ध्यान और शक्ति लगायें।

कांग्रेस घोषणा करती है कि इस मामले में हम बहुत पीछे हैं ; कि इस मामले में पर्याप्त नियमितता और दृढ़ता से काम नहीं लिया जा रहा है, कि व्यवसायी तथा सरकारी अधिकारियों की संख्या में वृद्धि की सर्वथा तथा तत्काल ज़रूरत है ; कि विशेषकर प्रोत्साहन देने के ख़्याल से उद्योग तथा कृषि के पुनर्निर्माण में मिली प्रत्येक सफलता पर ज़्यादा नियमित रूप से श्रम का लाल पताका पदक प्रदान करना तथा नक़द बोनस देना चाहिए।

सोवियतों की कांग्रेस सभी आर्थिक संस्थाओं तथा वर्गीय चरित्र के सभी ग़ैर-सरकारी संगठनों का ध्यान इस आवश्यकता की ओर दिलाती है कि आर्थिक निर्माण में विशेषज्ञों की सेवाएं और भी अधिक प्रयत्नशील ढंग से हासिल की जायें, अर्थात वैज्ञानिकों तथा तकनीशियनों को तथा ऐसे आदमियों को नियुक्त किया जाये, जिन्होंने अपने व्यावहारिक काम की सहायता से व्यापार का, बड़े-बड़े उद्यम संगठित करने, व्यावसायिक लेन-देन की देखभाल करने, आदि का अनुभव और ज्ञान प्राप्त कर लिया है। विशेषज्ञों की भौतिक स्थिति को सुधारने तथा उनके निदेशन में मज़दूरों और किसानों की एक

बड़ी संख्या को प्रशिक्षित करने के काम पर रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र की केंद्रीय तथा स्थानीय सरकारी संस्थाओं को निरंतर ध्यान देना चाहिए।

७. सोवियतों की नौवीं कांग्रेस न्याय की जन-कमिसारियत से मांग करती है कि वह दो बातों में पहले से अधिक मुस्तैदी दिखाये:

एक यह कि जनतंत्र के जन-न्यायालयों को निजी व्यापारियों तथा व्यवसायियों के कार्यकलाप पर पूरी निगरानी रखनी चाहिए और उनके कार्यकलाप पर तनिक भी प्रतिबंध न लगाते हुए उनके द्वारा जनतंत्र के क़ानूनों के कड़े पालन से बच निकलने के तनिक से प्रयत्न पर कठोर दंड देना चाहिए। जन-न्यायालयों को चाहिए कि वे क़ानूनों के पालन को निश्चित बनाने के काम में मज़दूर तथा किसान जनता को स्वतंत्र, तेज़ तथा व्यावहारिक भाग लेने पर प्रोत्साहित करें।

दूसरे, जन-न्यायालयों को चाहिए कि वे नौकरशाही, लाल फ़ीताशाही तथा दुर्व्यवस्था के विरुद्ध ज़्यादा कड़ी कार्रवाई करें। ऐसे मामलों के लिए मुक़दमे चलाने का उद्देश्य केवल यही नहीं होना चाहिए कि उस बुराई की ज़िम्मेदारी तय की जाये, जिसका निवारण वर्तमान परिस्थिति में बहुत कठिन है, बल्कि यह भी है कि मज़दूर और किसान जनता का ध्यान इस अत्यंत महत्वपूर्ण मामले की ओर आकृष्ट किया जाये तथा एक व्यावहारिक उद्देश्य, यानी आर्थिक क्षेत्र में अधिक बड़ी सफलता प्राप्त की जाये।

नौवीं कांग्रेस का विचार है कि इस नये युग में शिक्षा की जन-कमिसारियत का काम जहां तक हो सके कम समय में किसानों और मज़दूरों में से सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करना है, और वह प्रस्ताव करती है कि स्कूलों में तथा स्कूलों से बाहर के शिक्षात्मक कार्य का पूरे जनतंत्र तथा विभिन्न क्षेत्रों तथा स्थानों के चालू आर्थिक कार्यभारों से ज़्यादा घनिष्ठ संबंध रखा जाना चाहिए। ख़ासकर सोवियतों की नौवीं कांग्रेस घोषणा करती है कि रूस के बिजलीकरण की योजना[47] को लोकप्रिय बनाने के संबंध में सोवियतों की आठवीं कांग्रेस के फ़ैसले को पूरा करने के लिए जो कुछ किया गया है, वह बिल्कुल पर्याप्त नहीं है, और वह मांग करती है कि प्रत्येक बिजलीघर में सभी सुयोग्य शक्तियों का संगठन किया जाये तथा मज़दूरों और किसानों को बिजली के महत्व तथा बिजलीकरण की योजना से परिचित

कराने के लिए नियमित रूप से वार्ता, भाषण तथा व्यावहारिक अध्ययन का आयोजन करे। उन उयेज़्दों[48] में, जहां अभी एक भी बिजलीघर नहीं है, कम से कम छोटे बिजलीघर जहां तक हो सके शीघ्रतापूर्वक बनाये जायें और इस क्षेत्र में उनका उपयोग प्रचार, शिक्षा के स्थानीय केंद्रों के रूप में तथा हर प्रकार की पहलक़दमी को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाये।

२५ दिसम्बर, १९२१
को लिखित

खंड ४४,
पृ० ३३६-३३८

नयी आर्थिक नीति के अंतर्गत ट्रेड-यूनियनों की भूमिका तथा कार्यभारों के बारे में प्रस्थापनाओं का मसविदा

(उद्धरण)

७ सर्वहारा राज्य के आर्थिक तथा राजकीय निकायों में ट्रेड-यूनियनों की भूमिका तथा कार्य

सर्वहारा पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण संपन्न कर रहे राज्य की वर्ग आधारशिला है। ऐसे देश में, जहां छोटे किसानों का जबरदस्त बोलबाला है, सर्वहारा वर्ग इस कार्य को केवल तभी सफलतापूर्वक पूरा कर सकता है, जब वह कृषक समुदाय की विशाल बहुसंख्या के साथ बहुत कुशलतापूर्वक, सावधानी के साथ तथा धीरे-धीरे सहबंध स्थापित करेगा। ट्रेड-यूनियनों को राजकीय सत्ता के साथ, जिसकी तमाम राजनीतिक तथा आर्थिक गतिविधियां मज़दूर वर्ग के वर्ग चेतन हरावल – कम्युनिस्ट पार्टी – द्वारा निदेशित होती हैं, घनिष्ठतापूर्वक तथा निरंतर सहयोग करना चाहिए। सामान्यत: कम्युनिज़्म का विद्यालय होने के नाते ट्रेड-यूनियनों को ख़ास तौर पर पूरे मज़दूर समुदाय को और अंतत: पूरी मेहनतकश जनता को समाजवादी उद्योग का (और धीरे-धीरे कृषि का भी) प्रबंध करने की कला में प्रशिक्षित करने का विद्यालय होना चाहिए।

इन सिद्धांतों को अपना आधार बनाते हुए ट्रेड-यूनियनों की सर्वहारा राज्य के आर्थिक तथा राजकीय निकायों के कार्यकलाप में शिरकत के निम्न रूप निर्धारित करने चाहिए :

(१) ट्रेड-यूनियनें अर्थव्यवस्था से संबंधित तमाम राजकीय तथा आर्थिक निकाय गठित करने में भाग लेती हैं, इसके लिए वे निकायों में अधिकारी पदों के लिए उम्मीदवार पेश करती हैं और नियुक्ति के प्रश्न पर अपनी राय, अपना परामर्श देती हैं ; इन निकायों के काम में भी ट्रेड-यूनियनें भाग लेती हैं, लेकिन

प्रत्यक्ष रूप से नहीं, वरन सर्वोच्च राजकीय निकायों, आर्थिक मंडलों, कारख़ाना-प्रशासनों, आदि में (जहां-जहां ऐसे सामूहिक प्रबंध का प्रावधान है) उन प्रबंधकों, उनके सहायकों, इत्यादि के ज़रिये, जिनके नाम वे पेश करती हैं और कम्युनिस्ट पार्टी व सोवियत सरकार अनुमोदित करती हैं।

(२) ट्रेड-यूनियनों का एक सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह है कि वे मज़दूरों तथा सामान्यतया मेहनतकश जन-समुदाय के बीच से लोगों को कारख़ाना-प्रबंधकों के पदों पर नामज़द करें तथा उन्हें प्रशिक्षित करें। इस समय हमारे पास ऐसे बीसियों कारख़ाना-प्रबंधक हैं, जिनका काम सर्वथा संतोषजनक है, और सैकड़ों ऐसे हैं, जिनका काम कमोबेश संतोषजनक है। परंतु हमें जल्द ही पहली क़िस्म के सैकड़ों तथा दूसरी क़िस्म के हज़ारों प्रबंधकों की आवश्यकता होगी। ट्रेड-यूनियनों को इस समय की तुलना में अधिक सावधानी तथा नियमितता के साथ इस क़िस्म के पदों को संभालने में सक्षम तमाम मज़दूरों तथा किसानों के नामों का विधिवत रजिस्टर रखना चाहिए तथा प्रबंध की कला सीखने में उनकी प्रगति की पूरी तरह, कुशलतापूर्वक और हर पहलू से जांच करनी चाहिए।

(३) सर्वहारा राज्य के तमाम नियोजन निकायों के कार्यकलाप में ट्रेड-यूनियनों की शिरकत भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। समस्त सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक गतिविधियों में तथा उत्पादन-प्रचार में भाग लेने के अलावा ट्रेड-यूनियनों को राजकीय अर्थव्यवस्था के निर्माण-कार्य की तमाम शाखाओं में मज़दूर वर्ग तथा सामान्यतया मेहनतकश जन-साधारण को अधिकाधिक बड़े पैमाने पर शामिल करना चाहिए; ट्रेड-यूनियनों को उन्हें आर्थिक जीवन के तमाम पहलुओं से, कच्चा माल हासिल करने से लेकर उत्पादों की बिक्री तक औद्योगिक कार्यों की सारी तफ़सीलों से अवगत कराना चाहिए; उन्हें समाजवादी अर्थव्यवस्था की राजकीय योजना तथा उसके कार्यान्वयन में मज़दूरों और किसानों के व्यावहारिक हित की अधिकाधिक ठोस समझ प्रदान करनी चाहिए।

(४) मजूरी और रसद की दरें, आदि निर्धारित करना समाजवाद के निर्माण में तथा उद्योग के प्रबंध में उनकी शिरकत

में ट्रेड-यूनियनों के मूल कार्यों में से एक है। ख़ास तौर पर, अनुशासन अदालतों को श्रम-अनुशासन में उसे संवर्द्धित करने तथा अधिक उत्पादनशीलता हासिल करने की विधियों में निरंतर सुधार करना चाहिए; परंतु उन्हें सामान्य रूप से जन-न्यायालयों के कार्यों में अथवा कारख़ानों के प्रबंध विभागों के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

समाजवादी अर्थव्यवस्था के निर्माण के कार्य में ट्रेड-यूनियनों के प्रमुख कार्यों की यह सूची निस्सन्देह ट्रेड-यूनियनों तथा सोवियत सरकार के उपयुक्त निकायों द्वारा तफ़सील से तैयार की जानी चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण वस्तु यह है कि ट्रेड-यूनियनें प्रशासनिक मामलों में प्रत्यक्ष, अयोग्यतापूर्ण, अक्षमतापूर्ण तथा अनुत्तरदायित्वपूर्ण हस्तक्षेप से, जिसने कोई कम हानि नहीं पहुंचायी है, अध्यवसायपूर्ण और व्यावहारिक गतिविधियों में पदार्पण करें, जो कई वर्षों की लम्बी अवधि तक चलती रहें तथा जिनका लक्ष्य मज़दूरों और सामान्यतया समस्त मेहनतकश जनों को पूरे देश की अर्थव्यवस्था का **प्रबंध करने** की कला में **व्यावहारिक प्रशिक्षण** देना हो।

८. जनसाधारण के साथ संपर्क – समस्त ट्रेड-यूनियन कार्यकलाप की आधारभूत शर्त

जनसाधारण के साथ, अर्थात मज़दूरों की विशाल बहुसंख्या (और अंततः पूरी मेहनतकश जनता) के साथ संपर्क समस्त ट्रेड-यूनियन कार्यकलाप की सफलता की सबसे महत्वपूर्ण तथा सबसे आधारभूत शर्त है। नीचे से लेकर ऊपर तक तमाम ट्रेड-यूनियन संगठनों और उनके कार्यतंत्र में ऐसे उत्तरदायी साथियों को – वे सब कम्युनिस्ट न हों – रखने की प्रणाली जारी की जानी चाहिए तथा कई वर्षों के व्यवहार द्वारा परखी जानी चाहिए, जो ठीक मज़दूरों के बीच रहें, उनके जीवन की एक-एक तफ़सील का अध्ययन करें तथा किसी भी प्रश्न पर तथा किसी भी समय जनसाधारण की भाव-दशा, वास्तविक आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, विचारों को ग़लती किये बिना जांचने में सक्षम हों। वे लेशमात्र मिथ्या आदर्शीकरण किये बिना यह विश्लेषण करने में समर्थ हों कि उनमें वर्ग चेतना की मात्रा कितनी है तथा वे

विभिन्न पूर्वाग्रहों और अतीत के अवशेषों से किस हद तक प्रभावित हैं ; उन्हें साथीपन की भावना द्वारा तथा जनसाधारण की आवश्यकताओं का ध्यान रखकर उनका असीम विश्वास प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए। संख्या की दृष्टि से छोटी कम्युनिस्ट पार्टी के सामने, जो मज़दूर वर्ग के हरावल के रूप में (फ़िलहाल अधिक उन्नत देशों के प्रत्यक्ष समर्थन के बिना) समाजवाद में संक्रमण करनेवाले एक विशाल देश का पथ-प्रदर्शन कर रही है, एक सबसे बड़ा तथा सबसे गंभीर ख़तरा जनसाधारण से अलगाव का है, इस बात का ख़तरा है कि हरावल दौड़ते हुए बहुत आगे पहुंच सकता है, और "पांत को व्यवस्थित करने में" विफल हो सकता है, श्रम की पूरी सेना के साथ, अर्थात मज़दूरों और किसानों की विशाल बहुसंख्या के साथ दृढ़ सम्पर्क क़ायम रखने में विफल हो सकता है। जिस तरह सबसे बढ़िया कारख़ाना, जिसके पास सबसे बढ़िया मोटरें तथा प्रथम कोटि की मशीनें हों, मोटर से मशीनों तक पहुंचनेवाली ट्रांसमिशन बेल्टों के क्षतिग्रस्त हो जाने की दशा में बेकार खड़ा रहेगा, उसी तरह यदि ट्रेड-यूनियनें – कम्युनिस्ट पार्टी से जनता तक पहुंचनेवाली ट्रांसमिशन बेल्टें – ठीक तरह न बिठायी गयी हों या वे ख़राब काम करें, तो समाजवाद के निर्माण का हमारा कार्य अवश्यम्भावी रूप से तबाही के मुंह में पहुंच जायेगा। इस तथ्य को समझाना, उस पर ज़ोर देना तथा उसकी पुष्टि करना पर्याप्त नहीं है ; उसे ट्रेड-यूनियनों के पूरे ढांचे और उनकी दैनंदिन गतिविधियों द्वारा संगठनात्मक सहारा दिया जाना चाहिए।

९. सर्वहारा के अधिनायकत्व के अंतर्गत ट्रेड-यूनियनों के दर्जे में विरोध

उपरोक्त तमाम बातों से स्पष्ट है कि ट्रेड-यूनियनों के विविध कार्यों में नाना विरोध हैं। एक ओर, उनके कार्य करने की प्रमुख विधि समझाना-बुझाना तथा शिक्षा-दीक्षा है ; दूसरी ओर, राजकीय सत्ता में भागीदार होने के नाते वे ज़ोर-जबरन में शिरकत से इनकार नहीं कर सकतीं। एक ओर, उनका मुख्य कार्य मेहनतकश जनसाधारण के हितों की सबसे प्रत्यक्ष तथा तात्कालिक अर्थ में रक्षा करना है ; दूसरी ओर, राजकीय सत्ता में भागीदार होने तथा समग्र रूप में अर्थ-

व्यवस्था के निर्माता के रूप में वे दबाव का आश्रय लेने से इनक़ार नहीं कर सकतीं। एक ओर, उन्हें सैनिक ढंग से काम करना होगा, इसलिए कि सर्वहारा का अधिनायकत्व सबसे प्रचंड, सबसे अनमनीय, सबसे विषम वर्ग युद्ध है; दूसरी ओर, कार्य की विशिष्ट रूप से सैनिक विधियां ट्रेड-यूनियनों पर क़तई लागू नहीं की जा सकतीं। एक ओर, उन्हें अपने को जनसाधारण के स्तर के अनुकूल ढालने में सक्षम होना चाहिए; दूसरी ओर, वे जनसाधारण के पूर्वाग्रहों तथा पिछड़ेपन की कभी पैरवी न करें, अपितु जनसाधारण को निरंतर उच्च से उच्चतर स्तर पर पहुंचायें, आदि, आदि।

ये विरोध सांयोगिक नहीं हैं। और वे दशकों तक क़ायम रहेंगे। इसलिए कि पहले, ये विरोध किसी भी विद्यालय की विशिष्टता हैं। और ट्रेड-यूनियनें कम्युनिज़्म का विद्यालय हैं। यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि मेहनतकश जनता की बहुसंख्या कई दशकों के गुज़र चुकने से पहले ही विकास की उच्चतर मंज़िल पर पहुंच जायेगी तथा वयस्कों के "विद्यालय" के सारे चिह्नों और अवशेषों का त्याग कर देगी। दूसरे, जब तक पूंजीवाद और छोटे उत्पादन के अवशेष क़ायम रहेंगे, उनके तथा समाजवाद के नन्हे अंकुरों के बीच विरोध पूरी सामाजिक प्रणाली के दौरान अवश्यम्भावी रहेंगे।

इससे दो व्यावहारिक निष्कर्ष निकाले जाने चाहिए। पहले, ट्रेड-यूनियन गतिविधियों के सफल संचालन के हेतु उनके कार्यों को ठीक तरह समझना ही पर्याप्त नहीं है; उन्हें ठीक तरह संगठित करना ही पर्याप्त नहीं है; इनके अतिरिक्त विशेष व्यवहार-कुशलता की, जनसाधारण को कम से कम मनमुटाव के साथ उच्च सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मंज़िल में पहुंचाने के हेतु इन जनसाधारण के पास एक-एक निजी मामले में ख़ास तरीक़े से पहुंचने की योग्यता की आवश्यकता होती है।

दूसरे, उपरोक्त विरोध झगड़ों, मतभेदों तथा मनमुटावों, आदि को अनिवार्यतः जन्म देंगे। इन्हें तुरंत निपटाने के लिए एक उच्च निकाय की ज़रूरत है, जिसके पास पर्याप्त सत्ता हो। यह उच्च निकाय है कम्युनिस्ट पार्टी तथा तमाम देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों का अंतर्राष्ट्रीय संघ, अर्थात कम्युनिस्ट इंटरनेशनल।

१०. ट्रेड-यूनियनें तथा विशेषज्ञ

इस प्रश्न के मुख्य सिद्धांत रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में निरूपित हैं; परंतु ये कोरे काग़ज़ी सिद्धांत ही बने रहेंगे, अगर उन तथ्यों की ओर निरंतर ध्यान नहीं दिया जाता, जो यह लक्षित करते हैं कि ये सिद्धांत किस हद तक अमल में लाये जा रहे हैं। इस तरह के हाल के तथ्य ये हैं: पहले, केवल उराल में ही नहीं, वरन दोनबास में भी समाजीकृत खानों में मज़दूरों द्वारा इंजीनियरों की हत्याओं की घटनाएं, दूसरे मास्को वाटरवर्क्स के प्रमुख इंजीनियर व० व० ओल्देनबोर्गर* द्वारा आत्महत्या।

कम्युनिस्ट पार्टी तथा समग्र रूप में सोवियत सरकार इस तरह की वारदातों के लिए स्वभावतया ट्रेड-यूनियनों से अधिक दोषी हैं। परंतु इस समय मसला राजनीतिक दोष की मात्रा सिद्ध करने का नहीं, वरन कतिपय राजनीतिक निष्कर्ष निकालने का है। यदि हमारे सभी नेतृत्वकारी निकाय, अर्थात कम्युनिस्ट पार्टी, सोवियत सरकार और ट्रेड-यूनियनें प्रत्येक विशेषज्ञ की, जो अपना कार्य निष्ठापूर्वक करता हो, उसे जानता तथा उससे प्यार करता हो – भले ही कम्युनिज़्म के विचार उसके लिए पराये हों – अपनी आंखों की पुतली की तरह रक्षा नहीं करेंगे, तो समाजवाद के निर्माण में किसी गंभीर प्रगति की अपेक्षा करना व्यर्थ होगा। हम यह शायद जल्द हासिल न कर पायें, परंतु हमें हर सूरत में ऐसी स्थिति हासिल करनी होगी, जिसमें विशेषज्ञ – एक पृथक सामाजिक संस्तर के रूप में, जो तब तक क़ायम रहेगा, जब तक हम कम्युनिस्ट समाज के विकास की सबसे ऊंची मंज़िल पर नहीं पहुंच जाते – भौतिक तथा क़ानूनी दृष्टि से, मज़दूरों तथा किसानों के साथ साहचर्यपूर्ण सहयोग के मामले में पूंजीवाद की तुलना में समाजवाद के अंतर्गत जीवन की बेहतर अवस्थाओं का उपभोग करें। उनका जीवन आत्मिक दृष्टि से भी बेहतर होना चाहिए, अर्थात उन्हें अपने कार्य से संतोष मिलना चाहिए और यह महसूस होना चाहिए कि उनका कार्य सामाजिक दृष्टि से उपयोगी है तथा पूंजीपति वर्ग के घिनौने हितों से मुक्त है। कोई भी किसी सरकारी विभाग को संतोषजनक

---

*इसके बारे में सूचना 'प्राव्दा'[49] में प्रकाशित है (३.१.१९२२)।

ढंग से सुसंगठित नहीं मानेगा, यदि वह विशेषज्ञों की तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति करने, उनमें से सर्वोत्तम को पुरस्कृत करने, उनके हितों की रक्षा तथा बचाव करने, आदि के लिए विधिवत पग नहीं उठाता और इस काम में व्यावहारिक फल हासिल नहीं करता। ट्रेड-यूनियनों को इस प्रकार के तमाम कार्यकलाप संबद्ध विभाग के हितों के दृष्टिकोण से नहीं, वरन मेहनतकशों और समग्र अर्थव्यवस्था के हितों के दृष्टिकोण से संचालित करने चाहिए (अथवा तमाम संबद्ध सरकारी विभागों के कार्यकलाप में विधिवत सहयोग करना चाहिए)। विशेषज्ञों के मामले में ट्रेड-यूनियनों का यह परिश्रमसाध्य कर्त्तव्य है कि वे व्यापक मेहनतकश जन-समुदाय पर नित्यप्रति प्रभाव डालें ताकि उसके तथा विशेषज्ञों के बीच उपयुक्त संबंध स्थापित हो सकें। केवल ऐसे ही कार्यकलाप वस्तुतः महत्वपूर्ण फल दे सकते हैं।

११. ट्रेड-यूनियनें तथा मज़दूर वर्ग पर टुटपुंजिया प्रभाव

ट्रेड-यूनियनें वस्तुतः तभी कारगर होती हैं, जब वे ग़ैर-पार्टी मज़दूरों के बहुत व्यापक स्तरों को ऐक्यबद्ध करती हैं। यह चीज़ निश्चित रूप से – ख़ास तौर पर ऐसे देश में, जहां कृषक समुदाय का बहुत ज़्यादा बोलबाला है – विशिष्टतया ट्रेड-यूनियनों में उन राजनीतिक प्रभावों को अपेक्षाकृत स्थिरता प्रदान करेगी, जो पूंजीवाद के अवशेषों तथा छोटे उत्पादन के ऊपर अधिसंरचना का काम करते हैं। ये टुटपुंजिया प्रभाव हैं, अर्थात एक ओर, समाजवादी-क्रांतिकारी तथा मेंशेविक[50] (दूसरे तथा ढाईवें इंटरनेशनल[51] की पार्टियों के रूसी रूप) तथा दूसरी ओर, अराजकतावादी। केवल इन प्रवृत्तियों के बीच अभी ऐसे लोग काफ़ी तादाद में बाक़ी हैं, जो स्वार्थपूर्ण वर्ग उद्देश्यों की दृष्टि से नहीं, वरन विचारधारा की दृष्टि से पूंजीवाद की पैरवी करते हैं और सामान्य रूप में "जनवाद", "समानता", और "मुक्ति" के, जिनकी वे वकालत करते हैं, ग़ैर-वर्गीय स्वरूप पर विश्वास करते जाते हैं।

हमें इस सामाजिक-आर्थिक कारण को – अलग-अलग समूहों की भूमिका को नहीं, अलग-अलग व्यक्तियों की तो बात ही क्या – अपने

देश में ट्रेड-यूनियनों के बीच ऐसे टुटपुंजिया विचारों के अवशेषों (और कभी-कभी पुनर्जन्म) के लिए उत्तरदायी मानना चाहिए। इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक गतिविधियां संचालित करनेवाले सोवियत निकायों और ट्रेड-यूनियनों के तमाम कम्युनिस्ट सदस्यों को ट्रेड-यूनियनों में टुटपुंजिया प्रभावों, प्रवृत्तियों तथा भटकावों के विरुद्ध विचारधारात्मक संघर्ष की ओर कहीं अधिक ध्यान देना चाहिए, ख़ास तौर पर इसलिए कि नयी आर्थिक नीति के फलस्वरूप पूंजीवाद का कुछ दृढ़ होना अवश्यम्भावी है। मज़दूर वर्ग पर टुटपुंजिया प्रभावों के विरुद्ध संघर्ष को तेज़ कर इसका मुक़ाबला करने की तात्कालिक आवश्यकता है।

३० दिसंबर, १९२१ और
४ जनवरी, १९२२ के बीच लिखित

खंड ४४,
पृ० ३४६-३५२

सोवियत जनतंत्र की अंतर्राष्ट्रीय और आंतरिक स्थिति

धातुकर्मियों की अखिल रूसी कांग्रेस में कम्युनिस्ट दल के सम्मुख भाषण ६ मार्च, १९२२

(उद्धरण)

... कल 'इज़्वेस्तिया'[52] में मयाकोव्स्की की राजनीतिक विषय पर एक कविता पढ़ने को मिली। मैं उनकी काव्य-प्रतिभा के प्रशंसकों में नहीं हूं, हालांकि यह भी मानता हूं कि मैं काव्य मर्मज्ञ नहीं हूं। लेकिन राजनीतिक और प्रशासनिक दृष्टि से इतनी मज़ेदार कोई चीज़ अरसे से नहीं पढ़ी। अपनी कविता में मयाकोव्स्की ने सभाओं-बैठकों पर ख़ूब करारा व्यंग्य किया है, कम्युनिस्टों की हंसी उड़ायी है कि वे सभा पर सभा ही करते रहते हैं। काव्य पक्ष के बारे में तो मैं नहीं जानता, जहां तक राजनीति का सवाल है, मैं यक़ीन दिला सकता हूं कि सब कुछ सही कहा गया है। हम सचमुच उन लोगों की स्थिति में हैं (और यह भी मानना होगा कि यह स्थिति बड़ी बेतुकी है), जो लगातार बैठकें करते रहते हैं, आयोग गठित करते रहते हैं, योजनाएं बनाते रहते हैं और इस काम का कोई अंत नज़र नहीं आता। रूसी जीवन का एक लाक्षणिक चरित्र हुआ है – ओबलोमोव[53]। वह पलंग पर लेटे-लेटे योजनाएं बनाया करता था। तब से बहुत समय बीत गया है। रूस ने तीन क्रांतियां की हैं, लेकिन ओबलोमोव यहां अभी भी बचे हुए हैं, क्योंकि ओबलोमोव केवल ज़मींदार नहीं था, बल्कि किसान भी, और केवल किसान नहीं, बुद्धिजीवी भी, और केवल बुद्धिजीवी नहीं, बल्कि मज़दूर और कम्युनिस्ट भी। हमारी बैठकें, हमारे आयोगों के काम को देखना भर ही यह कहने के लिए काफ़ी है कि **पुराना ओबलोमोव अभी भी ज़िंदा है, और उसे ख़ूब रगड़ना, मलना, धोना, नहलाना चाहिए, ताकि वह आदमी बन सके।** इस

मामले में हमें अपनी स्थिति के बारे में कोई भ्रांति नहीं होनी चाहिए। हमने कभी उनमें से किसी की भी नक़ल नहीं की है, जो समाजवादी-क्रांतिकारियों की तरह "क्रांति" शब्द मोटे अक्षरों में लिखते हैं। लेकिन हम मार्क्स के शब्द दोहरा सकते हैं कि क्रांति के दौरान अन्य किसी भी समय की अपेक्षा कम बेवकूफ़ियां नहीं होतीं, बल्कि कभी-कभी तो ज़्यादा ही होती हैं[54]। हमें, क्रांतिकारियों को इन बेवकूफ़ियों को ठंडे दिमाग़ से और निडरता से देखना सीखना चाहिए।

इस क्रांति में हमने इतना कुछ अपरिवर्तनीय किया है कि हम पूरी तरह जीत गये हैं; सारी दुनिया यह जानती है सो हमें लज्जित होने या घबराने की बिल्कुल कोई ज़रूरत नहीं है। अब स्थिति ऐसी है कि टोह लेने के बाद अब हम उस सारे काम की जांच कर रहे हैं, जो हमने किया है – यह जांच बहुत मानी रखती है, इसी को प्रस्थान बिंदु बनाकर हमें आगे बढ़ना चाहिए। और अब चूंकि हमें पूंजीपतियों के ख़िलाफ़ संघर्ष में जीतना है, सो हमें अपने नये पथ पर दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ना चाहिए। **हमें अपना सारा संगठन इस तरह बनाना चाहिए कि हमारे वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों की बागडोर उन लोगों के हाथों में न चली जाये, जिन्हें इस क्षेत्र में काम का कोई अनुभव नहीं है।** अकसर हमारे यहां किसी संस्था का अध्यक्ष कम्युनिस्ट को बना दिया जाता है – ऐसे व्यक्ति को, जिसकी ईमानदारी में किसी को कोई शक नहीं हो सकता, जो कम्युनिज़्म के लिए संघर्ष में परखा हुआ है, जो जेलें भुगत चुका है और इसीलिए उसे एक राजकीय ट्रस्ट का अध्यक्ष बना दिया गया है। लेकिन वह ऐसा व्यक्ति है, जिसे व्यापार करना नहीं आता। सो इस व्यक्ति में एक कम्युनिस्ट के सभी निर्विवाद गुण हैं, लेकिन व्यापारी उसे चकमा दे जाता है और ठीक ही करता है, क्योंकि एक सुयोग्य, श्रेष्ठ कम्युनिस्ट को, जिसकी निष्ठा पर कोई पागल ही संदेह करेगा, व्यर्थ ही ऐसे स्थान पर बिठाया गया है, जहां चतुर, ईमानदार कारिंदा होना चाहिए, जो सबसे अधिक निष्ठावान कम्युनिस्ट से भी अधिक अच्छी तरह अपना काम कर लेगा। यहीं हमारा ओबलोमोव होना प्रकट होता है।

हमने सभी गुणों से संपन्न कम्युनिस्टों को उन व्यावहारिक कामों में लगाया है, जिनके लिए वे क़तई अनुपयुक्त हैं। हमारे यहां कितने कम्युनिस्ट सरकारी दफ़्तरों में बैठे हैं? हमारे पास विराट सामग्री

है, बड़े-बड़े ग्रंथ हैं, जिन्हें देखकर बड़े सलीक़े से काम करनेवाला कोई जर्मन विद्वान भी ख़ुशी से उछल पड़ेगा, हमारे पास काग़ज़ों, दस्तावेज़ों के पहाड़ हैं, जिन्हें देखने समझने में 'इस्तपार्त'[55] को पचास गुना पचास साल लगेंगे लेकिन राजकीय ट्रस्ट में व्यावहारिक कार्य आप कोई नहीं पायेंगे और यह नहीं जान पायेंगे कि कौन किस काम के लिए ज़िम्मेदार है। आदेश तो ज़रूरत से ज़्यादा हैं और वे ठीक वैसे ही दबादब जारी होते रहे हैं, जैसे मयाकोव्स्की ने अपनी कविता में दिखाया है, लेकिन इन निर्देशों के व्यावहारिक पालन की कोई जांच नहीं होती। कम्युनिस्ट अधिकारियों के आदेशों का पालन होता है कि नहीं? क्या वे अपने आदेशों का पालन करवा सकते हैं? नहीं, वे नहीं करवा सकते। यही कारण है कि हम अपनी आंतरिक नीति का मर्म भी बदल रहे हैं। हमारी ये बैठकें और आयोग क्या हैं? अकसर ये खेल मात्र हैं। जब से हमने पार्टी की सफ़ाई शुरू की है और अपने आप से कहा: "पार्टी से आ चिपके पिस्सुओं को, चोरों को निकाल बाहर करो," तबसे हालात बदले हैं। लगभग एक लाख को हमने निकाल बाहर किया है और यह बहुत अच्छी बात है, लेकिन यह केवल शुरूआत है। पार्टी की कांग्रेस में हम इस सवाल पर विस्तार से विचार करेंगे। और तब मैं सोचता हूं वे दसियों हज़ार लोग, जो अब आयोग ही बिठाते रहते हैं और कोई व्यावहारिक कार्य नहीं करते और न उन्हें करना आता है, उनका भी यही हश्र होगा। जब हम इस तरह पार्टी को साफ़ कर लेंगे – तब हमारी पार्टी वास्तविक कार्य करेगी और उसे भी वैसे ही समझेगी, जैसे वह युद्ध के कार्य को समझती थी। कहना न होगा कि यह काम कुछ महीनों का नहीं है और न ही एक साल का। इस सवाल में हमें पत्थर की तरह दृढ़ होना चाहिए। हम यह कहते हुए नहीं डरते कि हमारे काम का स्वरूप बदल गया है। हमारा सबसे बुरा आंतरिक शत्रु है – नौकरशाह, ऐसा कम्युनिस्ट जो किसी उत्तरदायित्वपूर्ण (और फिर कम उत्तरदायित्वपूर्ण) सोवियत पद पर बैठा है और जिसका सभी बहुत ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के नाते आदर करते हैं। जैसे कि हमारी रूसी कहावत है: 'वह थोड़ा बेसुरा ज़रूर है, पर, जनाब, पीता एक बूंद नहीं'। वह लाल फ़ीता-शाही से जूझना नहीं सीख पाया है, उसे इससे जूझना नहीं आता, वह तो इसे छिपाता है। **इस शत्रु से हमें छुटकारा पाना है और सभी**

सचेतन मज़दूरों व किसानों की मदद से हम इस शत्रु तक अवश्य पहुंच जायेंगे। इस शत्रु के ख़िलाफ़, इस सारे निकम्मेपन के ख़िलाफ़ और इस सारे ओबलोमोवपन के ख़िलाफ़ सारा ग़ैर-पार्टी मज़दूर किसान जन-समूह, इसका एक-एक आदमी कम्युनिस्ट पार्टी के हरावल दस्ते के पीछे चलेगा। इस मामले में कोई हिचकिचाहट नहीं हो सकती।

भाषण के अंत में मैं संक्षेप में कुछ बातें दोहराऊंगा। जेनोआ[56] के खेल से, इसके गिर्द चर्चा की धमाचौकड़ी से हम ज़रा भी विचलित नहीं होनेवाले हैं। अब हमें नहीं पकड़ पायेंगे। **हम व्यापारियों के पास जा रहे हैं और अपनी रियायतों की नीति जारी रखते हुए सौदा करना जारी रखेंगे; लेकिन इन रियायतों की सीमाएं अब निर्धारित हो चुकी हैं।** अपने समझौतों में हमने अब तक व्यापारियों को जो कुछ दिया है, वह हमारे विधान में पीछे हटाया क़दम ही है, लेकिन इससे पीछे हम नहीं जायेंगे।

इस सिलसिले में आंतरिक और विशेषतः आर्थिक नीति में हमारे मुख्य कार्यभार बदल रहे हैं। हमें नयी आज्ञप्तियां, नयी संस्थाएं, संघर्ष के नये तरीक़े नहीं चाहिए। **हमें अपने अधिकारियों की योग्यता की, काम की वास्तविक पूर्ति की जांच की ज़रूरत है।** अगली सफ़ाई उन कम्युनिस्टों की होगी, जो यह **समझते हैं** कि वे प्रशासक हैं। वे लोग, जो ये सारे आयोग बिठाते हैं, बैठकें बुलाते हैं और बातें करते हैं, लेकिन सीधा-सादा काम नहीं करते, वे प्रचार और आंदोलन के तथा दूसरे किसी उपयोगी काम में लगें, तो बेहतर है। लोग बड़ी नयी-नयी, विशेषताभरी और पेचीदा बातें सोचते हैं – इस बिना पर कि नयी आर्थिक योजना के लिए कुछ नया चाहिए। लेकिन उन्हें जो काम सौंपा गया है, वह वहीं का वहीं रहता है। इस बात की फ़िक्र नहीं करते कि उनके हाथ में जो कोपेक दिया गया है, उसकी बचत करें, एक कोपेक से दो बनाने की कोशिश नहीं करते, मगर अरबों ही नहीं, ख़रबों तक सोवियत रूबलों की योजनाएं बनाते फिरते हैं। बस इसी बुराई के ख़िलाफ़ हम संघर्ष चलायेंगे। **लोगों की, वास्तव में किये गये काम की जांच करना** – आज यही, बिल्कुल यही और केवल यही हमारे सारे काम का, भारी नीति का मर्म है। यह कुछ महीनों का काम नहीं है, न ही एक साल का, यह तो बरसों का काम है।

हमें पार्टी की ओर से अधिकृत रूप से ऐलान करना चाहिए कि अब हमारे काम का मर्म क्या है और उसके अनुसार अपनी क़तारें बदलनी चाहिए। तब हम इस नये क्षेत्र में भी वैसे ही विजेता होंगे, जैसे काम के उन सभी क्षेत्रों में, जिन्हें किसान जन-समूहों के समर्थन के साथ बोल्शेविक सर्वहारा सत्ता ने हाथों में लिया, विजयी होते आये हैं।

खंड ४५,
पृ० १३-१६

रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की नौवीं कांग्रेस में केंद्रीय समिति की राजनीतिक रिपोर्ट २७ मार्च, १९२२

(उद्धरण)

...अब स्थिति यह है कि हमें अपने काम की गंभीर जांच करनी चाहिए, वह नहीं, जो कम्युनिस्टों द्वारा ही स्थापित निरीक्षण संस्थाएं करती हैं, भले ही ये संस्थाएं शानदार हों और भले ही ये सोवियतों के भी और पार्टी के भी कार्यालयों में भी हों और भले ही ये प्रायः आदर्श हों; ऐसी जांच किसान अर्थव्यवस्था की वास्तविक अपेक्षाओं की दृष्टि से तो मखौल ही है, लेकिन हमारे निर्माण की दृष्टि से क़तई मखौल नहीं है। हम अब ये निरीक्षण संस्थाएं बना रहे हैं, लेकिन मैं इस जांच की बात नहीं कर रहा हूं, बल्कि उसकी, जो समस्त अर्थव्यवस्था की दृष्टि से जांच है।

पूंजीपति को चीज़ें सप्लाई करना आता था। वह यह काम अच्छी तरह नहीं करता था, वह बेतहाशा बढ़ा-चढ़ाकर दाम लेता था, वह हमारी बेइज़्ज़ती करता और हमें लूटता था। आम मज़दूर और किसान, जो कम्युनिज़्म के बारे में तर्क-वितर्क नहीं करते हैं, क्योंकि नहीं जानते, कि यह क्या चीज़ है, वे यह बात अच्छी तरह जानते हैं।

"लेकिन पूंजीपतियों को आख़िर चीज़ें सप्लाई करना तो आता था, आपको आता है? आपको तो नहीं आता।" ये थीं वे आवाज़ें, जो पिछले साल वसंत में उठ रही थीं, वे सदा साफ़-साफ़ सुनायी नहीं देती थीं, मगर पिछले वसंत के सारे संकट की तह में थीं। "आप बहुत अच्छे लोग हैं, मगर जो काम, जो आर्थिक काम आपने हाथ में लिया है वह आपको करना नहीं आता"। पिछले साल किसान वर्ग ने और उसके ज़रिए मज़दूरों के कुछ संस्तरों ने कम्युनिस्ट पार्टी की यही

एकदम सीधी-सादी और एकदम मारू आलोचना की थी। यही कारण है कि नयी आर्थिक नीति के प्रश्न में यह पुराना मुद्दा इतना महत्वपूर्ण हो गया है।

हमें सच्ची जांच की ज़रूरत है। हमारे बग़ल में ही पूंजीपति काम कर रहा है, वह लुटेरों की तरह काम कर रहा है, मुनाफ़ा कमा रहा है, लेकिन उसे अपना काम आता है। लेकिन आप – आप नया ढंग आज़मा रहे हैं: मुनाफ़ा आप पाते नहीं, सिद्धांत आपके कम्युनिस्ट हैं, आदर्श अच्छे हैं – इतना सुंदर बखान है उनका कि आप संत लगते हैं, आपको तो सशरीर स्वर्गलोक जाना चाहिए – मगर काम करना आता है? जांच होनी चाहिए, असल जांच, ऐसी नहीं कि केंद्रीय निरीक्षण आयोग ने मामले की पड़ताल कर दी और भर्त्सना कर दी तथा अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी ने कोई दंड तय कर दिया – नहीं, हमें सच्ची जांच चाहिए, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की दृष्टि से जांच।

कम्युनिस्टों को बहुत बार मोहलत मिली है, साख में इतना कुछ दिया गया है, जितना किसी सरकार को कभी नहीं दिया गया। बेशक कम्युनिस्टों ने पूंजीपतियों और ज़मींदारों से छुटकारा पाने में मदद की है और किसान इस बात की क़द्र करता है, सो मोहलत देता रहा है, लेकिन एक हद तक। उसके बाद जांच ज़रूरी है: क्या आप दूसरों की तरह देश की अर्थव्यवस्था चला सकते हैं? पुराना पूंजीपति चला सकता था, पर आप नहीं चला सकते हैं।

यह है पहला सबक़, केंद्रीय समिति की राजनीतिक रिपोर्ट का पहला प्रमुख भाग। हमें अर्थव्यवस्था चलानी नहीं आती। एक साल में यह सिद्ध हो गया है। मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं कुछ गोस-त्रस्तों (यदि हम उस अनुपम रूसी भाषा का प्रयोग करें, जिसकी तुर्गेनेव ने इतनी प्रशंसा की है)* का उदाहरण देकर यह दिखा सकता कि हम अर्थव्यवस्था कैसे चलाते हैं।

खेदवश कई कारणों से, सर्वप्रथम बीमारी के कारण रिपोर्ट का

---

*यहां लेनिन ने विभिन्न संस्थाओं के नामों को संक्षिप्त रूप देने के तब चले फ़ैशन पर कटाक्ष किया है। गोस-त्रेस्त का अर्थ है राजकीय ट्रस्ट। **– सं०**

यह भाग मैं विस्तार से तैयार नहीं कर पाया और देश में जो कुछ हो रहा है उसके प्रेक्षणों पर आधारित अपना विश्वास ही यहां व्यक्त करने तक सीमित रहूंगा। इस साल में हमने बिल्कुल साफ़-साफ़ प्रमाणित कर दिया है कि हमें अर्थव्यवस्था चलानी नहीं आती। यही बुनियादी सबक़ है। या तो हम अगले एक साल में इसका उलटा सिद्ध कर दिखायेंगे, या फिर सोवियत सत्ता नहीं बनी रह सकती। और सबसे बड़ा ख़तरा यह है कि सभी लोग यह बात नहीं समझते। यदि सभी कम्युनिस्ट, सभी उत्तरदायी अधिकारी स्पष्टतः समझ लें – हमें यह काम नहीं आता, चलो इसे शुरू से सीखते हैं, तो हम जीत जायेंगे – मेरे ख़्याल में यही मूलभूत निष्कर्ष हमें निकालना चाहिए। लेकिन बहुत-से लोग यह नहीं समझते और उन्हें विश्वास है कि यदि कोई ऐसे सोचता है तो अनपढ़ लोग ही, उन्होंने कम्युनिज़्म का अध्ययन नहीं किया, शायद कभी करें और समझ लें। जी नहीं, माफ़ कीजिये, बात यह नहीं है कि किसान ने या ग़ैर-पार्टी मज़दूर ने कम्युनिज़्म का अध्ययन नहीं किया, बात तो यह है कि वे दिन गुज़र गये, जब कार्यक्रम बनाने और इस महान कार्यक्रम की पूर्ति के लिए जनता का आह्वान करने की ज़रूरत थी। वे दिन गुज़र गये हैं, अब यह सिद्ध करने का समय आ गया है कि वर्तमान कठिन स्थिति में आम मज़दूर और किसान की व्यावहारिक आर्थिक मदद कर सकते हैं, ताकि वे देखें कि आपने मुक़ाबला जीत लिया है।

हम जो मिश्रित कंपनियां बना रहे हैं, जिनमें निजी पूंजीपति – रूसी और विदेशी – भी भाग ले रहे हैं और कम्युनिस्ट भी, वे कंपनियां उन रूपों में से एक हैं, जिनमें हम प्रतियोगिता ठीक से संगठित कर सकते, यह दिखा और सीख सकते हैं कि हमें किसान अर्थव्यवस्था के साथ संबंध जोड़ना पूंजीपतियों से कम अच्छी तरह नहीं आता, कि हम किसानों की ज़रूरतें पूरी कर सकते हैं, कि हम किसान को उसके सारे पिछड़ेपन के बावजूद भी, जैसा वह आज है वैसे ही किसान को प्रगति करने में मदद कर सकते हैं, क्योंकि अल्प अवधि में उसे बदलना तो असंभव है।

यह है वह प्रतियोगिता, जो आज हमारे लिए सबसे अधिक तात्कालिक कार्यभार है। यह हमारी नयी आर्थिक नीति का केंद्रबिंदु है, मेरे दृढ़ विश्वास के अनुसार पार्टी की नीति का सार है। हमें असंख्य

शुद्धतः राजनीतिक प्रश्नों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। आप उनसे वाक़िफ़ हैं – जेनोआ भी और हस्तक्षेप का ख़तरा भी। कठिनाइयां बहुत बड़ी हैं, लेकिन इस कठिनाई के सामने वे कुछ भी नहीं। राजनीति के क्षेत्र में हम जानते हैं कि काम कैसे होता है, वहां हमने बहुत कुछ सीख लिया है, बुर्जुआ कूटनीति को परख लिया है। यह वह चीज़ है, जो मेंशेविक हमें १५ साल से सिखाते आये हैं और हमने कुछ काम की बात सीखी ही है। यह नयी चीज़ नहीं है।

लेकिन अब हमें अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में कुछ करना है: हमें मामूली कारिंदे से, मामूली पूंजीपति से, उस दुकानदार से मुक़ाबला जीतना है, जो किसान के पास जायेगा और कम्युनिज़्म पर बहस नहीं करेगा। जी हां, ज़रा कल्पना कीजिये वह किसान से कम्युनिज़्म पर बहस नहीं करेगा। वह तो बस ऐसे तर्क देगा – कि अगर तुम्हें कोई माल हासिल करना है, ठीक से कुछ बेचना है या कुछ बनाना है, तो मैं तो महंगा बनाऊंगा, मगर कम्युनिस्ट हो सकता है और भी महंगा बनायें, शायद दसगुना महंगा बनायें। बस ऐसा ही प्रचार अब सारे मामले का मर्म है, अर्थव्यवस्था की जड़ इसी में है।

मैं एक बार फिर कहता हूं, जनता से मोहलत और साख हमें अपनी सही नीति की बदौलत मिली है। नयी आर्थिक नीति की शब्दावली में कहें, तो यह हुंडियां हैं, मगर इन पर मीयाद नहीं लिखी है, और कब इन्हें भुगतान के लिए पेश किया जायेगा, इसका पता हुंडी के मज़मून से नहीं लग सकता। सारा ख़तरा इसी बात में है, यही वह ख़ासियत है, जो इन राजनीतिक हुंडियों को आम व्यापारी हुंडियों से अलग करती है। इसी बात पर हमें अपना सारा ध्यान केंद्रित करना चाहिए, यह सोचकर निश्चिंत नहीं हो जाना चाहिए कि राजकीय ट्रस्टों और मिश्रित कंपनियों में सर्वत्र उत्तरदायित्वपूर्ण और सर्वश्रेष्ठ कम्युनिस्ट हैं। इससे कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि उन्हें अर्थव्यवस्था चलानी नहीं आती और इस अर्थ में वे पूंजीपति के मामूली कारिंदे से गये-गुज़रे हैं – जिसने बड़े कारख़ाने या बड़ी फ़र्म में काम सीखा है। यह बात हम नहीं समझते हैं, इसमें हमारा कम्युनिस्ट अहंकार – महान रूसी भाषा में कहें, तो कोमच्वान्स्त्वो* शेष है। सवाल यह है कि

* शब्दशः "कम्युअहंकार"। – सं०

उत्तरदायी कम्युनिस्ट को, सर्वश्रेष्ठ को भी, जो निस्संदेह ईमानदार है और निष्ठावान है, जिसने घोर श्रम-कारावास की सज़ाएं काटी है और मौत से नहीं डरा है, व्यापार करना नहीं आता, क्योंकि वह व्यापारी नहीं है, उसने यह काम नहीं सीखा है और सीखना नहीं चाहता और समझता भी नहीं कि क ख ग से सीखना चाहिए। वह कम्युनिस्ट, क्रांतिकारी, जिसने संसार की महानतम क्रांति की है, जिस पर चालीस पिरामिड नहीं, तो चालीस यूरोपीय देश पूंजीवाद से उद्धार की आशा में नज़रें लगाये हैं – उस कम्युनिस्ट को मामूली कारिंदे से काम सीखना चाहिए, जो दस साल तक गोदाम के चक्कर लगाता रहा, जिसे यह काम आता है, जबकि वह उत्तरदायी कम्युनिस्ट और निष्ठावान क्रांतिकारी न केवल यह काम नहीं जानता, बल्कि यह भी नहीं जानता कि उसे यह काम नहीं आता।

सो, साथियो, यदि हम अपना यह बुनियादी अज्ञान ही दूर कर लेंगे, तो यह विराट विजय होगी। हमें इस कांग्रेस से इस विश्वास के साथ लौटना चाहिए कि हम यह काम नहीं जानते और इसे क ख ग से सीखेंगे। आख़िर, यह बात तो है नहीं कि हम अब क्रांतिकारी हैं नहीं (हालांकि बहुत-से लोग यह कहते हैं और उनके पास यह कहने के आधार हैं कि हम नौकरशाह हो गये हैं) और हम यह सीधी-सादी बात समझ सकते हैं कि नये, असाधारणत: कठिन काम में बारंबार शुरू करना आना चाहिए: एक बार शुरू किया, नहीं काम हुआ, फिर से शुरू करो, दस बार करो, जब तक कि काम हो नहीं जाता, बनो नहीं, अहंकार मत दिखाओ कि तुम कम्युनिस्ट हो, जबकि वहां कोई ग़ैर-पार्टी कारिंदा, जो हो सकता है श्वेत गार्डी हो, और बहुत संभव है श्वेत गार्डी है ही, उसे काम करना आता है, जिसे आर्थिक दृष्टि से हर हालत में करना चाहिए, मगर तुम्हें यह काम करना नहीं आता। अगर तुम उत्तरदायी कम्युनिस्ट, जिसके पास सैकड़ों ओहदे और उपाधियां हैं, कम्युनिस्ट और सोवियत पदक छाती पर लगाये हो, अगर तुम यह समझ लोगे, तो अपना लक्ष्य पा लोगे, क्योंकि काम तो यह सीखा जा सकता है।

बीते वर्ष में कुछ, हालांकि बड़ी सूक्ष्म सी ही सफलताएं हमने पायी ज़रूर हैं। लेकिन मुख्य बात यह है कि इस बात की चेतना नहीं है और सभी कम्युनिस्टों में यह व्यापक विश्वास नहीं है कि आज हम

उत्तरदायी और निष्ठावान रूसी कम्युनिस्टों में यह कौशल किसी भी पुराने कारिंदे से कम है। मैं एक बार फिर कहता हूं, हमें क ख ग से शुरू करके सीखना है। यदि हम यह समझते हैं, तो हम परीक्षा में सफल रहेंगे, और यह परीक्षा बड़ी गंभीर है। आनेवाला आर्थिक संकट तथा रूसी और अंतर्राष्ट्रीय मंडी, जिसके हम अधीन हैं, जिससे बंधे हुए हैं, जिससे अलग नहीं हो सकते, हमारी यह परीक्षा लेंगे। परीक्षा गंभीर होगी क्योंकि यहां हमारी आर्थिक और राजनीतिक हार हो सकती है।

सवाल ऐसे ही खड़ा है, ठीक ऐसे ही, क्योंकि यहां मुक़ाबला गंभीर है और यह मुक़ाबला निर्णायक है। हमारे लिए राजनीतिक और आर्थिक कठिनाइयों से निकलने के लिए कई रास्ते, कई चालें थीं। हम सगर्व यह कह सकते हैं कि अभी तक हम विभिन्न परिस्थितियों के लिए अनुकूल चालों और रास्तों का उपयोग करने में सफल रहे हैं, लेकिन अब हमारे लिए कोई रास्ता नहीं बचा है। आपकी इजाज़त से मैं ज़रा भी बढ़ाये-चढ़ाये बिना यह बात आपसे कहूंगा, क्योंकि इस लिहाज़ से यह सचमुच ही "अंतिम और निर्णायक लड़ाई" है, हां अंतर्राष्ट्रीय पूंजीवाद के ख़िलाफ़ नहीं, उसके ख़िलाफ़ तो अभी बहुत-सी "अंतिम और निर्णायक लड़ाइयां" होंगी, मगर रूसी पूंजीवाद के ख़िलाफ़, उस पूंजीवाद के ख़िलाफ़ जो छोटे पैमाने की किसानी अर्थव्यवस्था से विकसित हो रहा है, जो इस अर्थव्यवस्था से पोषित होता है, उसके ख़िलाफ़ यह सचमुच "अंतिम और निर्णायक लड़ाई" है। यहां हमें निकट भविष्य में ही ऐसी लड़ाई लड़नी होगी, जो कब तक चलेगी इसके बारे में कुछ कहना मुश्किल है। यहां तो "अंतिम और निर्णायक लड़ाई" लड़नी ही है, यहां न तो राजनीतिक और न ही कोई दूसरा रास्ता हो सकता है, क्योंकि यह निजी पूंजी के साथ मुक़ाबले की परीक्षा है। या तो हम निजी पूंजी से मुक़ाबले की परीक्षा में खरे उतरेंगे, या फिर यह पूर्ण विफलता होगी। इस परीक्षा में सफल होने के लिए हमारे पास राजनीतिक सत्ता है और ढेरों दूसरे आर्थिक व अन्य साधन – जो चाहें, सब कुछ है, सिवाय कौशल के। कौशल नहीं है। सो अब अगर हम बीते साल के अनुभव से यह सबक़ सीख लेते हैं और सारे १९२२ के लिए इसे अपना मार्गदर्शक सिद्धांत बना लेंगे, तो हम इस कठिनाई पर भी विजय पा लेंगे, बावजूद इसके कि यह

पहले की कठिनाई से कहीं बड़ी है, क्योंकि यह स्वयं हमारे अंदर बैठी हुई है। यह कोई बाहरी शत्रु नहीं है। यह कठिनाई इस बात में निहित है कि हम स्वयं उस अप्रिय सत्य को स्वीकार नहीं करना चाहते, जो हम पर थोपा गया है और उस कठिन स्थिति में नहीं पड़ना चाहते, जिसमें हमें शुरू से काम सीखना शुरू करके पड़ना ही है। यह वह दूसरा सबक़ है, जो मेरे विचार में नयी आर्थिक नीति से निकलता है। ...

खंड ४५,
पृ० ७६-८४

... यहां हमें यह दो टूक सवाल पूछना चाहिए: हमारी शक्ति किस बात में है और हममें किस बात का अभाव है? राजनीतिक सत्ता तो एकदम पर्याप्त है। यहां उपस्थित लोगों में शायद ही कोई यह कहेगा कि अमुक व्यावहारिक प्रश्न में, अमुक कामकाजी संस्था में कम्युनिस्टों के हाथों में पर्याप्त सत्ता नहीं है। कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो बस यही सोचते रहते हैं, लेकिन ये वही लोग हैं, जो बेबसी से पीछे ही देखते हैं और यह नहीं समझते कि आगे देखना चाहिए। मुख्य आर्थिक शक्ति हमारे हाथों में है। सभी निर्णायक, बड़ी-बड़ी मिलें, कारख़ाने, रेलें, इत्यादि सब हमारे हाथों में हैं। कुछ स्थानों पर पट्टे के प्रतिष्ठानों की संख्या भले ही अधिक हो, कुल जमा वह नगण्य ही है, इनकी भूमिका अत्यंत छोटी ही है। रूस के सर्वहारा राज्य के हाथों में जो आर्थिक शक्ति है वह कम्युनिज़्म की ओर संक्रमण सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त है। तो कमी किस बात की है? साफ़ है कि कमी किस बात की है: प्रशासन कार्य कर रहे, संचालन कर रहे कम्युनिस्टों के संस्तर में संस्कृति का अभाव है। लेकिन यदि मास्को के उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर आसीन ४७०० कम्युनिस्टों को लें और इस भीमकाय नौकरशाही मशीनरी को, इस पहाड़ को लें, तो हमें पूछना चाहिए: कौन किसका मार्गदर्शन कर रहा है? मुझे तो यह कहने में बहुत संदेह है कि कम्युनिस्ट इस पहाड़ का पथप्रदर्शन कर रहे हैं। सच कहा जाये, तो वे रास्ता नहीं दिखा रहे, बल्कि उन्हें रास्ता दिखाया जा रहा है। यहां कुछ वैसी ही बात हुई है, जो हमें बचपन

में इतिहास के पाठ में बतायी गयी थी: ऐसा होता है कि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को जीत लेता है, जो राष्ट्र जीतता है वह विजेता होता है और जिसे जीता है वह पराजित। यहां तक तो बात साफ़ है और सबकी समझ में आती है। लेकिन इन राष्ट्रों की संस्कृति का क्या होता है? यदि विजेता राष्ट्र पराजित राष्ट्र से अधिक सुसंस्कृत होता है, तो वह उस पर अपनी संस्कृति थोपता है, लेकिन यदि मामला इससे उलट होता है, तो ऐसा भी होता है कि पराजित राष्ट्र विजेता पर अपनी संस्कृति थोपता है। क्या रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र की राजधानी में ऐसा ही कुछ तो नहीं हुआ है? कहीं ये ४७०० कम्युनिस्ट (प्रायः पूरी एक डिवीजन और उनमें सभी एक से एक बढ़कर) परायी संस्कृति के प्रभाव में तो नहीं आ गये? हां, इससे यह लगता है कि पराजितों की संस्कृति उच्चतः विकसित है। नहीं, ऐसा क़तई नहीं है। उनकी संस्कृति तुच्छ है, नगण्य है, लेकिन वह हमारी संस्कृति से अधिक है। उनकी संस्कृति कितनी ही तुच्छ, कितनी ही नगण्य हो, तो भी वह हमारे उत्तरदायी कम्युनिस्ट अधिकारियों से अधिक हैं, क्योंकि उनमें पर्याप्त संचालन कौशल नहीं है। उन कम्युनिस्टों का, जो किसी विभाग के अध्यक्ष बनते हैं – और भीतरघाती आड़ पाने के इरादे से कभी-कभी जानबूझकर उन्हें ऐसे पदों पर बिठाते हैं – उनका प्रायः बुद्धू बनता है। यह स्वीकार करना बहुत अप्रिय है। या कम से कम बहुत प्रिय नहीं है, लेकिन मेरे ख़्याल में हमें यह स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि आज यही सवाल का केंद्रबिंदु है। मेरे विचार में यही बीते वर्ष का राजनीतिक सबक़ है, और इसी को लेकर १९२२ में संघर्ष होगा।

क्या रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र के और रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के उत्तरदायी कम्युनिस्ट यह समझ सकेंगे कि उन्हें प्रशासन कार्य करना नहीं आता? कि वे यह सोचते हैं कि मार्गदर्शन कर रहे हैं, जबकि स्वयं उन्हें रास्ता दिखाया जाता है? अगर वे समझ लेते हैं, तो बेशक यह काम सीख सकते हैं, क्योंकि काम यह ऐसा नहीं है कि सीखा न जा सके, मगर इसके लिए पूरी लगन से शिक्षा पानी होगी, जबकि हमारे लोग ऐसा नहीं कर रहे हैं। वे तो दायें-बायें हुक्म देते चलते हैं, लेकिन नतीजा जो वे चाहते हैं उससे बिल्कुल भिन्न होता है।

नयी आर्थिक नीति घोषित करके हमने जिस प्रतियोगिता और मुक़ाबले को आज की कार्यसूची में शामिल किया है, वह गंभीर प्रतियोगिता है। यह प्रतियोगिता सभी सरकारी कार्यालयों में चल रही प्रतीत होती है, मगर असल में यह दो वर्गों के, एक दूसरे के अनमनीय शत्रु दो वर्गों के संघर्ष का एक और रूप है। यह बुर्जुआ वर्ग के सर्वहारा वर्ग के साथ संघर्ष का एक और रूप है। यह वह रूप है, जो अभी पूरा नहीं हुआ है और मास्को के केंद्रीय कार्यालयों तक में सुसंस्कृत रूप से परिणत नहीं हुआ है। क्योंकि हमारे श्रेष्ठ कम्युनिस्टों से, जिनके पास सारी सत्ता है, सभी संभावनाएं हैं और जो अपने अधिकारों तथा अपनी सारी सत्ता को लेकर एक भी ठीक क़दम उठाना नहीं जानते, उनसे तो बहुधा बुर्जुआ कर्मी ही काम अधिक अच्छी तरह जानते हैं।

मैं यहां अलेक्सांद्र तोदोर्स्की की किताब से एक उद्धरण देना चाहूंगा। यह किताब वेस्येगोंस्क में (त्वेर गुबेर्निया में इस नाम का एक छोटा-सा उयेज़्द का शहर है) रूस की सोवियत क्रांति की पहली वर्षगांठ पर ७ नवंबर, १९१८ को उस बहुत पुराने ज़माने में छपी थी। वेस्येगोंस्क का यह साथी, लगता है, पार्टी का सदस्य है। किताब मैंने बहुत पहले पढ़ी थी, सो पक्के तौर पर नहीं कह सकता। इस साथी ने लिखा है कि कैसे दो सोवियत फ़ैक्टरियां चालू करने का काम उसने हाथ में लिया, कैसे दो बुर्जुआ लोगों को इस काम में लगाया। ऐसा उसने वैसे ही किया, जैसे तब किया जाता था – गिरफ़्तार करने और संपत्ति ज़ब्त करने की धमकी देकर। उसने फ़ैक्टरियों में फिर से काम शुरू कराने के लिए उनकी सेवाएं हासिल कीं। हम जानते हैं कि १९१८ में बुर्जुआ वर्ग की सेवाएं कैसे हासिल की जाती थीं सो इसके बारे में अधिक बताने की ज़रूरत नहीं है: अब हम बुर्जुआ वर्ग की सेवाएं दूसरे तरीक़े से हासिल करते हैं। लेकिन इस साथी का निष्कर्ष देखिये: "बुर्जुआ वर्ग को जीत लेना, उसे धराशायी कर देना आधा काम ही है, उसे इसके लिए भी विवश करना चाहिए कि वह हमारे लिए काम करे।"

यह है पते की बात। हां, पते की बात है, क्योंकि इससे पता चलता है कि वेस्येगोंस्क नगर में भी, १९१८ में भी इस बात की ठीक समझ थी कि विजयी सर्वहारा और विजित बुर्जुआ वर्ग के बीच संबंध कैसे होने चाहिए।

जब हम शोषकों के लुटेरे हाथों पर डंडा मारते हैं, उन्हें अहानिकर बना देते हैं, धराशायी कर देते हैं, तो यह आधा काम ही होता है। लेकिन हमारे यहां मास्को में १०० में से ९० उत्तरदायी अधिकारी यह सोचते फिरते हैं कि यही सारा काम है, यानी धराशायी करना, अहानिकार बनाना, हाथों पर डंडा मारना ही सब कुछ है। मैंने मेंशेविकों, समाजवादी-क्रांतिकारियों और श्वेत गार्डियों के बारे में जो कुछ कहा है उसका प्राय: केवल यही मतलब निकाला जाता है कि अहानिकर बनाया जाये, हाथों पर डंडा मारा जाये (और शायद हाथों पर ही नहीं, शायद एक दूसरी जगह पर भी) और धराशायी किया जाये। लेकिन यह तो आधा काम ही है। १९१८ में भी जब वेस्येगोंस्क के साथी ने यह बात कही थी तब भी यह आधा काम था और अब तो यह चौथाई से भी कम है। हमें ऐसा करना चाहिए कि ये हाथ हमारे लिए काम करें, ऐसा न हो कि उत्तरदायी कम्युनिस्ट अध्यक्ष हों, पदासीन हों, लेकिन बुर्जुआ प्रवाह के साथ बहें। यही मामले का सारा सार है।

कम्युनिस्टों के हाथों कम्युनिस्ट समाज का निर्माण करना एक बचकाना, बिल्कुल बचकाना विचार है। कम्युनिस्ट तो सागर में बूंद है, जन-सागर में बूंद है। वे केवल तभी जनता को अपने रास्ते पर ले चलने में सफल रहेंगे, जबकि अपना रास्ता सही-सही निर्धारित करेंगे और ऐसा केवल सार्वभौमिक ऐतिहासिक दिशा के अर्थ में ही नहीं करेंगे। इस अर्थ में हमने अपना रास्ता एकदम सही तय किया है, और हर देश में स्थिति से इस बात की पुष्टि हो रही है। हमें अपनी जन्मभूमि, अपने देश के लिए भी यह रास्ता सही-सही निर्धारित करना चाहिए। लेकिन विश्व इतिहास में दिशा ही एकमात्र कारक नहीं है। दूसरे कारक यह हैं कि हस्तक्षेप होगा या नहीं, कि हम किसानों को उनके अनाज के बदले तैयार माल दे सकेंगे या नहीं। किसान कहेगा : "तुम बहुत अच्छे आदमी हो, तुमने हमारी मातृभूमि की रक्षा की है। इसीलिए हमने तुम्हारा कहना माना, लेकिन यदि तुम्हें देश का कारोबार चलाना नहीं आता, तो दफ़ा हो जाओ।" जी हां, किसान यही कहेगा।

हम कम्युनिस्ट देश का कारोबार चला सकेंगे, अर्थव्यवस्था का संचालन कर सकेंगे, बशर्ते हम इस अर्थव्यवस्था का निर्माण दूसरों

के हाथों से करने में सफल रहेंगे और ख़ुद इस बुर्जुआ वर्ग से काम सीखेंगे तथा उसे उस मार्ग पर बढ़ायेंगे, जिस पर हम बढ़ना चाहते हैं। लेकिन जब कोई कम्युनिस्ट यह सोचने लगता है कि "मैं सब कुछ जानता हूं, क्योंकि मैं उत्तरदायी कम्युनिस्ट हूं, मैंने कारिंदों से कहीं अधिक भयावह शत्रुओं के छक्के छुड़ाये हैं, हम तो मोर्चों पर लड़े हैं और कैसे-कैसों को हमने वहां हराया है," तो ऐसी मनोस्थिति ही हमें सबसे ज़्यादा नुक़सान पहुंचाती है।

शोषकों को अहानिकर बना देना, उनके हाथों पर डंडा मारना, उनके पंख काट देना – यह तो काम का सबसे कम महत्वपूर्ण अंश है। यह करना अवश्य चाहिए। और हमारे राजकीय राजनीतिक प्रशासन को तथा हमारी अदालतों को यह काम यों ढुलमुल तरीक़े से नहीं करना चाहिए, जैसा कि अब तक होता आया है, बल्कि यह याद रखना चाहिए कि वे संसार भर के शत्रुओं से घिरी सर्वहारा अदालतें हैं। यह कोई कठिन काम नहीं है। यही तो हमने मुख्यतः सीखा है। यहां थोड़ा दबाव डालने की ज़रूरत है, पर ऐसा करना आसान है।

जीत के दूसरे भाग के लिए यानी ग़ैर-कम्युनिस्ट हाथों से कम्युनिज़्म का निर्माण करने के लिए, आर्थिक दृष्टि से जो आवश्यक है, उसे करने की व्यावहारिक योग्यता पाने के लिए हमें किसानी अर्थव्यवस्था के साथ संबंध स्थापित करना चाहिए, किसान की ज़रूरतें पूरी करनी चाहिए ताकि किसान कहे: "भुखमरी सहना बहुत कठिन है, बहुत पीड़ादायी है, बहुत मुश्किल है और मैं देख रहा हूं कि यह सरकार बिल्कुल नयी क़िस्म की है, विचित्र है, लेकिन यह कुछ उपयोगी काम कर रही है, जिसका पता चल रहा है।" हमें ऐसा करना चाहिए कि वे बहुसंख्यक, हमारे से संख्या में बहुत अधिक तत्व, जिनके साथ हम सहयोग करते हैं, इस तरह काम करें कि हम उनका काम देख सकें, कि हम यह काम समझ सकें, कि उनके हाथों कम्युनिज़्म के लिए उपयोगी कुछ काम हो। यही आज की स्थिति का केंद्रबिंदु है, क्योंकि कुछ इक्के-दुक्के कम्युनिस्ट तो यह समझते और देखते रहे हैं, मगर हमारी पार्टी के व्यापक समूह में यह चेतना नहीं है कि ग़ैर-पार्टी लोगों को काम में लगाना आवश्यक है। इसके बारे में कितने परिपत्र लिखे गये हैं, कितनी बातें हुई हैं, लेकिन साल भर में कोई काम भी हुआ है? कुछ नहीं। हमारी पार्टी की सैकड़ों समितियों में से पांच

समितियां भी अपने व्यावहारिक परिणाम नहीं दिखा पायेंगी। इससे पता चलता है कि हम आज की आवश्यकताओं से कितने पिछड़ गये हैं, किस हद तक हम १९१८ और १९१९ की परंपराओं में ही जी रहे हैं। वे महान वर्ष थे, महानतम सार्वभौमिक ऐतिहासिक हेतु की पूर्ति के वर्ष। और यदि हम इन वर्षों की ओर ही मुड़-मुड़कर देखते रहेंगे और यह नहीं देख पायेंगे कि आज का कार्यभार क्या है, तो यह निस्संदेह हमारा अंत होगा, पूर्ण विनाश होगा, और सारा मसला यह है कि हम यह बात समझना नहीं चाहते ...

खंड ४५,
पृ० ९५-९६

"दोहरी" मातहती और वैधता

साथी स्तालिन को पोलिटब्यूरो के लिए

अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी के अधिवेशन के कार्यों के संचालन के लिए कार्यकारिणी द्वारा गठित आयोग में प्रोक्यूरेटरी व्यवस्था के प्रश्न पर मतभेद पैदा हो गये हैं। यदि इन मतभेदों को देखते हुए यह प्रश्न अपने आप ही पोलिटब्यूरो में नहीं जाता है, तो मैं अपनी ओर से इस सवाल को इतना महत्वपूर्ण मानता हूं कि इसे पोलिटब्यूरो के सामने रखने का प्रस्ताव पेश करता हूं।

मतभेदों का सार यह है: अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी द्वारा निर्वाचित आयोग के बहुमत ने प्रोक्यूरेटरी व्यवस्था के सवाल में इस बात का विरोध किया है कि प्रोक्यूरेटरी निरीक्षण के स्थानीय प्रतिनिधि केवल केंद्र द्वारा नियुक्त किये जायें और केवल केंद्र के मातहत हों। बहुमत तथाकथित "दोहरी" मातहती की मांग करता है, जो कि सामान्यत: सभी स्थानीय कर्मियों के लिए है, यानी एक ओर वे तत्संबंधी जन-कमिसारियत के रूप में केंद्र के अधीन हों तथा दूसरी ओर स्थानीय गुबेर्निया कार्यकारिणी के।

केंद्रीय कार्यकारिणी के आयोग के इसी बहुमत ने प्रोक्यूरेटरी निरीक्षण को यह अधिकार देने से इनकार कर दिया है कि वह स्थानीय गुबेर्निया कार्यकारिणी के तथा सामान्यत: स्थानीय अधिकारियों के फ़ैसलों को वैधता की दृष्टि से चुनौती दे सकता है।

मेरी समझ में नहीं आता कि आयोग के बहुमत के इतने प्रत्यक्षत: ग़लत निर्णय के पक्ष में क्या तर्क दिये जा सकते हैं। मैंने बस ऐसे ही तर्क सुने हैं कि इस मामले में "दोहरी" मातहती की तरफ़दारी

नौकरशाही केंद्रिकता के विरुद्ध न्यायोचित संघर्ष, स्थानीय अधिकारियों की आवश्यक स्वतंत्रता की रक्षा तथा गुबेर्निया कार्यकारिणी का केंद्र की उद्धतता से बचाव ही है। क्या इस दृष्टिकोण में कोई उद्धतता है कि क़ानूनियत कलूगा की और कज़ान की अलग-अलग नहीं हो सकती, कि वैधता तो सारे रूस के लिए और यहां तक कि सोवियत जनतंत्रों के सारे संघ के लिए एक ही होनी चाहिए? केंद्रीय कार्यकारिणी के आयोग के बहुमत में जो दृष्टिकोण विजयी रहा है, उसकी बुनियादी ग़लती यह है कि वे लोग "दोहरी" मातहती के सिद्धांत को ग़लत ढंग से लागू कर रहे हैं। "दोहरी" मातहती की आवश्यकता वहां है, जहां वास्तव में अस्तित्वमान भेदों को ध्यान में रखना आना ज़रूरी है। कलूगा गुबेर्निया में कृषि वैसी नहीं है, जैसी कज़ान गुबेर्निया में। यही बात सारे उद्योग पर लागू होती है। यही बात सारे प्रशासन या संचालन-कार्य पर लागू होती है। इन सभी मामलों में स्थानीय भेदों को ध्यान में न रखने का मतलब होगा नौकरशाही केंद्रिकता में फंसना, इसका मतलब होगा स्थानीय अधिकारियों को स्थानीय भेदों को ध्यान में न रखने देना, जो कि विवेकपूर्ण कार्य की बुनियाद है। लेकिन क़ानून तो एक ही होना चाहिए, और हमारे सारे जीवन में और हमारे सारे फूहड़पन में बुनियादी बुराई यही है कि हम बाबा आदम के रूसी दृष्टि-कोण को शह देते हैं और हमारी उन अर्धबर्बरोंवाली आदत है, जो कलूगा की क़ानूनियत को कज़ान की क़ानूनियत से भिन्न बनाये रखना चाहते हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि प्रशासनिक सत्ता से भिन्न प्रोक्यूरेटरी निरीक्षण को कोई प्रशासनिक अधिकार प्राप्त नहीं हैं और किसी भी प्रशासकीय प्रश्न पर उसका मत निर्णायक नहीं है। प्रोक्यूरेटर को केवल एक बात का अधिकार है और यह करना उसका दायित्व है, यह है – इस बात पर नज़र रखना कि सभी स्थानीय भेदों के बावजूद, किन्हीं भी स्थानीय प्रभावों के बावजूद सारे जनतंत्र में क़ानून की सच्चे अर्थों में एक जैसी व्याख्या होती है। प्रोक्यूरेटर का एकमात्र अधिकार और दायित्व है मामले को अदालत के सामने ले जाना। ये अदालतें कैसी हैं? हमारी अदालतें स्थानीय हैं। न्यायाधीश स्थानीय सोवियतों द्वारा चुने जाते हैं। इसलिए वह सत्ता, जिसके सामने प्रोक्यूरेटर क़ानून के उल्लंघन का मामला ले जाता है, स्थानीय सत्ता ही है, जिसे एक ओर सारे संघ के लिए निर्धारित एकसमान क़ानूनों का सही-

सही पालन करना चाहिए और दूसरी ओर दंड की मात्रा निर्धारित करते समय सारी स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए। इस सत्ता को यह कहने का पूरा अधिकार है कि अमुक मामले में निःसंदेह क़ानून का उल्लंघन हुआ है, तथापि मामले की सुनवाई के दौरान, जो स्थानीय परिस्थितियां प्रकाश में आयी हैं, जिनसे स्थानीय लोग निकट से परिचित हैं, उन्हें देखते हुए अदालत अमुक लोगों की सज़ा कम करना आवश्यक समझती है, या यहां तक कि अमुक लोगों को बरी करती है। यदि हम सारे संघ में क़ानून की समरूपता स्थापित करने के लिए इस बुनियादी से बुनियादी शर्त का हर हालत में पालन नहीं करेंगे, तो क़ानून की रक्षा का, किसी तरह की संस्कृति के निर्माण का सवाल ही नहीं उठता।

ठीक इसी तरह यह कहना भी सिद्धांततः ग़लत है कि प्रोक्यूरेटर को गुबेर्निया कार्यकारिणियों और दूसरे स्थानीय सत्ता निकायों के निर्णयों की वैधता को चुनौती देने का अधिकार नहीं होना चाहिए; कि इनकी वैधता का फ़ैसला मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था को करना चाहिए।

मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था वैधता ही नहीं औचित्य भी आंकती है। प्रोक्यूरेटर इस बात के लिए उत्तरदायी है कि किसी भी स्थानीय अधिकारी का कोई भी निर्णय क़ानून के ख़िलाफ़ न हो, और केवल इसी दृष्टि से प्रोक्यूरेटर को हर अवैध निर्णय को चुनौती देनी चाहिए। प्रोक्यूरेटर को इस निर्णय को स्थगित करने का अधिकार नहीं है, उसे तो केवल ऐसे क़दम उठाने चाहिए, जिनसे सारे जनतंत्र में क़ानून की व्याख्या बिल्कुल एक सी हो। इसलिए केंद्रीय कार्यकारिणी के आयोग के बहुमत का निर्णय सिद्धांततः एकदम ग़लत है, इसमें न केवल "दोह-री" मातहती के सिद्धांत को ग़लत ढंग से लागू किया गया है, बल्कि यह निर्णय क़ानून की समरूपता स्थापित करने तथा न्यूनतम संस्कृति विकसित करने के प्रयासों में भी बाधक है।

आगे, इस प्रश्न को हल करते समय स्थानीय प्रभावों के महत्व को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। इसमें कोई संदेह नहीं कि हम अवैधता के महासागर में रह रहे हैं और स्थानीय प्रभाव क़ानून और संस्कृति की स्थापना का सबसे बड़ा नहीं तो एक सबसे बड़ा शत्रु है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जिसने यह न सुना हो कि जब हमने

पार्टी की सफ़ाई की, तो पता चला कि अधिकांश स्थानीय जांच समिति-यों में पार्टी की सफ़ाई के दौरान व्यक्तिगत और स्थानीय बदले लिये गये। यह एक निर्विवाद और महत्वपूर्ण तथ्य है। शायद ही कोई इस बात से इनकार करेगा कि हमारी पार्टी के लिए दसेक ऐसे विश्वसनीय कम्युनिस्ट ढूंढ़ना, जो क़ानून में शिक्षित हों और किन्हीं भी स्थानीय प्रभावों का सामना कर सकते हों, सैकड़ों ऐसे लोगों को ढूंढ़ने की अपेक्षा कहीं आसान है। प्रोक्यूरेटरों की "दोहरी" मातहती या उनके केवल केंद्र के अधीन होने पर बहस में सारा सवाल यही तो है। केंद्र में हमें दसेक लोग ढूंढ़ने होंगे, जो प्रोक्यूरेटर जनरल, सर्वोच्च ट्रिब्यूनल और विधि जन-कमिसारियत के मंडल के रूप में केंद्रीय प्रोक्यू-रेटर के कार्य करेंगे (यहां मैं इस सवाल को नहीं ले रहा हूं कि अकेले प्रोक्यूरेटर जनरल को ही सारी सत्ता प्राप्त होनी चाहिए या उसे यह सत्ता सर्वोच्च ट्रिब्यूनल तथा विधि जन-कमिसारियत के साथ बांटनी चाहिए, क्योंकि यह प्रश्न बिल्कुल गौण है और इस बात के अनुसार कि पार्टी एक ही व्यक्ति को अपार सत्ता सौंपती है या यह सत्ता उपरोक्त तीन निकायों में बांटती है, हल किया जा सकता है)। ये दस लोग केंद्र में स्थित होंगे और तीन पार्टी संस्थाओं के कठोर निरीक्षण में और उनके साथ घनिष्ठ संपर्क में काम करेंगे। ये तीन संस्थाएं – केंद्रीय समिति का संगठन ब्यूरो, केंद्रीय समिति का पोलिटब्यूरो और केंद्रीय नियंत्रण आयोग – स्थानीय और व्यक्तिगत प्रभावों के ख़िलाफ़ सबसे विश्वसनीय गारंटी हैं और इनमें अंतिम – केंद्रीय नियंत्रण आयोग – केवल पार्टी कांग्रेस के सम्मुख जवाबदेह है और इसका गठन ऐसे किया जाता है कि आयोग के सदस्य किसी भी जन-कमिसारियत में, किसी भी विभाग में और सोवियत सत्ता के किसी भी निकाय में कोई पद ग्रहण नहीं कर सकते। स्पष्ट है कि ऐसे हालात में हमें आज तक सोची गयी सभी गारंटियों से अधिक बड़ी गारंटी प्राप्त है कि पार्टी एक छोटा-सा केंद्रीय मंडल बनायेगी, जो वास्तव में स्थानीय प्रभावों का, स्थानीय तथा हर तरह की नौकरशाही का विरोध करने में तथा सारे जनतंत्र व सारे संघ में क़ानून के प्रयोग की सच्ची समरूपता स्थापित करने में सक्षम होगा। इसलिए इस केंद्रीय विधि मंडल की संभाव्य ग़लतियां तुरंत ही यहीं पर उन पार्टी निकायों द्वारा ठीक की जा सकती हैं, जो सारे जनतंत्र में हमारे पार्टी कार्य तथा सोवियत कार्य दोनों के

सभी मूलभूत नियम और सभी प्रमुख अवधारणाएं निर्धारित करते हैं।

इससे हटने का अर्थ होगा चुपके से उस दृष्टिकोण पर अमल करना, जिसकी तरफ़दारी कोई भी खुलेआम नहीं करता है, दृष्टिकोण यह है कि हमारे यहां संस्कृति और उससे अटूट रूप से जुड़ा क़ानून-पालन इतने अधिक विकसित हैं कि हम सैकड़ों ऐसे प्रोक्यूरेटर ढूंढ़ पाने की गारंटी दे सकते हैं, जो इस दृष्टि से बिल्कुल निष्कलंक होंगे कि वे कभी भी किन्हीं भी स्थानीय प्रभावों में नहीं आयेंगे और सारे जनतंत्र में क़ानून के पालन की समरूपता स्थापित करेंगे।

अंत में, मैं इस निष्कर्ष पर आता हूं कि प्रोक्यूरेटरों के लिए "दोहरी" मातहती की तरफ़दारी करना और उन्हें स्थानीय अधिकारियों के किसी भी निर्णय को चुनौती दे सकने के अधिकार से वंचित करना न केवल सिद्धांततः ग़लत है, न केवल क़ानून के पालन और इसके प्रति आदर की भावना निरंतर फैलाने के हमारे कार्यभार में बाधक है, बल्कि स्थानीय नौकरशाही और स्थानीय प्रभावों के यानी मेहनतकश लोगों तथा स्थानीय और केंद्रीय सोवियत सत्ता के बीच तथा रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय सत्ता के भी बीच जो सबसे बुरी, सबसे घातक दीवार खड़ी है, उसके हितों को व्यक्त करता है।

इसलिए मेरा यह प्रस्ताव है कि केंद्रीय समिति इस मामले में "दोहरी" मातहती अस्वीकार कर दे, स्थानीय प्रोक्यूरेटरी सत्ता को केवल **केंद्र** के अधीन रखे और प्रोक्यूरेटरों का यह अधिकार और दायित्व बनाये रखे कि वे स्थानीय अधिकारियों के किसी भी निर्णय को चुनौती दे सकें, उन्हें इन निर्णयों को स्थगित करने का कोई अधिकार न हो, बस मामले को अदालत में ले जाने का ही अधिकार हो।

लेनिन

२० मई, १९२२ को टेलीफ़ोन पर लिखाया गया

खंड ४५, पृ० १९७-२०१

अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी (नौवां समाह्वान) के चौथे अधिवेशन में भाषण

३१ अक्तूबर, १९२२

(उद्धरण)

...अगस्त १९१८ में हमने मास्को में अपने सरकारी कर्मचारियों व अधिकारियों की गणना की। पता चला कि केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में तथा मास्को नगर सोवियत के कार्यालयों में कुल २,३१,००० लोग हैं। हाल ही में अक्तूबर १९२२ में हमने एक बार फिर यह गणना की, इस विश्वास के साथ कि हमने अपना यह बढ़ा-चढ़ा कर्मीवृंद घटा लिया है, और यह संख्या कम होनी चाहिए। मगर यह संख्या निकली २,४३,०००। यह था हमारी सारी कटौतियों का नतीजा। इन आंकड़ों का अध्ययन और तुलना करने में हमें अभी काफ़ी परिश्रम करना होगा। १९१८ में तो हमने एक तरह से सुधारों के पहले आवेग में यह गणना की थी और तब इसके परिणामों से कोई काम का निष्कर्ष नहीं निकाल सकते थे। इसके लिए कोई समय नहीं था। गृह युद्ध[57] के कारण दम लेने की फ़ुरसत नहीं थी। अब हमें उम्मीद है कि हम यह काम कर लेंगे। हमें विश्वास है कि हम अपने इस राजकीय कार्यतंत्र को सुधार लेंगे, जिसमें बहुत-सी कमियां हैं, जिसका आकार आवश्यक आकार से दुगुने से भी अधिक बढ़ा-चढ़ा है और जो बहुत अकसर हमारे लिए नहीं, बल्कि हमारे ख़िलाफ़ काम करता है – जी हां, हमें इस सच्चाई को क़बूल करने से, हमारे जनतंत्र के सर्वोच्च विधायी निकाय के मंच से भी यह बात कहने से डरना नहीं चाहिए। इसे सुधारने के लिए बहुत परिश्रम और कौशल की आवश्यकता होगी। इसे कैसे सुधारा जाना चाहिए – इस प्रश्न के गंभीर अध्ययन की शुरूआत हमने कर ली है, लेकिन अभी यह शुरूआत ही है – कुछ इक्के-दुक्के

लेख, कुछ स्थानीय शोध कार्य। यदि हम सब यहां से इस संकल्प के साथ लौटेंगे कि हम इस प्रश्न की ओर अब तक जितना ध्यान देते रहे हैं, उससे अधिक ध्यान देंगे, यह संकल्प लेकर कि दौड़-धूप और हड़बड़ी में कम समय बरबाद करेंगे – हम सभी बहुत अकसर इसमें अथाह समय गंवाते हैं – और यदि हम सचमुच अपने राजकीय कार्यतंत्र का अध्ययन करेंगे तथा बरसों तक उस पर काम करेंगे, तो यह विराट विजय होगी, इसी से हमारी सफलता सुनिश्चित होगी। हममें यह कहने का साहस होना चाहिए कि हम अपने कार्यतंत्र का निर्माण स्वतःस्फूर्त, बेतरतीब ढंग से कर रहे हैं। सर्वश्रेष्ठ मज़दूर सैनिक और नागरिक दोनों ही क्षेत्रों में कठिनतम दायित्व अपने पर ले लेते थे, अकसर ठीक ढंग से नहीं लेते थे, लेकिन उन्हें अपनी ग़लतियां ठीक करना और काम करना आता था। इन, शायद कुछ दर्जन साहसी लोगों और उन सैकड़ों लोगों के बीच अनुपात, जो अपनी कुर्सियों पर बैठे अपने काग़ज़ों में उलझते हुए काम का विध्वंस या अर्धविध्वंस करते थे, – यह अनुपात ही प्रायः काग़ज़ों के समुद्र में हमारे जीवंत कार्य को डुबोता आया है। अभी तक हम इस प्रश्न का अध्ययन करने में असमर्थ थे, लेकिन अब हमें पूरे विस्तार से, सभी ब्योरों में इसका अध्ययन करना होगा। इसमें अनेकानेक वर्ष लगेंगे, बरसों तक हमें लगकर अध्ययन करना होगा, क्योंकि हमारे मज़दूरों का सांस्कृतिक स्तर नीचा है, उनके लिए उत्पादन-प्रबंध का एकदम नया काम हाथ में लेना मुश्किल है, जबकि हम केवल मज़दूरों की सच्चाई और उत्साह का ही भरोसा रख सकते हैं। हमें अपने राजकीय कार्यतंत्र को सुधार पाने में, उसको – केवल अलग-अलग व्यक्तियों को नहीं, बल्कि समूचे-समग्र कार्यतंत्र को – अधिक ऊंचे सांस्कृतिक स्तर तक उठाने में अनेकों बरस लगेंगे। मुझे विश्वास है कि यदि हम आगे भी अपनी शक्ति इस काम में लगाते रहेंगे, तो अवश्य ही और अनिवार्यतः ही श्रेष्ठ परिणाम पा लेंगे।

(देर तक तालियां।)

खंड ४५,
पृ० २५०-२५१

कांग्रेस को पत्र [58]

(उद्धरण)

१

मेरा यह प्रबल परामर्श है कि इस कांग्रेस में[59] हमारी राजनीतिक व्यवस्था में कुछ परिवर्तन स्वीकार किये जायें।

मैं आपको अपने कुछ विचारों से परिचित कराना चाहता हूं, जो मेरी नज़र में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

पहला स्थान मैं केंद्रीय समिति के सदस्यों की संख्या कुछ दर्जन या सौ तक बढ़ाने को देता हूं। मेरे विचार में, यदि हम यह संशोधन नहीं करते, तो घटनाओं का प्रवाह हमारे लिए पूरी तरह अनुकूल न होने पर (और इसके अनुकूल होने की हम उम्मीद नहीं कर सकते) हमारी केंद्रीय समिति बहुत ख़तरे में पड़ जायेगी।

तदुपरांत, मैं यह प्रस्ताव रखना चाहता हूं कि कांग्रेस कुछ शर्तों पर राजकीय योजना आयोग के निर्णयों को वैधानिक स्वरूप प्रदान करे, और इस सिलसिले में निश्चित हद तक तथा निश्चित शर्तों पर साथी त्रोत्स्की की बात माने।

जहां तक पहले मुद्दे का, यानी केंद्रीय समिति के सदस्यों की संख्या बढ़ाने का सवाल है, मेरे विचार में ऐसा करना केंद्रीय समिति की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए भी, हमारे कार्यतंत्र में सुधार के गंभीर कार्य के लिए भी तथा इस बात के लिए भी आवश्यक है कि केंद्रीय समिति के छोटे-से भाग के झगड़े सारी पार्टी के भाग्य के लिए अतीव महत्व न पाने पायें।

मेरे ख़्याल में हमारी पार्टी को मज़दूर वर्ग से केंद्रीय समिति के लिए ५०-१०० सदस्य पाने का पूरा अधिकार है और इस वर्ग के

संसाधनों पर अत्यधिक ज़ोर डाले बिना वह उन्हें पा सकती है।

ऐसे सुधार से हमारी पार्टी की स्थिरता और मज़बूती बहुत बढ़ेगी तथा उसके लिए शत्रु-राज्यों के घेरे में संघर्ष करना आसान होगा। यह संघर्ष मेरे विचार में आगामी कुछ वर्षों में बहुत तीव्र हो जायेगा। मैं सोचता हूं कि इस क़दम से हमारी पार्टी की स्थिरता हज़ार गुनी बढ़ेगी।

लेनिन

२३.१२.१९२२
म० व० द्वारा लिपिबद्ध

२

नोट आगे जारी
२४ दिसंबर, १९२२

ऊपर केंद्रीय समिति की स्थिरता की मैंने जो चर्चा की है, उससे मेरा अभिप्राय फूट के ख़िलाफ़ क़दमों से है, जहां तक ये क़दम उठाये जा सकते हैं। क्योंकि 'रूस्स्कया मीस्ल'[60] में श्वेत गार्डी (लगता है, वह स० स० ओल्देनबुर्ग था) बेशक सही था, जब उसने एक तो, सोवियत रूस के ख़िलाफ़ श्वेत गार्डियों के दांव-पेंच में हमारी पार्टी में फूट पर बाज़ी लगायी थी, और दूसरे जब, इस फूट के लिए पार्टी के भीतर गंभीर मतभेदों पर बाज़ी लगायी थी।

हमारी पार्टी को दो वर्गों का सहारा प्राप्त है और इसलिए उसमें अस्थिरता संभव है और यदि इन दो वर्गों में सहमति न हो पाये, तो उसका पतन निश्चित है। ऐसी हालत में कोई क़दम उठाना और हमारी केंद्रीय समिति में स्थिरता की बातें करना ही व्यर्थ होगा। ऐसी हालत में कोई भी क़दम पार्टी में फूट नहीं रोक पायेंगे। लेकिन मुझे उम्मीद है कि यह इतने दूर भविष्य की बात है और इतनी असंभाव्य घटना है, कि इसकी चर्चा क्या की जाये।

मेरा अभिप्राय निकट भविष्य में फूट न होने देने की गारंटी के तौर पर स्थिरता से है और यहां मैं व्यक्तिगत गुणों से संबंधित कुछ विचारों पर गौर करना चाहता हूं।

मेरे ख़्याल में इस दृष्टि से स्तालिन और त्रोत्स्की जैसे केंद्रीय समिति के सदस्य स्थिरता के प्रश्न में मूल तत्व हैं। उनके बीच संबंध, मेरे विचार में, उस फूट का आधा से अधिक ख़तरा हैं, जिससे बचा जा सकता है और केंद्रीय समिति के सदस्यों की संख्या ५० तक, १०० तक बढ़ाया जाना, मेरी राय में, इसके फूट से बचने के ही हित में होगा।

साथी स्तालिन ने महासचिव बनकर अपने हाथों में असीम सत्ता केंद्रित कर ली है और मैं निश्चित तौर पर नहीं कह सकता कि वह सदा इस सत्ता का उपयोग पर्याप्त सतर्कता से कर पायेंगे। दूसरी ओर, साथी त्रोत्स्की अपनी विलक्षण योग्यता के लिए ही विख्यात नहीं और केंद्रीय समिति में रेलवे जन-कमिसारियत के प्रश्न पर अपने संघर्ष से उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है। व्यक्तिगत तौर पर वह वर्तमान केंद्रीय समिति में शायद सबसे योग्य व्यक्ति हैं, लेकिन उनमें आत्म-विश्वास हद से अधिक है और वह काम के शुद्धतः प्रशासकीय पहलू में ही लीन हो जाते हैं।

वर्तमान केंद्रीय समिति के इन दो प्रमुख नेताओं के ये दो गुण अनायास ही फूट का कारण बन सकते हैं और यदि हमारी पार्टी इसे रोकने के लिए क़दम नहीं उठाती है, तो फूट सहसा ही पड़ सकती है।

केंद्रीय समिति के दूसरे सदस्यों के व्यक्तिगत गुणों की मैं आगे विवेचना नहीं करूंगा। बस इतना ही याद दिलाना चाहता हूं कि ज़िनोव्येव और कामेनेव[61] की अक्तूबर घटना मात्र संयोग नहीं थी, लेकिन इसके लिए भी उन्हें व्यक्तिगत तौर पर कम ही दोष दिया जा सकता है, वैसे ही जैसे त्रोत्स्की को उनके ग़ैर-बोल्शेविकवाद के लिए।

केंद्रीय समिति के युवा सदस्यों में से बुख़ारिन और प्याताकोव के बारे में मैं कुछ शब्द कहना चाहता हूं। मेरे विचार में वे सबसे विलक्षण व्यक्ति हैं (सबसे युवा सदस्यों में) और उनके बारे में यह बात ध्यान में रखी जानी चाहिए: बुख़ारिन न केवल पार्टी का सबसे अमूल्य और बड़ा सिद्धांतकार है, वह उचित ही सारी पार्टी का चहेता भी माना जाता है, लेकिन उसके सैद्धांतिक विचारों को बड़े संदेह के साथ ही पूर्णतः मार्क्सवादी माना जा सकता है, क्योंकि उसमें कुछ पंडिताऊपन है (उसने कभी द्वंद्ववाद का अध्ययन नहीं किया है और मेरे ख्याल में उसे कभी पूरी तरह समझा नहीं है)।

२५ दिसंबर। जहां तक प्याताकोव का सवाल है वह निस्संदेह असाधारण इच्छाशक्ति और विलक्षण योग्यता का धनी है, लेकिन प्रशासन करने और काम के प्रशासनिक पहलू पर ही ध्यान देने में वह इतना लीन हो जाता है कि गंभीर राजनीतिक प्रश्न में उस पर भरोसा नहीं रखा जा सकता।

बेशक, ये दोनों टिप्पणियां मैंने वर्तमान के लिए ही की हैं, इस पूर्वानुमान के साथ कि ये दोनों विलक्षण और निष्ठावान पार्टी कार्यकर्ता अपना ज्ञान बढ़ाने और अपना एकतरफ़ापन बदलने के अवसर नहीं ढूंढ़ पायेंगे।

लेनिन

२५.१२.१९२२
म० व० द्वारा लिपिबद्ध

२४ दिसंबर, १९२२ के पत्र का परिशिष्ट

स्तालिन स्वभाव से अत्यधिक उद्धत हैं और उनकी यह कमी हम, कम्युनिस्टों के बीच परस्पर संबंधों में तो सही जा सकती है, लेकिन महासचिव के पद पर बिल्कुल असह्य हो जाती है। इसलिए मेरा सुझाव है कि स्तालिन को इस पद से हटाने का और इस पद पर दूसरे व्यक्ति को नियुक्त करने का रास्ता हमारे साथी सोचें। यह दूसरा व्यक्ति स्तालिन से दूसरे सभी मामलों में केवल एक बात में भिन्न हो, इस बात में कि उसमें अधिक सहिष्णुता, अधिक निष्ठा, अधिक विनम्रता हो और वह साथियों का अधिक ध्यान रखता हो, कम स्वेच्छाचारी, इत्यादि हो। यह बात एकदम मामूली लग सकती है। लेकिन मेरे विचार में फूट न होने देने की दृष्टि से तथा अगर मैंने स्तालिन और त्रोत्स्की के संबंधों के बारे में जो लिखा है, उसकी दृष्टि से यह मामूली नहीं है, या ऐसी मामूली बात है, जो निर्णायक महत्व धारण कर सकती है।

लेनिन

ल० फ़० द्वारा लिपिबद्ध
४ जनवरी, १९२३

३

नोट आगे जारी
२६ दिसंबर, १९२२

केंद्रीय समिति के सदस्यों की संख्या ५० या १०० तक भी बढ़ाने से मेरे विचार में दोहरे क्या, तिहरे ध्येय की पूर्ति होगी : केंद्रीय समिति के सदस्यों की संख्या जितनी अधिक होगी, केंद्रीय समिति का काम उतने ही अधिक लोग सीखेंगे और किसी असावधानी के कारण फूट का ख़तरा उतना ही कम होगा। अनेक मज़दूरों को केंद्रीय समिति में रखने से मज़दूरों को हमारा राजकीय कार्यतंत्र, जो एकदम गया-गुज़रा है, सुधारने में मदद मिलेगी। यह कार्यतंत्र हमने वस्तुतः पुरानी हुकूमत से विरासत में ले रखा है, क्योंकि इतनी अल्प अवधि में, ख़ास तौर पर लड़ाई, भुखमरी, आदि के हालात में इसका पुनर्गठन करना बिल्कुल असंभव था। इसलिए उन "आलोचकों" को, जो हंसी उड़ाने या द्वेष भाव से हमारे कार्यतंत्र की कमियां इंगित करते हैं, हम यह कह सकते हैं कि वे आज की क्रांति की परिस्थितियों को बिल्कुल नहीं समझ सकते हैं। पांच साल में तो कार्यतंत्र का पुनर्गठन वैसे भी नहीं किया जा सकता और ख़ास तौर पर उन हालात में, जिनमें हमारे यहां क्रांति हुई। यही बहुत है कि पांच साल में हमने ऐसा राज्य बना लिया है, जिसमें मज़दूर बुर्जुआ वर्ग के ख़िलाफ़ अभियान में किसानों की अगुआई कर रहे हैं, शत्रुतापूर्ण अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में तो यह भी एक विराट कार्य है। लेकिन इस बात को जानते-समझते हुए हमें इस ओर से क़तई आंखें नहीं मूंदनी चाहिए कि हमने अपना प्रशासन कार्यतंत्र सारतः ज़ार से और बुर्जुआ वर्ग से पुराना लिया है और अब शांति हो जाने पर तथा भुखमरी से बचने की न्यूनतम आवश्यकताएं
हो जाने पर हमारा सारा ध्यान कार्यतंत्र को सुधारने पर केंद्रित होना चाहिए।

मैं सोचता हूं कि कुछ दर्जन मज़दूर केंद्रीय समिति का सदस्य बनकर अन्य किन्हीं भी लोगों से अधिक अच्छी तरह हमारे कार्यतंत्र की जांच, सुधार और पुनर्गठन का काम कर सकते हैं। मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था, जिसे शुरू में यह काम सौंपा गया था, इसे पूरा करने

में बिल्कुल असमर्थ रही है और अब इसका उपयोग केंद्रीय समिति के इन सदस्यों की "उपांग" संस्था या निश्चित शर्तों पर सहायक संस्था के तौर पर किया जा सकता है। मेरे विचार में, केंद्रीय समिति में शामिल मज़दूर मुख्यतः उन मज़दूरों में से नहीं होने चाहिए, जिन्होंने सोवियत संस्थाओं में लंबा काम किया है (पत्र के इस अंश में मैंने मज़दूरों में सर्वत्र किसानों को भी शामिल माना है), क्योंकि इन मज़दूरों में वही परंपराएं और वही पूर्वाग्रह बन गये हैं, जिनसे हमें संघर्ष करना है।

केंद्रीय समिति के मज़दूर सदस्यों में मुख्यतः वे मज़दूरों होने चाहिए, जो पिछले पांच वर्षों में हमारे यहां सोवियत कार्यालयों के कर्मचारी बन गये मज़दूरों के संस्तर से नीचे के हों तथा आम मज़दूरों व किसानों के अधिक निकट हों, लेकिन जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शोषकों की श्रेणी में न आते हों। मैं सोचता हूं कि केंद्रीय समिति की सभी बैठकों में, पोलिटब्यूरो की सभी बैठकों में भाग लेते हुए, केंद्रीय समिति के सभी काग़ज़ात पढ़ते हुए ऐसे मज़दूर सोवियत व्यवस्था के निष्ठावान समर्थकों का ऐसा कर्मीवृंद बना सकते हैं, जो एक तो स्वयं केंद्रीय समिति को ही स्थिरता प्रदान कर सकेगा और दूसरे, प्रशासन कार्यतंत्र के नवीकरण और परिष्कार पर सचमुच काम कर सकेगा।

लेनिन

ल० फ़० द्वारा लिपिबद्ध
२६.१२.१६२२

७

नोट आगे जारी
२६ दिसंबर, १६२२

(केंद्रीय समिति के सदस्यों की संख्या बढ़ाने के बारे में परिशिष्ट)

सदस्यों की संख्या बढ़ाते हुए केंद्रीय समिति को, मेरे विचार में मुख्यतः हमारे कार्यतंत्र की, जो बिल्कुल गया-गुज़रा है, जांच और

सुधार की ओर भी ध्यान देना चाहिए। इसके लिए हमें उच्चतः प्रशिक्षित विशेषज्ञों की सेवाओं का लाभ उठाना चाहिए और इन विशेषज्ञों को लाना मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था का कार्यभार होना चाहिए।

पर्याप्त जानकारी रखनेवाले इन जांच-विशेषज्ञों और केंद्रीय समिति के इन नये सदस्यों के बीच ताल-मेल कैसे बिठाया जाये – यह समस्या व्यावहारिक रूप से हल की जानी चाहिए।

मुझे लगता है कि मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था ने (अपने विकास के परिणामस्वरूप और इसके विकास पर हमारी उलझन के परिणामस्वरूप) अंततोगत्वा बस वही पेश किया है, जो आज हम देख रहे हैं, यह है – विशेष मामलों की जन-कमिसारियत से केंद्रीय समिति के सदस्यों के विशेष कार्यों की ओर संक्रमण की अवस्था; हर किसी का और हर काम का निरीक्षण करनेवाली संस्था से अल्प-संख्यक किंतु उत्तम कोटि के निरीक्षकों के, जिन्हें अच्छा पारिश्रमिक मिलना चाहिए, समुच्चय की ओर संक्रमण की अवस्था तक (आज के ज़माने में जब हर चीज़ की क़ीमत देनी चाहिए और इन हालात में, जब निरीक्षक उन संस्थाओं में काम करते हैं, जो उन्हें अधिक पारिश्रमिक देती हैं – ऐसे में अच्छा पारिश्रमिक ख़ास तौर पर ज़रूरी है)।

यदि केंद्रीय समिति के सदस्यों की संख्या उचित ढंग से बढ़ायी जायेगी और वे ऐसे उच्चतः प्रशिक्षित विशेषज्ञों तथा मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के सभी क्षेत्रों में प्रतिष्ठा प्राप्त सदस्यों की मदद से राज्य संचालन की शिक्षा वर्ष प्रति वर्ष पायेंगे, तो मेरे विचार में हम इस कार्यभार को, जिसे इतने समय से निभा नहीं पा रहे हैं, सफलता-पूर्वक पूरा कर लेंगे।

सो, अंततः – केंद्रीय समिति में १०० तक सदस्य और उनके अधिक से अधिक ४००-५०० सहायक, उनके निर्देश पर निरीक्षण करनेवाले मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के सदस्य।

लेनिन

२९ दिसंबर, २२
म० व० द्वारा, लिपिबद्ध

खंड ४५,
पृ० ३४३-३४८,
३५४-३५५

हमें मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था का पुनर्गठन किस प्रकार करना चाहिए

(बारहवीं पार्टी कांग्रेस को सुझाव)

इसमें संदेह नहीं है कि मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था हमारे लिए एक बहुत बड़ी समस्या है, और अभी तक इस समस्या को हल नहीं किया गया है। मेरा ख़्याल है कि जो साथी मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था की उपयोगिता या आवश्यकता से इनकार करते हुए इस समस्या को हल कर रहे हैं, वे ग़लती पर हैं। लेकिन मैं साथ ही इससे इनकार नहीं करता कि हमारा राजकीय कार्यतंत्र तथा उसके सुधार की समस्या अत्यधिक कठिन है, कि यह समस्या अभी समाधान से बहुत दूर है और साथ ही अत्यंत तात्कालिक है।

विदेशी मामलों की जन-कमिसारियत को छोड़कर हमारा राजकीय कार्यतंत्र बहुत हद तक अतीत का अवशेष है, जिसमें कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ है। उसे ऊपर से थोड़ा-सा बना-संवार दिया गया है, लेकिन बाक़ी सभी पहलुओं में वह पुराने राजकीय कार्यतंत्र का ही विशिष्ट अवशेष है। और मेरा ख़्याल है कि उसका सचमुच पुनरुद्धार करने का रास्ता निकालने के लिए हमें अपने गृह युद्ध के अनुभव का सहारा लेना चाहिए।

गृह युद्ध की अधिक नाजुक घड़ियों में हमने कैसे काम किया था ?

हमने पार्टी की श्रेष्ठतम शक्तियों को लाल सेना में जमा किया ; हमने अपने बेहतरीन मज़दूरों को लामबंद किया ; और हम नयी शक्तियों को पाने के लिए अपने अधिनायकत्व के गहनतम स्रोतों की ओर अभिमुख हुए।

मेरा विश्वास है कि मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था को पुनर्गठित करने के साधन पाने के लिए हमें उन्हीं स्रोतों की ओर मुड़ना चाहिए। मेरा सुझाव है कि हमारी बारहवीं पार्टी कांग्रेस हमारे केंद्रीय नियंत्रण आयोग के कुछ विस्तार पर आधारित पुनर्गठन की निम्नलिखित योजना स्वीकार करे।

हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति का पूर्णाधिवेशन एक प्रकार के सर्वोच्च पार्टी सम्मेलन का रूप ग्रहण करने की प्रवृत्ति अभी से प्रकट कर रहा है। यह अधिवेशन दो महीने में एक बार से अधिक नहीं होता और इस बीच केंद्रीय समिति की ओर से रोज़मर्रा का काम, जैसा कि आप जानते हैं, हमारा पोलिटब्यूरो, हमारा संगठन ब्यूरो, हमारा सेक्रेटेरियट, वग़ैरह करते हैं। मेरा ख़्याल है कि हमने जो रास्ता अपनाया है, उस पर हमें निरंतर चलते रहना चाहिए और केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशनों को दो महीने में एक बार केंद्रीय नियंत्रण आयोग के साथ संयुक्त रूप से बुलाये जानेवाले सर्वोच्च पार्टी सम्मेलनों में निश्चित रूप से बदल देना चाहिए। केंद्रीय नियंत्रण आयोग को पुनर्गठित मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के मुख्य अंग के साथ निम्नलिखित शर्तों पर मिला देना चाहिए।

मेरा प्रस्ताव है कि कांग्रेस केंद्रीय नियंत्रण आयोग के ७५-१०० (आंकड़े निस्संदेह अनुमानित हैं) नये सदस्य चुन ले। ये नये सदस्य मज़दूर और किसान होने चाहिए और उन्हें पार्टी जांच-परख की उसी प्रक्रिया से गुज़रना चाहिए, जिससे केंद्रीय समिति के साधारण सदस्य गुज़रते हैं, क्योंकि वे उन्हीं अधिकारों का उपभोग करेंगे, जिनका केंद्रीय समिति के सदस्य करते हैं।

दूसरी ओर, मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के कर्मचारियों की संख्या घटाकर ३०० या ४०० कर देनी चाहिए, जिन्हें कर्त्तव्यनिष्ठा तथा राजकीय कार्यतंत्र के ज्ञान की दृष्टि से विशेष रूप से परख लिया गया हो। यह भी ज़रूरी है कि सामान्यतः श्रम के, और विशेषतः प्रशासनिक काम, दफ़्तर के काम, वग़ैरह के, वैज्ञानिक संगठन के सिद्धांतों के ज्ञान की दृष्टि से भी उनकी विशेष रूप से परीक्षा ली जाये।

मेरी राय में केंद्रीय नियंत्रण आयोग के साथ मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था को इस प्रकार मिलाने से दोनों ही संस्थाओं को फ़ायदा पहुंचेगा। एक ओर, तो मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था की प्रतिष्ठा इतनी बढ़ जायेगी कि उसका दर्जा किसी भी सूरत में विदेशी मामलों की जन-कमिसारियत से नीचे न होगा। दूसरी ओर, केंद्रीय नियंत्रण आयोग के साथ मिलकर हमारी केंद्रीय समिति सर्वोच्च पार्टी सम्मेलन का रूप ग्रहण करने का मार्ग निश्चित रूप से अपनायेगी; वास्तव

में इस मार्ग को उसने अभी से अपना लिया है और अब उसे इस मार्ग पर अंत तक चलते जाना है, ताकि वह अपने कार्यभारों को दो दृष्टियों से ठीक से पूरा कर सके: स्वयं **उसके** अपने पद्धतिसंगत, व्यावहारिक तथा विधिवत् संगठन तथा कार्य की दृष्टि से और हमारे बेहतरीन मज़दूरों और किसानों के माध्यम से विशाल जनता के साथ संपर्क बनाये रखने की दृष्टि से।

मैं पहले से कह सकता हूं कि इस बात पर वे हलक़े प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से आपत्ति कर सकते हैं, जिन्होंने हमारे राजकीय कार्यतंत्र के पुराने, जीर्ण-शीर्ण रूप को बनाये रखा है, जो इस बात का आग्रह करते हैं कि उसका वर्तमान, बिल्कुल ही असंभव तथा अशोभनीय क्रांतिपूर्व रूप अक्षुण्ण रखा जाये (प्रसंगवश, यह भी कह दूं कि आज हमें आमूल सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए अपेक्षित समय का अनुमान करने का अवसर प्राप्त है, जो इतिहास में विरले ही कभी प्राप्त होता है, आज हम यह स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि पांच वर्षों में **क्या** पूरा किया जा सकता है और किस काम के लिए कहीं ज़्यादा वक़्त चाहिए)।

उनकी आपत्ति यह हो सकती है कि मेरे द्वारा प्रस्तावित परिवर्तन का परिणाम अव्यवस्था के अतिरिक्त कुछ न होगा, कि केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्य सभी संस्थाओं का चक्कर लगाते रहेंगे और उन्हें यह न मालूम हो पायेगा कि उन्हें कहां और क्यों और किसके पास जाना चाहिए, और इससे सर्वत्र विसंगठन उत्पन्न होगा और कर्मचारी अपने प्रतिदिन के काम से विरत होंगे, आदि, आदि।

मेरा ख़्याल है कि इस आपत्ति का कुत्सित स्रोत इतना प्रत्यक्ष है कि इसका उत्तर देना आवश्यक नहीं है। कहने की ज़रूरत नहीं कि केंद्रीय नियंत्रण आयोग के अध्यक्षमंडल को, मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के जन-कमिसार तथा उनके मंडल को (और उपयुक्त मामलों में केंद्रीय समिति के सेक्रेटेरियट को भी) अपनी कमिसारियत को ठीक से संगठित करने तथा केंद्रीय नियंत्रण आयोग के साथ-साथ उसे सुचारु रूप से क्रियाशील बनाने के लिए वर्षों तक अनवरत प्रयास करना होगा। मेरी राय में मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के जन-कमिसार और साथ ही, उनका पूरा मंडल बरक़रार रह सकते हैं (और उन्हें रहना चाहिए) और वे केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सभी

सदस्यों के काम सहित, जो "उनके अधीन किये जायेंगे", पूरी मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के काम का निर्देशन करेंगे। मेरी योजना के अनुसार मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के जो तीन-चार सौ कर्मचारी रह जायेंगे, उन्हें एक ओर, तो संस्था के अन्य सदस्यों के लिए और केंद्रीय नियंत्रण आयोग के अतिरिक्त सदस्यों के लिए ख़ालिस दफ़्तर के काम करने चाहिए; और दूसरी ओर, उन्हें अत्यन्त निपुण होना चाहिए, विशेष रूप से विश्वस्त तथा आज़माये हुए होना चाहिए, और उन्हें ऊंची तनख़्वाहें मिलनी चाहिए, ताकि वे निरीक्षण संस्था के अधिकारियों की सही अर्थों में वर्तमान दुर्दशा (वैसे तो दुर्दशा तो यहां हल्का शब्द ही है) से मुक्ति पा सकें।

मुझे विश्वास है कि उपरोक्त सीमा तक कर्मचारियों की संख्या घटा देने से मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के कर्मचारियों की कार्य-क्षमता में और सारे कार्य के गुण में बहुत बड़ी वृद्धि होगी, और इसकी बदौलत जन-कमिसार तथा उनके मंडल के सदस्य संगठन के काम पर और इस काम की प्रभावकारिता की उस व्यवस्थित तथा निरंतर वृद्धि पर अपने प्रयास पूरी तरह संकेंद्रित कर सकेंगे, जो हमारी मज़दूर किसान सत्ता तथा हमारी सोवियत व्यवस्था के लिए बिल्कुल ही ज़रूरी है।

दूसरी ओर, मेरा यह भी ख़्याल है कि मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के जन-कमिसार को श्रम-संगठन के उच्चतर संस्थानों को (केंद्रीय श्रम-संस्थान, वैज्ञानिक श्रम-संगठन संस्थान, आदि को) अंशतः एक दूसरे के साथ विलयित करने तथा अंशतः समन्वित करने की दिशा में क्रियाशील होना चाहिए। हमारे जनतंत्र में इस प्रकार के पूरे एक दर्जन संस्थान हैं। अत्यधिक समरूपता तथा उससे प्रेरित विलयन की इच्छा हानिकर होगी। उसके विपरीत, इस क्षेत्र में हमें जिस चीज़ की ज़रूरत है, वह है इन सभी संस्थानों का परस्पर विलयन कर देने और उनकी ठीक-ठीक हद बांध देने के बीच का बुद्धिसंगत तथा व्यावहारिक मध्य मार्ग ढूंढ़ निकालना, जिसके अंतर्गत प्रत्येक संस्थान एक हद तक स्वतंत्र हो।

इस पुनर्गठन से हमारी अपनी केंद्रीय समिति को मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था की अपेक्षा निश्चय ही कम फ़ायदा नहीं पहुंचेगा। वह इस अर्थ में लाभान्वित होगी कि जनसाधारण के साथ उसके संपर्क

अधिक व्यापक होंगे और उसका काम अधिक नियमित तथा अधिक कारगर होगा। और तब पोलिटब्यूरो की बैठकों की तैयारी के लिए अधिक नियमनिष्ठ तथा दायित्वपूर्ण क्रियाविधि लागू करना संभव (तथा आवश्यक) होगा। इन बैठकों में केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्यों को एक निश्चित संख्या में भाग लेना चाहिए, जिसका निर्धारण या तो निश्चित अवधि के लिए या निश्चित संगठनात्मक योजना द्वारा किया गया हो।

केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्यों के बीच कार्य का बंटवारा करते समय मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के जन-कमिसार को आयोग के अध्यक्षमंडल के साथ मिलकर उन पर यह ज़िम्मेदारी आयद करनी चाहिए कि वे या तो पोलिटब्यूरो की बैठकों में भाग लें और उनमें किसी न किसी रूप में विचाराधीन मामलों से संबंधित सभी दस्तावेज़ों की जांच करें, या वे अपने काम का वक़्त सैद्धांतिक अध्ययन में, श्रम-संगठन के वैज्ञानिक तरीक़ों के अध्ययन में लगायें या फिर वे उच्चतर राजकीय संस्थाओं से लेकर निचले स्थानीय निकायों, आदि तक राजकीय कार्यतंत्र के निरीक्षण तथा सुधार के काम में व्यावहारिक रूप में भाग लें।

मेरा यह भी ख़्याल है कि इस राजनीतिक लाभ के अलावा कि इस सुधार के फलस्वरूप केंद्रीय समिति के तथा केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्यों की जानकारी बहुत बेहतर होगी और पोलिटब्यूरो की बैठकों के लिए उनकी कहीं ज़्यादा अच्छी तैयारी होगी (इन बैठकों में जिन मामलों पर बहस होनी है, उनके बारे में सभी दस्तावेज़ केंद्रीय समिति तथा केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्यों के पास बैठक के कम से कम एक दिन पहले ज़रूर भेज दिये जाने चाहिए, सिवाय कुछ अत्यंत फ़ौरी मामलों के, जिनके बारे में केंद्रीय समिति तथा केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्यों को सूचित करने तथा इन मामलों को निबटाने के ख़ास तरीक़े निकालने पड़ेंगे), उसके अतिरिक्त यह भी लाभ होगा कि हमारी केंद्रीय समिति में बिल्कुल ही व्यक्तिगत तथा सांयोगिक परिस्थितियों का प्रभाव कम हो जायेगा और इससे फूट का ख़तरा भी कम हो जायेगा।

हमारी केंद्रीय समिति एक अत्यंत केंद्रीकृत तथा उच्च प्रतिष्ठाप्राप्त ग्रुप बन गयी है, परंतु जिन परिस्थितियों में यह ग्रूप काम कर रहा

है, वे उसकी प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं हैं। मैंने जिस सुधार का सुझाव दिया है, उससे यह दोष दूर करने में सहायता मिलेगी और केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्यों को, जिनका यह कार्यभार होगा कि वे एक निश्चित संख्या में पोलिटब्यूरो की बैठकों में भाग लें, एक सुगठित ग्रूप के रूप में काम करना होगा, जो निरपवाद रूप से किसी भी व्यक्ति के प्रभाव को, चाहे वह जनरल सेक्रेटरी हो या केंद्रीय समिति का कोई और सदस्य, प्रश्न पूछने, दस्तावेज़ जांचने, और सामान्यत: तमाम चीज़ों के बारे में अपने को पूरी तरह परिचित रखने और कार्य के उचित संचालन पर कठोरतम नियंत्रण रखने में बाधक नहीं बनने देगा।

निस्संदेह, हमारे सोवियत जनतंत्र में सामाजिक व्यवस्था दो वर्गों के सहयोग पर आधारित है: मज़दूरों और किसानों के सहयोग पर, जिसमें "नयी आर्थिक नीतिवालों" को, अर्थात बुर्जुआ वर्ग को अब कुछ शर्तों पर भाग लेने की अनुमति दी गयी है। यदि इन दोनों वर्गों के बीच गंभीर वर्गीय मतभेद उत्पन्न होते हैं, तो फूट पड़ जाना अवश्यम्भावी होगा, परंतु हमारी सामाजिक व्यवस्था में ऐसी फूट के लिए आधार उत्पन्न होना अनिवार्य नहीं है, और हमारी केंद्रीय समिति और केंद्रीय नियंत्रण आयोग का और साथ ही समग्र रूप से हमारी पार्टी का यह प्रमुख कार्यभार है कि वे उन परिस्थितियों पर कड़ी नज़र रखें, जो फूट पैदा कर सकती हैं और उन्हें पहले से ही निष्प्रभाव कर दें, क्योंकि अंततोगत्वा हमारे जनतंत्र का भाग्य इस पर निर्भर होगा कि किसान जनसाधारण मज़दूर वर्ग का साथ देंगे, उसके साथ दोस्ती निभायेंगे या वे "नयी आर्थिक नीतिवालों" को, यानी नये बुर्जुआ वर्ग को इस बात का मौक़ा देंगे कि वे उनके और मज़दूर वर्ग के बीच दरार डालें और उन्हें मज़दूर वर्ग से तोड़कर अलग कर लें। हम यह विकल्प जितने स्पष्ट रूप से देखेंगे, हमारे मज़दूर और किसान जितने स्पष्ट रूप से उसे समझेंगे, यह संभावना उतनी ही अधिक होगी कि हम उस फूट से बच सकेंगे, जो सोवियत जनतंत्र के लिए घातक सिद्ध हो सकती है।

२३ जनवरी, १९२३

खंड ४५,
पृ० ३८३-३८८

चाहे कम हो, पर बेहतर हो

हमारे राजकीय कार्यतंत्र को बेहतर बनाने के सवाल के बारे में मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था को, मेरी राय में, मात्रा के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए और न जल्दबाज़ी ही करनी चाहिए। अब तक अपने राजकीय कार्यतंत्र के गुण के बारे में विचार और फ़िक्र करने की हमें इतनी कम मोहलत मिली है कि उसे विशेष गंभीरता के साथ बनाने और मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था में ऐसी मानवीय सामग्री संकेंद्रित करने की चिंता करना न्यायोचित ही होगा, जो समसामयिक क़िस्म की हो, अर्थात जो श्रेष्ठतम पश्चिमी यूरोपीय मानदंडों से किसी भी प्रकार कम न हो। ज़ाहिर है कि समाजवादी जनतंत्र के लिए यह शर्त बहुत ही मामूली है; लेकिन पहले पांच वर्ष के अनुभव ने हमारे दिमाग़ों में अविश्वास तथा शंका की भावनाएं ठूंस-ठूंसकर भर दी हैं। ये गुण दिल पर बरबस असर, उदाहरण के लिए, उस समय करते हैं, जब हम लोगों को बहुत ज़्यादा और बहुत हल्के-फुल्के ढंग से "सर्वहारा संस्कृति" की बातें बघारते सुनते हैं। शुरू के लिए हमें सच्ची बुर्जुआ संस्कृति ही काफ़ी होनी चाहिए, शुरू के लिए हमें इस बात से ही ख़ुशी होनी चाहिए कि हम पूंजीवाद पूर्व भोंडे ढंग की संस्कृति, अर्थात नौकरशाही या भूदासता, आदि की संस्कृति के बिना काम चला लें। संस्कृति के मामले में जल्दबाज़ी करने और उथल-पुथल मचा देनेवाली कार्रवाइयों से ज़्यादा बुरी कोई दूसरी चीज़ नहीं हो सकती। हमारे बहुत-से नवयुवक साहित्यिकों तथा कम्युनिस्टों को यह बात अच्छी तरह अपने दिमाग़ में बिठा लेनी चाहिए।

इस तरह, जहां तक हमारे राजकीय कार्यतंत्र का सवाल है, हमें अपने पिछले अनुभव से यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि धीरे-धीरे आगे बढ़ना ही बेहतर होगा।

हमारे राजकीय कार्यतंत्र के संबंध में मामला यदि घिनौना न कहा जाये, तो इतना शोचनीय है कि हमें सबसे पहले बहुत ध्यानपूर्वक इस बात पर विचार करना चाहिए कि उसके दोषों को किस प्रकार दूर किया जाये, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि इन दोषों की जड़ें उस अतीत में जमी हुई हैं, जिसका तख़्ता तो उलट दिया गया है, पर जिससे छुटकारा नहीं पाया जा सका है और जो अभी तक सुदूर अतीत की संस्कृति नहीं बना है। मैंने संस्कृति की बात यहां जान-बूझकर कही है, क्योंकि इन मामलों में हम केवल उन्हीं चीज़ों को अपनी उपलब्धियां मान सकते हैं, जो हमारी संस्कृति का, हमारे जीवन का, हमारी आदतों का अंग बन चुकी हों। हम कह सकते हैं कि हमारे देश की सामाजिक व्यवस्था में जो कुछ अच्छा है, उसका अच्छी तरह अध्ययन नहीं किया गया है, उसे समझा नहीं गया है, उसे महसूस नहीं किया गया है, उसे जल्दी में पकड़ लेने की कोशिश की गयी है, उसे परखा नहीं गया है, उसे अनुभव की कसौटी पर जांचा नहीं गया है, उसे स्थायी नहीं बनाया गया है, इत्यादि। ज़ाहिर है कि एक क्रांतिकारी युग में, जबकि विकास इतने तूफ़ानी वेग से हो रहा था कि पांच वर्ष के अंदर हम ज़ारशाही से सोवियत व्यवस्था में पहुंच गये, इसके अतिरिक्त कोई दूसरी बात हो भी नहीं सकती थी।

हमें समय रहते होश में आ जाना चाहिए। हमें अत्यधिक तेज़ी से होनेवाली प्रगति को, हर प्रकार की शेख़ीबाज़ी, आदि को बहुत ही शंका की दृष्टि से देखना चाहिए। हम हर घंटे आगे की दिशा में उठाये जानेवाले जिन क़दमों की घोषणा करते हैं, हर मिनट हम जो क़दम उठाते हैं और बाद में चलकर हर सेकंड जिनके बारे में हमें पता चलता है कि वे ठोस, यक़ीनी और समझदाराना क़दम नहीं थे, उन्हें परख लेने की बात हमें सोचनी चाहिए। इस मामले में सबसे हानिकारक चीज़ जल्दबाज़ी होगी। सबसे हानिकारक चीज़ यह होगी कि हम इस बात पर भरोसा कर लें कि हम कम से कम कुछ तो जानते हैं, या इस बात पर कि हमारे यहां किसी भी उल्लेखनीय मात्रा में

वे तत्व मौजूद हैं, जो एक सचमुच नये राजकीय कार्यतंत्र की रचना करने के लिए आवश्यक होते हैं, जो समाजवादी, सोवियत आदि कहलाने के सचमुच योग्य हों।

नहीं, इस प्रकार के कार्यतंत्र और उसके तत्व भी हमारे पास हास्यास्पद हद तक कम हैं; हमें याद रखना चाहिए कि इस कार्यतंत्र का निर्माण करने में समय की किफ़ायत नहीं करनी चाहिए और यह कि उसमें अनेकानेक वर्ष लगाने की ज़रूरत है।

इस कार्यतंत्र का निर्माण करने के लिए हमारे पास कौन-कौन-से तत्व मौजूद हैं? केवल दो। पहला, मज़दूर, जो समाजवाद के लिए संघर्ष में जुटे हुए हैं। ये तत्व काफ़ी सुशिक्षित नहीं हैं। वे हमें बेहतर कार्यतंत्र देना चाहते हैं, पर वे नहीं जानते कि यह कैसे किया जाये। वे यह नहीं कर सकते। वे अभी तक अपने में वह विकास, वह संस्कृति नहीं पैदा कर पाये हैं, जो इसके लिए आवश्यक होती है; और इसके लिए आवश्यकता संस्कृति की ही होती है। इस मामले में एक झटके या हल्ले में, फुर्तीलेपन से या ज़ोर से या आम तौर से किन्हीं भी दूसरे श्रेष्ठतम मानव गुणों से कुछ भी नहीं किया जा सकता। दूसरा तत्व है ज्ञान, शिक्षा, प्रशिक्षण, जो दूसरे राज्यों की तुलना में हमारे पास हास्यास्पद हद तक कम है।

यहां हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हममें यह प्रवृत्ति बहुत अधिक है, कि हम अपने ज्ञान की कमी को उत्साह, जल्दबाज़ी, आदि से पूरा करने की कोशिश करते हैं (या समझते हैं कि उसे पूरा कर सकते हैं)।

अपने राजकीय कार्यतंत्र का नवीकरण करने के लिए हमें अपने लिए हर क़ीमत पर सीखने का, फिर सीखने का और निरंतर अधिकाधिक सीखते जाने का कार्यभार निर्धारित करना चाहिये, और फिर इस बात की जांच करनी चाहिए कि विज्ञान हमारे लिए मुर्दा हरफ़, या एक फ़ैशनेबुल लफ़्फ़ाज़ी बनकर न रह जाये (हमारे यहां ऐसा बहुधा होता है, इसे छिपाने से कोई फ़ायदा नहीं), ताकि विज्ञान हमारे रक्त-मांस का हिस्सा बन जाये, ताकि वह सचमुच और पूरी तरह हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन जाये। सारांश यह कि हमें उन बातों की मांग नहीं करनी चाहिए, जिनकी मांग बुर्जुआ पश्चिमी यूरोप करता है, बल्कि ऐसी बातों की मांग करनी चाहिए,

जो एक ऐसे देश के लिए उपयुक्त तथा उचित हों, जिसने विकसित होकर समाजवादी देश बन जाने का मार्ग अपनाया है।

उपरोक्त बातों का निष्कर्ष यह है कि हमें मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था को अपने राजकीय कार्यतंत्र को सुधारने के हथियार के रूप में सचमुच एक अनुकरणीय संस्था बना देना चाहिए।

उसे आवश्यक उच्च स्तर तक पहुंचाने के लिए हमें इस नियम का पालन करना चाहिए: सात बार नापो, तब एक बार काटो।

इसके लिए नई जन-कमिसारियत का निर्माण करने में हमारी सामाजिक व्यवस्था में जो कुछ सबसे अच्छा है, उसका उपयोग अत्यधिक सतर्कता, विवेक तथा जानकारी के साथ करना चाहिए।

इसके लिए हमारी समाज व्यवस्था में जो सबसे अच्छे तत्व हैं– यानी, पहले तो, उन्नत मज़दूर और दूसरे, सचमुच सुशिक्षित और जागृत तत्व, जिनके बारे में हम दावे के साथ कह सकते हैं कि वे किसी भी बात को परखे बिना नहीं मानेंगे और एक भी शब्द ऐसा नहीं कहेंगे, जो उनके अंत:करण के विरुद्ध हो – उन्हें किसी भी कठिनाई को स्वीकार करने में झिझकना नहीं चाहिए और जो लक्ष्य गंभीरता-पूर्वक उन्होंने अपने सामने रखा है, उसे पूरा करने के लिए किसी भी संघर्ष से झिझकना नहीं चाहिए।

हमने पांच बरस से अपने राजकीय कार्यतंत्र को बेहतर बनाने की कोशिश में एक हंगामा मचा रखा है, लेकिन वह बस हंगामा ही रहा है, जिसने पांच वर्ष तक अपनी नामाक़ूलियत, या अपनी व्यर्थता अथवा हानिकरता भी साबित की है। इस हंगामे से प्रतीत यही होता था कि हम कुछ कर रहे हैं; लेकिन वास्तव में उसने केवल हमारी संस्थाओं और हमारे मस्तिष्कों को गंदा ही किया है।

अब समय आ गया है कि इन चीज़ों को बदला जाये।

हमें इस नियम का पालन करना चाहिए: संख्या में चाहे कम हो, पर गुण की दृष्टि से बेहतर हो। हमें इस नियम का पालन करना चाहिए: यह बेहतर है कि दो बरस या तीन बरस में भी हमें ठोस मानवीय सामग्री मिल जाये, बजाय इसके कि बिना उसकी आशा के जल्दी-जल्दी काम किया जाये।

मैं जानता हूं कि इस नियम पर दृढ़ रहना और हमारी जो परि-स्थितियां हैं, उनमें इसे लागू करना कठिन होगा। मैं जानता हूं कि

हज़ारों चोर-दरवाज़ों से इसका प्रतिकूल नियम ज़बरदस्ती अपने लिए जगह बना लेगा। मैं जानता हूं कि बहुत सख़्त मुक़ाबला करना पड़ेगा, कि भूत की तरह चिपटे रहने की योग्यता का परिचय देना पड़ेगा, कि कम से कम पहले कुछ वर्षों के दौरान इस क्षेत्र में काम करना बहुत ही नाशुक्रा होगा। फिर भी मुझे पूरा विश्वास है कि केवल इसी प्रकार के प्रयास से हम अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे; और यह कि केवल इस लक्ष्य को प्राप्त करके ही हम एक ऐसे जनतंत्र की स्थापना कर सकेंगे, जो सचमुच सोवियत, समाजवादी, आदि कहलाने के योग्य हो।

शायद कुछ पाठकों ने यह सोचा हो कि मैंने अपने पहले लेख* में दृष्टांत के रूप में जिन आंकड़ों का हवाला दिया था, वे बहुत ही अपर्याप्त थे। मुझे विश्वास है कि उन आंकड़ों की अपर्याप्तता साबित करने के लिए बहुत-से हिसाब लगाये जा सकते हैं। परंतु मैं समझता हूं कि एक चीज़ ऐसी है, जिसे इन सभी और ऐसे सभी अन्य हिसाबों से अधिक महत्व दिया जाना चाहिए: वास्तविक आदर्श गुण का हित।

मैं समझता हूं कि वह समय आख़िरकार आ गया है जब हमें अपने राजकीय कार्यतंत्र के ऊपर पूरी संजीदगी के साथ कार्य करना चाहिए; और इस मामले में सबसे अधिक हानिकारक कार्य जल्दबाज़ी होगी। यही कारण है कि मैं इन आंकड़ों को बढ़ाने के विरुद्ध बहुत चेतावनी देता हूं। इसके विपरीत, मेरी राय में हमें आंकड़ों के मामले में यहां ख़ास तौर से कंजूस होना चाहिए। हमें साफ़-साफ़ यह कह देना चाहिए कि इस समय मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था की जन-कमिसारियत का रत्ती भर भी मान नहीं है। हर आदमी इस बात को जानता है कि हमारी मज़दूर किसान निरीक्षण के निकायों से ज़्यादा बुरे ढंग से संगठित कोई दूसरे निकाय नहीं हैं और यह कि वर्तमान परिस्थितियों में इस जन-कमिसारियत से किसी बात की आशा नहीं की जा सकती। यदि हम कुछ ही वर्षों के भीतर सचमुच एक ऐसी संस्था की स्थापना करना चाहते हैं जो, पहले तो एक अनुकरणीय संस्था हो, दूसरे, हर आदमी का पूरा विश्वास प्राप्त कर ले और तीसरे, हर आदमी के सामने यह बात साबित कर दे कि हमने केंद्रीय

---

* देखें इस पुस्तक के पृ० १६६-१७४। – सं०

नियंत्रण आयोग जैसी उच्च संस्था के काम को सचमुच सार्थक सिद्ध किया, तो हमें उक्त बात को अच्छी तरह याद रखना चाहिए। मेरी राय में हमें कर्मचारियों की संख्या के बारे में सभी आम मानकों को फ़ौरन और अटल तरीक़े से रद्द कर देना चाहिए। हमें मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के लिए विशेष सावधानी के साथ कर्मचारियों को चुनना चाहिए और वह भी कड़ी से कड़ी आज़माइश के आधार पर। दरअसल किस लिए इस प्रकार की जन-कमिसारियत की स्थापना की जाये, जो किसी तरह मर-जीकर अपना काम चलाती हो, जिसे किसी का भी विश्वास प्राप्त न हो और जिसकी बात को लगभग कोई भी महत्व न दिया जाता हो? मैं समझता हूं कि पुनर्निर्माण के जिस काम की बात हम इस समय सोच रहे हैं, उसे आरंभ करने में हमारा मुख्य उद्देश्य इन सब चीज़ों से बचना है।

जिन मज़दूरों को हम केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्य नियुक्त कर रहे हैं, वे ऐसे कम्युनिस्ट होने चाहिए, जिन पर कोई उंगली न उठा सके, और मैं समझता हूं कि उन्हें उनके काम के तरीक़ों तथा उद्देश्यों की शिक्षा देने के लिए हमें अभी बहुत कुछ करना है। इसके अलावा, इस काम में सहायता देने के लिए एक निश्चित संख्या में सचिव होने चाहिए, जिन्हें काम पर नियुक्त करने से पहले तीन बार परख लिया जाना चाहिए। आख़िरी बात यह कि कुछ असाधारण परिस्थितियों में जिन पदाधिकारियों को हम मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के कर्मचारियों के रूप में सीधे-सीधे स्वीकार करें, उन्हें निम्नलिखित शर्तों को पूरा करना चाहिए –

पहली, यह कि कई कम्युनिस्ट उनकी सिफ़ारिश करें;

दूसरी, वे हमारे राजकीय कार्यतंत्र के बारे में जानकारी की परीक्षा में उत्तीर्ण हों;

तीसरी, वे हमारे राजकीय कार्यतंत्र संबंधी सिद्धांतों की, प्रशासन के विज्ञान की, दफ़्तर के प्रतिदिन के काम, आदि की बुनियादी बातों की परीक्षा में उत्तीर्ण हों;

चौथी, वे केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्यों के साथ और स्वयं अपने सेक्रेटेरियट के साथ इतने अधिक सामंजस्य के साथ काम करें कि हम इस पूरे कार्यतंत्र के काम के बारे में पूरी तरह ज़मानत कर सकें।

मैं जानता हूं कि ये शर्तें असाधारण रूप से कड़ी हैं और मुझे

बहुत भय है कि मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के अधिकतर "व्यावहारिक" कार्यकर्ता यह कहेंगे कि इन शर्तों को पूरा करना असंभव है, या वे उनकी खिल्ली उड़ायेंगे। परंतु मैं मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के किसी भी वर्तमान प्रधान से, या किसी भी ऐसे व्यक्ति से, जिसका उस संस्था से कोई भी संबंध है, पूछना चाहता हूं कि क्या वे ईमानदारी के साथ मुझे यह बता सकते हैं कि मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था जैसी जन-कमिसारियत का क्या व्यावहारिक उपयोग है? मैं समझता हूं कि इस प्रश्न से उसे चीज़ों को उनके सही अनुपात में देखने की क्षमता प्राप्त होगी। या तो मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था जैसे आशा-रहित कार्यों का पुनर्संगठन करने की कोशिश करना, जो हमारे यहां बहुत ज़्यादा हो चुकी है, बिल्कुल बेकार है, या फिर हमें धीमे, कठिन तथा असाधारण तरीक़ों से, और इन तरीक़ों को बार-बार परखकर किसी सचमुच अनुकरणीय चीज़ का निर्माण करने का सचमुच बीड़ा उठा लेना चाहिए, एक ऐसी चीज़ का निर्माण करने का बीड़ा, जिसे केवल उसके पद तथा नाम के कारण ही नहीं, बल्कि उसके गुणों के कारण हर आदमी सम्मान की दृष्टि से देखे।

यदि हम अपने अंदर धैर्य नहीं पैदा कर सकते, यदि हम इस काम में कई वर्ष लगाने के लिए तैयार नहीं हैं, तो अच्छा यही होगा कि हम इस काम को शुरू ही न करें।

मेरी राय में हमें यह करना चाहिए कि हमने जो अनेक उच्च श्रम संस्थान तथा दूसरी संस्थाएं बना ली हैं, उनमें से कुछ न्यूनतम संस्थाओं को चुनकर यह देखें कि उनका संगठन उचित ढंग से हुआ है कि नहीं और इस काम को इस तरह आगे बढ़ायें कि वह आधुनिक विज्ञान के उच्चतम मानकों पर आधारित हो और हमें उसकी सारी ज़मानतें दे। यदि हम यह कर लें, तो यह आशा करना कोरी कल्पना न होगा कि कुछ ही वर्षों के भीतर हमारे पास एक ऐसी संस्था हो जायेगी, जो अपने कामों को उचित ढंग से पूरा करने की स्थिति में होगी, अर्थात यह कि मज़दूर वर्ग का, रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का और हमारे जनतंत्र की पूरी जनसंख्या का विश्वास प्राप्त करके वह हमारे राजकीय कार्यतंत्र को सुधारने के लिए सुव्यवस्थित ढंग से तथा डटकर काम कर सकेगी।

इसके लिए जिस तैयारी की ज़रूरत है, उसका काम फ़ौरन शुरू

किया जा सकता है। यदि मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था की जन-कमिसारियत पुनर्संगठन की वर्तमान योजना को स्वीकार करती है, तो वह फ़ौरन इसकी तैयारी के क़दम उठा सकती है और उसकी पूर्ति होने तक सुव्यवस्थित ढंग से, बिना किसी जल्दी के और, जो कुछ किया जा चुका है, उसे बदलने में किसी प्रकार का संकोच किये बिना, काम कर सकती है।

सारे अधकचरे हल इस मामले में हद दर्जे हानिकारक सिद्ध होंगे। मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के कर्मचारियों की संख्या के सभी मानक, जो किसी दूसरी बात को ध्यान में रखकर निर्धारित किये जायेंगे, वास्तव में पुराने नौकरशाही विचारों पर, पुराने पूर्वाग्रहों पर आधारित होंगे, जिनकी पहले ही निंदा की जा चुकी है, जिनका हर जगह मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है, इत्यादि।

वास्तव में, समस्या इस प्रकार है:

या तो अब हम यह साबित कर दें कि हमने राज्य के निर्माण के बारे में संजीदगी के साथ कुछ सीख लिया है (पांच वर्ष में कुछ तो सीख ही लेना चाहिए था), या फिर हम यह साबित कर दें कि हम अभी उसके लिए परिपक्व नहीं हुए हैं। यदि बादवाली बात सच है, तो बेहतर है कि हम इस काम में हाथ ही न डालें।

मैं समझता हूं कि इस समय हमारे पास जो मानवीय सामग्री है, उसको देखते हुए यह सोचना गुस्ताख़ी नहीं होगी कि हमने इतना काफ़ी सीख लिया है कि कम से कम एक जन-कमिसारियत का नवनिर्माण सुव्यवस्थित ढंग से कर सकते हैं। यह सच है कि हमारे पूरे राजकीय कार्यतंत्र का निर्माण इसी जन-कमिसारियत को आदर्श मानकर किया जायेगा।

हमें फ़ौरन आम तौर से श्रम-संगठन के बारे में और ख़ास तौर से प्रशासनिक श्रम-संगठन के बारे में दो या इससे अधिक पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए एक प्रतियोगिता की घोषणा कर देनी चाहिए। येर्मान्स्की की जो पुस्तक हमारे यहां प्राप्त है, उसे हम आधार के तौर पर सामने रख सकते है, हालांकि प्रसंगवश यह भी बता दिया जाना चाहिए कि येर्मान्स्की की सहानुभूति स्पष्टतः मेंशेविक विचारधारा के साथ है और वे सोवियत सत्ता के लिए उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें संकलित करने के लिए योग्य नहीं हैं। केर्जेंत्सेव की हाल की पुस्तक को भी हम

आधार मान सकते हैं और कुछ दूसरी पाठ्यपुस्तकें भी उपलब्ध हैं, जो उपयोगी हो सकती हैं।

हमें कई प्रशिक्षित तथा ईमानदार लोगों को इस समस्या से संबंधित साहित्य जमा करने के लिए और इस समस्या का अध्ययन करने के लिए जर्मनी या इंगलैंड भेजना चाहिए। मैंने इंगलैंड का नाम इसलिए लिया है कि शायद लोगों को अमरीका या कनाडा भेजना असंभव हो।

हमें मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था में नौकरी के उम्मीदवारों के वास्ते परीक्षाओं का एक प्राथमिक कार्यक्रम तैयार करने के लिए एक आयोग नियुक्त करना चाहिए; केंद्रीय नियंत्रण आयोग में नौकरी के उम्मीदवारों के वास्ते भी हमें यही करना चाहिए।

ज़ाहिर है कि इन और ऐसी ही अन्य कार्रवाइयों से मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के जन-कमिसार या बोर्ड के लिए, या केंद्रीय नियंत्रण आयोग के अध्यक्ष-मंडल के लिए कोई कठिनाइयां उत्पन्न नहीं होंगी।

इसके साथ ही केंद्रीय नियंत्रण आयोग के लिए उम्मीदवार चुनने के वास्ते एक तैयारी आयोग नियुक्त किया जाना चाहिए। मैं आशा करता हूं कि इस पद के लिए हमें सभी विभागों के अनुभवी कार्यकर्ताओं में से और अपने उच्च सोवियत शिक्षालयों के छात्रों में से काफ़ी से ज़्यादा उम्मीदवार मिल जायेंगे। किसी भी कोटि को पहले से ही छांट देना उचित नहीं होगा। शायद इस संस्था के लिए कई कोटियों के लोगों के मिले-जुले कर्मचारी-मंडल को ही प्रधानता देनी पड़ेगी, जिनमें अनेक गुणों का, विभिन्न योग्यताओं का संयोग हो। फलस्वरूप, उम्मीदवारों की सूची तैयार करने के लिए काफ़ी काम करना पड़ेगा। उदाहरण के लिए, यह बात सबसे कम वांछनीय होगी कि नयी जन-कमिसारियत के कर्मचारी-मंडल में एक ही प्रकार के लोग हों, मिसाल के लिए उनमें केवल ऐसे ही लोग हों, जो चरित्र से क्लर्क हैं, और प्रचारकों के ढंग के लोग न हों, या ऐसे लोग न हों, जिनकी मुख्य विशेषता लोगों से मिलना-जुलना या ऐसे क्षेत्रों में घुस जाना है, जहां इस क्षेत्र में काम करनेवाले कर्मचारी आम तौर से नहीं जाते, इत्यादि।

* * *

मैं समझता हूं कि यदि मैं अपनी योजना की तुलना किसी शैक्षणिक ढंग की संस्था से करूं, तो मैं अपने विचार को सबसे अच्छे ढंग से व्यक्त कर सकूंगा। अपने अध्यक्ष-मंडल के निर्देशन में केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्यों को पोलिटब्यूरो के सभी काग़ज़ात और दस्तावेज़ों की बाक़ायदा जांच करनी चाहिए। इसके साथ ही उन्हें हमारी संस्थाओं में, बहुत छोटी और निजी से लेकर उच्चतम राजकीय संस्थाओं तक में, दफ़्तरी काम की जांच से संबंधित विभिन्न कामों के लिए अपने-अपने समय का उचित ढंग से विभाजन करना चाहिए। अंतिम बात यह कि सिद्धांत का अध्ययन, अर्थात जिस काम में वे जुटना चाहते हैं, उसे संगठित करने के सिद्धांतों का अध्ययन और पुराने साथियों के निर्देशन में या श्रम-संगठन के उच्च शिक्षा-संस्थानों के अध्यापकों के निर्देशन में व्यावहारिक अभ्यास भी उनके कार्य में शामिल होना चाहिए।

परंतु मैं नहीं समझता कि वे अपने आपको इस प्रकार के इल्मी काम तक ही सीमित रख सकेंगे। इसके अतिरिक्त उन्हें अपने को ऐसे कामों के लिए भी तैयार करना पड़ेगा, जिन्हें मैं, बदमाशों को तो नहीं कहूंगा, लेकिन उनके ही जैसे लोगों को पकड़ने और अपनी गति-विधियों तथा रास्तों आदि को छिपाने के लिए विशेष युक्तियां निकालने की तैयारी निस्संकोच कह सकता हूं।

इस प्रकार के सुझाव पश्चिमी यूरोप की सरकारी संस्थाओं में अभूतपूर्व क्रोध, नैतिक आक्रोश, इत्यादि की भावना पैदा करते, परंतु मुझे विश्वास है कि हममें अभी इतनी नौकरशाहियत नहीं आयी है कि हमारे यहां यह सब हो। हमारे यहां नयी आर्थिक नीति[62] अभी तक इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल नहीं हुई है कि हमें इस विचार से सदमा पहुंचे कि कोई पकड़ा जा सकता है। हमारे सोवियत जनतंत्र की स्थापना को अभी इतना थोड़ा अरसा हुआ है और हमारे गिर्द हर तरह के कूड़ा-करकट के ऐसे ढेर पड़े हुए हैं कि इन्हें साफ़ करने के लिए यदि हम कुछ चालाकियों का सहारा लेते हैं, छानबीन का सहारा लेते हैं, कभी-कभी दूर के साधनों या घुमावदार रास्तों का उपयोग करते हैं, तो इससे किसी को कोई सदमा नहीं

पहुंचेगा और यदि सदमा पहुंचने की बात किसी को सूझे भी, तो हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि ऐसे व्यक्ति पर सभी लोग हंसेंगे।

हमें यह आशा करनी चाहिए कि हमारी नयी मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था में वह दोष नहीं होगा, जिसे फ़्रांसीसी pruderie कहते हैं, जिसे हम हास्यास्पद नख़रेबाज़ी या हास्यास्पद चोचलेबाज़ी कह सकते हैं और जो सोवियत संस्थाओं में तथा पार्टी में नौकरशाहों के हाथ हद दर्जे मजबूत करता है। प्रसंगवश यह भी बता दिया जाये कि हमारी सोवियत संस्थाओं और पार्टी-संस्थाओं दोनों में नौकरशाह मौजूद हैं।

ऊपर जब मैंने यह कहा था कि हमें उच्चतर श्रम-संगठन संस्थानों, आदि में अध्ययन करना चाहिए और परिश्रम के साथ अध्ययन करना चाहिए, तो इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं था कि मैं यह "अध्ययन" कुछ-कुछ स्कूली ढंग का समझता हूं, या कि मैं अध्ययन के विचार को केवल स्कूली ढंग तक ही सीमित मानता हूं। मैं आशा करता हूं कि कोई भी सच्चा क्रांतिकारी मेरे बारे में यह गुमान नहीं करेगा कि मैं इस मामले में यह समझने से इनकार कारता हूं कि "अध्ययन" में किसी अध-मज़ाक़िया तिकड़म, किसी कुटिल युक्ति, किसी चालाकी या इसी प्रकार की किसी और चीज़ का सहारा लेना शामिल है। मैं जानता हूं कि पश्चिमी यूरोप के रोबदार तथा संजीदा राज्यों में यह विचार सचमुच त्रास उत्पन्न करेगा और वहां का कोई भी ईमानदार पदाधिकारी इस पर ग़ौर करने के लिए भी तैयार न होगा। परंतु मैं आशा करता हूं कि हम लोगों में अभी तक इतनी नौकरशाहियत नहीं आयी है कि हमारे बीच इस विचार पर बहस होने का परिणाम मनोरंजन के अतिरिक्त और कुछ हो।

सचमुच, मनोरंजन और उपयोगिता को क्यों न मिला दिया जाये? किसी ऐसी चीज़ की क़लई खोलने के लिए, जो हास्यास्पद हो, जो हानिकारक हो, जो आधी हास्यास्पद हो, आधी हानिकारक, इत्यादि हो, किसी मज़ाक़िया या अध-मज़ाक़िया तरकीब का सहारा क्यों न लिया जाये?

मैं समझता हूं कि यदि हमारी मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था इन विचारों पर ग़ौर करेगी, तो उसे बहुत फ़ायदा होगा और हमारे

केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सदस्यों और मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था में उनके सहकर्मियों ने जिन युक्तियों से अपनी कई सबसे शानदार सफलताएं प्राप्त की हैं, उनकी सूची में हमारे भावी "मज़दूर किसान निरीक्षण संस्थावालों" और "केंद्रीय नियंत्रण आयोगवालों" द्वारा ऐसे स्थानों पर प्रदर्शित किए गए अनेकानेक कारनामों से बहुत वृद्धि होगी, जिनका उल्लेख शिष्ट तथा रोबदार पाठ्यपुस्तकों में नहीं किया जा सकता।

* * *

पार्टी की संस्थाओं को सोवियत संस्थाओं के साथ मिलाकर एक कैसे किया जा सकता है? क्या इस सुझाव में कोई अनुचित बात तो नहीं है?

मैं ये प्रश्न अपनी ओर से नहीं, बल्कि उन लोगों की ओर से पूछ रहा हूं, जिनकी ओर मैंने ऊपर यह कहते समय संकेत किया था कि हमारी सोवियत संस्थाओं और पार्टी-संस्थाओं दोनों में नौकरशाह मौजूद हैं।

परंतु यदि हमारे काम के हितों का तक़ाज़ा है, तो हम उन्हें दरअसल एक दूसरे से क्यों न मिला दें? क्या हम सभी लोग इस बात को नहीं देखते हैं कि इस प्रकार का सम्मिलन विदेशी मामलों की जन-कमिसारियत के मामले में बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है, जहां यह काम बिल्कुल शुरू में ही कर दिया गया था? क्या पोलिटब्यूरो ऐसे अनेक छोटे-बड़े प्रश्नों पर पार्टी के दृष्टिकोण से विचार नहीं करता, जिनका संबंध इस बात से है कि हम विदेशी ताक़तों की "चालों" के जवाब में ख़ुद कौनसी "चालें" चलें, ताकि हम उनकी धूर्तता को, यदि हम इससे ज़्यादा अशिष्ट शब्द इस्तेमाल न करना चाहें, विफल कर सकें? क्या पार्टी-संस्था के साथ एक सोवियत संस्था का यह लोचदार सम्मिलन हमारी राजनीति में महान शक्ति का स्रोत नहीं है? मैं समझता हूं कि जो चीज़ हमारी विदेश नीति में अपनी उपयोगिता सिद्ध कर चुकी है और निश्चित रूप से अपना ली गई है, जो चीज़ इतनी आम हो चुकी है कि अब इस क्षेत्र में उसके बारे में कोई शंका प्रकट नहीं की जाती, वह चीज़ हमारी पूरी राजकीय कार्यतंत्र के लिए भी कम से कम उतनी उपयुक्त तो होगी ही (मेरे

ख़याल से, दरअसल उससे भी कहीं अधिक उपयुक्त होगी)। फिर मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के कार्य-क्षेत्र में हमारी पूरी राजकीय कार्यतंत्र आ जाती है और उसकी सरगर्मियों का संबंध बिना किसी अपवाद के हमारी हर राजकीय संस्था से होना चाहिए: स्थानीय, केंद्रीय, वाणिज्यिक, शुद्धतः प्रशासनिक, शैक्षणिक, पुरालेख संबंधी, नाट्य-कला संबंधी, इत्यादि सभी संस्थाओं से – सारांश यह कि बिना किसी अपवाद के सभी संस्थाओं से।

फिर एक ऐसी संस्था को, जिसका पैमाना इतना विस्तृत है और इसके अलावा जिसकी सरगर्मियों के रूपों में असाधारण लचीलेपन की आवश्यकता है, इस बात की इजाज़त क्यों न दे दी जाये कि वह सोवियत नियंत्रण संस्था के साथ पार्टी नियंत्रण संस्था के इस विशिष्ट सम्मिलन का मार्ग अपनाये?

मैं इसमें कोई रुकावट नहीं देखता। इतना ही नहीं, मैं यह भी समझता हूं कि इस प्रकार का सम्मिलन ही हमारे काम में सफलता की एकमात्र गारंटी है। मैं समझता हूं कि इस समस्या के बारे में सारे संदेह सरकारी दफ़्तरों के सबसे गंदे धूल-भरे कोनों में उत्पन्न होते हैं और वे केवल इसी योग्य हैं कि उनका मज़ाक़ उड़ाया जाये।

* * *

एक और शंका: क्या शिक्षा संबंधी सरगर्मियों को सरकारी सरगर्मियों के साथ मिलाना उचित है? मैं समझता हूं कि यह उचित ही नहीं, बल्कि आवश्यक भी है। आम तौर से देखा जाये, तो राज्यसत्ता के पश्चिमी यूरोपीय रूप की ओर हमारे क्रांतिकारी रवैये के बावजूद, हमने अपने अंदर उसके कई सबसे हानिकारक तथा सबसे हास्यास्पद पूर्वाग्रहों का दोष आ जाने दिया है; कुछ हद तक तो हमारे उन प्रिय नौकरशाहों ने जान-बूझकर हमारे अंदर ये दोष पैदा किये हैं, जो यह उम्मीद करते थे कि वे इन पूर्वाग्रहों के गंदले पानी में बार-बार मछली फंसाते रह सकेंगे और वे इस गंदले पानी में इस हद तक मछलियां फंसाते रहे कि हममें जो बिल्कुल अंधा होगा, उसी ने नहीं देखा होगा कि मछली फंसाना कितने बड़े पैमाने पर हो रहा है।

सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संबंधों के सभी क्षेत्रों में

हम "भयानक रूप से" क्रांतिकारी हैं। परंतु पद-मर्यादा के, दफ़्तरी कामों के रूपों और नीतियों के पालन के क्षेत्र में हमारा "क्रांतिकारीपन" बहुधा सबसे सड़ियल क़िस्म की लकीर-पिटाई का रूप धारण कर लेता है। इस मामले में यह बहुत ही दिलचस्प बात देखी जा सकती है कि सामाजिक जीवन में बहुत लंबी आगे छलांग के साथ ही छोटे से छोटे परिवर्तन के सामने आश्चर्यजनक भीरुता विद्यमान है।

यह बात स्वाभाविक है, क्योंकि सबसे अधिक साहसपूर्ण क़दम एक ऐसे क्षेत्र में उठाये गये हैं, जिसे बहुत समय से केवल सैद्धांतिक अध्ययन के लिए सुरक्षित रखा गया था, जिसे मुख्यतः, बल्कि लगभग पूरी तरह, सैद्धांतिक रूप से ही विकसित किया गया था। रूसी आदमी को लज्जास्पद नौकरशाही वास्तविकताओं से अलग घर पर असाधारण रूप से साहसपूर्ण सैद्धांतिक स्थापनाएं करने में शांति मिलती थी, और यही कारण है कि हमारे देश में इन असाधारण रूप से साहसपूर्ण सैद्धांतिक स्थापनाओं ने असाधारणतः एकांगी चरित्र अपना लिया। आम स्थापनाओं में सिद्धांत संबंधी साहस के साथ ही दफ़्तरी काम के बंधे हुए ढर्रे में किसी छोटे-से सुधार के मामले में भी हमारे यहां आश्चर्यजनक भीरुता पायी जाती थी। किसी महान सर्वव्यापी कृषि-क्रांति की योजना ऐसे अभूतपूर्व साहस के साथ तैयार की गयी कि किसी दूसरे देश में उसकी मिसाल तक नहीं मिलती, परंतु इसके साथ ही दफ़्तरी काम के बंधे हुए ढर्रे में कोई मामूली से मामूली सुधार की भी योजना बनाने की सूझ-बूझ हममें नहीं थी; इस सुधार के बारे में उन सामान्य स्थापनाओं को लागू करने के लिए, जिन्हें आम समस्याओं पर लागू करके इतने "शानदार" परिणाम प्राप्त किये गये थे, हमारे पास आवश्यक सूझ-बूझ या धैर्य नहीं था।

यही कारण है कि हमारे वर्तमान जीवन में एक तरफ़ तो आश्चर्यजनक साहस करने की प्रवृत्ति पायी जाती है और उसके साथ ही दूसरी तरफ़ छोटे-छोटे परिवर्तन करने के सवाल पर भी हाथ-पांव फूल जाते हैं।

मैं समझता हूं कि सभी वस्तुतः महान क्रांतियों में यही हुआ है, क्योंकि वास्तविक महान क्रांतियों का जन्म उस अंतर्विरोध से होता है, जो एक तरफ़ पुरातन के तथा पुरातन को विकसित करने की कोशिश के और दूसरी तरफ़ उस नूतन की उपलब्धि की अमूर्त चेष्टा

के बीच पाया जाता है, जिसमें पुरातन का एक कण भी न हो।
और क्रांति जितनी ही तेज़ होगी, उतने ही अधिक समय तक इनमें से कई अंतर्विरोध भी बने रहेंगे।

* * *

हमारे वर्तमान सामाजिक जीवन की आम विशेषता यह है : हमने पूंजीवादी उद्योगों को नष्ट कर दिया है और मध्ययुगीन संस्थाओं का, ज़मींदारी का नाम-निशान मिटा देने के लिए अपनी पूरी कोशिश की है, और इस आधार पर छोटे और बहुत ही छोटे किसानों को जन्म दिया है, जो सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में चल रहे हैं, क्योंकि उन्हें उसके क्रांतिकारी काम के परिणामों पर विश्वास है। परंतु उस समय तक, जबकि समाजवादी क्रांति अधिक उन्नत देशों में विजयी न हो जाये, केवल इस विश्वास के सहारे टिके रहना आसान नहीं है, क्योंकि आर्थिक आवश्यकताओं के कारण, विशेष रूप से नयी आर्थिक नीति के अंतर्गत, छोटे और बहुत ही छोटे किसानों की श्रम-उत्पादकता अत्यधिक निचले स्तर पर है। इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय स्थिति ने भी रूस को बहुत पीछे ढकेल दिया और कुल मिलाकर देखा जाये, तो हमारे यहां जनता की श्रम-उत्पादकता युद्ध से पहले के स्तर की तुलना में काफ़ी नीचे पहुंच गई है। पश्चिमी यूरोप के पूंजीवादी राज्यों ने कभी जान-बूझकर और कभी अनजाने ही हमें पीछे ढकेल देने की, देश में यथासंभव अधिक से अधिक तबाही फैलाने के लिए रूस के गृह युद्ध के तत्वों का फ़ायदा उठाने की पूरी कोशिश की। साम्राज्यवादी युद्ध से बाहर निकलने का यही रास्ता था, जिसमें कई सुविधाएं दिखायी पड़ती थीं। उन राज्यों की दलील कुछ इस प्रकार की थी : यदि हम रूस की क्रांतिकारी व्यवस्था का तख़्ता उलटने में सफल न हुए, तो हम हर हालत में समाजवाद की दिशा में उसकी प्रगति में बाधा डालेंगे। अपने दृष्टिकोण से वे और कोई दलील दे ही नहीं सकते थे। अंत में उनकी समस्या आधी ही हल हो पायी। वे उस नयी व्यवस्था का तख़्ता उलटने में असफल रहे, जिसे क्रांति ने जन्म दिया था; पर उन्होंने उसे फ़ौरन वह क़दम उठाने से रोक ज़रूर दिया, जिससे समाजवादियों की भविष्यवाणी सही साबित हो सकती थी, जिसे उठाकर

वे बहुत तेज़ी से उत्पादक शक्तियों को विकसित कर सकते थे, उन सारी निहित क्षमताओं को विकसित कर सकते थे, जिन सबने मिलकर समाजवाद की स्थापना कर दी होती और हर आदमी को यह बात स्पष्ट रूप से दिखा दी होती कि समाजवाद के अंदर बहुत विशाल शक्तियां मौजूद हैं और यह कि अब मानवजाति ने विकास की एक ऐसी नयी व्यवस्था में प्रवेश किया है, जिसमें असाधारण रूप से उज्ज्वल संभावनाएं निहित हैं।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की जो पद्धति अब हमारे सामने आयी है, वह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें यूरोप के एक राज्य को, अर्थात जर्मनी को, विजेता देशों ने ग़ुलाम बना लिया है। इसके अतिरिक्त कई राज्य, अर्थात पश्चिम के सबसे पुराने राज्य, विजय की बदौलत इस स्थिति में हैं कि वे अपने उत्पीड़ित वर्गों को कई छोटी-मोटी रियायतें देने के लिए इस विजय का फ़ायदा उठा सकें – ऐसी रियायतें जो नगण्य होते हुए भी उन देशों में क्रांतिकारी आंदोलन को धीमा करती हैं और जैसी-तैसी "सामाजिक शांति" की स्थापना कर देती हैं।

इसके साथ ही पिछले साम्राज्यवादी युद्ध के कारण ही कई देश – पूरब, भारत, चीन, आदि – अपनी लीक से बिल्कुल हट गये हैं। उनका विकास निश्चित रूप से आम यूरोपीय पूंजीवादी विकास के मार्ग पर आ गया है। उनमें आम यूरोपीय हलचल शुरू हुई है। और यह बात अब सारी दुनिया के सामने स्पष्ट हो गयी है कि वे अब विकास के एक ऐसे क्रम में फंस गये हैं, जिसका परिणाम पूरे विश्व के पूंजीवाद के संकट में फंस जाने के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता।

इस प्रकार, अब हमारे सामने यह सवाल है: क्या उस समय तक जबकि पश्चिमी यूरोप के पूंजीवादी देश समाजवाद की दिशा में अपने विकास को पूरा करें, हम अपने छोटे तथा बहुत ही छोटे किसानों की उत्पादन-व्यवस्था के सहारे और अपनी वर्तमान तबाही की दशा में अपने पैर टिकाये रख सकेंगे? परंतु वे उसकी पूर्ति उस ढंग से नहीं कर रहे हैं जैसे कि हमने पहले आशा की थी। वे समाजवाद को धीरे-धीरे "परिपक्व" होने देकर नहीं, बल्कि कुछ राज्यों द्वारा दूसरे राज्यों के शोषण के ज़रिए, साम्राज्यवादी युद्ध में सबसे पहले पराजित होनेवाले देश के शोषण और उसके साथ ही पूरब के सभी देशों के शोषण के ज़रिए उसे पूर्ति की मंज़िल की ओर ले जा रहे हैं। दूसरी

तरफ़, ठीक इसी प्रथम साम्राज्यवादी युद्ध के फलस्वरूप ही पूरब के देश निश्चित रूप से क्रांतिकारी आंदोलन में खिंचकर आ गये हैं, वे निश्चित रूप से विश्व क्रांतिकारी आंदोलन की आम धारा में खिंचकर आ गये हैं।

इस परिस्थिति में हमारे देश की कार्यनीति क्या होनी चाहिए? स्पष्टतः हमारी कार्यनीति यह होनी चाहिए: हमें असीम सतर्कता का परिचय देना चाहिए ताकि हम अपनी मज़दूरों की सत्ता को बरक़रार रख सकें और उसे इस योग्य बना सकें कि वह हमारे छोटे और बहुत ही छोटे किसानों पर अपना नेतृत्व तथा अपनी साख क़ायम रख सके। हमें यह सुविधा प्राप्त है कि इस समय सारी दुनिया खिंचकर एक ऐसे आंदोलन में पहुंचती जा रही है, जिसका एक विश्व समाजवादी क्रांति को जन्म देना अवश्यंभावी है। परंतु हमें इस असुविधा का भी सामना करना पड़ रहा है कि साम्राज्यवादी दुनिया को दो शिविरों में बांट देने में सफल हो गये हैं और यह विभाजन इस बात के कारण और भी पेचीदा हो गया है कि जर्मनी के लिए, जो सचमुच उन्नत, सुसंस्कृत पूंजीवादी विकास का देश है, फिर से अपने पैरों पर खड़ा होना बेहद मुश्किल है। तथाकथित पश्चिम की सभी पूंजीवादी ताक़तें उसको चोंचें मार रही हैं और उसे उठने नहीं दे रही हैं। दूसरी तरफ़, पूरब के सभी देश, जहां के करोड़ों शोषित श्रमिक लोग दुर्दशा की अंतिम सीमा पर पहुंच गये हैं, एक ऐसी स्थिति में पहुंचा दिये गये हैं कि उनकी शारीरिक तथा भौतिक शक्ति की तुलना पश्चिमी यूरोप के किसी उनसे बहुत छोटे राज्य की शारीरिक, भौतिक तथा सैनिक शक्ति से भी नहीं की जा सकती।

इन साम्राज्यवादी देशों के साथ जिस टक्कर का ख़तरा हमारे सिर पर मंडरा रहा है, क्या उससे हम अपने आपको बचा सकते हैं? क्या हम इस बात की आशा कर सकते हैं कि पश्चिम के समृद्धिशाली साम्राज्यवादी देशों और पूरब के समृद्धिशाली साम्राज्यवादी देशों के बीच पाये जानेवाले आंतरिक विरोधों तथा टकरावों के कारण हमें दम लेने की मोहलत दुबारा मिलेगी, जैसा कि उस समय हुआ था जब रूसी प्रतिक्रांति के समर्थन में पश्चिमी यूरोप की प्रतिक्रांति की मुहिम पश्चिम तथा पूरब के क्रांतिविरोधियों के शिविर में, पूर्वी तथा पश्चिमी शोषकों के शिविर में, जापान तथा अमरीका

के शिविर में पाये जानेवाले अंतर्विरोधों के कारण नाकाम हो गयी थी?

मैं समझता हूं कि इस प्रश्न का उत्तर यह होना चाहिए कि इसका निर्णय कई बातों पर निर्भर है और यह कि पूरे संघर्ष के परिणाम को हम पहले से केवल इस आधार पर देख सकते हैं कि अंततः स्वयं पूंजीवाद ही पृथ्वी की जनसंख्या के विशाल बहुमत को इस संघर्ष की दिशा में ले जा रहा है तथा उसको इसके लिए प्रशिक्षित कर रहा है।

संघर्ष के फल का निर्णय अंतिम रूप से इस बात पर निर्भर है कि भूमंडल की आबादी का प्रबल बहुमत रूस, भारत, चीन, इत्यादि में रहता है और पिछले बरसों में यही बहुमत ऐसी असाधारण तेज़ी के साथ अपनी मुक्ति के संघर्ष में खिंचा है कि इस संबंध में रत्ती भर भी संदेह नहीं हो सकता कि विश्व संघर्ष का अंतिम फल क्या होगा। इस अर्थ में समाजवाद की अंतिम विजय पूर्णतः और नितांत सुनिश्चित है।

परंतु हमें जिस बात में दिलचस्पी है, वह यह नहीं है कि समाजवाद की यह अंतिम विजय अनिवार्य है, बल्कि वह यह है कि हमें, रूसी कम्युनिस्ट पार्टी को, हमें, रूसी सोवियत सत्ता को, कौनसी कार्यनीति अपनानी चाहिए, ताकि पश्चिमी यूरोप के प्रतिक्रांतिवादी राज्य हमें कुचल न सकें। इस बात को सुनिश्चित बनाने के लिए कि क्रांति विरोधी साम्राज्यवादी पश्चिमी देशों और क्रांतिकारी तथा राष्ट्रवादी पूर्वी देशों के बीच, संसार के सबसे सभ्य देशों और पूर्वी ढंग के पिछड़े हुए उन देशों के बीच, जिनमें पृथ्वी की अधिकांश जनसंख्या रहती है, अगली सैनिक टक्कर होने के समय तक हमारा अस्तित्व क़ायम रहे, यह आवश्यक है कि पृथ्वी की जनसंख्या का यह बहुमत सभ्य बन जाये। हम भी इतने काफ़ी सभ्य नहीं हैं कि सीधे समाजवाद में पहुंच जायें, हालांकि हमारे यहां इसके लिए सभी आवश्यक राजनीतिक परिस्थितियां मौजूद हैं। हमें निम्नलिखित कार्यनीति अपनानी चाहिए या अपने आपको बचाने के लिए निम्नलिखित नीति पर चलना चाहिए।

हमें एक ऐसे राज्य का निर्माण करने की कोशिश करनी चाहिए, जिसमें मज़दूर किसानों पर अपना नेतृत्व क़ायम रख सकें, जिसमें उन पर किसानों का विश्वास बना रहे और अधिकतम किफ़ायत करके हम अपने सामाजिक संबंधों में से फ़ज़ूलख़र्ची का नाम-निशान तक मिटा दें।

हमें अपनी राजकीय कार्यतंत्र को जहां तक संभव हो सके घटाकर उस स्तर पर ले आना चाहिए, जहां हम ज़्यादा से ज़्यादा किफ़ायत से काम चला सकें। हमें उसमें से फ़ज़ूलख़र्ची का नाम-निशान तक मिटा देना चाहिए, जो ज़ारशाही रूस से, उसके नौकरशाही-बुर्जुआ कार्यतंत्र से हमें बहुत बड़े पैमाने पर उत्तराधिकार में मिली है।

क्या यह किसानों की संकुचित मनोवृत्ति का राज्य नहीं होगा?

नहीं। यदि हम इस बात का पूरा प्रबंध कर लें कि मज़दूर वर्ग किसानों पर अपना नेतृत्व बनाये रहे, तो हम अपने राज्य के आर्थिक जीवन में यथासंभव अधिकतम किफ़ायत बरतकर अपनी बचत की हर छोटी रक़म अपने बड़े पैमाने के मशीन-उद्योग के विकास के लिए, बिजलीकरण के विकास के लिए, दलदली कोयले के बिजलीघरों के लिए, वोल्ख़ोव बिजलीघर[63] का निर्माण पूरा करने के लिए और इसी प्रकार के अन्य कामों के लिए इस्तेमाल कर सकेंगे।

इसी बात में और केवल इसी बात में हमारी सफलता की आशा निहित है। जब हम यह कर लेंगे, तभी, आलंकारिक भाषा में कहें, तो घोड़े बदल सकेंगे, दरिद्रतावाले, किसानोंवाले, दहकानोंवाले घोड़े को छोड़कर, उस किफ़ायत के घोड़े को छोड़कर, जो केवल एक तबाह किसान देश के लिए ही उपयुक्त हो सकता है, उस घोड़े पर सवार हो सकते हैं, जिसकी सर्वहारा वर्ग तलाश कर रहा है और जिसकी तलाश करना सर्वहारा वर्ग के लिए अनिवार्य है – बड़े पैमाने के मशीन-उद्योग, विद्युतीकरण, वोल्ख़ोव बिजलीघर, आदि के घोड़े पर।

मैं अपने दिमाग़ में हमारे काम, हमारी राजनीति, हमारी कार्य-नीति, हमारी रणनीति की सामान्य योजना की कड़ी को पुनर्गठित मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के कामों के साथ इसी ढंग से जोड़ता हूं। मेरी राय में यही चीज़ है, जिसके आधार पर हम इस बात को न्यायोचित ठहरा सकते हैं कि हमें मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था की असाधारण चिंता करनी चाहिए, उसकी ओर असाधारण ध्यान देना चाहिए, ताकि हम उसे एक असाधारण उच्च स्तर तक पहुंचा सकें, उसे केंद्रीय समिति के अधिकार सौंप सकें, इत्यादि, इत्यादि।

इस चिंता और ध्यान को न्यायोचित ठहराना इसलिए भी उचित है कि केवल अपने सरकारी दफ़्तरों की ज़्यादा से ज़्यादा सफ़ाई करके

ही, हर उस चीज़ को घटाकर ही, जो नितांत आवश्यक न हो, हम अपने पैर जमाये रख सकने का विश्वास कर सकते हैं। यदि हम ऐसा कर लेंगे, तो हम अपने पैर जमाये रख सकेंगे एक छोटे किसानोंवाले देश के स्तर पर नहीं, सार्वत्रिक संकीर्णता के स्तर पर नहीं, बल्कि बड़े पैमाने के मशीन-उद्योग के निरंतर ऊंचे उठते हुए स्तर पर।

ये हैं वे उच्च लक्ष्य, जिनकी मैं अपनी मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के लिए कल्पना करता हूं। यही कारण है कि मैं उसके लिए यह योजना बना रहा हूं कि पार्टी के एक सबसे अधिकारपूर्ण निकाय को एक "मामूली" जन-कमिसारियत के साथ मिला दिया जाये।

२ मार्च, १९२३

'प्राव्दा', अंक ४९,
४ मार्च, १९२३

खंड ४५,
पृ० ३८९-४०६

टिप्पणियां

[1] व्ला० इ० लेनिन ने **"पीटर्सबर्ग के मज़दूरों और समाजवादियों के नाम 'संघर्ष लीग' की ओर से"** पर्चा साइबेरिया निर्वासन के दौरान लिखा। १८९८ में यह पर्चा जेनेवा में लेनिन की 'रूसी सामाजिक-जनवादियों के कार्यभार' पुस्तिका के परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित किया गया और रूस में ग़ैर-क़ानूनी रूप से वितरित किया गया।

'मज़दूर वर्ग की मुक्ति के लिए संघर्ष करनेवाली लीग' (**'संघर्ष लीग'**) – ग़ैर-क़ानूनी संगठन, जो व्ला० इ० लेनिन ने १८९५ की शरद में स्थापित किया। उसमें पीटर्सबर्ग के लगभग बीस मार्क्सवादी मज़दूर मंडल संगठित हुए। रूस में पहली बार 'संघर्ष लीग' ने ही मज़दूर आंदोलन को समाजवाद से जोड़ना तथा मंडलों में अग्रणी मज़दूरों के बीच मार्क्सवाद के प्रचार से सर्वहारा जन-समूह के बीच राजनीतिक आंदोलन में संक्रमण करना आरंभ किया। उसने मज़दूर आंदोलन का संचालन किया और आर्थिक मांगों के लिए मज़दूरों का संघर्ष ज़ारशाही विरोधी राजनीतिक संघर्ष के साथ जोड़ा। दिसंबर १८९५ में 'संघर्ष लीग' का नेतृत्व करनेवाले सामाजिक-जनवादी, जिनमें लेनिन भी थे, गिरफ़्तार कर लिये गये, जेल भेजे गये और बाद में साइबेरिया में निर्वासित कर दिये गये। – ७

[2] **बाशीबुज़ूक** – १८–१९वीं सदी में तुर्क सेना के अनियमित दलों का नाम, जिनकी विशेषता अनुशासनहीनता, क्रूरता और लूट की प्रवृत्ति थी। –७

[3] **"श्रम-मुक्ति" दल** – पहला रूसी मार्क्सवादी दल, जो ग० व० प्लेख़ानोव ने १८८३ में जेनेवा में स्थापित किया। रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस (१६०३) के बाद "श्रम-मुक्ति" दल का अंत हो गया। –१५

[4] मार्च १८६८ में मीन्स्क में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की पहली कांग्रेस हुई। उसमें छह स्थानीय सामाजिक-जनवादी संगठनों से नौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कांग्रेस ने रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की स्थापना की घोषणा की। लेकिन कांग्रेस ने पार्टी का कार्यक्रम तय नहीं किया, पार्टी की नियमावली निरूपित नहीं की; कांग्रेस में निर्वाचित केंद्रीय समिति शीघ्र ही गिरफ़्तार कर ली गयी, इसलिए कांग्रेस अलग-थलग मार्क्सवादी मंडलों तथा संगठनों को ऐक्यबद्ध नहीं कर पायी। –१५

[5] *Credo* ('क्रीडो' – विश्वास का प्रतीक, कार्यक्रम, विश्वदृष्टिकोण का प्रतिज्ञापन) – इस नाम से वह घोषणापत्र मशहूर हुआ, जिसमें "अर्थवाद" के विचारों का वर्णन किया गया। "अर्थवाद" १६वीं सदी के अंत में – २०वीं सदी के आरंभ में कुछ रूसी सामाजिक-जनवादियों के बीच उत्पन्न हुआ अवसरवादी पक्ष था। "अर्थवाद" के समर्थक यह मानते थे कि ज़ारशाही के विरुद्ध राजनीतिक संघर्ष उदारवादी बुर्जुआ वर्ग को चलाना चाहिए और मज़दूरों को श्रम की परिस्थितियां बेहतर बनवाने, वेतन में वृद्धि कराने, कार्य-दिवस कम कराने के लिए आर्थिक संघर्ष तक सीमित रहना चाहिए। "अर्थ-वादियों" ने केंद्रीभूत राजनीतिक मज़दूर पार्टी के गठन की आवश्यकता का विरोध किया। –१५

[6] **'राबोचाया मीस्ल'** ('मज़दूरों का विचार') – "अर्थवादियों" का समाचारपत्र, जो १८६७ से १६०२ तक प्रकाशित होता रहा। इसके कुल मिलाकर १६ अंक निकले। –१५

[7] **नरोद्नाया वोल्या'-वादी** – 'नरोद्नाया वोल्या' ('जनता की आ-ज़ादी') नामक गुप्त राजनीतिक संगठन के सदस्य जो १८७६ में

स्थापित हुआ था। 'नरोद्नाया वोल्या' का उद्देश्य स्वेच्छाचारी शासन का तख़्ता उलटना और राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना था। 'नरोद्नाया वोल्या'-वादियों ने ज़ारशाही के विरुद्ध संघर्ष का मुख्य साधन व्यक्तिगत आतंक माना। उन्होंने ग़लत माना कि जन-समुदाय से असंबद्ध क्रांतिकारियों का एक ग्रुप षड्यंत्रकारी और आतंककारी कार्य के फलस्वरूप स्वेच्छाचारी शासन का विनाश कर सकता है। –१६

[8] लेनिन ने यहां कार्ल मार्क्स द्वारा लिखित "अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर संघ की आम नियमावली" (पहले इंटरनेशनल) के बुनियादी नियम का उल्लेख किया है। –१७

[9] लेनिन ने प्योत्र अलेक्सेयेव के क्रांतिकारी भाषण के अंतिम शब्दों का उल्लेख किया है, जो उन्होंने ज़ारशाही सरकार द्वारा गिरफ़्तार किये जाने के बाद १८७५ में अदालत में कहे थे। यह भाषण सबसे पहले लंदन में प्रकाशित हुआ, अनेक बार पुन:प्रकाशित हुआ और रूस के मज़दूरों में लोकप्रिय था। –२१

[10] **मार्तीनोव के सूत्र** से लेनिन का आशय मार्तीनोव के इस कथन से है कि सामाजिक-जनवादियों का उद्देश्य "आर्थिक संघर्ष को राज-नीतिक स्वरूप प्रदान करना" है। –२३

[11] **'ईस्क्रा'** ('चिनगारी') – १६०० में व्ला० इ० लेनिन द्वारा स्थापित पहला अखिल रूसी मार्क्सवादी समाचारपत्र, जिसने रूसी मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी मार्क्सवादी पार्टी की स्थापना में निर्णायक भूमिका अदा की। म्यूनिख़ और फिर जेनेवा में प्रकाशित होता रहा और रूस में ग़ैर-क़ानूनी रूप से भेजा जाता रहा। रू० सा० ज० म० पार्टी की दूसरी कांग्रेस (१६०३) के कुछ समय बाद 'ईस्क्रा' रूसी सामाजिक-जनवाद के अवसरवादियों – मेंशेविकों – का मुखपत्र बन गया और उसे "पुराने" 'ईस्क्रा' से अलग करने के लिए "नया" 'ईस्क्रा' नाम दिया गया। –२५

[12] यहां अभिप्राय १८७०–१८७१ के फ़्रांसीसी-प्रशियाई युद्ध से है। –२५

[13] का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स "कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र", अध्याय ४। –२८

[14] **'स्वोबोदा'** ('स्वतंत्रता') दल – 'क्रांतिकारी-समाजवादी दल', जो रूसी सामाजिक-जनवादी नादेज्दिन (ज़ेलेंस्की, ये० ओ०) ने १६०१ में स्वीट्ज़रलैंड में स्थापित किया।

'स्वोबोदा' पत्रिका और "रूस में क्रांतिवाद के पुनर्जन्म" नामक कार्यक्रमीय पुस्तिका द्वारा 'स्वोबोदा' दल ने आतंकवाद और "अर्थवाद" के विचारों का प्रचार किया। –३२

[15] लेनिन का अभिप्राय पीटर्सबर्ग के सामाजिक-जनवादियों के उस मंडल से है, जिसका नेतृत्व उन्होंने किया था और जिसके आधार पर १८६५ में 'मज़दूर वर्ग की मुक्ति के लिए संघर्ष करनेवाली लीग' स्थापित की गयी थी। –३५

[16] **'राबोचेये देलो'** ('मज़दूरों का कार्य') – पत्रिका, 'विदेश में स्थित रूसी सामाजिक-जनवादी संघ' का मुखपत्र। १८६६ से १६०२ तक जेनेवा में प्रकाशित होती रही। –३६

[17] यहां रू० सा० ज० म० पार्टी की दूसरी कांग्रेस में पार्टी की नियमावली के अनुच्छेद १ पर, जो यह निर्धारित करता था कि किसको पार्टी का सदस्य माना जाये, विचार करते समय पैदा हुए मतभेदों की चर्चा है। लेनिन ने इस अनुच्छेद का ऐसा निरूपण पेश किया था: "रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी का सदस्य कोई भी व्यक्ति माना जाता है, जो इसके कार्यक्रम को स्वीकार करता है, इसका समर्थन आर्थिक रूप से करता है और एक दलीय संगठन का सदस्य है।" मार्तोव ने इस मुद्दे पर आपत्ति की कि पार्टी के सदस्य को दलीय संगठन का सदस्य भी होना चाहिए और दूसरा निरूपण पेश किया जिसके अनुसार पार्टी के सदस्य के लिए दलीय संगठन में शामिल होना अनिवार्य नहीं था, उसे बस दलीय संगठन के नेतृत्व में काम करना चाहिए था। –६१

[18] लेनिन ने **"'इस्क्रा' के संपादकों के नाम पत्र"** ७ नवंबर १९०३ को 'ईस्क्रा' के अंक ५२ में प्रकाशित ग० व० प्लेख़ानोव के लेख "क्या न करें" के जवाब में लिखा था।

'ईस्क्रा' के बारे में देखें टिप्पणी ११।–६५

[19] **सोबाकेविच** – रूसी लेखक निकोलाई वसील्येविच गोगोल (१८०९–१८५२) की 'मृत आत्माएं' शीर्षक पुस्तक का एक पात्र, मूर्ख और रुखा ज़मींदार।–६६

[20] **पोशेख़ोन्ये** – ज़ारशाही रूस में एक उयेज़दवाला शहर; लेखक मिख़ाईल येव्ग्राफ़ोविच सल्तिकोव-श्चेद्रीन (१८२६–१८८९) की 'पोशेख़ोन्ये का पुरानापन' शीर्षक पुस्तक के प्रकाशन के बाद "पोशेख़ोन्ये" शब्द दूर के प्रदेशों और अत्यंत पिछड़ेपन को निर्दिष्ट करने के लिए प्रयुक्त होने लगा।–६८

[21] **'व्पेर्योद'** ('आगे बढ़ो') – बोल्शेविक साप्ताहिक समाचारपत्र; दिसंबर १९०४ से मई १९०५ तक जेनेवा में प्रकाशित होता रहा और रूस में ग़ैर-क़ानूनी रूप से भेजा जाता रहा।–७०

[22] यह पत्र १९०५ की क्रांति के समय लिखा गया।

९ जनवरी १९०५ को पीटर्सबर्ग में ज़ार को रूसी मज़दूरों के जीवन की कठोर स्थिति संबंधी अर्ज़ी पेश करने के लिए ज़ार के महल के सामने पादरी गपोन के नेतृत्व में पीटर्सबर्ग के मज़दूरों ने अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ एक शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया। ज़ारशाही सिपाहियों ने प्रदर्शन पर गोली चला दी। ९ जनवरी की इस घटना के बाद सारे रूस में ज़ारशाही के विरुद्ध प्रदर्शनों, हड़तालों और हथियारबंद विद्रोहों की लहर फैल गयी। १९०५–१९०७ की क्रांति का आरंभ हुआ।–७०

[23] **मेंशेविक** – रूसी सामाजिक-जनवाद में टुटपुंजिया अवसरवादी आंदोलन के समर्थक। यह नाम उन्हें अगस्त १९०३ में रू० सा० ज० म० पार्टी की दूसरी कांग्रेस के बाद दिया गया था, जब वे कांग्रेस के

अंत पर, पार्टी के केंद्रीय अभिकरणों के चुनाव के समय अल्पमत (रूसी में 'मेंशिंस्त्वो') में रह गये, और लेनिन के नेतृत्व में क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादियों ने बहुमत (रूसी में 'बोल्शिंस्त्वो') प्राप्त किया; इसी समय से बोल्शेविक और मेंशेविक नाम प्रचलित हो गये। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद मेंशेविक बुर्जुआ अस्थायी सरकार में शामिल हुए और उसकी साम्राज्यवादी नीति का समर्थन किया। १९१७ की अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद मेंशेविक प्रतिक्रांतिकारी पार्टी बन गये और सोवियत जनता के विरुद्ध रूसी ज़मींदारों तथा बुर्जुआ वर्ग के हथियारबंद संघर्ष में भाग लेने लगे। –७१

[24] **रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की तीसरी कांग्रेस** १२–२७ अप्रैल (२५ अप्रैल – १० मई) १९०५ को लंदन में हुई। – ७३

[25] देखें टिप्पणी ५। –७३

[26] **रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस** १७ (३०) जुलाई – १० (२३) अगस्त १९०३ को हुई। पहली बैठकें ब्रसेल्स में हुईं, फिर पुलिस द्वारा पीछा किये जाने के कारण कांग्रेस की शेष बैठकें लंदन में हुईं। – ७३

[27] देखें टिप्पणी १।

[28] **दूमा, राजकीय दूमा** – ज़ारशाही रूस में प्रतिनिधि संस्था, जिसे १९०५ की क्रांति के बाद स्थापित किया गया था। औपचारिक रूप से राजकीय दूमा विधायी संस्था थी, लेकिन व्यवहारतः उसे कोई भी वास्तविक अधिकार प्राप्त नहीं थे। राजकीय दूमा के लिए चुनाव न तो प्रत्यक्ष, न समान और न ही व्यापक थे। श्रमजीवी वर्गों और रूस में बसनेवाली ग़ैर-रूसी जातियों के निर्वाचन संबंधी अधिकार अत्यधिक सीमित थे। मज़दूरों और किसानों के बहुत बड़े हिस्से को कोई भी निर्वाचन-अधिकार प्राप्त नहीं थे।

पहली (अप्रैल – जुलाई १९०६) और दूसरी (फ़रवरी – जून

१९०७) राजकीय दूमाओं को सरकार ने भंग कर दिया था। तीसरी (१९०७–१९१२) और चौथी (१९१२–१९१७) राजकीय दूमाओं में मुख्यतः यमदूत सभाई शामिल हुए, जिन्होंने ज़ारशाही स्वेच्छाचारी शासन का समर्थन किया। –७८

[29] **कैडेट**, संवैधानिक-जनवादी पार्टी – रूस में उदारवादी-राजतंत्रवादी पार्टी, जिसे अक्तूबर १९०५ में स्थापित किया गया। उसमें बुर्जुआ वर्ग के प्रतिनिधि, ज़ेम्सत्वो के कर्मचारी और बुर्जुआ बुद्धिजीवी शामिल हुए। कैडेट अपने को 'जन-स्वतंत्रता' पार्टी कहते थे, पर वस्तुतः स्वेच्छाचारी शासन के साथ सौदा करने के प्रयत्न करते रहे ताकि ज़ारशाही को संवैधानिक राजतंत्र के रूप में बनाये रखा जा सके। १९१७ की फ़रवरी क्रांति के बाद कैडेटों ने बुर्जुआ अस्थायी सरकार में प्रमुख स्थान पाया और जनता के विरुद्ध प्रतिक्रांतिकारी नीति चलायी। अक्तूबर समाजवादी क्रांति (१९१७) के बाद कैडेटों ने सोवियत रूस के विरुद्ध सभी प्रतिक्रांतिकारी गतिविधियों और हस्तक्षेपकों के अभियानों में भाग लिया। – ७८

[30] **गुबेर्निया** – रूस में बुनियादी प्रशासनिक-क्षेत्रीय इकाई; १९२९ तक विद्यमान थी। – ८०

[31] **विसर्जनवादी** – अवसरवादी प्रवृत्ति, जो १९०५–१९०७ की क्रांति की पराजय के बाद सामाजिक-जनवादियों-मेंशेविकों के बीच काफ़ी फैल गयी थी।

विसर्जनवादियों ने मज़दूर वर्ग की क्रांतिकारी ग़ैर-क़ानूनी पार्टी को भंग करने की मांग की। ज़ारशाही के विरुद्ध क्रांतिकारी संघर्ष बंद करने के लिए मज़दूरों का आह्वान करते हुए विसर्जनवादियों ने एक ग़ैर-पार्टी "मज़दूर कांग्रेस" बुलानी और उसमें ऐसी अवसर-वादी "विस्तृत मज़दूर पार्टी" की स्थापना करनी चाही, जोकि क्रांतिकारी नारों को छोड़कर अपने को केवल क़ानूनी, ज़ार की सरकार को स्वीकार्य कार्यों तक सीमित रखे। लेनिन और अन्य बोल्शेविक क्रांति के ध्येयों का विश्वासघात करनेवाले विसर्जनवादियों का अथक रूप से पर्दाफ़ाश करते रहे। मज़दूरों के समुदाय में विसर्जन-

वाद लोकप्रिय नहीं था। जनवरी १९१२ में प्राग में हुए सम्मेलन ने विसर्जनवादियों को पार्टी से बहिष्कृत कर दिया।—८०

[32] **त्रुदोवीक** (श्रमिक) दल – टुटपुंजिया जनवादियों – राजकीय दूमा के सदस्यों – का एक दल जिसने अप्रैल १९०६ में तथाकथित त्रुदोवीकों के ग्रुप की स्थापना की। अपनी नीति में त्रुदोवीक कैडेटों तथा सामाजिक-जनवादियों के बीच डांवांडोल थे। —८१

[33] १९१४ में जब विश्व साम्राज्यवादी युद्ध शुरू हुआ तो चौथी राजकीय दूमा के बोल्शेविक प्रतिनिधियों – अ० ये० बदायेव, म० को० मुरानोव, ग० इ० पेत्रोव्स्की, फ़० नि० समोइलोव और नि० रो० शागोव – ने ज़ारशाही सरकार को सैनिक ऋण देने के लिए मत देने से इनकार किया और युद्ध के साम्राज्यवादी, जनविरोधी स्वरूप का पर्दाफ़ाश किया। युद्ध के विरुद्ध क्रांतिकारी कार्य के लिए बोल्शेविक प्रतिनिधियों की निंदा की गयी और साइबेरिया में सज़ा काटने भेजा गया। —८१

[34] जब १९१४ की गर्मियों में विश्व साम्राज्यवादी युद्ध शुरू हुआ तो अधिकांश यूरोपीय देशों की समाजवादी पार्टियों के नेताओं ने अपनी साम्राज्यवादी सरकारों का पक्ष लिया और साम्राज्यवादी युद्ध का समर्थन करने लगे। लेनिन ने यहां समाजवाद के ध्येयों के साथ विश्वासघात करनेवाले समाजवादी पार्टियों के कार्यकर्ताओं के नाम गिनाये हैं: ज़्यूदेकुम और हाइने – जर्मन सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी, सेम्बा और वाइयां – फ़्रांसीसी सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी, बिसोलाती और मुसोलिनी – इतालवी सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी, छेईद्ज़े और प्लेख़ानोव – रूसी सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। —८३

[35] **'नोवाया जीज़्न'** ('नवजीवन') – मेंशेविक धारा का दैनिक समाचारपत्र; १८ अप्रैल (१ मई) १९१७ से जुलाई १९१८ तक पेत्रोग्राद में प्रकाशित होता रहा।—८६

का० मार्क्स, ५ मई १८७५ को लिखित वि० ब्राके के नाम पत्र। – ९२

[37] यहां लेनिन ने जर्मन लेखक जो० वो० गेटे (१७४६–१८३२) की ट्रेजडी "फ़ाउस्ट" की पंक्तियां उद्धृत की हैं।–६३

[38] **पेरिस कम्यून** – सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना की इतिहास में पहली कोशिश। पेरिस कम्यून १८ मार्च से २८ मई १८७१ तक विद्यमान थी। पेरिस कम्यून ने चर्च को राज्य से और स्कूल को चर्च से अलग कर दिया, स्थायी सेना की जगह पर हथियारबंद जन-समूह को खड़ा किया, जजों और अधिकारियों का जनता द्वारा चुनाव चालू किया, साथ ही यह नियम स्थापित किया कि अधिकारियों का वेतन मज़दूरों के वेतनों से अधिक न हो, मज़दूरों और शहरी ग़रीबों की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए भी कुछ क़दम उठाये, इत्यादि। २१ मई १८७१ को थियेर की प्रतिक्रांतिकारी सरकार की सेनाओं ने पेरिस पर क़ब्ज़ा करके पेरिस के मज़दूरों को निर्ममतापूर्वक कुचल दिया: लगभग तीस हज़ार आदमी मारे गये, पचास हज़ार गिरफ़्तार किये गये और हज़ारों को श्रम-कारावास की सज़ा दी गयी।–६३

[39] १६ फ़रवरी १८६१ को रूस में भूदास-प्रथा को उठा दिया गया था। –१०५

[40] **तीसरा (कम्युनिस्ट) इंटरनेशनल** – विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों को एकताबद्ध करनेवाला अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सर्वहारा संगठन, जो १६१६ से १६४३ तक विद्यमान था।

कम्युनिस्ट इंटरनेशनल ने सभी देशों के मेहनतकशों के पारस्परिक संबंधों को बहाल और मज़बूत किया, विश्व मज़दूर आंदोलन के अंदर मौजूद अवसरवाद का पर्दाफ़ाश करने, नयी कम्युनिस्ट पार्टियों को मज़बूत बनाने और विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन की रणनीति तथा कार्यनीति तैयार करने में मदद पहुंचायी।

१६४३ में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल को भंग कर दिया गया क्योंकि मज़दूरों को एकताबद्ध करने का यह संगठनात्मक रूप, जिसने ऐतिहासिक विकास की एक निश्चित मंज़िल की ज़रूरतें पूरी की थीं, अपनी उपयोगिता के दिन पूरे कर चुका था।–११४

[41] यहां रूस में १९१८–१९२० के गृह युद्ध की चर्चा है।–१२१

[42] **वोलोस्त**– १९२९ तक रूस में सबसे छोटी प्रशासनिक-क्षेत्रीय इकाई, जो उयेज़्द का एक हिस्सा था।–१२३

[43] **नयी आर्थिक नीति** १९२१ में सोवियत रूस में लागू की गयी। गृह युद्ध (१९१८–१९२०) के वर्षों में तथाकथित "युद्धकालीन कम्युनिज़्म" की नीति बरती गयी। इसकी विशेषता थी उत्पादन तथा वितरण का अत्यधिक केंद्रीयकरण, खुले व्यापार की मनाही और फ़ाज़िल अनाज की हुक्मी वसूली, जिसके अंतर्गत किसान अपनी सारी अतिरिक्त पैदावार राज्य को देते थे। इस नीति से भिन्न नयी आर्थिक नीति ने सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक स्थितियों को राज्य के हाथों में रखते हुए कुछ अरसे के लिए पूंजीपति तत्वों और निर्बाध बाज़ार के सीमित अस्तित्व को रहने दिया था। फ़ाज़िल अनाज की हुक्मी वसूली बंद कर दी गयी और जिंसी टैक्स लागू किया गया, और किसान जिंसी टैक्स देकर अपनी फ़ालतू पैदावार बाज़ार में बेच सकते थे। नयी आर्थिक नीति का उद्देश्य देश की उत्पादक शक्तियों का संवर्धन करना, कृषि उत्पादन में वृद्धि करना और समाजवादी उद्योग के निर्माण के लिए आवश्यक पूंजी का इकट्ठा करना था।–१२४

[44] देखें टिप्पणी २३।–१२५

[45] **श्वेत गार्डी** – सोवियत जनता के विरुद्ध हथियारबंद संघर्ष करनेवाले प्रतिक्रांतिकारी अपने को **श्वेत गार्ड** कहते थे।–१२५

[46] देखें टिप्पणी २९।–१२५

[47] यहां अभिप्राय **'गोएलरो' की योजना** (रूस के बिजलीकरण का राजकीय आयोग) से है। यह सोवियत जनतंत्र की अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण और विकास की पहली एकीभूत दूरगामी राष्ट्रीय योजना थी। १९२० में रूस के बिजलीकरण के राजकीय आयोग ने लेनिन के आदेश पर और उनके नेतृत्व में यह योजना तैयार की।–१२८

[48] उयेज़्द – १९२९ तक रूस में प्रशासनिक-क्षेत्रीय इकाई ; गुबेर्निया का हिस्सा था। –१२९

[49] **'प्राव्दा'** ('सत्य') – दैनिक क़ानूनी बोल्शेविक समाचारपत्र ; इस-का पहला अंक २२ अप्रैल (५ मई) १९१२ को पीटर्सबर्ग में निकला था। 'प्राव्दा' सदा पुलिस के उत्पीड़न का शिकार रहा, इसे अनेक बार ज़ारशाही सरकार ने बंद किया, लेकिन यह दूसरे नाम लेकर प्रकाशित होता रहा।

अक्तूबर समाजवादी क्रांति (१९१७) के बाद इसने अपना मूल नाम 'प्राव्दा' धारण कर लिया। – १३५

[50] **समाजवादी-क्रांतिकारी** – रूस में टुटपुंजिया पार्टी, जिसकी स्थापना १९०१ के अंत – १९०२ के आरंभ में हुई। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद समाजवादी-क्रांतिकारियों ने मेंशेविकों के साथ-साथ बुर्जुआ अस्थायी सरकार में शामिल होकर उसकी साम्राज्यवादी नीति का समर्थन किया। रूस में समाजवादी क्रांति की विजय के बाद समाजवादी-क्रांतिकारियों ने सोवियत देश के विरुद्ध हथियारबंद संघर्ष में भाग लिया। – १३६

[51] **दूसरा इंटरनेशनल** – १८८९ में स्थापित किया गया समाजवादी पार्टियों का अंतर्राष्ट्रीय संघ। जब पहला विश्व युद्ध (१९१४–१९१८) शुरू हुआ, तो दूसरे इंटरनेशनल के नेताओं ने समाज-वाद के ध्येयों के साथ विश्वासघात किया, अपनी साम्राज्यवादी सरकारों का पक्ष लिया और दूसरा इंटरनेशनल भंग हो गया।

ढाईवां इंटरनेशनल नाम उस अंतर्राष्ट्रीय संघ को दिया गया था जिसकी स्थापना फ़रवरी १९२१ में वियेना में हुए क्रांतिकारी मज़दूर-समुदायों के दबाव से कुछ समय के लिए दूसरे इंटरनेशनल से हट गई मध्यमार्गी पार्टियों और दलों के सम्मेलन में की गयी। १९२३ में वह दूसरे इंटरनेशनल में विलय हो गया। – १३६

[52] **'मज़दूरों, किसानों, कज़्ज़ाकों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति तथा मज़दूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की मासको सोवियत के समाचार'**

('इज़्वेस्तिया') – दैनिक समाचारपत्र ; इसका प्रकाशन २८ फ़रवरी (१३ मार्च) १९१७ को शुरू हुआ। आजकल (१९३८ से लेकर) यह 'मेहनतकशों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के समाचार' के नाम से प्रकाशित किया जाता है।

लेनिन का आशय व्ला० व्ला० मयाकोव्स्की की कविता 'बैठकों पर बैठकें' से है। –१३८

[53] **ओबलोमोव** – रूसी लेखक इवान अलेक्सांद्रोविच गोंचारोव (१८१२–१८९१) के एकनाम उपन्यास का मुख्य पात्र। – १३८

[54] यहां फ़्रे० एंगेल्स के 'उत्प्रवासी साहित्य' लेख के शब्दों का हवाला दिया गया है। – १३९

[55] **इस्तपार्त** (पार्टी इतिहास) – अक्तूबर क्रांति और रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के इतिहास पर सामग्रियां इकट्ठा करने और उनका अध्ययन करने के लिए १९२० में स्थापित किया गया आयोग। –१४०

[56] यहां आर्थिक और वित्तीय प्रश्नों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उल्लेख है, जो १० अप्रैल – १९ मई १९२२ को जेनोआ में हुआ।

इस सम्मेलन में सोवियत रूस, ग्रेट ब्रिटेन, फ़्रांस, इटली, बेल्जियम, जापान, जर्मनी सहित २९ राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संयुक्त राज्य अमरीका का प्रतिनिधि "प्रेक्षक" की हैसियत से उपस्थित था। सम्मेलन के समय साम्राज्यवादी राज्यों ने सोवियत रूस की आर्थिक कठिनाइयों से लाभ उठाने की कोशिश की ताकि उस पर समझौते की असहनीय शर्तें लाद दें। उन्होंने युद्धपूर्व ऋणों समेत सभी ज़ारशाही ऋण चुकाने, विदेशी मालिकों को राष्ट्रीकृत कारख़ाने वापस देने, आदि की मांग की। सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने साम्राज्यवादियों के ये ढीठ दावे अस्वीकार कर दिये ; उसने सर्वराष्ट्रव्यापी निरस्त्रीकरण तथा सभी युद्धपूर्व ऋणों को रद्द करने के सुझाव पेश किये। सोवियत रूस के प्रति फ़्रांस और ग्रेट ब्रिटेन के शत्रुतापूर्ण रुख़ के कारण सम्मेलन भंग हो गया। –१४१

[57] देखें टिप्पणी ४५। –१६०

[58] **'कांग्रेस के नाम पत्र'** – व्ला० इ० लेनिन का एक अंतिम लेख। सख़्त बीमार लेनिन ने दिसंबर १९२२ के अंत – जनवरी १९२३ के आरंभ में यह "पत्र" बोलकर लिखाया।–१६२

[59] यहां अभिप्राय रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की १२वीं कांग्रेस से है, जो कुछ समय पश्चात होनेवाली थी।–१६२

[60] **'रूस्स्काया मीस्ल'** ('रूसी विचार') – पत्रिका जिसे १९२२ में प्राग में रूसी श्वेत गार्डी उत्प्रवासी प्रकाशित करते थे।–१६३

[61] यहां चर्चा १९१७ की अक्तूबर क्रांति की तैयारी के समय पार्टी की केंद्रीय समिति के सदस्यों कामेनेव और ज़िनोव्येव के विश्वासघाती आचरण की है। अक्तूबर विद्रोह से कुछ दिन पहले उन्होंने अर्ध-मेंशेविक समाचारपत्र 'नोवाया जीज़्न' ('नवजीवन') में एक वक्तव्य प्रकाशित कराके अस्थायी सरकार को विद्रोह की तैयारी से संबंधित बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय समिति के निर्णय की ख़बर दी।–१६४

[62] देखें टिप्पणी ४३। –१८४

[63] **वोल्ख़ोव बिजलीघर** – लेनिनग्राद से १२० किलोमीटर की दूरी पर वोल्ख़ोव नदी के तट पर सोवियत संघ का पहला बड़ा पनबिजलीघर। इसका निर्माण १९१८ में शुरू हुआ लेकिन केवल १९२१ में गृह युद्ध के समाप्त होने पर ही निर्माण-कार्य पूरे ज़ोरों पर हो सका। – १८४

नाम-निर्देशिका

अ

अक्सेलरोद, पावेल बोरीसोविच (१८५०–१९२८) – एक मेंशेविक नेता। १९०५ में विस्तृत मज़दूर कांग्रेस बुलाने का अवसरवादी प्रस्ताव किया, जिसे उन्होंने सर्वहारा पार्टी के मुक़ाबले में प्रस्तुत किया। प्रतिक्रिया के वर्षों में एक विसर्जनवादी नेता। पहले विश्व युद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान केंद्रीयतावादी। १९१७ की फ़रवरी क्रांति के बाद पेत्रोग्राद सोवियत की कार्यकारिणी समिति के सदस्य, पूंजीवादी अस्थायी सरकार का समर्थन किया। अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद उत्प्रवासी। –७३, १२५

अलेक्सेयेव, प्योत्र अलेक्सेयेविच (१८४९–१८९१) – एक सबसे पहले मज़दूर-क्रांतिकारी, बुनकर। १८७४ से मास्को में मज़दूरों के बीच क्रांतिकारी प्रचार में सक्रिय भाग लिया। १८७५ में गिरफ़्तार कर लिये गये और १० साल के श्रम-कारावास की सज़ा दी गयी, जिसके बाद याकूतियाई क्षेत्र में रहने लगे, जहां लुटेरों ने जान से मार डाला। –२१

अवानेसोव, वार्लाआम अलेक्सान्द्रोविच (१८८४–१९३०) – सोवियत राजनेता, १९०३ से रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के सदस्य। १९२० से १९२४ तक मज़दूर-किसान निरीक्षण के उप-

जन-कमिसार। –११७, ११८

आ

आयर (Auer), **इग्नाज़** (१८४६–१९०७) – जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी के एक कार्यकर्ता, ज़ीनसाज़। १८७५ से जर्मन समाजवादी मज़दूर पार्टी के सचिव; कई बार राइख़स्टाग के प्रतिनिधि चुने गये। बाद में जर्मन सामाजिक-जनवाद के अवसरवादी पक्ष के एक नेता। –४३

ए

एंगेल्स (Engels), **फ़्रेडरिक** (१८२०–१८९५) – वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के एक जन्मदाता, संसार भर के सर्वहारा वर्ग के नेता और शिक्षक। –२५

ओ

ओल्देनबुर्ग, से० से० (मृत्यु १९४०) – 'रूस्सकाया मीस्ल' ('रूसी विचार') पत्रिका के राजनीतिक समीक्षक। –१६३

ओल्देनबोर्गर, व्लादीमिर वसील्येविच (१८६३–१९२१) – मैकेनिकल इंजीनियर, १९१७ से मास्को वाटरवर्क्स के प्रमुख इंजीनियर। –१३५

क

काउत्स्की (Kautsky), **कार्ल** (१८५४–१९३८) – जर्मन सामाजिक-जनवाद और दूसरे इंटरनेशनल के एक नेता; आरंभ में मार्क्सवादी, बाद में मार्क्सवाद के प्रति ग़द्दार; अवसरवाद की सबसे ख़तरनाक और नुक़सानदेह धारा – मध्यमार्ग (काउत्स्कीवाद) – के प्रतिपादक। –१३

कामेनेव, लेव बोरीसोविच (१८८३–१९३६) – सामाजिक-जनवादी।

रू० सा० ज० म० पार्टी की दूसरी कांग्रेस (१९०३) के बाद बोल्शेविकों में शामिल हो गये। १९०५–१९०७ की क्रांति की पराजय के बाद विसर्जनवादियों, बहिष्कारवादियों तथा त्रोत्स्की-वादियों के प्रति सौहार्दपूर्ण रुख़ अपनाया। अक्तूबर १९१७ में ज़िनोव्येव के साथ 'नोवाया जीज़्न' ('नवजीवन') नामक एक अर्धमेंशेविक दैनिक में हथियारबंद विद्रोह से संबंधित केंद्रीय समिति के निर्णय से अपनी असहमति की घोषणा प्रकाशित करके अस्थायी सरकार को पार्टी की योजनाओं की ख़बर दे दी। १९२५ में "नये विरोध पक्ष" के एक संगठनकर्ता; १९२६ में त्रोत्स्की-ज़िनोव्येव पार्टीविरोधी गुट के एक नेता। –१६४

किसेल्योव, अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच (१८७९–१९३८) – बोल्शेविक, १९२० में अकुशल मज़दूर संघ के अध्यक्ष। –११६

कुदाशेव, इ० अ० (१८५९ – ?) – रूसी राजनयिक, राजा। १९११ से १९१६ तक बेल्जियम में राजदूत। १९१४ में चौथी राजकीय दूमा के सामाजिक-जनवादी दल के नाम एमील वानडरवेल्डे के तार का मसौदा लिखने में भाग लिया, जिसमें ज़ारशाही के विरुद्ध संघर्ष बंद करने तथा जर्मनी के विरुद्ध युद्ध का समर्थन करने की अपील की गयी थी। –८१

केर्जेंनत्सेव (लेबेदेव), प्लातोन मिख़ाइलोविच (१८८१–१९४०) – रूसी इतिहासज्ञ, पत्रकार, बोल्शेविक, १९०४ से रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के सदस्य; अक्तूबर क्रांति के बाद उत्तरदायित्वपूर्ण पार्टी तथा आर्थिक कार्य पर रहे। –१८२

क्रिचेव्स्की, बोरीस नाऊमोविच (१८६६–१९१९) – रूसी सामाजिक-जनवादी, पत्रकार, "अर्थवाद" के एक नेता। रू० सा० ज० म० पार्टी की दूसरी कांग्रेस (१९०३) के बाद सामाजिक-जनवादी आंदोलन से पृथक हो गये। –२९

ग

गपोन, गेओर्गी अपोल्लोनोविच (१८७०–१९०६) – पादरी, ज़ारशाही की खुफ़िया पुलिस के दलाल। ९ जनवरी, १९०५ को ज़ार निकोलाई द्वितीय के सामने एक आवेदनपत्र पेश करने के लिए पीटर्सबर्ग के मज़दूरों का प्रदर्शन संगठित किया; यह प्रदर्शन ज़ार के आदेश पर गोलियों से भून दिया गया। –७१

गूसेव, सेर्गेई इवानोविच (१८७४–१९३३) – रूसी क्रांतिकारी, बोल्शेविक। पीटर्सबर्ग की 'मज़दूर वर्ग की मुक्ति के लिए संघर्ष करनेवाली लीग' के सदस्य (१८९६)। १९०५–१९०७ की क्रांति तथा १९१७ की अक्तूबर क्रांति के भागीदार। बाद में उत्तरदायित्वपूर्ण पार्टी कार्य पर रहे। –७०

गोगोल, निकोलाई वसील्येविच (१८०९–१८५२) – रूसी लेखक। –८७

छ

छेईद्ज़े, निकोलाई सेम्योनोविच (१८६४–१९२६) – मेंशेविज़्म के एक नेता। तीसरी और चौथी राजकीय दूमाओं के प्रतिनिधि, चौथी दूमा में मेंशेविक दल का नेतृत्व किया। अक्तूबर समाजवादी क्रांति (१९१७) के बाद जार्जिया की प्रतिक्रांतिकारी मेंशेविक सरकार के अध्यक्ष। १९२१ से उत्प्रवासी। –८०, ८१, ८३

ज

ज़िनोव्येव (रादोमीस्लस्की), ग्रिगोरी येव्सेयेविच (१८८३–१९३६) – १९०१ से बोल्शेविक पार्टी के सदस्य। १९०५–१९०७ की क्रांति की पराजय के बाद विसर्जनवादियों, बहिष्कारवादियों तथा त्रोत्स्कीवादियों के प्रति सौहार्दपूर्ण रुख़ अपनाया। पहले विश्व युद्ध (१९१४-१९१८) के समय अंतर्राष्ट्रीयतावादी। अक्तूबर १९१७ में कामेनेव के साथ 'नोवाया जीज़्न' ('नवजीवन') नामक एक अर्ध-मेंशेविक दैनिक में हथियारबंद विद्रोह से संबंधित केंद्रीय समिति के निर्णय से अपनी असहमति की घोषणा प्रकाशित करके अस्थायी

सरकार को पार्टी की योजनाओं की ख़बर दे दी। १६२५ में "नये विरोध पक्ष" के एक संगठनकर्ता; १६२६ में त्रोत्स्की-ज़िनोव्येव पार्टीविरोधी गुट के एक नेता। –१६४

ज़्यूदेकुम (Südekum), **अलबर्ट** (१८७१–१६४४) – जर्मन सामाजिक-जनवादियों के एक अवसरवादी नेता, संशोधनवादी। १६०० से १६१८ तक राइख़स्टाग के प्रतिनिधि। पहले विश्व युद्ध (१६१४–१६१८) के समय सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। –८३

त

तुर्गेनेव, इवान सेर्गेयेविच (१८१८–१८८३) – रूसी लेखक। –१४४

तोदोर्स्की, अलेक्सान्द्र इवानोविच (१८६४–१६६५) – सोवियत सेनापति, १६१८–१६१६ में वेस्येगोन्स्क उयेज़्द, त्वेर गुबेर्निया की कार्य-कारिणी समिति के सदस्य, 'बंदूक और हल के साथ एक साल' पुस्तक के लेखक। –१५१

तोम्स्की, मिख़ाईल पाव्लोविच (१८८०–१६३६) – १६०४ से बोल्शेविक पार्टी में शामिल हुए। अक्तूबर समाजवादी क्रांति (१६१७) के बाद अखिल सोवियत ट्रेड-यूनियन केंद्रीय परिषद के अध्यक्ष-मंडल के अध्यक्ष। पार्टी की लेनिनवादी नीति का अक्सर विरोध किया, १६२८ में बुख़ारिन तथा रीकोव के साथ अखिल रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) में दक्षिणपंथी अवसरवादी झुकाव का नेतृत्व किया। –११६

त्रोत्स्की (ब्रोन्सटीन), लेव दवीदोविच (१८७६–१६४०) – सामाजिक-जनवादी, मेंशेविक। १६०५–१६०७ की क्रांति की पराजय के बाद विसर्जनवादी। पहले विश्व युद्ध (१६१४–१६१८) के दौरान मध्यमार्गी स्थिति अपनायी; युद्ध, शांति और क्रांति के प्रश्नों पर लेनिन के विरुद्ध संघर्ष किया। रू० सा० ज० म० पार्टी (बो०) की छठी कांग्रेस (१६१७) में बोल्शेविक पार्टी में शामिल हुए। अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद कई उत्तरदायी पदों पर रहे।

पार्टी की आम नीति, समाजवाद के निर्माण के लेनिन के कार्यक्रम के ख़िलाफ़ भयानक गुटबाज़ीभरा संघर्ष चलाया, इस बात का प्रचार किया कि सोवियत संघ में समाजवाद की विजय असंभव है।

कम्युनिस्ट पार्टी ने त्रोत्स्कीवाद का पार्टी के भीतर एक टुट-पुंजिया भटकाव के रूप में पर्दाफ़ाश करके सिद्धांत और संगठन, दोनों क्षेत्रों में उसकी धज्जियां उड़ा दीं। १६२७ में त्रोत्स्की को पार्टी से बाहर निकाल किया गया और १६२६ में सोवियतविरोधी कार्य के कारण उन्हें देशनिकाला दिया गया। –६१, ६२, १६२, १६४, १६५

न

नाइट (Knight), **राबर्ट** (१८३३–१६११) – ब्रिटिश ट्रेड-यूनियन आंदोलन के कार्यकर्ता, संसद के सदस्य (१८७५–१८८२, १८८६–१६००)। मालिकों से अपना संघर्ष मज़दूरों की आर्थिक दशा बेहतर बनाने की मांगों तक सीमित किया। इस ध्येय की प्राप्ति का मुख्य साधन नाइट ने विवादों का शांतिपूर्ण हल और मालिकों से सहमति समझी। – २५, २६

नेनारोकोमोव, ग० प० (१८७४–?) – ज़ारशाही अदालती चेंबर के अभियोक्ता। १६१५ में चौथी राजकीय दूमा के बोल्शेविक सदस्यों पर ज़ारशाही सत्ता के मुक़दमे में अभियोक्ता थे। –८२

प

पेत्रोव्स्की, ग्रिगोरी इवानोविच (१८७८–१६५८) – क्रांतिकारी मज़दूर आंदोलन के भागीदार, बोल्शेविक। चौथी राजकीय दूमा के प्रतिनिधि, दूमा के बोल्शेविक दल में शामिल हुए। १६१४ में युद्ध के विरुद्ध प्रचार के लिए अन्य बोल्शेविक प्रतिनिधियों के साथ गिरफ़्तार कर लिये गये और तुरुखान्स्क क्षेत्र में जलावतन कर दिये गये। बाद में पार्टी कार्य पर रहे। –८३

प्याताकोव, गेओर्गी लेओनीदोविच (१८९०–१९३७) – १९१० से बोल्शेविक पार्टी में शामिल हुए। पहले विश्व युद्ध (१९१४–१९१८) के समय जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार के प्रश्न पर और दूसरे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर लेनिनविरोधी रुख़ अपनाया। अक्तूबर समाजवादी क्रांति (१९१७) के बाद त्रोत्स्कीवादी। पार्टीविरोधी कार्रवाइयों के लिए पार्टी से निकाल दिये गये। –१६४

प्रूदों (Proudhon), **पियेर जोज़ेफ़** (१८०९–१८६५) – फ़्रांसीसी पत्रकार, अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री; टुटपुंजिया बुर्जुआ वर्ग के विचारधारा-निरूपक, अराजकतावाद के एक संस्थापक। –११

प्लेख़ानोव, गेओर्गी वलेन्तीनोविच (१८५६–१९१८) – रूसी और अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन के कार्यकर्ता, रूस में मार्क्सवाद के प्रथम प्रचारक। १८८३ में जेनेवा में पहला रूसी मार्क्सवादी संगठन – 'श्रम-मुक्ति' दल स्थापित किया। रू० सा० ज० म० पार्टी की दूसरी कांग्रेस (१९०३) के बाद मेंशेविकों का पक्ष लिया। पहले विश्व युद्ध (१९१४–१९१८) के समय सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी रवैया अपनाया। अक्तूबर समाजवादी क्रांति के प्रति नकारात्मक रुख़ अपनाया। –२६, ६१, ८३

फ़

फ़ोतियेवा, लीदिया अलेक्सान्द्रोव्ना (ल० फ़०), (१८८१–१९७५) – १९०४ से बोल्शेविक पार्टी की सदस्य। १९१८–१९२४ में व्ला० इ० लेनिन की सेक्रेटरी। –१६५, १६७

ब

बदायेव, अलेक्सेई येगोरोविच (१८८३–१९५१) – बोल्शेविक, फ़िटर। चौथी राजकीय दूमा के प्रतिनिधि, दूमा के बोल्शेविक दल में शामिल थे। १९१४ में युद्ध के ख़िलाफ़ प्रचार के लिए अन्य बोल्शेविक दूमा-सदस्यों के साथ गिरफ़्तार कर लिये गये और तुरुख़ान्स्क क्षेत्र में जलावतन कर दिये गये। १९१७ की अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद पार्टी तथा आर्थिक कार्य पर रहे। –८३

बर्नस्टीन (Bernstein), **एडुअर्ड** (१८५०–१९३२) – जर्मन सामाजिक-जनवादियों तथा दूसरे इंटरनेशनल के अवसरवादी पक्ष के एक नेता, संशोधनवाद और सुधारवाद के सिद्धांतकार। १८९६–१८९८ में *Die Neue Zeit* ('नया ज़माना') पत्रिका में 'समाजवाद की समस्याएं' शीर्षक लेख-माला प्रकाशित की, जिसमें मार्क्सवाद की दार्शनिक, आर्थिक तथा राजनीतिक आधारभूत स्थापनाओं का संशोधन करने का खुलेआम प्रस्ताव किया। बर्नस्टीन ने वर्ग संघर्ष, साम्राज्यवाद के पतन की अवश्यंभाविता, समाजवादी क्रांति तथा सर्वहारा अधिनायकत्व संबंधी मार्क्सवादी सिद्धांतों से इनकार किया। उन्होंने मज़दूर आंदोलन का मुख्य उद्देश्य सुधारों के लिए संघर्ष की घोषणा कर दी, जो पूंजीवाद के तहत मज़दूरों की आर्थिक दशा की "बेहतरी" की ओर ले जाते हैं; "आंदोलन ही सब कुछ है, अंतिम लक्ष्य कुछ नहीं" का अवसरवादी फ़ार्मूला पेश किया।

बर्नस्टीन तथा उनके अनुयायियों के सैद्धांतिक विचार तथा अवसरवादी कार्रवाइयों का फल था मज़दूर वर्ग के हितों के साथ ग़द्दारी और दूसरे इंटरनेशनल का पतन। –१३, १६

ब० व० –देखें सावित्कोव, ब० व०।

बाबुश्किन, इवान वसील्येविच (१८७३–१९०६) – एक सबसे पहले रूसी मज़दूर सामाजिक-जनवादी, १८९४ से बोल्शेविक। 'ईस्क्रा' समाचारपत्र के दलाल। १९०५–१९०७ की क्रांति के भागीदार। चिता नगर में हथियारबंद विद्रोह के एक नेता; ज़ारशाही ताज़ीरी दस्ते द्वारा गोली से उड़ाये गये। –७५-७९

बिसोलाती (Bissolati), **लियोनीदा** (१८५७–१९२०) – इटली की समाजवादी पार्टी के एक संस्थापक और उसके चरम दक्षिण सुधारवादी पक्ष के एक नेता। १८९७ से संसद के सदस्य। १९१२ में १९११–१९१२ के इतालवी-तुर्क आक्रमणकारी युद्ध के समर्थन के लिए पार्टी से निकाल दिये गये; तभी समाजवादी सुधारवादी पार्टी के एक संस्थापक। पहले विश्व युद्ध (१९१४–१९१८) के

वर्षों में सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी; १९१६–१९१८ में सरकार के सदस्य। –८३

बुख़ारिन, निकोलाई इवानोविच (१८८८–१९३८) – पत्रकार और अर्थशास्त्री, १९०६ से बोल्शेविक पार्टी के सदस्य। १९१५ में 'कोम्मुनीस्त' ('कम्युनिस्ट') पत्रिका में काम किया। राज्य, सर्वहारा अधिनायकत्व, जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार, आदि प्रश्नों पर लेनिन का विरोध किया। १९१८ में ब्रेस्त-लितोव्स्क शांति-संधि पर बहस के समय पार्टीविरोधी 'वामपंथी कम्युनिस्ट' दल के प्रधान थे। १९२९ से पार्टी में दक्षिणपंथी अवसरवादी गुट के नेता। १९३७ में पार्टीविरोधी कार्रवाइयों के कारण पार्टी से निकाल दिये गये। –१६४

बेबेल (Bebel), **अगस्त** (१८४०–१९१३) – जर्मन सामाजिक-जनवादियों तथा दूसरे इंटरनेशनल के एक कार्यकर्ता, टर्नर। १८६९ में विल्हेल्म लीब्कनेख़्त के साथ जर्मन सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी (आइ-ज़ेनाख़वादी) स्थापित की; कई बार राइख़स्टाग के प्रतिनिधि चुने गये। –११, ४३

बेलीन्स्की, विस्सारिओन ग्रिगोर्येविच (१८११–१८४८) – रूसी साहित्य समीक्षक, पत्रकार, क्रांतिकारी-जनवादी। –८७

बोग्दानोव (मालिनोव्स्की), अलेक्सान्द्र अलेक्सान्द्रोविच (१८७३–१९२८) – रूसी सामाजिक-जनवादी, दार्शनिक, समाजशास्त्री, अर्थ-शास्त्री, पेशे से डाक्टर। रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस (१९०३) के बाद बोल्शेविकों का पक्ष लिया। 'व्पेर्योद' ('आगे बढ़ो'), 'प्रोलेतारी' ('सर्वहारा') और १९०५ में निकलते रहे 'नोवाया जीज़्न' ('नवजीवन') बोल्शेविक मुखपत्रों के संपादक-मंडलों में शामिल हुए। १९०८ से पार्टीविरोधी दल 'व्पेर्योद' के नेता। १९०९ में बोल्शेविक पार्टी से निकाल दिये गये। अक्तूबर समाज-वादी क्रांति के बाद सर्वहारा विश्वविद्यालय में काम किया। –७०

म

मुसोलिनी (Mussolini), **बेनीतो** (१८८३–१९४५) – १९२२–१९४३ में इटली के फ़ासिस्टों के नेता। अपनी राजनीतिक कार्रवाइयां समाजवादी पार्टी में शुरू कीं, जिससे १९१४ में निकाल दिये गये। १९१९ में क्रांतिकारी आंदोलन के विरुद्ध संघर्ष के लिए फ़ासिस्टों के दल स्थापित किये और १९२२ में सत्ता पर क़ब्ज़ा कर लिया। हिटलरी जर्मनी के साथ फ़ासिस्ट इटली ने दूसरा विश्व युद्ध शुरू किया। १९४५ में इतालवी छापामारों ने मुसोलिनी को पकड़कर फांसी दे दी। –८३

मूरोमत्सेव, सेर्गेई अन्द्रेयेविच (१८५०–१९१०) – कैडेटों के एक नेता, न्यायशास्त्री, पत्रकार। पहली राजकीय दूमा के अध्यक्ष। –७८

मैकियावेली (Machiavelli), **निकोलो** (१४६९–१५२७) – इतालवी राजनीतिक विचारक, लेखक। इटली की मुसीबतों का मुख्य कारण उसकी राजनीतिक अनैक्यबद्धता समझी, जिसे केवल शक्तिशाली राज्यसत्ता पार कर सकती है। राज्य को मज़बूत बनाने के लिए कोई भी साधन अच्छे समझे। इसलिए मैकियावेलीवाद का अर्थ है नैतिकता की उपेक्षा करनेवाली नीति। –१२६

मेल्लेर-ज़ाकोमेल्स्की, अ० न० (१८४४–?) – ज़ारशाही सेना के जनरल। १९०६ में जनरल रेन्नेनकाम्प्फ़ के साथ साइबेरिया में क्रांतिकारी आंदोलन दबाने के ताज़ीरी अभियानों का नेतृत्व किया। अक्तूबर समाजवादी क्रांति (१९१७) के बाद उत्प्रवासी। –७७

य

येर्मान्स्की अ० (कोगन, ओसिप अर्कादियेविच) (१८६६–१९४१) – रूसी सामाजिक-जनवादी, मेंशेविक। १९२१ में मेंशेविक पार्टी से निकल गये; वैज्ञानिक कार्य पर रहे। –१८२

र

"**राबोची**" ("एक मज़दूर") – "हमारे 'संगठनों' में मज़दूर और बुद्धिजीवी लोग" पुस्तिका के लेखक, जो १९०४ में जेनेवा में प्रकाशित की गयी थी। –७३

रीकोव, अलेक्सेई इवानोविच (सेर्गेयेव) (१८८१–१९३८) – सामाजिक-जनवादी, पार्टी की तीसरी कांग्रेस (१९०५) में रू० सा० ज० म० पार्टी की मास्को समिति के प्रतिनिधि। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद समाजवादी क्रांति लाने के बारे में पार्टी की नीति का विरोध किया। अक्तूबर समाजवादी क्रांति (१९१७) के बाद पार्टी तथा आर्थिक कार्य पर रहे। पार्टी की लेनिनवादी नीति का अकसर विरोध किया; नवंबर १९१७ में मेंशेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों के साथ मिली-जुली सरकार की स्थापना के समर्थक थे। १९३७ में पार्टीविरोधी कार्रवाइयों के लिए पार्टी से निकाल दिये गये। –७३, ७४

रेन्नेनकाम्प्फ़, पावेल कार्लोविच (१८५४–१९१८) – रूसी ज़ारशाही सेना के जनरल। १९०६ में जनरल मेल्लेर-ज़ाकोमेल्स्की के साथ साईबेरिया में क्रांतिकारी आंदोलन दबाने के ताज़ीरी अभियानों का नेतृत्व किया। पहले विश्व युद्ध (१९१४–१९१८) के आरंभ में सेना की कमान संभाली, पूर्वी प्रशा में रूसी सेना की पराजय के एक अपराधी; क्रांतिकारी अदालत के फ़ैसले के अनुसार गोली से उड़ाये गये। –७५, ७७

ल

ल० फ़० – देखें फ़ोतियेवा, ल० अ०।

लीब्कनेख़्त (Liebknecht), **विल्हेल्म** (१८२६–१९००) – जर्मन और अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन के कार्यकर्ता, जर्मनी की सामाजिक-जनवादी पार्टी के एक संस्थापक और नेता। १८७४ से राइख़स्टाग के प्रतिनिधि। पहले इंटरनेशनल के कार्य तथा दूसरे इंटरनेशनल की स्थापना में सक्रिय भाग लिया। –२५, २६

व

वाइयां (Vaillant), **एडुअर्ड मारी** (१८४०–१९१५) – फ़ांसीसी समाजवादी, दूसरे इंटरनेशनल के एक नेता। १९०१ में फ़्रांस की समाजवादी पार्टी के एक संस्थापक। १९०५ में फ़्रांस की समाजवादी पार्टी और सुधारवादी फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी के विलय के बाद वाइयां ने अधिकतर महत्वपूर्ण प्रश्नों पर अवसरवादी रवैया अपनाया। पहले विश्व युद्ध (१९१४–१९१८) के समय सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। –११, ८३

वाइटलिंग (Weitling), **विल्हेल्म** (१८०८–१८७१) – जर्मन मज़दूर आंदोलन की शुरुआत में उसके कार्यकर्ता, कल्पनावादी समत्ववादी कम्युनिज़्म के एक सिद्धांतकार; दर्ज़ी। –११

वानडरवेल्डे (Vandervelde), **एमील** (१८६६–१९३८) – बेल्जियम की मज़दूर पार्टी के नेता, दूसरे इंटरनेशनल के अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो के अध्यक्ष, चरम अवसरवादी रवैया अपनाया। पहले विश्व युद्ध (१९१४–१९१८) के समय सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी, बुर्जुआ सरकार में प्रवेश किया। फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति (१९१७) के बाद साम्राज्यवादी युद्ध जारी रखने के प्रचार के लिए रूस में पहुंचे। अक्तूबर समाजवादी क्रांति (१९१७) के प्रति विरोधी रुख़ अपनाया, सोवियत रूस के ख़िलाफ़ हस्तक्षेप का संगठन करने में मदद दी। –८१, ८२

वोलोदिचेवा, मरीया अकीमोव्ना (१८८१–१९७३) – व्ला० इ० लेनिन की सेक्रेटरी। –१६३, १६५, १६८

श

श्चेद्रीन – देखें सल्तिकोव-श्चेद्रीन, म० य०।

स

सल्तिकोव-श्चेद्रीन, मिख़ाईल येव्ग्राफ़ोविच (श्चेद्रीन) (१८२६–१८८९) – रूसी लेखक। –४२

साविन्कोव, बोरीस वीक्तोरोविच , (ब० व०) (१८७९–१९२५) – समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी के कार्यकर्ता, उसके 'जुझारू संगठन' के एक नेता। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद अस्थायी सरकार के मंत्री। अक्तूबर समाजवादी क्रांति (१९१७) के बाद सोवियत जनतंत्र के विरुद्ध कई प्रतिक्रांतिकारी विद्रोहों तथा सैनिक हस्तक्षेप के संगठनकर्ता। १९२४ में ग़ैर-क़ानूनी रूप से सोवियत संघ में आये, लेकिन गिरफ़्तार कर लिये गये और अपराधी ठहराये गये। जेल में आत्महत्या कर ली। –३६, ३७, ३८, ४०, ४१, ४२

सेम्बा (Sembat), **मार्सेल** (१८६२–१९२२) – फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी के एक सुधारवादी नेता। पहले विश्व युद्ध (१९१४–१९१८) के समय सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। अगस्त १९१४ से सितंबर १९१७ तक फ़्रांस की साम्राज्यवादी "राष्ट्रीय रक्षा की सरकार" में लोक निर्माण-कार्य मंत्री। –८३

सेर्गेयेव – देखें रीकोव, अ० इ०।

स्तालिन (जूगाश्विली), जोज़ेफ़ विस्सारिओनोविच (१८७९–१९५३)– सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी, सोवियत राज्य, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट और मज़दूर आंदोलन के एक नेतृत्वकारी कार्यकर्ता। ट्रांसकाकेशिया में रहकर १९०५–१९०७ की क्रांति के भागीदार। पेत्रोग्राद में अक्तूबर समाजवादी क्रांति के एक नेता। अक्तूबर १९१७ से जातियों के मामलों के जन-कमिसार, राजकीय नियंत्रण और मज़दूर-किसान निरीक्षण संस्था के जन-कमिसार। १९२२ से सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव। सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण में, त्रोत्स्कीवाद और दक्षिणपंथी अवसरवाद के खंडन में, महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में सोवियत जनता की विजय पाने में बड़ी भूमिका की। साथ ही साथ स्तालिन ने सैद्धांतिक और राजनीतिक ग़लतियां कीं, समाजवादी वैधता का उल्लंघन किया। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने स्तालिन की व्यक्ति-पूजा की निंदा की। –११६, ११७, १५५, १६४, १६५

स्मिदोविच, प्योत्र गेर्मोगेनोविच (च०), (१८७४–१९३५) – सामाजिक-जनवादी, 'ईस्क्रा'-वादी, रू० सा० ज० म० पार्टी की दूसरी कांग्रेस (१९०३) के बाद बोल्शेविक। १९०० में गिरफ़्तार कर लिये गये, १९०१ में विदेश भेजे गये; 'रूसी क्रांतिकारी सामाजिक-जनवाद की विदेशी लीग' के सदस्य थे। अक्तूबर समाजवादी क्रांति (१९१७) के बाद सोवियत और आर्थिक कार्य पर रहे। – ४५-४७

ह

हाइने (Heine), **वोल्फ़गांग** (१८६१–१९४४) – जर्मन राजनीतिक कार्यकर्ता, दक्षिणपंथी सामाजिक-जनवादी, वकील। पहले विश्व युद्ध (१९१४–१९१८) के समय सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। जर्मनी में १९१८ की नवंबर क्रांति के बाद सरकार में कई मंत्री-पदों पर रहे। १९२० में राजनीतिक कार्य से अलग हो गये। –८३

प्रगति प्रकाशन पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखें:

प्रगति प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

В. И. Ленин

О ВОСПИТАНИИ КАДРОВ

на языке хинди

V. I. Lenin

ON EDUCATION OF PARTY CADRES

in Hindi